



**Hindi Mahila Kahanikaro ke Kahaniyaon me
Abhivyakta Jeevan Mulys (1980-2000)**

THESIS

Submitted For the Award of the Degree Of

Doctor of philosophy

In

Hindi

By

Shabbir Ahmad Khan

Under The Supervision of

Dr. M. ShahulHameed

2015

**DEPARTMENT OF HINDI
ALIGARH MUSLIM UNIVERSITY
ALIGARH (INDIA)**

प्राक्कथन

जीवन के हर क्षेत्र में 'मल्य' शब्द का प्रयोग हमें दिखाई देता है। मल्य शब्द का प्रयोग अशिक्षित व्यक्ति से लेकर बौद्धिक या विद्वानों तक हमेशा किया जाता है। हर बार मल्य शब्द का प्रयोग किसी मर्त या अमर्त भाव के लिए होता है। वैसे देखा जाए तो मल्य किसी केन्द्रीय गणवत्ता का सचक है. परन्तु सामाजिक व्यवस्था वस्तुओं के विनिमय से लेकर मद्रा के चलन तक मल्य शब्द 'वस्तु की कीमत' के रूप में प्रचलित हो गया है। फिर भी चिन्तन जगत में मल्य आज भी वस्तु के भीतरी गण अथवा उपयोगकर्ता की अभीप्सा को पूर्ण करने की शक्ति का ही अर्थ देता है।

भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार मल्य तो मानवीय जीवन में उन्नति दयोतक हैं। जीवन में मल्य का प्रयोग उनकी मर्यादा को पार न करते हुए करना चाहिए और मुख्य बात यह है कि मल्य के मर्म की रक्षा होनी चाहिए नहीं तो इन्हीं मल्यों का विघटन होते देर नहीं लगेगी। भारतीय आचार्यों ने और ऋषि-मनियों ने भी जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए तथा परमानन्द की प्राप्ति के लिए परुषार्थ का निर्माण किया जिसे हम मल्य कहते हैं। ये परुषार्थ हैं। धर्म. अर्थ. काम. मोक्ष। इन्हीं चारों परुषार्थों के आधार पर ही भारतीय जीवन टिका हुआ है. और भारत में परुषार्थों के अनुसार जीवन व्यतीत किया जाता है। जीवन की समग्र उन्नति के लिए इन परुषार्थों का अत्याधिक महत्त्व है।

संसार में मनष्यों ने मल्यों की संरचना की है जीवन को सचारु रूप से चलाने के लिए मल्यों के माध्यम से नियम की सृष्टि की गयी है। इन्हीं का प्रयोग परंपरागत रूप से होता चला गया जिनके माध्यम से मानव का विकास स्पष्ट होता है क्योंकि

यग के अनरूप मल्यों के व्यवहार में परिवर्तन होता रहा है। जीवन मल्यों का विकास वैयक्तिक स्तर से सामाजिक स्तर की दशा तक हुआ है। समाज अपनी जरूरत के अनरूप मल्यों का निर्माण करता है परिवर्तन सृष्टि का अनिवार्य क्रम है। अतः नये यग में नये मल्यों का निर्माण आवश्यक हो जाता है।

समाज में जो नये मल्य हैं वे पराने मल्यों को तोड़कर समय-समय पर अपना रूप बदलते हैं आधुनिक यग में श्रद्धा. आस्था. करुणा. दया आदि भाव कम होने लगे हैं। जो त्रेता यग द्वापर यग के मल्य थे वे आधुनिक काल में आते-आते बदल गये। सत्य. अहिंसा. सहअस्तित्व. सहानुभूति इत्यादि सूक्ष्म मल्य परंपरागत समाज से प्राप्त होते हुए भी जीवन में उपयोग द्वारा ही परिणति और विकास हुआ है।

साहित्य और समाज का आपस में बहुत बड़ा घनिष्ठ संबंध है। साहित्य रं जीवन की अभिव्यक्ति होती है। जीवन का मशकिल इतिहास ही साहित्य का रूप लेता है। जीवन के शाश्वत मल्य सत्यं. शिवं. सुंदरम् तीनों की सामंजस्यपूर्ण प्रतिष्ठा ही सफलता की पराकाष्ठा है। सत्य उसकी आधार भूमि है. शिव उसका लक्ष्य और सुंदर उस लक्ष्य तक पहुंचने का साधन है. 'हितैष सह सहित' कहकर साहित्य शब्द व्याख्याकारों ने उसमें स्वयं कल्याण भावना की प्रतिष्ठा की है। साहित्य स्थापित जीवन मल्यों से संबंधित प्रश्नों का उत्तर अपने तरीके से देता है। जीवन-परिवर्तनशील है। परिवर्तनमान स्थितियों को साहित्यकार अपनी अन्तर्दृष्टि से देखता है। प्रचलित मल्यों को अस्वीकार कर नये मल्यों की रचना करता है। इस दृष्टि से साहित्य के मल्य जीवन के मल्यों के विरोधी नहीं हो सकते। भारतीय बौद्धिक जीवन मल्यों को साहित्य की सर्वोच्च कसौटी मानते हैं।

साहित्य को मानव समाज के लिए उदात्त विचारों तथा तत्वों का विवे

करना होता है। 'मल्य' शब्द समाज कल्याण या मानवहित वाले अर्थ तक ही सीमित नहीं रहता। वह तो साहित्य में 'शिव' के साथ-साथ सत्य और सन्दर की भी समाहित करता जाता है। जीवन लक्ष्य से जुड़े हुए जीवन मल्यों की पहचान हम साहित्य के द्वारा कर सकते हैं।

आधुनिक हिंदी साहित्य में विविध विधाओं के अन्तर्गत मल्यों की चर्चा की जाती है जिसमें से कहानी विधा के अन्तर्गत भी जीवन-मल्यों की चर्चा विस्तृत रूप में की जा चुकी है। स्वतंत्रतापर्व और स्वतंत्रता के बाद में लिखी गयी कहानियों में यह बात दिखायी देती है कि स्वतंत्र्योत्तर काल में लिखी गयी कहानियों में विस्तृत रूप से यथार्थ के धरातल पर मानव जीवन के लिए उपयोगी एवं महत्वपूर्ण मल्यों की चर्चा समयक रूप में किया गया है।

आज कल की कहानी में काल्पनिकता को छोड़कर 'सत्य' को अपना आधार बनाया है। यह सत्य हमारी रुढ़ियों, परम्पराओं, मान्यताओं, रीति-रिवाजों के साथ-साथ मल्यों से जुड़ा है। इसमें टटते हुए पारिवारिक संबंध, बनते हुए नवीन संबंध, नारी, आर्थिक संघर्ष, नारी का प्राचीन भावभूमि से निकलकर नवीन भावभूमि में प्रवेश मानव के अस्तित्व का प्रश्न आदि यथार्थ के कुछ आयाम हैं, जो कहानी साहित्य में अभिव्यक्त हुए हैं।

प्राचीन काल की कहानियाँ नैतिकता का प्रतिपादन करने वाली एवं उपदेश पूर्ण ही रही हैं। कहानी कला की दृष्टि से अविकसित होते हुए भी जीवन-मल्यों के प्रति समर्पित रह चुकी है। चाहे भारतेन्दुकालीन कहानी से लेकर प्रेमचंद जी, प्रसाद जी की कहानियाँ हो अन्तर सिर्फ इतना ही रहा है, कि प्रेमचंद कालीन कहानियों में कहानीकार की दृष्टि आदर्शों पर अधिक टिकी है।

प्रेमचंद जी का यह यथार्थवादी नजरिया आगे चलकर हिंदी कहानी में एक सर्वमान्य सत्य बन गया। आरम्भिक कहानी में मल्यों का आग्रह जहाँ प्रत्यक्ष रहता था, वहाँ इस यग की कहानियों में यथार्थ के द्वारा मल्यों की स्थापना का प्रयास किया गया।

प्रेमचंदोत्तर कहानी अनेक स्रोतों में जैसे सामाजिक, वैयक्तिक मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में जीवन के अनेक आयामों को छूती है। इस काल में यशपाल, जैनेन्द्र, रांगेय राघव, भगवतीचरण वर्मा, अज्ञेय और विष्णु प्रभाकर आदि रचनाकारों ने कहानी के इस धारा को प्रवाहित किया है। हिंदी कहानी को एक नया मोड़ दिया है।

हिंदी साहित्य में आधुनिककाल में महिला कहानीकारों की संख्या में बहू भारी तादाद में वृद्धि हुई है। इससे पहले प्रेमचन्द यग में भी उषा देवी, कमला चौधरी, सत्यवती मलिक, सभद्रा कमारी चौहान, श्रीमती चन्द किरण सौनरिक्सा, श्रीम होमवती देवी आदि महिला कहानी लेखिकाएँ रही हैं।

महिला कहानीकारों की दो पीढ़ियाँ एक साथ सक्रिय हैं। पहली पीढ़ी में वे लेखिकाएँ हैं जो नयी कहानी के दौर के आस-पास से लिखती आ रही हैं। और दूसरी पीढ़ी में वे लेखिकाएँ आती हैं, जिन्होंने आठवें दशक में लिखना आरम्भ किया है। पहली पीढ़ी की लेखिकाओं में शशि प्रभा शास्त्री, शिवानी, कृष्णा सोबती, भण्डारी, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया आदि उल्लेखनीय हैं। दूसरी पीढ़ी में दीप्ति खण्डेलवाल, मणाल पाण्डेय, मदला गर्ग, चित्रा मदगल, राजी सेठ, मंजल भ मणिका मोहिनी, प्रतिभा वर्मा, सधा अरोड़ा, निरूपमा सोबती, सूर्य बाला, मेहरुन्सिा परवेज, इन्दुबाला, अचला नागर आदि हैं।

इसके बाद भी एक और पीढ़ी उभर कर सामने आयी है। इसमें व

अग्निहोत्री. चन्द्रकान्ता. कसम चतर्वेदी. ज्योत्सना मिलन. मैत्रेयी पष्पा. नमिता सिंह. उषा किरण खान. कमल कुमार. नासिरा शर्मा. ऋता शक्ला. सारा राय. गीतांजलि श्री. लवलीन. मक्ता. अलका सरावगी. जया जादवानी. उर्मिला शिरीष. मध कांकरिया. रजनी गप्ता. अल्पना मिश्रा और दीपक शर्मा आदि उल्लेखनीय हैं।

हिंदी साहित्य में महिला कहानीकार तो अधिक हैं. लेकिन इसमें से २ महिला कहानीकार ममता कालिया. मदला गर्ग. मेहरुन्निसा परवेज. कृष्णा अग्निहोत्री. चन्द्रकान्ता. मैत्रेयी पष्पा. नमिता सिंह और नासिरा शर्मा की कहानियों में जीवन मल्य अधिक दिखायी देता है। इन कहानीकारों की कहानियों में अभिव्यक्त जीवन मल्य मझे बहुत प्रभावित किए इसीलिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का शीर्षक हिन्दी-महिला कहानीकारों के कहानियों में अभिव्यक्त जीवन मल्य (सन 1980 ई.— 2000 ई.) को मैंने चना।

विषय का अध्ययन सचारु रूप से सम्पन्न करते हुए पाँच अध्याय विभाजित किया गया है। इसका संक्षिप्त परिचय निम्न है।

प्रथम अध्याय समसामयिक समाज जीवन मल्यों के परिप्रेक्ष्य में है। अध्याय में मल्यों की परिभाषा. प्रकार. विकास को दिखाते हुए समसामयिक सामाजिक. शैक्षणिक. राजनीतिक. आर्थिक. सांस्कृतिक और धार्मिक परिस्थितियों का जीवन मल्य के परिप्रेक्ष्य में विवरण प्रस्तुत किया है।

द्वितीय अध्याय में महिला कहानीकारों की कहानियों का सर्वेक्षण जीवन मल्य के परिप्रेक्ष्य में किया गया है. जिसमें. कृष्णा अग्निहोत्री. मदला गर्ग. चन्द्रकान्ता. नमिता सिंह. नासिरा शर्मा. ममता कालिया. मेहरुन्निसा परवेज.. मैत्रेयी पष्पा. व कहानियों को आधार बनाया है. इसमें से मैंने महिला कहानीकारों की दस कहानियाँ

संग्रहों में से 54 कहानियों पर सर्वेक्षण भी किया है।

तृतीय अध्याय में हिंदी के महिला कहानीकारों की कहानियों में अभिव्यक्त सामाजिक मूल्य है। इस अध्याय में जाति, परिवार, प्रेम, विवाह, विवाहेतर संबंध, नारी की स्थिति और वैयक्तिक, मानव एवं नैतिक मूल्यों से संबंधित सामाजिक जीवन मूल्यों के यथार्थ स्वरूप को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में हिन्दी-महिला कहानीकारों की कहानियों में अभिव्यक्त शैक्षणिक, राजनीतिक, आर्थिक जीवन मूल्य है। इसमें शिक्षा का महत्व, स्त्री शिक्षा, अशिक्षा, शिक्षा व्यवस्था को दर्शाया है। राजनीतिक जीवन मूल्य के अन्तर्गत नेता चनाव, सरकार, एवं भ्रष्ट प्रशासन व्यवस्था से संबंधित जीवन मूल्यों पर प्रकाश डाला गया है। आर्थिक जीवन मूल्य के अन्तर्गत निम्न, मध्य, उच्च वर्ग, शोषण, बेरोजगारी को अभिव्यक्त किया गया है।

पंचम अध्याय में हिन्दी-महिला कहानीकारों की कहानियों में अभिव्यक्त सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्य हैं। इसमें परम्परा, संस्कार, रीति-रिवाज, अंधविश्वास, गीत, तथा मेले, त्यौहार आदि सांस्कृतिक जीवन मूल्यों का वर्णन है, ईश्वर धार्मिक विश्वास, नमाज, पूजा, उपवास, फकीर, साधु, सन्यासी, ज्योतिषी, सांप्रदायिक भावना, आदि धार्मिक जीवन मूल्यों को प्रस्तुत किया गया है।

पंचम अध्याय के पश्चात् उपसंहार है, जिसमें महिला कहानीकारों की कहानियों में अभिव्यक्त जीवन मूल्य का उल्लेख करते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

शोध निर्देशक के रूप में डॉ. एम. शाहल हमीद ने शोध कार्य में आने वाली सभी कठिनाइयों को दूर किया और अपने कशल निर्देशन द्वारा विषय को समझने में सहायता की। मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि, बिना उनके सहयोग के यह कार्य

सम्भव नहीं था। उन्होंने मेरे अन्दर आत्मविश्वास और दृढ़ इच्छाशक्ति का संचा किया है। उनका प्रोत्साहन सदैव मेरा संबल रहा है। उनका ऊर्जावान और साहसी व्यक्तित्व किसी के लिए भी प्रेरणा का स्रोत है।

प्रो. प्रदीप कुमार सक्सेना का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने समय-समय पर आने वाली समस्त कठिनाइयों का स्नेहपूर्ण समाधान प्रस्तुत किया है। निरन्तर प्रोत्साहन करने और नयी दिशा प्रदान करने में उनका बहुमूल्य योगदान है। प्रो. आरिफ नजीर विभाग अध्यक्ष का मैं शक्रगजार हूँ, जिन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया, मैं उनका आभार व्यक्त करता हूँ। प्रो. रमेश रावत का भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिनके अमूल्य विचारों से मैं निरन्तर लाभान्वित होता रहा। प्रो. अब्द अलीम के प्रति भी मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जो न केवल मुझे बल्कि सभी छात्रों को सदैव प्रोत्साहित करते रहे। भूतपूर्व विभाग अध्यक्ष प्रो. एम. ई. जबैरी ने सजनशीलता के नए क्षितिज से जोड़कर हमारे अन्दर मौलिकता और सक्रियता की ऊर्जा का संचार किया है। उनके योगदान को विस्मृत करना हमारी कतघ्नता ही कही जाएगी। डॉ. तसनीम सहैल, डॉ. मेराज अहमद, डॉ. इफ्फत असगर, वेद प्रकाश के प्रति भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने निरन्तर मेरा मार्ग दर्शन करने के साथ ही मौलिकता और सजनशीलता के प्रति रुझान बढ़ाया। प्रो. भरत सिंह, प्रो. आशिक अली, प्रो. आर. एन. शक्ल, श्री अजय बिसारिया और डा. देवेन्द्र कमा गप्ता के उत्साहवर्द्धन के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

इनके अतिरिक्त मेरे अन्य अभिन्न मित्रों में सरताज आलम, इमरान अर्ल वाजिद रशीद खान, जावेद आलम, तफैल खान, असरफ अली खान, शमीम अहमद, सेराज खान, आदि मित्रों का असीम सहयोग और प्रेम प्राप्त हुआ है।

विभागीय कर्मचारियों में परवेज बाजी. सेमिनार इंचार्ज. माज भाई. वहाब भाई. अशरफ भाई. शाहिद भाई. लकमान भाई के निरन्तर सहयोग के प्रति भी आभा व्यक्त करता हूँ ।

विषय से संबंधित सामग्री-संचयन का काम मैंने मौलाना आजाद लाइब्रेरी. (ए. एम. य.) से किया । यहाँ के कर्मचारियों के सहयोग के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ विशेष रूप से पीर मोहम्मद भाई. नदीम भाई. प्रेम शंकर भाई. नदीम भाई. के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ ।

शोध-प्रबन्ध की सन्दर टाइपिंग का श्रेय. बिसारत अली भाई का है. उन्होंने अपेक्षित समय में इस कार्य को कशलता पूर्वक सम्पन्न किया. उनके सहयोग के लिए उन्हें हार्दिक धन्यवाद

इसके बाद जिन्होंने मेरी परवरिश की उनको मैं कैसे भल सकता हूँ. जिसमे मेरे अब्ब और अम्मी हैं । उनकी दआएँ और प्यार सदा मेरे साथ हैं । इसके बाद बड़े अब्ब. छोटे अब्ब. और मेरे छोटे भाई साजिद और शाहिद. छोटी बहन खालिदा और मस्तरी ने सहयोग और प्यार दिया ।

त्रटियाँ मानव जीवन की अभिन्न अंग हैं । कहा जाता है. कि जो मनष्य गलती करने से डरता है. वह कभी कोई नया कार्य नहीं कर सकता. इस शोध प्रबन्ध में भी त्रटियाँ हो सकती हैं । किसी भी त्रटि के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ ।

(शब्बीर अहमद खान)

शोध प्रबंध साग

जीवन के हर क्षेत्र में 'मल्य' शब्द का प्रयोग हमें दिखाई देता है। मल्य शब्द का प्रयोग अशिक्षित व्यक्ति से लेकर बौद्धिक या विद्वानों तक हमेशा किया जाता है। हर बार मल्य शब्द का प्रयोग किसी मर्त या अमर्त भाव के लिए होता है। वैसे देखा जाए तो मल्य किसी केन्द्रीय गणवत्ता का सचक है. परन्तु सामाजिक व्यवस्था वस्तुओं के विनिमय से लेकर मद्रा के चलन तक मल्य शब्द 'वस्तु की कीमत' के रूप में प्रचलित हो गया है। फिर भी चिन्तन जगत में मल्य आज भी वस्तु के भीतरी गण अथवा उपयोगकर्ता की अभीप्सा को पूर्ण करने की शक्ति का ही अर्थ देता है।

भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार मल्य तो मानवीय जीवन में उन्नति द्योतक हैं। जीवन में मल्य का प्रयोग उनकी मर्यादा को पार न करते हुए करना चाहिए और मुख्य बात यह है कि मल्य के मर्म की रक्षा होनी चाहिए नहीं तो इन्हीं मल्यों का विघटन होते देर नहीं लगेगी। भारतीय आचार्यों ने और ऋषि-मनियों ने भी जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए तथा परमानन्द की प्राप्ति के लिए परुषार्थ का निर्माण किया जिसे हम मल्य कहते हैं। ये परुषार्थ हैं। धर्म. अर्थ. काम. मोक्ष। इन्हीं चारों परुषार्थों के आधार पर ही भारतीय जीवन टिका हुआ है. और भारत में परुषार्थों के अनुसार जीवन व्यतीत किया जाता है। जीवन की समग्र उन्नति के लिए

इन परुषार्थों का अत्याधिक महत्त्व है।

संसार में मनष्यों ने मल्यों की संरचना की है जीवन को सचारु रूप से चलाने के लिए मल्यों के माध्यम से नियम की सृष्टि की गयी है। उन्हीं का प्रयोग परंपरागत रूप से होता चला गया जिनके माध्यम से मानव का विकास स्पष्ट होता है क्योंकि यग के अनुरूप मल्यों के व्यवहार में परिवर्तन होता रहा है। जीवन मल्यों का विकास वैयक्तिक स्तर से सामाजिक स्तर की दशा तक हुआ है। समाज अपनी जरूरत के अनुरूप मल्यों का निर्माण करता है परिवर्तन सृष्टि का अनिवार्य क्रम है। अतः नये यग में नये मल्यों का निर्माण आवश्यक हो जाता है।

समाज में जो नये मल्य हैं वे पराने मल्यों को तोड़कर समय-समय पर अपना रूप बदलते हैं आधुनिक यग में श्रद्धा. आस्था. करुणा. दया आदि भाव कम होने लगे हैं। जो त्रेता यग द्वापर यग के मल्य थे वे आधुनिक काल में आते-आते बदल गये। सत्य. अहिंसा. सहअस्तित्व. सहानुभूति इत्यादि सूक्ष्म मल्य परंपरागत समाज से प्राप्त होते हुए भी जीवन में उपयोग द्वारा ही परिणति और विकास हुआ है।

साहित्य और समाज का आपस में बहुत बड़ा घनिष्ठ संबंध है। साहित्य रं जीवन की अभिव्यक्ति होती है। जीवन का मशकिल इतिहास ही साहित्य का रूप लेता है। जीवन के शाश्वत मल्य सत्यं. शिवं. सुंदरम् तीनों की सामंजस्यपूर्ण प्रतिष्ठा ही सफलता की पराकाष्ठा है। सत्य उसकी आधार भूमि है. शिव उसका लक्ष्य और सुंदर

उस लक्ष्य तक पहुंचने का साधन है. 'हितैस सह सहित' कहकर साहित्य शब्द व्याख्याकारों ने उसमें स्वयं कल्याण भावना की प्रतिष्ठा की है। साहित्य स्थापित जीवन मूल्यों से संबंधित प्रश्नों का उत्तर अपने तरीके से देता है। जीवन-परिवर्तनशील है। परिवर्तनमान स्थितियों को साहित्यकार अपनी अन्तर्दृष्टि से देखता है। प्रचलित मूल्यों को अस्वीकार कर नये मूल्यों की रचना करता है। इस दृष्टि से साहित्य के मूल्य जीवन के मूल्यों के विरोधी नहीं हो सकते। भारतीय बद्धिमान जीवन मूल्यों को साहित्य की सर्वोच्च कसौटी मानते हैं।

साहित्य को मानव समाज के लिए उदात्त विचारों तथा तत्वों का विवेक करना होता है। 'मूल्य' शब्द समाज कल्याण या मानवहित वाले अर्थ तक ही सीमित नहीं रहता। वह तो साहित्य में 'शिव' के साथ-साथ सत्य और सन्दर की भी समाहित करता जाता है। जीवन लक्ष्य से जुड़े हुए जीवन मूल्यों की पहचान हम साहित्य के द्वारा कर सकते हैं।

आधुनिक हिंदी साहित्य में विविध विधाओं के अन्तर्गत मूल्यों की चर्चा की जाती है जिसमें से कहानी विधा के अन्तर्गत भी जीवन-मूल्यों की चर्चा विस्तृत रूप में की जा चुकी है। स्वतंत्रतापर्व और स्वतंत्रता के बाद में लिखी गयी कहानियों में यह बात दिखायी देती है कि स्वतंत्र्योत्तर काल में लिखी गयी कहानियों में विस्तृत रूप से यथार्थ के धरातल पर मानव जीवन के लिए उपयोगी एवं महत्वपूर्ण मूल्यों की चर्चा

समयक रूप में किया गया है।

आज कल की कहानी में काल्पनिकता को छोड़कर 'सत्य' को अपना आधार बनाया है। यह सत्य हमारी रुढ़ियों, परम्पराओं, मान्यताओं, रीति-रिवाजों के साथ-साथ मल्यों से जडा है। इसमें टटते हुए पारिवारिक संबंध, बनते हुए नवीन संबंध, नारी, आर्थिक संघर्ष, नारी का प्राचीन भावभूमि से निकलकर नवीन भावभूमि में प्रवेश मानव के अस्तित्व का प्रश्न आदि यथार्थ के कुछ आयाम हैं, जो कहानी साहित्य में अभिव्यक्त हुए हैं।

प्राचीन काल की कहानियाँ नैतिकता का प्रतिपादन करने वाली एवं उपदेश पूर्ण ही रही हैं। कहानी कला की दृष्टि से अविकसित होते हुए भी जीवन-मल्यों के प्रति समर्पित रह चकी है। चाहे भारतेन्दुकालीन कहानी से लेकर प्रेमचंद जी, प्रसाद जी की कहानियाँ हो अन्तर सिर्फ इतना ही रहा है, कि प्रेमचंद कालीन कहानियों में कहानीकार की दृष्टि आदर्शों पर अधिक टिकी है।

प्रेमचंद जी का यह यथार्थवादी नजरिया आगे चलकर हिंदी कहानी में एक सर्वमान्य सत्य बन गया। आरम्भिक कहानी में मल्यों का आग्रह जहाँ प्रत्यक्ष रहता था, वहाँ इस यग की कहानियों में यथार्थ के द्वारा मल्यों की स्थापना का प्रयास किया गया।

प्रेमचंदोत्तर कहानी अनेक स्रोतों में जैसे सामाजिक, वैयक्तिक मनोवैज्ञानिक

क्षेत्र में जीवन के अनेक आयामों को छूती है। इस काल में यशपाल, जैनेन्द्र, रांगेय राघव, भगवतीचरण वर्मा, अज्ञेय और विष्णु प्रभाकर आदि रचनाकारों ने कहानी के इस धारा को प्रवाहित किया है। हिंदी कहानी को एक नया मोड़ दिया है।

हिंदी साहित्य में आधुनिककाल में महिला कहानीकारों की संख्या में बहू भारी तादाद में वृद्धि हुई है। इससे पहले प्रेमचन्द यग में भी उषा देवी, कमला चौधरी, सत्यवती मलिक, सभद्रा कमारी चौहान, श्रीमती चन्द किरण सौनरिक्सा, श्रीम होमवती देवी आदि महिला कहानी लेखिकाएँ रही हैं।

महिला कहानीकारों की दो पीढ़ियाँ एक साथ सक्रिय हैं। पहली पीढ़ी में वे लेखिकाएँ हैं जो नयी कहानी के दौर के आस-पास से लिखती आ रही हैं। और दूसरी पीढ़ी में वे लेखिकाएँ आती हैं, जिन्होंने आठवें दशक में लिखना आरम्भ किया है। पहली पीढ़ी की लेखिकाओं में शशि प्रभा शास्त्री, शिवानी, कृष्णा सोबती, भण्डारी, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया आदि उल्लेखनीय हैं। दूसरी पीढ़ी में दीप्ति खण्डेलवाल, मणाल पाण्डेय, मदला गर्ग, चित्रा मदगल, राजी सेठ, मंजल भ मणिका मोहिनी, प्रतिभा वर्मा, सधा अरोड़ा, निरूपमा सोबती, सूर्य बाला, मेहरुन्सिसा परवेज, इन्दुबाला, अचला नागर आदि हैं।

इसके बाद भी एक और पीढ़ी उभर कर सामने आयी है। इसमें व अग्निहोत्री, चन्द्रकान्ता, कसम चतर्वेदी, ज्योत्सना मिलन, मैत्रेयी पण्पा, नमिता सिंह,

उषा किरण खान. कमल कुमार. नासिरा शर्मा. ऋता शक्ता. सारा राय. गीतांजलि श्री. लवलीन. मक्ता. अलका सरावगी. जया जादवानी. उर्मिला शिरीष. मध कांकरिया. रजनी गप्ता. अल्पना मिश्रा और दीपक शर्मा आदि उल्लेखनीय हैं।

हिंदी साहित्य में महिला कहानीकार तो अधिक हैं. लेकिन इसमें से ६ महिला कहानीकार ममता कालिया. मदला गर्ग. मेहरुन्निसा परवेज. कृष्णा अग्निहोत्री. चन्द्रकान्ता. मैत्रेयी पण्णा. नमिता सिंह और नासिरा शर्मा की कहानियों में जीवन मूल्य अधिक दिखायी देता है। इन कहानीकारों की कहानियों में अभिव्यक्त जीवन मूल्य मझे बहुत प्रभावित किए इसीलिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का शीर्षक हिन्दी-महिला कहानीकारों के कहानियों में अभिव्यक्त जीवन मूल्य (सन 1980 ई.— 2000 ई.) को मैंने चना।

प्रस्तुत शोध विषय को निम्नलिखित पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है।

1. समसामयिक समाज जीवन मूल्य के परिप्रेक्ष्य में।
2. हिन्दी-महिला कहानीकारों की कहानियों का सर्वेक्षण जीवन मूल्य के परिप्रेक्ष्य में
3. हिन्दी-महिला कहानीकारों की कहानियों में अभिव्यक्त सामाजिक मूल्य
4. हिन्दी-महिला कहानीकारों की कहानियों में अभिव्यक्त शैक्षणिक. राजनीति एवं आर्थिक मूल्य

5. हिन्दी-महिला कहानीकारों की कहानियों में अभिव्यक्त सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्य

उपसंहार

प्रथम अध्याय समसामयिक समाज जीवन मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में है।

अध्याय में मूल्यों की परिभाषा, प्रकार, विकास को दिखाते हुए समसामयिक सामाजिक, शैक्षणिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परिस्थितियों का जीवन मूल्य के परिप्रेक्ष्य में विवरण प्रस्तुत किया है।

द्वितीय अध्याय में महिला कहानीकारों की कहानियों का सर्वेक्षण जीवन मूल्य के परिप्रेक्ष्य में किया गया है, जिसमें, कृष्णा अग्निहोत्री, मदला गर्ग, चन्द्रकान्त, नमिता सिंह, नासिरा शर्मा, ममता कालिया, मेहरुन्निसा परवेज, मैत्रेयी पण्णा, वगैरह कहानियों को आधार बनाया है, इसमें से मैंने महिला कहानीकारों की दस कहानियों संग्रहों में से 54 कहानियों पर सर्वेक्षण भी किया है।

तृतीय अध्याय में हिन्दी के महिला कहानीकारों की कहानियों में अभिव्यक्त सामाजिक मूल्य है। इस अध्याय में जाति, परिवार, प्रेम, विवाह, विवाहेतर संबंध, नारी की स्थिति और वैयक्तिक, मानव एवं नैतिक मूल्यों से संबंधित सामाजिक जीवन मूल्यों के यथार्थ स्वरूप को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में हिन्दी-महिला कहानीकारों की कहानियों में अभिव्यक्त

शैक्षणिक राजनीतिक. आर्थिक जीवन मल्य है। इसमें शिक्षा का महत्व. स्त्री शिक्षा. अशिक्षा. शिक्षा व्यवस्था को दर्शाया है। राजनीतिक जीवन मल्य के अन्तर्गत नेता चनाव. सरकार. एवं भ्रष्ट प्रशासन व्यवस्था से संबंधित जीवन मल्यों पर प्रकाश डाला गया है। आर्थिक जीवन मल्य के अन्तर्गत निम्न मध्य उच्च वर्ग. शोषण बेरोजगारी को अभिव्यक्त किया गया है।

पंचम अध्याय में हिन्दी-महिला कहानीकारों की कहानियों में अभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक मल्य हैं। इसमें परम्परा. संस्कार. रीति-रिवाज. अंधविश्वास. गीत. तथा मेले. त्यौहार आदि सांस्कृतिक जीवन मल्यों का वर्णन है. ईश्वर धार्मिक विश्वास. नमाज. पजा. उपवास. फकीर. साध. सन्यासी. ज्यातिषी. सांप्रदायिक भावना. आदि धार्मिक जीवन मल्यों को प्रस्तुत किया गया है।

पंचम अध्याय के पश्चात उपसंहार है. जिसमें महिला कहानीकारों की कहानियों में अभिव्यक्त जीवन मल्य का उल्लेख करते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

(शब्बीर अहमद खान)

प्रथम अध्याय

1.0 समसामयिक समाज-जीवन मल्य के परिप्रेक्ष्य में

जीवन के हर क्षेत्र में 'मल्य' शब्द का प्रयोग हमें दिखाई देता है। मल्य शब्द का प्रयोग अशिक्षित व्यक्ति से लेकर बौद्धिक या विद्वानों तक हमेशा किया जाता है। हर बार मल्य शब्द का प्रयोग किसी मर्त या अमर्त भाव के लिए होता है। वैसे देखा जाए तो मल्य किसी केन्द्रीय गणवत्ता का सचक है, परन्तु सामाजिक व्यवस्था वस्तुओं के विनिमय से लेकर मद्रा के चलन तक मल्य शब्द 'वस्तु की कीमत' के रूप में प्रचलित हो गया है। फिर भी चिन्तन जगत में मल्य आज भी वस्तु के भीतरी गण अथवा उपयोगकर्ता की अभीप्सा को पूर्ण करने की शक्ति का ही अर्थ देता है।

सबसे पहले 'मल्य' शब्द वस्तुओं के लेन-देन में उनकी गणवत्ता और उपयोगिता की कसौटी के रूप में प्रयुक्त हुआ। मल्य शब्द का सामान्य अर्थ है किसी भी वस्तु के गणों को मापने की कसौटी। परम्परागत संकेतार्थ की दृष्टि से देखा जाए 'मल्य' का अर्थ है किसी वस्तु या कार्य के बदले में दी जाने वाली राशी 'मत' कहलाती है। अब मल्य शब्द का अर्थ व्यापक हो गया है। अब इसका वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक स्तर पर सम्पूर्ण मानव व्यवहार के मानदण्ड के रूप में किया जाता है। मल्य की सार्थकता तभी है, जब वह मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करे। यदि उसकी उपयोगिता समाप्त हो गयी तो उसमें परिवर्तन भी किया जा सकता है। इसका मतलब है, स्थूल रूप में मल्यों : मानवीय आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन सम्भव है।

मल्य शब्द धीरे-धीरे अपने गौरव के आधार पर व्यापक अर्थों में प्रयुक्त होने

लगा है। मल्य का सम्बन्ध केवल भौतिक वस्तुओं तक ही सीमित नहीं रहा। परन्तु यह शब्द जीवन के सभी पक्षों के साथ जुड़कर भाव जगत से भी स्थापित हुआ है। इस प्रकार मल्य का रूप मर्त से अमर्त हुआ है। और इसमें जीवन के सूक्ष्म तत्वों का भी समावेश हुआ है।

1.1 मल्य शब्द की व्युत्पत्ति

‘मल्य’ शब्द “मल-यत्”¹ से निर्माण हुआ है। जिसका मतलब है— किसी वस्तु के विनिमय में दिया जाने वाला धन, दाम अथवा कीमत। मल्य शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत व्याकरण के आधार पर इस प्रकार मानी गयी है। “मलेन समो मल्यः”² इसका अर्थ है, मल के समान। मल्य शब्द के लिए अंग्रेजी में “वैल्य” प्रयुक्त होता है।

यगों-यगों से मल्य शब्द का प्रयोग किया जा रहा है। परन्तु अर्थ परिवर्तन के कारण मल्य शब्द के अर्थ में भी विस्तार हुआ है। जीवन मल्य में वह क्षमता होती है कि मानवी जीवन को मल्यवान बना सके। मल्यों का निर्माण तो मानव के साथ-साथ हुआ है। मल्य मानव का अविभाज्य ऐसे घटक हैं। यदि मल्य का अन्त हो गया तो मानवता भी नष्ट हो जाएगी।

विभिन्न विद्वान ‘मल्य’ शब्द का सम्बन्ध दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, समाजविज्ञान, अर्थविज्ञान, सौन्दर्यशास्त्र और राजनीतिक विज्ञान आदि विभिन्न ज्ञान शाखाओं के साथ मानते हैं। इस प्रकार ‘मल्य’ शब्द कीमत, आवश्यकता, प्रेरणा, नीति, आदर्श, परुषार्थ, अनशासन और प्रतिमान जैसे अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है। इसलिए इन शब्दों के अर्थ के बारे में अधिक सावधानी रखनी चाहिए।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल में ‘मल्य’ शब्द की व्युत्पत्ति के साथ जो अर्थ सामने आया, आज उस अर्थ के साथ अनेक अर्थों व

निर्माण हुआ है। स्थल, काल का प्रभाव अर्थ पर पड़ा है और इसी कारण ; परिवर्तन हुआ है। फिर भी मल्य शब्द का सूक्ष्म अध्ययन करने के लिए मल्य शब्द के व्युत्पत्ति तक जाना उतना ही अनिवार्य है।

1.2 मल्य की परिभाषा

मल्य शब्द को व्यापक एवं सूक्ष्मता से परखने के लिए मल्य की विभिन्न परिभाषाओं को समझना भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

मल्य और प्रतिमान समानार्थी शब्द हैं। दोनों ही मानव-निर्मित निकष कसौटियाँ हैं, जिनके सहारे साहित्य की परख की जाती है। मनष्य चूँकि पहले व्यक्ति है, इकाई है, उसके अपने कुछ मल्य होते हैं। परन्तु व्यक्ति-मनष्य एक व मानव-समाज का परिवार, नगर, प्रदेश, प्रान्त, राष्ट्र या संसार का सदस्य, नागरिक सामाजिक विशेष होकर सामान्य अंग भी है, अतः उसके प्रत्येक विचार, कर्म और कल्पना में मल्य का प्रश्न बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाता है—

मल्यों की टकराहट (या समाहार) परिवार से बड़े जाति, महल्ला, नगर, समाज, राष्ट्र या भाषा-दल या अन्य प्रकार के गटों की संस्थाओं के मल्यों से होती है। व्यक्ति बनता है, बिगड़ता है, बिखरता है। उसके साहित्य-मल्य भी उसी मात्रा में बन बिगड़ते, बिखरते जाते हैं। इन सब विविध मल्यों के बाद भी एक बड़ा मल्य बच रहता है। जो एक प्रकार से इन सबका सार है, और वह है मानवीय मल्य। यद्यपि मानवतावाद को भी विशेषणों से परिभाषित किया गया है। यथा वैज्ञानिक क्रांतिकारी, नृत्य आदि, मानवीय मल्य ही अन्ततः साहित्य में विवेक के बढ़ाने की दिशा सहायक हो सकते हैं।

रमेश कंतल मेघ के अनुसार— “मल्यों का आविर्भाव सामाजिक मनष्य के

व्यवहारिक क्रियाशीलता में होता है. जब वह वातावरण और आवश्यकता का सक्रिय साक्षात्कार करता है।”³

फिलॉसफी. एन डंटोउकशन. रेंडाल और बश्लर भूमिका से— “हम सवर्ण के आर्थिक मल्य. रिवाज के धार्मिक मल्य. दानशीलता के नैतिक मल्य. कविता सौंदर्यात्मक मल्य की चर्चा करते हैं। अतएव मल्य के भिन्न-भिन्न प्रकार हैं. वस्तुतः शभ के ही प्राकारांतर है। परंतु एक दृष्टिकोण से जो शभ है. वह दूसरे से शभ नहीं भी हो सकता।”⁴

प्रोफेसर जान लेयर्ड के अनुसार— “मैं सोचता हूँ. के नवलतर सिद्धान्तों का अभ्युदय आंशिक रूप से तो आर्थिक मल्यों के समावेश से और आंशिक रूप दार्शनिकों द्वारा होता है।”⁵

डॉ० रामस्वरूप चतर्वेदी के अनुसार— “मानव-मल्य कुछ विशिष्ट होते हैं. कुछ सामान्य और उनका संबंध निश्चय ही सांस्कृतिक और भौगोलिक दोनों पक्षों में होगा. जैसे— मनष्य मात्र बहत से संदर्भों में एक-दूसरे के समान हैं. पर उतने ही एक-दूसरे के विशिष्ट भी हैं। यही स्थिति मानव-मल्यों की भी होगी।”⁶

नामवर सिंह के अनुसार— “शाश्वतवाद और परिवर्तनवाद दोनों के बीच एक तीसरी स्थिति होती है। परिवर्तन के बीच नैरंतर्य। यह भी जोड़ना चाहता हूँ कि मल्य स्वयं बदलते नहीं है. इनको बदलना पड़ता है। उनके लिए जबरदस्त संघर्ष हो है।”⁷

जैनेन्द्र के अनुसार— “मेरा अपना मानना यह है कि आदमी जीता है. और अंत में मरता है. तो मल्य अंत नहीं है। मल्य ध्येय है। अर्थात् परम मल्य है। अपने का प्रत्येक क्षण मल्य में मिलाते रहना- मतलब. स्वयं होकर न जीना। विराट के अन्दर

अपने को लीन कर देना। स्वेच्छा से अपनी मृत्यु मान लेना। अब हमारे यहां एव शब्द प्रचलित है। इसका मतलब यह है कि आरंभ में जो आप जन्मे थे, वह समाप्त हो चका। अब दूसरा जन्म है, जो कि अब अपना नहीं है। समर्पित जीवन है। तो यह जो आत्मार्पण या आत्म-विसर्जन है, इसको मैं चरम मृत्यु समझता हूँ।”⁸

भवानी प्रसाद मिश्रा के अनुसार— “मानवीय मृत्यु चंकि-निरपेक्ष नहीं मानव सापेक्ष है, इसलिए वे उसके सांस्कृतिक और भौगोलिक परिवेशों से प्रभावित होते हैं। इसीलिए हम देखते हैं कि विभिन्न देशों में मृत्यों की एक रूपता नहीं पायी जाती। एक ही देश में भी यह अलगाव दिखायी देता है। किंतु उस अलगाव व संबंध केवल भौगोलिक परिवेश से नहीं होता, धार्मिक मान्यताओं और उससे उत्पन्न पंजा-पद्धतियों से होता है।”⁹

अज्ञेय के अनुसार— “मैंने मनष्य की जो परिभाषा की है, उसको ध्यान में रखते हुए तो यही कहना होगा कि मृत्यु की अवधारणा मनष्य तक ही सीमित है। मेरी परिभाषा में मनष्य ही ऐसा प्राणी है, जो प्रतीकों की सृष्टि करता है, जिसके पास भाषा है- सार्थक भाषा है, जिसके बिना मृत्यों की अवधारणा नहीं होती। और मनष्य ही पहला ऐसा प्राणी है, जो यह प्रश्न पछ सकता है, कि मैं कौन हूँ, क्या हूँ और क्यों हूँ। जिससे कि मृत्यों की अवधारणा का प्रश्न बनियादी तौर पर जडा हुआ है। यदि यह परिभाषा ठीक है, तो यह मानना होगा कि मनष्य ही पहला ऐसा प्राणी है, जिसके लिए मृत्यों की अवधारणा आवश्यक भी है और सम्भव भी है।”¹⁰

गोविन्द चंद पांडेय के अनुसार— “मृत्यु के संबंध में पहले यह स्मरणीय है, कि मृत्यु स्वयं कोई स्वतंत्र विषय नहीं होते हैं। मृत्यु न सिर्फ विकल्पनात्मक होते हैं, मृत्यु एक प्रकार की अपरोक्ष चेतना होती है। जिसमें यह चेतना अविवादित है।

आवश्यक रूप से परिशोध्य नहीं हो सकती।”¹¹

“मल्यों का एक आयाम उनकी संप्रेषणीयता होती है। यह संप्रेषणीयता ई समाज को प्रभावित करती है। जहाँ तक मल्यात्मक अनभति दसरो के लिए संप्रेषणीय होती है. वहां तक अवश्य ही उसमें सामाजिकता का आयाम भी रहता है। साथ ही साथ जहां तक वह औपाधिक होती है. वहां भी सामाजिकता का आयाम आवश्यक रूप से रहता है।”

पाश्चात्य विद्वानों ने भी ‘मल्य’ शब्द को परिभाषित करने का प्रयास किया है। मल्यों को सर्वश्रेष्ठ मानते हुए ‘अर्बन’ महोदय ने मल्य की परिभाषा करते हुए लिखा है कि “ऐसी कोई भी वस्तु मल्य हो सकती है. जो जीवन को आगे बढ़ाती है. और सरक्षित करती है।”¹²

‘अर्बन’ ने जीवन की हर एक वस्तु को मल्य की उपमा दे दी है. क्योंकि हर एक वस्तु का जीवन में महत्त्व होता है। उसी प्रकार जीवन में तरक्की करने के लिए और जीवन सरक्षित करने के लिए भी मल्य का होना अति आवश्यक है।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री ‘वडस’ के अनुसार “मल्य दैनिक जीवन में व्यवहार को नियन्त्रित करने के सामान्य सिद्धान्त हैं। मल्य केवल मानव व्यवहार की । निर्धारण ही नहीं करते. बल्कि अपने आप में आदर्श और उद्देश्य भी होते हैं।”¹³

इस परिभाषा का अर्थ है. कि समाज में मौजूद मल्य सिर्फ मानव विकास ही नहीं करते बल्कि मानव पर अंकुश भी लगाते हैं। इस कारण मानव समा मानवीय कल्याण की भावना से शिष्ट आचरण भी करता है। हिन्दी के विद्वानों ने भी मल्य की परिभाषा स्पष्ट की है। डॉ० प्रभाकर माचवे ने मल्यों को ‘नीतिशास्त्रीय वैल्य’ का पर्यायवाची मानते हुए कहा है कि “मानवीय क्रियाओं में आचार व्यवहार

अच्छाई या शिवत्व की मल्य क्या है. यही नीति शास्त्र का विषय है।”¹⁴

डॉ० प्रभाकर माचवे ने नीतिशास्त्र की कसौटी पर मल्यों को नापा है।

श्री प्र.ग. सहस्त्रबद्धे ने मल्य की परिभाषा इस प्रकार स्पष्ट की है— “उन्नतिशील व्यक्ति एवं राष्ट्र की कछ कसौटियाँ हैं। उन कसौटियों पर जो खरे उतरे वे ही तर गए. जीवन की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए. जिन्हें आवश्यक गणांक मिल न सके. वे फिसल गये. अनत्तीर्ण हुए। ये जो आवश्यक गण हैं। उन्हीं को श्री मदभगवद गीता में ‘देवी सम्पन्न’ के नाम से सम्बोधित किया गया है। आधुनिक परिभाषा में इन्हीं को जीवन मल्य कहते हैं।”¹⁵

श्री प्र.ग. सहस्त्रबद्धे के मतानुसार व्यक्ति को प्रगतिशील बनाने के लिए जो कसौटियाँ होती हैं. उन्हें ही हम मल्य कह सकते हैं

1.3 मल्य का स्वरूप

भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार मल्य तो मानवीय जीवन में उन्नति दयोतक हैं। जीवन में मल्य का प्रयोग उनकी मर्यादा को पार न करते हुए करना चाहिए और मुख्य बात यह है कि मल्य के मर्म की रक्षा होनी चाहिए नहीं तो इन्हीं मल्यों का विघटन होते देर नहीं लगेगी। भारतीय आचार्यों ने और ऋषि-मनियों ने भी जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए तथा परमानन्द की प्राप्ति के लिए परुषार्थ का निर्माण किया जिसे हम मल्य कहते हैं। ये परुषार्थ हैं। धर्म. अर्थ. काम. मोक्ष। इन्हीं चारों परुषार्थों के आधार पर ही भारतीय जीवन टिका हुआ है. और भारत में परुषार्थों के अनुसार जीवन व्यतीत किया जाता है। जीवन की समग्र उन्नति के लिए इन परुषार्थों का अत्याधिक महत्त्व है। परुषार्थ के बारे में गौरी शंकर भट्ट के विचार इस प्रकार हैं— “परुषार्थ वस्ततः एक साधना है। जिसमें धर्म के आधार पर काम

(इहलौकिक जीवन) की साधना करते हुए पारलौकिक जीवन को साधने का प्रयास निहित है। परुषार्थ अभ्युदय तथा निश्चयेयस की साधना का मन्यत्व है।”

गौरी शंकर भट्ट के अनुसार यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने ‘काम मत् प्रेरणा’ को भी परुषार्थ (मल्य) का स्थान दिया है। जिसका आधार लेकर साधना के द्वारा हम जीवन के अन्तिम लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। बल्कि काम इस परुषार्थ का प्रयोग उचित धर्म के मार्ग के अनुसार ही करना आवश्यक है। चार परुषार्थ यह एक प्रकार के चार सोपान हैं जिसकी सहायता से साधना के बल पर हम परमानन्द को प्राप्त कर सकते हैं।

जीवन मल्यों की निर्मिती का मूल उद्देश्य जीवन उत्कर्ष ही है। जीवन विषय में रविन्द्रनाथ ठाकर कहते हैं— “जीवन को ठीक उसी प्रकार समय पथ पर चलने देना चाहिए जिस प्रकार वनस्पतियों पर ओस बिन्द पलकते हैं।”¹⁶

रविन्द्रनाथ ठाकर के मतानुसार जीवन सहजता से जीना चाहिए। स्वाभाविकता होनी चाहिए। तभी जीवन में सौन्दर्य प्रस्थापित हो सकते हैं। इसलिए जीवन में स्वाभाविकता का होना ही निष्पापकता, निरागसता कहलाती है, जो मल्यों के रूप में जानी जाती है। मल्य का स्वरूप देखने के बाद यह बात स्पष्ट होती है। कि मल्य एक प्राचीन परम्परा है, जो हमारी संस्कृति से जड़ी हई है। मल्यों में काल, स्थान के अनुसार, अलग-अलग परिवर्तन हुए हैं, लेकिन प्राचीन भारतीय मल्यों का महत्त्व हमेशा कायम रहेगा। परिवर्तन सृष्टि का नियम है, तो मल्य उससे अच्छे कैसे रहेंगे? वैज्ञानिकता, आधुनिकता के कारण मल्य संक्रमित हुए, फिर भी आज सा अखिल विश्व को तारने के लिए भारतीय शाश्वत मल्य ही काम आ सकते हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं।

1.4 मल्य के प्रकार

मल्य को जाँचने-परखने के लिए 'मल्य' शब्द के हर पहल का अध्ययन हम सक्षमता से कर रहे हैं। जीवन के उत्कर्ष में मल्य महत्त्वपूर्ण हैं। परन्तु मल्य अध्ययन करना भी उतना ही अनिवार्य है।

डॉ० देवराज उपाध्याय कहते हैं—“मनष्य अपना कर्ता स्वयं है। अर्थों तथा मल्यों का निर्णायक भी वही है।”¹⁷

डॉ० उपाध्याय के कथन से यह स्पष्ट होता है। कि पराने जमाने में मल्यों का निर्धारण मानव खद नहीं कर सकता था। बल्कि मल्यों के निर्धारण के अधिव राज्य, धर्म, समाज को ही था। आज मनष्य स्वयं अपने मल्य का निर्माण कर सकता है। और उसके अनुसार बर्ताव भी कर कसता है।

डॉ० वैजनाथ सिंहल के अनुसार—“मानव जिस दिशा और जिस रूप में जीवनोपयोगी नया खोजता है। उसी के अनुसार नए-नए मल्यों की स्थापना करत रहता है। उसका यह अन्वेषण क्रम जारी रहता है।”¹⁸

मतलब मनष्य ने ज्यों मल्यों की खोज की उसका एक मात्र उद्देश्य : अस्तित्व की रक्षा। वास्तविकता तो सब है। कि अस्तित्व रक्षा को ही हम 'अन्तिम मल्य' भी कह सकते हैं। और बाकी बचे हुए सभी मल्य मानवीय अस्तित्व को सखमय, सन्दर एवं उदात्त बनाने में जडे हुए हैं।

समाज के अलग-अलग क्षेत्रों के अनुसार मल्यों के अनेक भेद किये जा सकते हैं। जैसे— सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक आदि

‘हिन्दी विश्वकोश’ में भी मल्यों के दो भेद स्पष्ट किये हैं। अन्तःवर्ती और बहिर्वर्ती¹⁹ लेकिन इस वर्गीकरण में यह स्पष्ट नहीं किया गया है। कि अन्तःवर्ती और

बहवर्ती मल्यों के अन्तर्गत कौन से मल्य आते हैं. इसलिए यह वर्गीकरण भी पूर्ण नहीं है।

अर्बन ने मल्यों का वर्गीकरण करते हुए मल्यों को आठ वर्गों में विभाजित किया है।

शरीर विषयक मल्य सामाजिक मल्य आध्यात्मिक मल्य

- | | | |
|----------------------|---------------------|---------------------------------|
| 1. शरीरात्मक मल्य | 1. सामाजिक मल्य | 1. सौंदर्यात्मक मल्य |
| 2. आर्थिक मल्य | 2. चरित्रात्मक मल्य | 2. बौद्धिक मल्य |
| 3. मनोरंजनात्मक मल्य | | 3. धार्मिक एवं ईश्वर विषयक मल्य |

अर्बन के अनुसार मल्यों की तीन प्रमुख श्रेणियाँ हैं।²⁰

अर्बन के वर्गीकरण से यह स्पष्ट होता है. कि शरीर विषयक मल्य में उन्होंने जीवन में निजी अस्तित्व के लिए आवश्यक मल्यों का समावेश किया है। सामाजिक मल्य में समाज व्यवस्था के लिए आवश्यक मल्यों का समावेश किया है। चरित्रात्मक मल्य जो समाज व्यवस्था सलभ रहने के लिए जरूरी है. उसका प्रयोग भी इस मल्य में किया गया है। तीसरे वर्ग में आध्यात्मिक मल्य आते हैं। लौकिक उन्नति के बाद अलौकिक उन्नति के लिए यह मल्य अत्यावश्यक हैं जो परमानन्द की प्राप्ति करा सकते हैं। इस प्रकार उनके द्वारा किया गया वर्गीकरण तलनात्मक रूप में कछ हद तक योग्य लगता है।

डॉ० आर. एम. देशमुख ने भी मल्यों को वर्गीकृत किया है—“मेरी दृष्टि में मल्यों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

1. शाश्वत मल्य 2. परिवर्तनीय मल्य हम शाश्वत मल्य को स्थिर भी कहते हैं. लेकिन कछ मल्यों में समय के साथ परिवर्तन आता है। उन्हें बदलते मल्यों के पंक्ति में रखा

जा सकता है।”²¹

मल्य

शाश्वत मल्य		बदलते मल्य
साध्य मल्य		साधन मल्य
1. सौन्दर्यात्मक	2. नैतिक मल्य	जैविक मल्य अतिजैविक मल्य
सत्यम	त्याग	
शिवम	समर्पण	आर्थिक मल्य
सन्दरम	अहिंसा	शोषण मक्ति
	करुणा	आर्थिक समता
	उदारता सेवा	रोजगार के समान अवसर
सामाजिक मल्य	आध्यात्मिक मल्य	राजनीतिक मल्य
समता	जप-तप. निषेध विधि पालन. राष्ट्रीयता	
स्वतन्त्रता	आस्तिकता. आनन्द. मोक्ष	कर्तव्य-परायणता

डॉ० देशमुख के वर्गीकरण को देखने के बाद यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने मल्यों का वर्गीकरण अत्यन्त सक्षमता से किया है। सभी जीवन मल्यों को विशिष्ट ढाँचे में सम्मिलित करने का प्रयास किया है।

अनेक विद्वानों के बताये हुए मल्यों के प्रकारों का अध्ययन करने के बाद मझे मल्यों को ‘स्थल रूप’ से इस प्रकार विभाजित करना उचित लगता है।

- | | | |
|-----------------------|------------------|--------------------|
| 1. सौन्दर्यात्मक मल्य | 2. नैतिक मल्य | 3. आर्थिक मल्य |
| 4. सामाजिक मल्य | 5. राजनीतिक मल्य | 6. आध्यात्मिक मल्य |

1.5 मल्य का विकास

संसार में मनष्यों ने मल्यों की संरचना की है जीवन को सचारू रूप से चलाने के लिए मल्यों के माध्यम से नियम की सष्टि की गयी है। उन्हीं का प्रयोग परंपरागत रूप से होता चला गया जिनके माध्यम से मानव का विकास स्पष्ट होता है क्योंकि यग के अनरूप मल्यों के व्यवहार में परिवर्तन होता रहा है। जीवन मल्यों का विकास वैयक्तिक स्तर से सामाजिक स्तर की दशा तक हुआ है। समाज अपनी जरूरत के अनरूप मल्यों का निर्माण करता है परिवर्तन सष्टि का अनिवार्य क्रम है। अतः नये यग में नये मल्यों का निर्माण आवश्यक हो जाता है।

समाज में जो नये मल्य हैं वे पराने मल्यों को तोड़कर समय-समय पर अपना रूप बदलते हैं आधुनिक यग में श्रद्धा, आस्था, करुणा, दया आदि भाव कम होने लगे हैं। जो त्रेता यग द्वारा यग के मल्य थे वे आधुनिक मल्य आते-आते बदल गये। सत्य, अहिंसा, सहअस्तित्व, सहानुभूति इत्यादि सूक्ष्म मल्य परंपरागत समाज से प्राप्त होते हुए भी जीवन में उपयोग द्वारा ही परिणति और विकास हुआ है।

मनुष्य सर्वप्रथम समाज के मल्यों का अर्जन करता है। व्यक्ति के विकास के साथ मल्यों को अपने जीवन में स्वीकार करने का प्रयत्न करता है। मल्यों का यह विकास समाज के विभिन्न घटकों द्वारा उभरता है। भारतीय समाज में ई परिवार, परिवेश तथा साहित्य के माध्यम मल्यों का विकास होता है। आने वाले पीढ़ियों में मल्य का विकास, मानव मल्य के आचरण एवं उचित मल्यों के लक्ष्य एवं आदर्शों का अनुशीलन से शिक्षालय में अध्यापकों द्वारा बालक में स्वतः ही उस विकास काल में होता रहता है। बालक, परिवार स्कूल में और समाज में जो कुछ पक्षपात, निष्पक्षता, विषमता, समता, शुद्धता, बेईमानी, ईमानदारी तथा तोड़-फो

सहयोग की बातें देखता है और सनता है उसे ग्रहण करता है

शिक्षा के माध्यम

मल्य परक शिक्षा मल्यों पर आधारित शिक्षा होती है. जिसमें अनौपचारिक रूप से श्रेयस्कर मल्यों की शिक्षा प्रदान की जाती है। इस प्रकार प्रत्येक राष्ट्र के निजी उदात्त कल्याण की ओर से विश्व का कल्याण होता है। नैतिक शिक्षा के बारे में महात्मा गांधी के विचार हैं कि—हृदय की शिक्षा प्रदान करना ही शिक्षा का प्रधान कार्य है और इसी में शिक्षा की सार्थकता निहित है। विद्यालय में ही अधिक समय विद्यार्थी व्यतीत करता है।

परिवार के माध्यम

परिवार में मल्यपरक शिक्षा का बीज पड़ता है। विद्यालय तो उसे पल्लवित करते हैं और समाज के अन्य अभिकरणों जैसे—मीडिया, साहित्य, मित्र मण्डली और वातावरण आदि उसे सात्त्विक रूप प्रदान कर सकते हैं। बालक का घर और परिवार ही प्रथम पाठशाला होता है। परिवार संस्कृति का मुख्य बिन्दु है. आदर्शों का पालन स्थल एवं निर्माण का स्थल है. परोपकार की भावना को विकसित करने वाला पर्व विद्यालय और मानव प्रकृति की शिशुशाला परिवार ही माना जाता है।

1.6 मल्यों का महत्व

किसी भी समाज में आदत या आचरण को जमानों के बाद भी आचरित होते देखें तो उसे श्रेष्ठ गण मानना पड़ता है। मल्यों के द्वारा सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि विघटन को रोका जा सकता है अज्ञेय के अनुसार—मल्यों का प्रश्न केवल आयामों के लिए महत्व रखता है: ऐसी नहीं। साहित्य के प्रत्येक अध्येता के लिए वह एक गरुत्तर प्रश्न है और लेखक वं

लिए तो उसकी मौलिकता असंदिग्ध है क्योंकि कतिकार अपनी कति का सबसे पहला और सबसे अधिक निर्मम परीक्षक है।

भारतीय नीति संबंधी विचार

भारत में प्राचीन काल से नीति संबंधी धारणाएँ भारतीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विद्यमान हैं। हिंदी साहित्य कोश के अनुसार—समाज के स्वस्थ एवं संतलित पथ पर अग्रसर करने एवं व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की उचित रीति से प्राप्ति करने के लिए जिन विधि निषेध मलक सामाजिक, व्यावहारिक, आचारिक, धार्मिक तथा राजनीतिक आदि नियमों का विधान देश-काल और पात्र के संदर्भ में किए जाता है। उसे नीति शब्द से अभिहित करते हैं।”²²

1.7 साहित्य और मल्य

साहित्य और समाज का आपस में बहुत बड़ा घनिष्ठ संबंध है। साहित्य रं जीवन की अभिव्यक्ति होती है। जीवन का मशिकल इतिहास ही साहित्य का रूप लेता है। जीवन के शाश्वत मल्य सत्यं, शिवं, संदरम तीनों की सामंजस्यपूर्ण प्रतिष्ठा र्ह सफलता की पराकाष्ठा है। सत्य उसकी आधार भूमि है, शिव उसका लक्ष्य और संदर उस लक्ष्य तक पहुंचने का साधन है, ‘हितेस सह सहित’ कहकर साहित्य शब्द र व्याख्याकारों ने उसमें स्वयं कल्याण भावना की प्रतिष्ठा की है। साहित्य स्थापि जीवन मल्यों से संबंधित प्रश्नों का उत्तर अपने तरीके से देता है। जीवन-परिवर्तनशील है। परिवर्तनमान स्थितियों को साहित्यकार अपनी अन्तर्दृष्टि से देखता है। प्रचलित मल्यों को अस्वीकार कर नये मल्यों की रचना करता है। इस दृष्टि से साहित्य के मल्य जीवन के मल्यों के विरोधी नहीं हो सकते। भारतीय बद्धिव जीवन मल्यों को साहित्य की सर्वोच्च कसौटी मानते हैं।

साहित्य को मानव समाज के लिए उदात्त विचारों तथा तत्वों का विवेक करना होता है। 'मल्य' शब्द समाज कल्याण या मानवहित वाले अर्थ तक ही सीमित नहीं रहता। वह तो साहित्य में 'शिव' के साथ-साथ सत्य और सन्दर की भी समाहित करता जाता है। जीवन लक्ष्य से जड़े हुए जीवन मल्यों की पहचान हम साहित्य के द्वारा कर सकते हैं। इस संदर्भ में डॉ. रघवंश का वक्तव्य है कि 'रचनाकार समाज की सम्पूर्ण व्यवस्था के विरुद्ध खड़े होकर, उसके समस्त मल्यों को नकारकर प्रतिष्ठित आदर्शों को चनौती देकर भी अपनी रचना प्रक्रिया में किन्हीं न किन्हीं मल्यों व भूमिका प्रस्तुत करता ही है।'²³

साहित्य के मल्य जीवन की उस मल्यवन्ता के प्रतीक होते हैं। जिन्हें कोई यग सहर्ष स्वीकार करता है। साहित्य में मानव-जीवन संबंधी मल्यों की ही चर्चा व जाती है, जो समाज के लिए उपयोगी साबित हो।

1.8 आधुनिक हिंदी कहानियों में जीवन-मल्य

आधुनिक हिंदी साहित्य में विविध विधाओं के अन्तर्गत मल्यों की चर्चा की जाती है। जिसमें से कहानी विधा के अन्तर्गत भी जीवन-मल्यों की चर्चा विस्तृत रूप में की जा चुकी है। स्वतंत्रतापर्व और स्वतंत्रता के बाद में लिखी गयी कहानियों में यह बात दिखायी देती है कि स्वतंत्र्योत्तर काल में लिखी गयी कहानियों में विस्तृत रूप से यथार्थ के धरातल पर मानव जीवन के लिए उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण मल्यों की चर्चा समयक रूप में किया गया है।

आज कल की कहानी में काल्पनिकता को छोड़कर 'सत्य' को अपना आधार बनाया है। यह सत्य हमारी रुढ़ियों, परम्पराओं, मान्यताओं, रीति-रिवाजों के साथ-साथ मल्यों से जुड़ा है। इसमें टूटते हुए पारिवारिक संबंध, बनते हुए नवीन संबंध, नारी,

आर्थिक संघर्ष. नारी का प्राचीन भावभूमि से निकलकर नवीन भावभूमि में प्रवेश मानव के अस्तित्व का प्रश्न आदि यथार्थ के कछ आयाम हैं. जो कहानी साहित्य में अभिव्यक्त हुए हैं।

साहित्यकार परे तौर पर समाज के प्रति समर्पित होता है। वह अपनी रचनाओं के माध्यम से जीवन-मूल्यों को साहित्य. कर्म के दायित्व को निभाता है। साहित्य की अन्य विधाओं में से 'कहानी' विधा मूल्यों के प्रति समर्पित रह चुकी है।

कहानी का प्रारम्भ ही इसी उद्देश्य से हुआ है। प्राचीन काल की कहानियाँ नैतिकता का प्रतिपादन करने वाली एवं उपदेश पूर्ण ही रही है। कहानी कला के दृष्टि से अविकसित होते हुए भी जीवन-मूल्यों के प्रति समर्पित रह चुकी है। चाण्डाल भारतेन्दुकालीन कहानी से लेकर प्रेमचंद जी. प्रसाद जी की कहानियाँ हो अन्तर सिर्फ इतना ही रहा है. कि प्रेमचंद कालीन कहानियों में कहानीकार की दृष्टि आदर्शों पर अधिक टिकी है। ज्यादातर कहानियाँ मानव चरित्र की उदात्तता चित्रित करती और समाज सधारकों की भाँति सधारवादी दृष्टिकोण से निहित हैं। इस परम्परा में सदरशन. राधिकारमण प्रसाद सिंह और गलेरी जी आदि आते हैं।

प्रेमचंदोत्तर काल में हिंदी कहानी में नया मोड़ आया अब तक की कहानि आदर्शपरक-कल्पना पर आधारित थी। किन्तु अब कहानी धीरे-धीरे यथार्थ की ओर मडी। इस परिवर्तन के उन्नायक स्वयं प्रेमचंद ही थे। प्रेमचंद जी का यह यथार्थवादी नजरिया आगे चलकर हिंदी कहानी में एक सर्वमान्य सत्य बन गया। आरम्भिक कहानी में मूल्यों का आग्रह जहाँ प्रत्यक्ष रहता था. वहाँ इस यग की कहानियों यथार्थ के द्वारा मूल्यों की स्थापना का प्रयास किया गया। वस्तुतः साहित्यकार बगैर जीवन मूल्यों का आग्रही हुए समाज को कछ नहीं दे सकता। जहाँ वह सत्य है

पराजय दिखाता है. वहाँ भी उसका उद्देश्य सत्य की वकालत करना ही होता है। चौथे और पाँचवे दशक की कहानियों में यह प्रवृत्ति उत्तरोत्तर स्पष्ट होती गई है।

प्रेमचंदोत्तर कहानी अनेक स्रोतों में जैसे सामाजिक, वैयक्तिक मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में जीवन के अनेक आयामों को छूती है। इस काल में यशपाल, जैनेन्द्र, रांगेय राघव, भगवतीचरण वर्मा, अज्ञेय और विष्णु प्रभाकर आदि रचनाकारों ने कहानी के इस धारा को प्रवाहित किया है। हिंदी कहानी को एक नया मोड़ दिया है। कहानी विधा ने मल्यों के प्रति अपनी आस्थाओं को प्रत्यक्ष नहीं तो अप्रत्यक्ष शैली में व्यक्त किया है।

स्वतंत्रता के बाद धीरे-धीरे समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया के साथ-स साहित्यिक प्रवृत्तियों में भी परिवर्तन प्रारम्भ हुआ। आजादी की उपलब्धि के ब जनता में नवीन आशा, आकांक्षाओं का नया संचार किया। आजादी के बाद भारतीय जनता की एक ऐसी मानसिकता हो गयी थी, जिसमें राष्ट्र के नेताओं के प्रति अगाध विश्वास था, कि आजादी मिलते ही देश की जनता की आर्थिक और सामाजिक मक्ति मिलेगी, परन्तु आजादी मिलते ही भारत विभाजन के रक्तरंजित इतिहास ने सबसे पहले भारतीय जनता का मोहभंग किया, करोड़ों शरणार्थियों के पुनर्वास की समस्या, देशी रियासतों के विलय का प्रश्न, यगों-यगों से टटी हुई अर्थव्यवस्था को सधारने की जरूरत और न जाने कितने ही प्रश्न जो भारतीय जनता से जुड़े हुए थे। उन्हें जिस आर्थिक व सामाजिक मक्ति की आशा थी, वह पूर्ण न होते देखकर उनका धैर्य समाप्त हो गया। भारतीय जनता ने देश के जिन नेताओं को ईश्वर के समान मानकर पूजा की थी। वे नेता ही उनके लिए सबसे बड़े शोषक सिद्ध हुए। भारतीय राजनीति जीवन-मलों से निरन्तर दूर होती गयी। 'राजनीति' नेताओं के लिए व्यापार

बन गयी।

डॉ० भैरूलाल गर्ग के अनुसार—“इन समस्त परिस्थितियों ने व्यक्ति को बहिर्मखी से अन्तर्मखी और सामाजिक से वैयक्तिक बना दिया. व्यक्ति आत्मकेन्द्रित हो गयी या वह स्वहित को ही सर्वोपरि समझने लगा। अवसरवादिता. स्वार्थान्धता. बेईमान भ्रष्टाचार और स्वहित ने देश में गहरी अव्यवस्था उत्पन्न कर दी। देशवासियों का नैतिक पतन और व्यर्थ की नारेबाजी ने गाँधी जी के राम राज्य को स्वप्न बना दिया। चहँ ओर कण्ठा. निराशा. संत्रास और दिग्भ्रम की स्थिति दिखलायी देने लगी थी।”²⁴

आधुनिक साहित्य में 1960 ई० तक आते व्यवस्था के प्रति जनता का मोह टूटता ही चला गया। इसीलिए सन 1960 के आस-पास का समय स्वतंत्र भारत ऐसा काल-बिन्द माना जा सकता है जहाँ पर भारतीय जनता का चिंतन-मनन का ढं बदलने लगा था. यहाँ आशा का स्थान निराशा ले रही थी। मोह के स्थान पर मोह भंग उपस्थित होने लगा था और कल्पनाशीलता और स्वप्न शीलता का स्थान यथार्थ की कड़वाहट ने ले लिया था। इसी व्यवस्था का परिणाम था कि देश में भाषावाद. प्रांतीयता. क्षेत्रीयता. साम्प्रदायिकता आदि को लेकर झगड़े प्रारम्भ हुए। इसी स्थिति को देखते हुए साहित्यकारों ने अपने साहित्य द्वारा जन-जागरण और सामाजिक परिवर्तन का प्रयत्न किया और आर्थिक तथा सामाजिक समस्याओं ने और विकराल रूप धारण किया। इस सन्दर्भ में कमलेश्वर का वक्तव्य है कि- “ऐसे ही समय में जब कि पुराने लेखकों के सज्जन स्रोत सूख रहे थे. और नया पाठक वर्ग बदलते मानव-मत्त्यों की अभिव्यक्ति चाह रहा था. नयी कहानी का उदय हुआ था।”²⁵

इस प्रकार सातवाँ दशक एक कसमसाहट के साथ आरम्भ हुआ. इसी परिणाम स्वरूप सातवें और उसके पश्चात के दशकों के साहित्य में विचारधारा का

जन्म हुआ। उसी की अभिव्यक्ति नयी कहानी में हुई। वैसे तो सातवा दशक यद्दों से आक्रान्त रहा। हमारे बजट का अधिकांश हिस्सा 'सैन्य बजट' में समाहित होता गया इसका दस्परिणाम यह हुआ कि हमारी पंचवर्षीय योजनाएं एक ओर औद्योगीकरण से जड़ी रहीं और दूसरी ओर औद्योगीकरण के दस्परिणाम के कारण हमारे पारम्परिक जीवन मल्य लड़खड़ा गये। इनकी चर्चा करते हए। कि— “समस्त वैज्ञानिक तथ भौतिक प्रगति के बावजूद भारतीय जन-जीवन स्वतंत्र्योत्तर काल में गरीबी, बेरोजगारी, सामाजिक मल्यहीनता, जड़ता का शिकार रहा है। क्योंकि भ्रष्टाचारी, अत्याचा विलासप्रिय नकली चेहरे तथा मखौटों को सत्ता मिली, जनता के हिस्से लगी, बेबसी, कातरता गरीबी और उदासीनता।”²⁶

एक तो सैन्य बजट ने प्रत्यक्ष करों को बढ़ावा दिया तथा भारी उद्योगों व स्थापना की इच्छा की। औद्योगीकरण ने निजी फैक्टर में मनाफा बढ़ाया। इर काला धन भी बढ़ा और भ्रष्टाचार में व्यापकता भी आई। इस नव समृद्ध ने नैतिकता को उतार फेंका और नयी पीढ़ी पश्चिमी रंग में रंग गयी। महानगरों की वि जनसंख्या ने बेकारी और निर्धनता को बढ़ावा दिया। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि वर्तमान कालीन स्थितियों में राष्ट्र, सरकारी कर्मचारी और मध्यवर्ग के सभी मल ध्वस्त हो गये।

इन परिस्थितियों का प्रभाव हमारी सामाजिक संरचना पर हुआ। सामाजिक परिवर्तन के इस क्रम में गाँवों की संस्कृति तेजी से समाप्त होने लगी। पारम्परिक जीवन-मल्य ध्वस्त होने लगे। हमारी सामाजिक संस्थाएँ चरमरा उठ संबंधों के लक्षण का प्रभाव परिवार के विघटन के रूप में प्रकट हुआ। इसीलिए इस युग के रचनाकारों ने परम्परागत मल्यों से मुक्ति पाकर नये मल्यों को अपनाना चाहा

जिनके द्वारा वह समता पर आधारित शोषण मुक्त और प्रगतिशील अर्थव्यवस्था की स्थापना कर सके। परिणाम स्वरूप जीवन दृष्टि में आमल परिवर्तन दिखाई देने लगा। इस बात को लेकर डॉ० भैरुलाल गर्ग अपना मतव्य देते हैं कि “अब तक की स्थिति से स्पष्ट है कि व्यक्ति स्वातंत्र्य, बंधत्व, मानव समानता, न्याय, प्रेम, यौन सम्बन्ध ही वे मूल्य हैं, जिनकी ओर नये कहानीकार का ध्यान आकर्षित हुआ है।”²⁷

आजादी के बाद कहानी ने चाहे अलग-अलग नाम धारण किए जैसे न कहानी, अकहानी, सचेतन कहानी, समान्तर कहानी, सक्रिय कहानी, जग कहानी, फिर भी इन सभी कहानियों के कथ्य में समानता पायी जाती है। सामाजिक स्तर पर चरमरा उठे ढाँचे का चित्रण करना परम्परागत जीवन मूल्यों, परिवर्तन, स्थिति, समयगति के अनुसार नवीन यग सापेक्ष मूल्यों की प्रतिष्ठापन करना यह उद्देश्य कहानीकारों के रह चुके हैं। इस दिशा में पुरुष कहानीकारों के समान महिला कहानीकारों का योगदान भी महत्वपूर्ण रहा है। प्रमुख रूप से महिला कहानीकारों ने पारिवारिक स्तर पर ढलते हुए जीवन मूल्यों की चर्चा समग्र रूप से अपनी कहानियों में की है। समाज का अभिन्न अंग परिवार है। संक्रान्तिकालीन परिवर्तित परिस्थितियों का मुख्य अभाव परिवार पर लक्षित होता हुआ दिखायी देता है। प्रेमचंद जी ने यथार्थ के माध्यम से जिस आदर्श की प्रतिष्ठापना करने का प्रयास किया है। वह परिवर्तित परिस्थितियों में यथार्थ पर अधिक बल देने लगे थे। प्रेमचंदोत्तर काल की कहानियों में पारिवारिकता के चित्रण एवं ढलते हुए मानवीय मूल्यों की चर्चा अधिक होती रही। यद्ध की विभीषिका औद्योगीकरण की अधिकता, पाश्चात्य जीवन प्रणाली का अंधानकरण, मोहभंग, बेकारी, निर्धनता, शिक्षा प्रसार साधनों की कमी, स्वार्थाधता, संकचितता आदि विविध घटकों ने पारिवारिक संस्थाओं को चनौती थी।

हिंदी साहित्य में चित्रित मल्यों की चर्चा मानवजीवन को सही रूप में हमारे सामने प्रतिबिम्बित करती है। भारतीय संस्कृति मल्यों पर टिकी है। मनष्य ने अपनी चिन्तन शक्ति द्वारा समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए दया, क्षमा, शान्ति, परोपकार, सेवा, समर्पण, त्याग, उदारता आदि मल्यों का आविष्कार करते हुए, 'सत्यं शिवमं सन्दरम' के रूप में शाश्वत मल्यों का निर्माण किया है। उसी लक्ष्य में एकमात्र मानव जाति का 'कल्याण' निहित है। साहित्य में इन्हीं मल्यों की चर्चा होती है 'साहित्य' शब्द की व्युत्पत्ति जन्य संज्ञा में ही 'हितेन सह सहितम' कहकर उपर्युक्त मल्यों की प्रतिष्ठा की गई है।

मल्य शब्द मनष्य के बाह्य जगत से लेकर आन्तरिक जगत के सत्य पक्ष का उदघाटक है। विविध विद्वानों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से मल्य को परिभाषित करने का प्रयास किया है। सामान्यतः मल्य शाश्वत होते हैं। वह एक सर्वसम्मत व्यवहार हैं, जिन्हें अपनाकर कोई भी व्यक्ति, जाति, समाज, राष्ट्र अपने सार्वजनिक जीवन को सन्दर बनाता है। मल्यों की विशेषता है कि कुछ मल्य शाश्वत होते हैं, तो कुछ कालसापेक्ष और देश सापेक्ष हैं। भारतीय दर्शन में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार परुषार्थों की चर्चा की गयी है। वे ही जीवन मल्य हैं। आज के वर्तमान युग में इन्हीं मल्यों के अन्तर्गत अन्य विविध मल्यों को जैसे सौन्दर्यात्मक, नैतिक, आ सामाजिक, आध्यात्मिक और राजनीतिक मल्यों को रखा गया है। मानव जीवन से संबंधित, मानव जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण यह मल्य काल और स्थान के अनुरूप परिवर्तित होते हैं। सामाजिक विघटन के साथ-साथ वह मल्य बनते हैं। टूटते हैं फिर भी इनका महत्त्व अक्षण्य है। हर एक समाज अपनी आवश्यकता के अनुसार इनका निर्माण करता है। भौतिक विकास आधुनिक नए जीवन दृष्टि, पाश्चात्य विच

प्रणाली के परिणामस्वरूप मूल्यों में परिवर्तन हो रहे हैं। विविध विद्वानों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से मूल्यों का वर्गीकरण किया है। जिनमें सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक आदि मूल्य हैं। साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है, इसलिए मानव जीवन का यथार्थ चित्रण उसमें होने से उपर्युक्त मूल्यों की चर्चा साहित्यकार करता है। अतः मानव जीवन से संबंधित जीवन मूल्यों की चर्चा साहित्य में होती है। कहानी साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। इसीलिए कहानी अन्तर्गत मानवीय जीवन से संबंधित जीवन मूल्यों की अभिव्यक्तिपूर्ण चर्चा सक्षमतर रूप में हुई है। साठोत्तरी काल की कहानी इन जीवन मूल्यों की चर्चा करने में अग्रसर है। हिंदी कहानी साहित्य में संक्रान्तिकालीन विघटित परिस्थितियों ने कहानीकार को सामाजिक विघटनकारी स्थितियों का ब्यौरा अपनी रचनाओं में चित्रित करने के लिए बाध्य किया है। जिन मानवीय मूल्यों पर हमारी संस्कृति स्थित थी, उनकी नींव क्यों? किस प्रकार? और कौन-कौन से कारणों से हिलने लगी है? इनका सक्षम अंकन पुरुष कहानीकारों के समान महिला कहानीकारों ने भी किया है

आज-कल की कहानियों पर विचार प्रकट करते हुए नामवर सिंह कहते हैं कि— “कल मिलाकर आज की कहानियों को देखते हुए यह निःसंदेह कहा सकता है कि हिन्दी कविता की अपेक्षा कहानी में स्वरूप सामाजिक शक्ति का अधिक है। और आज उपन्यास की तरह कहानी सामाजिक परिवर्तन के जोरदार साहित्यिक शस्त्र का काम कर रही है।”²⁸

1.9 हिंदी-महिला कहानीकारों की कहानियों में जीवन-मूल्य

हिंदी साहित्य में आधुनिककाल में महिला कहानीकारों की संख्या में बढ़

भारी तादाद में वृद्धि हुई है। इससे पहले प्रेमचन्द यग में भी उषा देवी, कमला चौधरी, सत्यवती मलिक, सभद्रा कमारी चौहान, श्रीमती चन्द किरण सौनरिक्सा, श्रीम होमवती देवी आदि महिला कहानी लेखिकाएं रही हैं।

महिला कहानीकारों की दो पीढ़ियां एक साथ सक्रिय हैं। पहली पीढ़ी में वे लेखिकाएँ हैं जो नयी कहानी के दौर के आस-पास से लिखती आ रही हैं। और दूसरी पीढ़ी में वे लेखिकाएं आती हैं, जिन्होंने आठवें दशक में लिखना आरम्भ किया है। पहली पीढ़ी की लेखिकाओं में शशि प्रभा शास्त्री, शिवानी, कृष्णा सोबती, * भण्डारी, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया आदि उल्लेखनीय हैं। दूसरी पीढ़ी में दीप्ति खण्डेलवाल मणाल पाण्डेय, मदला गर्ग, चित्रा मदगल, राजी सेठ, मंजल * मणिका मोहिनी, प्रतिभा वर्मा, सधा अरोड़ा, निरूपमा सोबती, सूर्य बाला, मेहरुन्सिसा परवेज, इन्दबाला, अचला नागर आदि हैं।

इसके बाद भी एक और पीढ़ी उभर कर सामने आयी है। इसमें * अग्निहोत्री, चन्द्रकान्ता, कसम चतर्वेदी, ज्योत्सना मिलन, मैत्रेयी पण्पा, नमिता सिंह, उषा किरण खान, कमल कुमार, नासिरा शर्मा, ऋता शक्ला, सारा राय, गीतांजलि श्री, लवलीन, मक्ता, अलका सरावगी, जया जादवानी, उर्मिला शिरीष, मध कांकरिया, रजनी गप्ता, अल्पना मिश्रा और दीपक शर्मा आदि उल्लेखनीय हैं।

हिंदी साहित्य में महिला कानीकार तो अधिक हैं, लेकिन इसमें से अ महिला कहानीकार ममता कालिया, मदला गर्ग, मेहरुन्सिसा परवेज, कृष्णा अग्निहोत्री, चन्द्रकान्ता, मैत्रेयी पण्पा, नमिता सिंह और नासिरा शर्मा की कहानियों में जीवन मल्य अधिक दिखायी देता है।

ममता कालिया

ममता कालिया कई कहानी संग्रह लिखी हैं. लेकिन मैंने उनकी कहानी संग्रह 'जाँच अभी जारी है' लिया है। जिसका प्रकाशन 1997 ई0 में हुआ था। इस कहानियों में. सामाजिक मल्य. धार्मिक मल्य. आर्थिक मल्य. सांस्कृतिक मल्य. सभी प्रकार से दिखायी देता है।

मदला गर्ग

मदला गर्ग जी ने भी बहुत सारे कहानी संग्रह लिखे हैं. लेकिन मैंने उनका कहानी संग्रह. 'शहर के नाम' (1990 ई0) को लिया है। इसमें इन्होंने आधुनिक जीवन के बदलते माहौल में परम्परागत नैतिक मूल्यों का विघटन. सामाजिक रिश्तों का खोखलापन. प्रेम और विवाह से संबंधित समस्याओं और जीवन-मूल्यों रेखांकित किया है।

मेहरुन्निसा परवेज

मेहरुन्निसा परवेज ने निम्न मध्यवर्ग के दुःख दर्द को शब्द मानवीय धरातल पर चित्रित करने वाली लोकप्रिय कहानी लेखिका हैं। इन्होंने ने भी कई कहानी संग्रह लिखा है. लेकिन मैंने इनका कहानी संग्रह 'अम्मा' को लिया है। इनकी कहानियों में. अंधविश्वास. आर्थिक तंगी 1977 ई0 में जीवन व्यतीत करने नौकरीपेशा लोगों का मानसिक तनाव. बेमेल विवाह की त्रासदी आदि मूल्यों को दर्शाया है।

कण्णा अग्निहोत्री

कण्णा अग्निहोत्री ने भी कई कहानी संग्रह लिखी हैं. लेकिन मैंने उनका कहानी संग्रह 'जिंदा आदमी' (1986 ई0) को चना है। इनकी कहानियों में वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के भीतर सभी स्तरों पर पिसती और प्रवंचित होती नारी की पीड़ा

के विरुद्ध गहरे क्षोभ और विद्रोह का स्वर मखरित हुआ है। इनके कहानियों सामाजिक मल्य, आर्थिक मल्य, और धार्मिक मल्य को दर्शाया गया है।

चन्द्रकान्ता

चन्द्रकान्ता ने भी बहुत सारी कहानी संग्रह लिखा है। लेकिन मैंने उन कहानी संग्रह ओ-सोनकिसरी 1991 ई० को चना है। उनकी कहानियों में, आर्थिक शोषण, गरीबी, बेरोजगारी को दर्शाया है। जीवन-मल्य टटते हुए दिखाए गये हैं

मैत्रेयी पण्णा

मैत्रेयी पण्णा ने भी कई सारी कहानी संग्रह लिखी हैं। जिसमें से मैंने 'गोमा हँसती है' 1998 ई० को शामिल किया है। उनकी कहानियों में सामाजिक जड़ता के प्रति गहरा आक्रोश है, राजनीति छद्म के पर्तों को उधेड़कर सच्चाई को उजा करने का साहस है। इसमें नारी के जीवन-मल्यों को उजागर किया है।

नमिता सिंह

नमिता सिंह ने भी कई सारी कहानी संग्रह लिखी हैं। लेकिन मैंने उ कहानी संग्रह 'जंगल गाथा' 1994 ई० और 'नील गाय की आँखें' 1997 ई० व शामिल किया है। उनकी कहानियों में मानवीय संबंधों की कोमलता, सरसता और मल्य धर्मिता का अन्तर्वर्ती स्रोत भी आपके यहां अभी रेत नहीं बन पाया है। इसमें ईमानदार कर्मचारियों का उत्पीड़न, बदलते आर्थिक समीकरण आदि जीवन-मल्यों को उजागर किया गया है।

नासिरा शर्मा

नासिरा शर्मा ने भी देश-काल, धर्म, जाति, सम्प्रदाय के भेदों से ऊपर बहुत सारी कहानी संग्रह लिखी हैं। जिसमें मैंने उनके दो कहानी संग्रह लिया है। 'सबीना

के चालीस चोर’- 1997 ई0. ‘खदा की वापसी’ 1998 ई0 मस्लिम की आर्थि सामाजिक. राजनीतिक. शैक्षणिक. सांस्कृतिक. धार्मिक. मल्यों का यथार्थ चि प्रस्तुत किया गया है।

महिला-कहानीकारों ने अपनी कहानियों में. सामाजिक मल्य. शैक्षणिक मल्य. राजनीतिक मल्य. आर्थिक मल्य. सांस्कृतिक मल्य. धार्मिक मल्य.को अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है जो समकालीन समाज में पायी जाती हैं।

1.10 समसामयिक परिस्थितियाँ-जीवन मल्य के संदर्भ में

भारतीय समाज में साहित्य सामाजिक. सांस्कृतिक. धार्मिक. शैक्षणिक. राजनीतिक तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप विकास करता है। जितनी तीव्रता से कहा साहित्य के माध्यम से इतिहास को वाणी दी जा सकती है. और किसी भी विधा में उतनी तीव्रता देखने में नहीं आती क्योंकि कहानी में ही किसी भी परिस्थितियाँ देख सकते हैं। साहित्यकार परिस्थितियों से जिस रूप में बाधित होता है. उसी को अपने कहानियों में परिवर्तित करता है।

1.10.1 सामाजिक परिस्थितियाँ-जीवन मल्य के संदर्भ में

समाज मनष्यों का समूह है। इसमें प्रत्येक मनष्य में आपसी संबंध होने व कारण एक-दसरे से बंधे रहते हैं। प्रत्येक मानव अपने आत्मविस्तार के लिए. अपनी सुरक्षा व संरक्षण के लिए इस बंधन में बंधे रहता है।

राइट के अनुसार— “मनष्य के समूह को समाज नहीं कहा जाता. अपित समूह के अन्तर्गत व्यक्तियों के संबंधों की व्यवस्था का नाम समाज है।”²⁹

व्यक्ति का जीवन और समाज का जीवन एक-दसरे को प्रभावित करते रहते हैं और इनमें से किसी का भी अस्तित्व एक-दसरे के बिना संभव नहीं है।

यह एक स्वीकृत सत्य है कि व्यक्ति की मानसिक प्रक्रियाओं, अनभवों तथा व्यवहारों पर उन विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है जिनमें कि व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक पलता व पनपता है या जिनमें उसे रहना पड़ता है।

शेरीफ के अनुसार-“सम्पूर्ण सामाजिक परिस्थिति व्यक्ति को प्रभावित नहीं करती वास्तव में संपूर्ण सामाजिक परिस्थिति के अनेक ऐसे पहल हो सकते हैं जिनसे व्यक्ति का न तो संबंध होता है और न ही जिनमें उसकी कोई रुचि होती है। इसलिए उनका प्रभाव भी व्यक्ति पर नहीं के बराबर ही होता है।”³⁰

ब्राउन के अनुसार-“सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तियों की पारस्परिक अन्तर्क्रियाओं पर अध्ययन करता है और इस बात की जाँच करता है कि इन अन्तर्क्रियाओं का व्यक्ति विशेष के विचारों, भावनाओं, उद्देश्यों और आदतों पर क्या प्रभाव पड़ता है।”³¹

किम्बल यंग के अनुसार-“सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तियों की पारस्परिक अन्तर्क्रियाओं का अध्ययन करता है और इस बात की जाँच करता है कि इन अन्तर्क्रियाओं का व्यक्ति विशेष के विचारों, भावनाओं, उद्देश्यों और आदतों पर क्या प्रभाव पड़ता है।”³²

आलपोर्ट के अनुसार-“सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तियों के अन्य व्यक्तियों के साथ संबंधों में एवं सामाजिक दशाओं में व्यवहार का अध्ययन करता है।”³³

1.10.1.1 जाति

भारत में ब्राह्मण यग में ब्राह्मणशास्त्र के विद्वानों ने अलग-अलग वर्णों के बीच मेल-मिलाप, शादी ब्याह और स्पृश्यता पर अधिक कठोर बंधन डाले जिसके परिणाम स्वरूप आगे चलकर हिंदू समाज भिन्न-भिन्न जातियों में बंट गया। अनलोम विवाह

में निम्न वर्ण की कन्या से विवाह होता है। उससे प्राप्त संतान को पिता का वंश मिलता था। प्रतिलोम विवाह में उच्च वर्ण की कन्या से निम्न वर्ण के पुरुष का विवाह होता है। इस प्रकार के विवाह के कारण जातियों की संख्या बढ़ने लगी।

राम अहजा का मन्तव्य है कि— “जातियाँ वंशानक्रम पर आधारित अन्तर्विवाही समूह हैं। जिनके निश्चित व्यवसाय होते हैं। खान-पान संबंधी निषेधों का पालन करते हैं। तथा अंतःक्रिया पर सामाजिक प्रतिबंधों को मानते हैं। भारत में लगभग तीस लाख जातियाँ हैं। इन जातियों को तीन श्रेणियों में बांटा गया है। उच्च जाति (जैसे ब्राह्मण, राजपूत, बनिया, कायस्थ आदि) मध्य जातियाँ (जैसे- अहीर, सनार, कर्मी), और निम्न जातियाँ (जैसे- चूड़ा, भंगी, रैगर आदि)। जातियाँ चार वर्णों से जोड़ी गयी हैं।”³⁴

जाति मनष्य को जन्म से ही प्राप्त होती है। उसे स्वभाव कर्म या गण से बदला नहीं जाता है। वर्ण-व्यवस्था से जातियाँ जड़ी है। आंद्रे बेतेड के अनुसार— “एक जाति व्यक्तियों का एक छोटा और विशेष नाम वाला एक ऐसा समूह है, जिसमें सजातीय विवाह, आनवंशिक सदस्यता और एक विशेष जीवन-शैली की विशेषता होती है। तथा जो परंपरा से चले आ रहे एक विशिष्ट व्यवसाय को करता है, और जिसे पवित्रता और अपवित्रता की अवधारणाओं पर आधारित श्रेणीबद्ध व्यवस्था में न्यूनतम रूप में एक विशिष्ट संस्कारिक परिस्थिति प्राप्त होती है।”³⁵

भारत में जाति उत्पत्ति के बारे में महात्मा ज्योतिबा फले के अनुसार “जाति व्यवस्था की निर्मिती ब्राह्मणों ने अपना अधिपत्य अबाधित रखने के लिए की है। ब्राह्मण भारत में बाहर से आए थे। भारत के मूल निवासी महार, मांग, आदिवासी, कनबी आदि को पराभूत कर अपना गलाम बनाया। भारतीय समाज (मूल निवासी)

जैस-जैसे बढ़ने लगा ब्राह्मण डरने लगे और अपना अधिपत्य बनाये रखने के लिए जाति व्यवस्था को बढ़ावा दिया। अपने अनकल ग्रंथ लिखे और अज्ञानी लोगों पर प्रभाव डालकर अपना गलाम बनाया।”³⁶

1.10.1.2 परिवार

दुनिया में ऐसा कोई समाज नहीं जिसमें परिवार न हो। जन्म से मृत्यु तक सारी गतिविधियाँ परिवार में होती हैं। व्युत्पत्ति की दृष्टि से हिंदी शब्द ‘परिवार’ अंग्रेज़ी भाषा के ‘फैमिली’ शब्द का रूपांतर है। यह लैटीन भाषा के ‘फैमिलिय’ शब्द से बना है।

डॉ० धर्मवीर महाजन के अनुसार—“फैमिलस का लैटिन अर्थ एक ऐसा समूह जिससे सभी सदस्य अर्थात् माता-पिता, संतान, यहाँ तक कि नौकर तथा गल इत्यादि।”³⁷

बीसन्ज एवं बीसन्ज का मन्तव्य है कि “परिवार मौलिक और सार्वभौम संस्था है। उस पर प्रत्येक समाज का अस्तित्व निर्भर है।” परिवार में ही मानव का जीवन आरंभ होता है। मृत्यु संस्कार करने का कार्य परिवार में आरम्भ होता है। परिवार का संबंध भावात्मक है। जो विवाह से जुड़ा है। वंश वृद्धि, आर्थिक सुरक्षा तथा सामाजिक नियंत्रण में परिवार सहायक होते हैं।

समष्टि

भारतीय समाज में परंपरागत रूप से संयुक्त परिवार का प्रचलन है। आजादी से पहले भारतीय परिवारों में संयुक्त परिवार का ही बोलबाला था। समष्टि की प्रथा भारतीय समाज में प्रत्येक धर्म के लोगों में पायी जाती है। संयुक्त परिवार के लोग अपने संयम, सहनशील और गंभीर चिंतन-मनन के कारण एक दूसरे का सहयोग

करते हैं। बच्चों के मानसिक विकास, विधवा, विवाह लायक कन्याओं आदि ; संयुक्त परिवार एक स्थान बनाकर रहता है।

व्यष्टि परिवार

आधुनिक युग में नगरीय पाश्चात्य सभ्यता, आधुनिकीकरण, बेरोजगारी अधिक शिक्षित होने के कारण समष्टि परिवार ने व्यष्टि का अभ्युदय कर दिया है। व्यक्ति की बौद्धिक चेतना ने समष्टि परिवार से एकांकी में परिणत कर दिया। आज एकांकी परिवार में भी स्थिरता नहीं है। माता-पिता अपना दायित्व बोध बच्चों में नहीं दे पाते हैं। निःसंतान के प्रति कोई मोह नहीं रहा है

1.10.1.3 प्रेम

प्रेम जात-पाँत, धर्म, वंश, कल, आय कछ भी नहीं मानता। प्रेम किसी से भी किसी भी जगह पर वक्त, बेवक्त न देखते हुए हो जाता है।

पुरुष और स्त्री के बीच उत्पन्न आकर्षण एवं मानसिक प्रभाव से प्रेम उत्पन्न होता है। भारतीय समाज प्रेम के विरुद्ध है प्रेम विवाह को भारतीय समाज अधिकतर स्वीकार नहीं करता। लड़का और लड़की के बीच उत्पन्न प्रेम को इनके माँ-बाप नहीं स्वीकारते हैं।

1.10.1.4 विवाह

समाज में विवाह के संबंध में प्रचलित विचार यह है कि यह स्त्री-पुरुष के बीच का संयोग है। भारतशास्त्री विवाह को एक संस्कार या एक धर्म मानते हैं। सभी व्यक्तियों को अपने जीवन में अनेक भूमिकाओं का निर्वाह करना होता है, या यह कहा जा सकता है कि जीवन अनेक भूमिकाओं का एक संयोग है, जिन्हें विवि

संस्थाओं के परिवेश में निभाना होता है।

विवाहेत्तर संबंध

भारतीय समाज में पहले ऐसा नहीं होता था। स्त्री-पुरुष का पवित्र रिश्ता होता था। लेकिन आधुनिक युग में विवाह के बाद भी पर स्त्री-पुरुष संबंध स्थापित हो रहे हैं। अविवाहित प्रेम संबंधों में विवाहोपरान्त प्रेम संबंध समाज में स्थापित हो रहे हैं।

दहेज

दहेज सामाजिक बर्राई है जो आजकल परे समाज में अपना वर्चस्व जमाये बैठा है। यह अधिनियम 20 मई 1961 को पारित हुआ। इस आशय का विधेयक 2 अप्रैल 1959 को तत्कालीन विधि मन्त्री श्री ए.के. सेन द्वारा लोक सभा में प्रस्तुत किया गया था। पारित भी हुआ लेकिन तब भी लोगों की स्थिति आज तक वैसे ही है।

विधवा-विवाह

प्राचीन काल में विधवाओं को पुनर्विवाह की अनुमति नहीं थी। मनु अनुसार—‘एक विधवा जो पुनर्विवाह करती है। स्वयं को अपमानित करती है। अतः उसे अपने स्वामी के स्थान से बाहर निकल जाना चाहिए।’ 1856 ई० के अधिनियम ने हिन्दू विधवाओं के विवाह में आने वाली सभी कानूनी अड़चनों को दूर कर दिया।

अनुमेल विवाह

संयुक्त परिवार में परिवार का ‘प्रधान’ ही एक मात्र अधिकारी होता है। अतः विवाह के संबंध में सन्तान की इच्छा का कोई महत्त्व नहीं होता। ‘उम्र की विषमता’ के कारण भी अनुमेल विवाह के बरे परिणाम सामने आते हैं। पुरुष की उम्र अधिक हो और नारी की उम्र कम वैसी स्थिति में नारी कभी भी अपने पति से सन्तुष्ट नहीं

रह पाती। अनमेल विवाह के कई कारण होते हैं। इनमें से दहेज प्रथा एक प्रमुख कारण है।

पनर्विवाह

भारतीय समाज में पनर्विवाह भी होता है। पनर्विवाह का तात्पर्य उस विवाह से है, जहाँ पति का पत्नी की मृत्यु के उपरान्त दूसरा विवाह कर लिया जाता है परन्तु वर्तमान युग में पति पत्नी के अलग होने पर दूसरा विवाह करते हैं। पनर्विवाह कहलाया जाता है।

बाल विवाह

भारतीय समाज में बाल विवाह का भी प्रचलन था। बाल विवाह अपराध है, लेकिन तब भी लोग नहीं मानते हैं। प्राचीन काल से चला आ रहा बाल-विवाह नारी के साथ हो रहे अन्यायों में से एक है। यह प्रचलन शिक्षित आधुनिक समाज में भी प्रचलित है।

1.10.1.5 नारी

भारतीय समाज में नारी का स्थान सदैव ऊँचा रहा है। ईश्वर को अर्धनारीश्वर कहा गया है। अर्थात् आधा पुरुष और आधा स्त्री माना गया है। मन ने कहा है कि 'जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता प्रसन्न होते हैं। और जहाँ अनादर होता है, वहाँ सारे कार्य निष्फल हो जाते हैं।'

प्राचीन काल में स्त्रियाँ वेदाध्ययन से भी वंचित नहीं थीं। यहां तक की शिक्षक का कार्य भी करती थीं। 'संस्कृत में पुरुष शिक्षकों और स्त्री शिक्षकों के लिए अलग-अलग शब्द बनाये गये हैं। 'उपाध्यायनिस' पुरुषों के लिए और 'उपाध्यायस स्त्रियों के लिए' शब्द है। यदि महिला शिक्षिकाएं अधिक न होती तो यह शब्द नहीं

गढ़ा जाता। नारी शिक्षा का प्राचीन काल में विशेष प्रचार था। कण्व के आश्रम में शकंतला, प्रियंवदा सभी शिक्षा पाती थीं।

वैदिक काल में स्त्रियों का पुरुषों के साथ बराबर का धर्माधिकार तो था ही, वे किसी अंश में स्वतन्त्र रह कर यद्ध, रथों की दौड़ आदि पुरुषोचित कार्यों में भी भाग लेती थी। उदाहरणार्थ ऋग्वेद में मंदगलानी का उल्लेख आता है। जिसने रथों की दौड़ में अपने पति के साथ भाग लिया था और पति को विजय प्राप्त कराने में सहायक हई थीं।

भारत में देवताओं की भी उनकी पत्नियों के साथ ही पजा की विधि निर्मित की गयी है। नारी को शक्ति का अवतार कहा गया है। यज्ञ के लिए नारी उपस्थिति अनिवार्य थी। इसलिए भगवान राम को यज्ञ में सीता की स्वर्ण-मूर्ति रखनी पड़ी।

मध्यकाल में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति हीन हो गयी। “स्त्रियों को घरों की चार-दीवारी के अन्दर बन्द करके रखा गया। उनका काम था घर गहस्थी के अन्दर रहकर घर का काम करना।”

आधुनिक यग के आगमन के साथ अनेक प्रकार की सधार संस्थाएं उ समाज सधारक उत्पन्न हो गये, जिन्होंने समाज सधार के अपने कार्यक्रमों में स्त्रियों की अवस्था में सधार को भी रखा। इन लोगों के प्रयत्नों से सती-प्रथा, बाल-विवाह, विधवा-विवाह, पर्दा, स्त्री-शिक्षा आदि के प्रश्नों का समाधान हो प्रारम्भ हुआ। सबसे अधिक प्रभाव गाँधी जी के राष्ट्रीय आन्दोलन का पड़ा। गाँधी जी के स्वयं तथा सधार संस्थाओं तथा सधारकों के प्रयत्नों से स्त्रियों की सामाजिक, आर्थिक, राजनी धार्मिक और शैक्षणिक अवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। स्त्रियों की समस्याओं

के समाधान के लिए कानन बनाये गए।

महिला हिंसा का एक वीभत्स रूप घरेलू हिंसा भी है, जिसे हम अधिक नजरअंदाज कर देते हैं। महिलाएं कभी पिता, कभी भाई, कभी पति कभी, प्रेमी या कभी अपने सहकर्मी के द्वारा हिंसा को झेलती हैं। लेकिन इस बात की शिकायत वे कभी नहीं करतीं। इसके पीछे ठोस कारण आर्थिक हैं, क्योंकि महिलाओं को अभी भी आत्मनिर्भर बनने नहीं दिया जाता और बहुत छोटी उम्र में उनकी शादी कर उन अधिकारों से वंचित किया जाता है।

केवल कानूनी प्रक्रियाओं पर निर्भर रहने के बजाय सभी जनतांत्रिक तबकों को बलात्कारियों और शोषण करने वालों को स्थानीय स्तर पर सजा देने के लिए लोगों को संगठित करना चाहिए।

लेकिन इन सबके अलावा दीर्घकाल में बलात्कार को दमन के औजार की तरह इस्तेमाल करने वाली पितृसत्ता से और वर्गीय शोषण से उसके संबंध को समझने का भरपूर प्रयत्न होना चाहिए।

अंत में, आंदोलन को समाज के आधारभूत ढांचे में बदलाव के लिए महिलाओं को संगठित करना ही चाहिए ताकि पितृसत्ता और उसके साथ बलात्कार का समल नाश हो सके।

मदला गर्ग के अनुसार— “स्त्री की रचनाशीलता पुरुष की रचनाशीलता से भिन्न तभी मानी जा सकती है, जब हम मान कर चलें कि स्त्री-पुरुष की संवेदनशक्ति के बीच नैसर्गिक अंतर होता है। ऐसा मानने के लिए मेरे पास कोई वैज्ञानिक या तर्कसम्मत कारण नहीं है। कुछ स्त्रियां अवश्य ऐसा मानती रही हैं। नारीवादी प्रारम्भिक दौर में इस मान्यता का खासा चलन था। पर जैसे-जैसे दृष्टि परिपक्व होती

गई. विचारों की समझ में आता गया कि इस मान्यता के पीछे भावावेग के सिवा कछ नहीं है।”³⁸

कानन झींगन के अनुसार—“भारत में स्वतंत्रता के बाद कई कानन पास हुए. पैतक संपत्ति में अधिकार दिलाने के लिए. घरेलू हिंसा और दहेज देने और लेने बलात्कार के विरुद्ध बनाए गए काननों के बावजूद क्या वस्तु-स्थिति में कोई विशेष सधार हुआ. इस पर विचार-विश्लेषण करने की आवश्यकता है।”³⁹

चंद्रकान्ता के अनुसार—“विपल मात्रा में रखा जा रहा स्त्री-लेखन इस बात का प्रमाण है. कि आज की नारी बदल रहे समय. समाज और उसके विरुद्ध. चनौतियों के प्रति सजग-सचेत है। जहां देह मक्ति की आवाज उठी है. वहीं स्त्री-पुरुष संबंधों में मैत्री और सौहार्द के लिए संघर्ष भी है। स्त्री-शोषण. बलात्कार की समस्या. आतंकवाद से उपजे विस्थापन. ग्रामीण स्त्रियों की समस्याओं और स्वचेतना. रुढ़ियों-बेड़ियों और व्यवस्था की अडचनों से भिड़ती आज की चेतना-संपन्न लेखिकाएं. स्व से परे व यात्राएं कर रही हैं। घरेलू से लेकर वैश्विक समस्याओं के प्रति सचेत लेखिकाएं अपनी समृद्ध सोच से साहित्य में अपनी भागीदारी निभा रही हैं।”⁴⁰

1.10.1.6 वैयक्तिक जीवन मूल्य

व्यक्ति और समाज में घनिष्ठ संबंध हैं। व्यक्ति का अपने माता-पिता वंशानुक्रमण द्वारा शारीरिक तथा मानसिक विशेषतायें प्राप्त होती रहती हैं। पर इन विशेषताओं का पूर्ण विकास समाज या सामाजिक परिस्थितियों में ही होता है। व्यक्ति के सामाजिक जीवन का आधार समाज ही है। आज समाज में व्यक्ति के दृष्टिकोण समय के साथ बदलता जा रहा है और उसके साथ मूल्यों में भी बदलाव आ रहे हैं। मगर अच्छे आदर्शपरक व्यक्ति के व्यक्तित्व मूल्य बढ़ते हुए अन्याय और

अत्याचार से भी नष्ट होते हैं।

परिवार के प्रति व्यक्ति की नैतिकता

आज आधुनिक चिंतन के प्रभाव से मूल्यों में अपने स्वार्थ के अनकल परिवर्तन व व्याख्या में करने लगे हैं। आज परिवार का हर सदस्य अपने बारे में सोचता है। वह स्वार्थी एवं आत्मसीमित भी हो गया है।

मानव मूल्य

नैतिकता का आधार मानव जीवन है और वह मानव जीवन को व्यसंतलित एवं विकसित करती हैं। यही कर्तव्य बोध का उद्देश्य करती हई उसके जीवन का नियम और उन्नयन करती है। महात्मा गांधी का मत था—‘सर्वोच्च नैतिक नियम है मानव मात्र की भलाई के लिए निरंतर कार्य करते रहना है’⁴¹ आदर्श व्यक्ति जीवन की व्यापकता विविधताओं, जटिलताओं और जीवन की समग्रता का प्रभावरूप से अपने में समाहित कर लेता है।

समसामयिक सामाजिक जीवन मूल्य भारतीय समाज का एक मुख्य आधार है जाति, परिवार, प्रेम, विवाह, नारी आदि से संबंधित मूल्य भारतीय समाज की प्रमुख अंग है। इन मूल्यों के बिना समाज का निर्माण असंभव है। समाज के कल्याण के लिये इन सामाजिक मूल्यों का संरक्षण आवश्यक है।

1.11 शैक्षणिक परिस्थितियाँ-जीवन मूल्य के संदर्भ में

शिक्षा मनुष्य के विकास के लिए एक प्रमुख साधन के रूप में नवजागरण से माना गया। समाज सधारक एवं संस्थाएं एवं शिक्षा के महत्त्व को समझाने में प्राचीन काल में धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन शिक्षा माना गया है। लेकिन विज्ञान, गणि, ज्योतिष, दर्शन की शिक्षा के रूप में समाज में लाने का प्रयास अंग्रेजी प्रशासन द्वारा

किया गया। स्वतंत्रता के बाद भारतवासियों का शिक्षा को महत्त्व और सरव नौकरियां मिलने लगी। स्त्री शिक्षा का भी प्रचार-प्रसार होने लगा। जैसे-जैसे प्राथमिक अध्ययन, उच्च शिक्षा का विकास भारत में हुआ भारतीय शिक्षा व्यवस्था में भी कई प्रकार के सधार आने लगे। इसके साथ-साथ शिक्षा व्यवस्था में भी भ्रष्टाचार फैलने लगा। आजादी के बाद भारत में शिक्षा के माध्यम से विज्ञान, गणित, ज्योतिषी, समाजशास्त्र अर्थशास्त्र आदि क्षेत्रों में विकास होने लगा, भारत अन्य देशों की बराबरी करने लगा, मगर पर्ण रूप से भारत के लोग शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। इसको शिक्षित करने के लिए भारत सरकार कई योजनाएं बना रही है

भारत में शिक्षा व्यवस्था में भ्रष्टाचार व्याप्त है। शिक्षा का स्तर निम्न से निम्न होता जा रहा है। “यद्यपि औपचारिक शिक्षा लोगों की अभिरुचियों और मल्यों में ज्ञान के परिवर्तन के माध्यम से वैचारिक परिवर्तन करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है, फिर भी समाज में संरचनात्मक परिवर्तन लाने में इसका प्रभाव सीमित ही है। ऐसा शिक्षा में विद्यमान प्रचलनों और कार्यविधियों तथा यथास्थिति में रुचि रखने वाले स्वार्थी लोगों के बीच संबंधों के कारण है।”⁴²

भारत में शैक्षणिक व्यवस्था की बहुत ही दयनीय स्थिति है। शिक्षा का स्तर निम्न से निम्नतर होता जा रहा है। सरकार भी इस तरफ ध्यान नहीं दे रही है। गाँवों में विद्यालयों के भवन भी सही नहीं हैं। इसी कारण दयनीय स्थिति है। शिक्षा व्यवस्था में भ्रष्टाचार फैलने लगा है। विद्यार्थी और शिक्षक भ्रष्टाचार के सहारे शिक्षा व्यवस्था का लाभ उठाने लगे हैं। सरकार द्वारा शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन आवश्यक है।

शैक्षणिक व्यवस्था में स्वतंत्रता के बाद खास परिवर्तन दिखाई दिया है। स्त्री शिक्षा में विकास दिखाई दिया है। लोग शैक्षणिक मल्यों को समझकर शिक्षित होने

के विचार प्रकट कर रहे हैं। मगर शिक्षा व्यवस्था में विशेष ध्यान की आवश्यकता है।

1.12 आर्थिक परिस्थितियाँ-जीवन मूल्य के संदर्भ में

किसी भी देश या क्षेत्र में सामान्य व्यक्ति के लिए अर्थ प्रधान है। भा स्वतंत्रता से पहले और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद मनष्य को आर्थिक परिस्थितियों से जझना पडा है। यह आर्थिक वैमनस्य सदा बरकरार रहेगा। स्वतंत्रता के पहले तक अंग्रेजी सरकार ने कषि की ओर ध्यान नहीं दिया। इससे गरीबी का दशचक्र चलता रहा और प्राकृतिक दष्टि से सम्पन्न राष्ट में गरीब लोग निवास करते रहे। अंग्रेजों के औद्योगिक विकास ने भारत में नये संस्कारों को पनपने की जगह दी है। देश आर्थिक दष्टि से जझने लगा है। आर्थिक विषमता ने गरीबी को बढावा दिया है।

1.12.1 उच्च वर्ग

देश विभाजन के पश्चात बडी संख्या में उच्चवर्गीय मुस्लिम समाज पाकिस्तान चला गया। जो यहाँ शेष रह गये उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय हो गयी परिणाम स्वरूप अभी आर्थिक स्थिति में सधार तो आया लेकिन इतना सधार नहीं आया जिस तरह से वे वह पहले थे. और सम्पन्न मुस्लिम अधिकांशतः व्यवसायिक क्षेत्रों में ही देखने को निम्न वर्ग मिलते हैं।

डा. बाब राम गप्त के अनुसार—‘इस वर्ग का जीवन मजदूरों के श्रम पर ही अवलंबित है। अपनी प्रपंच बद्धि और पैसे के बल पर यह वर्ग सरकारी मशीनरी का सहयोग प्राप्त कर जन सामान्य को आक्रांत करता है। यह अभिज किसानों-मजदूरों पर नशंसता व जल्मों का कहर ढहता रहता है।’⁴³

डा. उर्मिला गंभीर के अनुसार—‘पंजीवाद व्यक्तिक संपत्ति और पंजी का समर्थक है। मार्क्स के अनुसार—पंजीवादी सभ्यता एक संबंधों का अंत हो जाता है। पिता-पुत्र

पति-पत्नी, शिक्षक-शिष्य आदि के परंपरागत संबंध छिन्न-छिन्न हो जाते हैं। केवल अर्थमलक संबंध ही शेष रह जाते हैं। इस वर्ग में आवश्यकता से अधिक धन संपन्न लोग सम्मिलित हैं। प्रधानतः पंजी के स्वामी पंजीपति ही उच्च वर्ग का निर्माण करते हैं।⁴⁴

1.12.2 मध्य वर्ग

डॉ० वासदेव शर्मा कहते हैं कि “इन्होंने मध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ का चित्रण किया है। और समष्टिगत चिंतन से व्यक्ति चिन्तन की भाव-भूमि मान कर किया गया है। वे नयी कहानी में नयी जीवन-दृष्टि को महत्त्व देते हैं।”⁴⁵

हमारे कबीर के अनुसार—‘आधुनिक भारत का संभवतः सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य मध्यवर्ग का असंतुलन फैलाव है। संपूर्ण विश्व में मध्यवर्ग के लोग अशुभ आलोचक और व्यक्तिवादी हैं। ऐसी स्थिति के कारण उनकी आर्थिक दृष्टि डवांडोल है। वे अनुभव करते हैं कि उनके द्वारा सम्मानपूर्ण स्तर बनाये गए आवश्यक हैं जो प्रायः उनके साधनों की पहुँच से बाहर होता है। लगातार आर्थिक संघर्ष उनके जीवन के समस्त दृष्टिकोण पर प्रभाव डालता रहता है।’⁴⁶

उच्चवर्ग एवं निम्नवर्ग के बीच का वर्ग मध्यवर्ग कहलाता है। इनकी बौद्धिक विचारधारा उच्च वर्ग के समान होती है। परंतु आर्थिक अभाव के कारण उच्च वर्ग के समान जीवन यापन करने में प्रायः असमर्थ रहते हैं। मध्यवर्ग प्रगतिशील वर्ग है इस वर्ग के सहारे ही समाज उन्नतिशील बनता है।

हिंदी साहित्य कोश के अनुसार—‘मध्यवर्ग सामंती व्यवस्था में पाया नहीं जाता क्योंकि उस समय जमींदार और किसान का संबंध सीधा था किन्तु पंजीवादी आर्थिक व्यवस्था ने समाज को इतना जटिल कर दिया है कि एक मध्यवर्ग की भी आवश्यकता

हर्ड. जो इस जटिल व्यवस्था के संघटन सत्र को संभाल सके। इस वर्ग में नौकरी-पेशा. शिक्षक. क्लर्क और अन्य साधारण लोग आते हैं। मध्यवर्ग विशेषतः बद्धि प्रधान वर्ग माना गया है। और सामाजिक क्रांति के प्रायः समस्त विचारों का सर्जन मध्यवर्ग में ही होता है। मध्यवर्ग में भी दो भाग हैं-उच्च मध्यवर्ग और निम्न मध्यवर्ग।⁴⁷

1.12.3 निम्न वर्ग

निम्नवर्ग का अर्थ है समाज का वह भाग जो आर्थिक आधार पर उच्च : निम्न की ओर जाते हुए अंतिम व तीसरे स्तर पर आता है। हिंदी शब्द सागर : अनुसार—“निम्न वर्ग समाज का निचला और पिछड़ा हुआ वर्ग है समाज में आर्थिक दृष्टि से यह वर्ग निम्नतम रहता है। इस वर्ग के अंतर्गत समाज के वे लोग आते हैं जिनका जीवन उच्च व मध्यवर्ग की सेवा करने में परा हो जाता है। निम्नवर्ग मुख्यतः मजदूर. खेतिहर मजदूर. घरेलू नौकर. चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी इत्यादि आते हैं। समाज का सबसे अधिक पिछड़ा हुआ वर्ग निम्नवर्ग की श्रेणी में आता है। इस वर्ग का जीवन अत्यंत संघर्षपूर्ण होता है। सबसे अधिक शारीरिक परिश्रम करने के पश्चात दो जन की रोटी ही जटा पाता है। और कभी-कभी तो इसके लिए जददो-जहद करनी पड़ती है। परिवार के सभी सदस्य अथक परिश्रम में योगदान देते हैं।”⁴⁸

साहित्य कोश के अनुसार—“यह समाज का वह भाग है जो अपनी जीविका का उपार्जन श्रम से करता है और अधिकतर इस वर्ग का ही शोषण किया जाता है। इस वर्ग के अंतर्गत किसान मजदूर आते हैं।”⁴⁹

देव किशन चौहान के अनुसार—“यहाँ का निम्न वर्ग -श्रमिक तथा लघु किसान. यह अभी तक नहीं समझ पा रहा है कि उनकी निम्न स्थिति उच्च वर्ग द्वारा किए जा रहे

शोषण के कारण है।”⁵⁰

भारत जब स्वतंत्र हुआ तब जमींदारी पद्धति का उन्मूलन हुआ और उसका स्थान पर पंजीपति व्यवस्था बन गई। स्वतंत्र्यपूर्ण काल में गरीबों का शोषण जमींदार करते थे, और अब महाजन, सहकार करने लगे हैं। सिर्फ शोषण बदला है। पंजीपति लोगों के शोषण से त्रस्त गाँवों में रहने वाले किसान अपनी थोड़ी सी जमीन को भी अपने अधिकार में रखने में असमर्थ हैं। यही कारण है कि दरिद्रता, असहाय गरीबी, कृषकों के ऐसी पल्ले पड़ी है कि कभी वे इस जटिल समस्या से उभर नहीं सकते।

एन के महाला के अनुसार—“राज सत्ता की दमनकारी संस्थाओं एवं न्यायिक शक्तियों के सहयोग से इस वर्ग ने शोषण के जिन स्वरूपों को विकसित किया है। वे इतने अधिक प्रभावशाली हैं कि गाँव के मध्यम कृषक एवं अन्य लघु कृषक समूहों में इनकी राजनीति शक्ति को स्वीकार कर लिया है।”⁵¹

1.12.4 बेरोजगारी

‘बेरोजगारी व्यक्ति की उस अवस्था को कहा जाता है, जिसमें 1. वह कार्य करने के लिए योग्य हो, 2. उसकी कार्य करने की इच्छा हो, 3. वह कार्य की तलाश करता हो, 4. किन्तु उसे उपयुक्त कार्य न मिलता हो।’⁵²

भारतीय अर्थव्यवस्था में आजादी के बाद कोई विशेष सधार नहीं हुआ है उच्च वर्ग द्वारा निम्नवर्ग का शोषण होता आ रहा है। मध्यवर्ग और निम्न वर्ग व आर्थिक मूल्यों में कोई सधार नहीं हुआ है। बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। सरकारी योजनाएं पूर्णरूप से सफल नहीं हुए हैं।

1.13 राजनीतिक परिस्थितियाँ-जीवन मल्य के संदर्भ में

राजनीति का तात्पर्य है— राज्यों की नीति। प्राचीन भारत की शास्त्रीय दृष्टि के अनुसार राजनीति शब्द का निर्माण संस्कृत के 'राज्य' और नीति इन दो शब्दों के योग से हुआ है।

भारत में 1857 की राज क्रान्ति की असफलता के बाद देश में देशी राज्यों की राज्य व्यवस्था को समाप्त कर अंग्रेजी शासन व्यवस्था परी तरह फैल गयी। राजनीति समाज को सत्ता से शासित करते हैं। विद्यमान सत्ता व्यवस्था के अनुरूप कार्य करने को बाध्य करते हैं। और जो कतिपय सिद्धान्तों और कार्यविधियों आधार पर कार्य करते हैं।

1.13.1 नेता

'नेता' शब्द से उस व्यक्ति को सम्बोधन किया जाता है, जिसमें नेतृत्व करने की क्षमता होती है। अर्थात् व्यक्ति अपनी योग्यता, बुद्धि, प्रतिभा तथा शक्ति के अनुसार अन्य व्यक्तियों को प्रभावित तथा निर्देशित करता है, वह सामाजिक जीवन को समय विशेष पर नियोजित, नियंत्रित, संशोधित, परिवर्तित एवं पथ-प्रदर्शित करता है। साथ ही नेता अन्य व्यक्तियों के लिए आदर्श भी होता है।

हलियाकर, जियनदानी एवं कले के अनुसार— "नेता वह होता है, जो नेतृत्व करता है, मानने योग्य सलाह देता है, पथ-प्रदर्शन करता है, दूसरों के लिये आदर्श के रूप में कार्य करता है, सम्मति देता है और ऐसी आज्ञाएं देता है, जिनका सम्मान एवं पालन किया जाता है।"⁵³

1.13.2 चुनाव

आधुनिक काल में चुनाव एक बड़ी समस्या बनी है। आतंक, भ्रष्टा

खन-खराबा. जोड़-तोड़ की राजनीति प्रजातन्त्र का नासर बन चुका है। सत्ताधारी वर्ग अर्थ व्यवस्था. सामाजिक स्थिति को प्रभावित करता है। भारत में ग्रामीण जीवन में भी राजनीति और चुनाव को लेकर स्वार्थ परता और भ्रष्टाचारी प्रवृत्ति हर दल में हर स्तर पर पनप रही है। इससे नैतिक मूल्य टूट रहे हैं। जागतिकरण. उदारीकरण निजीकरण तथा अकाल. भ्रष्टाचार. कृषि की दयव्यवस्था. बेकारी. भ्रष्टाचारी. कपोषण नकसलवाद. आतंकवाद. दहशतवाद. गंडागर्दी आदि प्रश्न भारत में गंभीर रूप धारण कर चुके हैं। “आधुनिक प्रजातन्त्र एक अप्रत्यक्ष अथवा प्रतिनिधित्व प्रजातन्त्र है जिसमें लोग शासन के कार्यों में सीधे या प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं लेते. इसकी जगह वे नियत समय पर अपने प्रतिनिधियों का चयन करते हैं।”⁵⁴

राजनीति व्यवस्था संबंधित मूल्यों में स्वतंत्रता के बाद परिवर्तन हुआ लेकिन परिवर्तन में मूल्य बिगड़े दिखाई देते हैं। क्षेत्रवाद. जातिवाद आदि नेताओं को प्रभावित कर रहे हैं। चुनाव व्यवस्था में भी भ्रष्ट मूल्य दिखाई देते हैं। राजनीति मूल्यों में परिवर्तन की आवश्यकता है।

1.13.3 सरकारी-व्यवस्था

भारत में सरकारी व्यवस्था पूरी तरह से भ्रष्ट हो गया है। आज हर व व्यक्ति शासन व्यवस्था में पद. धन या अन्य प्रलोभन के लिए अनेक भ्रष्ट कार्य कर रहा है। जिससे शासन व्यवस्था में उथल-पथल. उग्रवाद. हिंसा आदि का बोलबाला चल रहा है। यही शाश्वत मूल्यों का विनाश करता है।

भ्रष्टाचार— सरकारी व्यवस्था

भ्रष्टाचार भारत में आधुनिक समय में सबसे बड़ी समस्या उभरकर साम आयी है। भारत में भ्रष्टाचार और गरीबी बहुत मात्रा में है। राजनीति. अधिकारी

पलिस तथा अन्य लोग भ्रष्टाचार करते हैं। “सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार सामाजिक हितों पर गंभीर आघात करता है. और कानन इसे परे समाज को चोट पहुँचाने वाले गंभीर अनैतिक कृत्य के तौर पर अपराध का दर्जा देता है। कानन के अनपालन और लागू करने में राजनैतिक, नैतिक इच्छा शक्ति के अभाव के कारण शीर्षस्थ नेताओं, मंत्रियों को उनके अपराधों की सजा मिलना दर की कौड़ी जान पड़ता है।”⁵⁵

भारतीय समाज में राजनीति, प्रशासकीय क्षेत्र, सरकारी कार्यालय, पत्र-न्यायालय, स्थानीय प्रशासन आर्थिक क्षेत्र, सामाजिक क्षेत्र, धार्मिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार पाया जाता है। यह जीवन मूल्यों के विघटन का प्रमुख कारण है।

1.14 सांस्कृतिक परिस्थितियाँ-जीवन मूल्य के संदर्भ में

संसार में आस्था और विश्वास को ही संस्कृति का नाम दिया जा सकता है। संस्कृति संस्कार जनित होती है। संस्कृति मनष्य को प्रभावित करती है, और वह अपनी विचारधारा बनाती है। संस्कृति और परम्परा द्वारा प्रदत्त मूल्यों का भी प्रयोग और विकास होता है। मन को, हृदय को तथा उनकी कृतियों को संस्कार के द्वारा सधारना तथा उदात्त बनाना ही अच्छे संस्कार का रूप है। संस्कृति में ज्ञान, संस्कार, विश्वास, कला, आचरण, कानन, समाज की प्रथाएं इत्यादि सम्मिलित हैं।

संस्कृति शब्द सम उपसर्ग के साथ संस्कृति की (ङ) क (ज) धातु से बनता है, जिसका मूल अर्थ साफ या परिष्कृत करना है। आज की हिन्दी में यह अंग्रेजी शब्द ‘क्लचर’ का यथार्थ माना जाता है। संस्कृति शब्द का प्रयोग कम से कम दो अर्थों में होता है, एक व्यापक और एक संकीर्ण अर्थ में। व्यापक अर्थ में उक्त शब्द का प्रयोग नर विज्ञान में किया जाता है। उक्त व्यवहार का नाम है, जो सामाजिक परम्परा से प्राप्त होता है। इस अर्थ में संस्कृति को ‘सामाजिक प्रथा’ (कस्टम) का पर्याय भी कहा

जाता है। संकीर्ण अर्थ में संस्कृति एक वांछनीय वस्तु मानी जाती है। और संस्कृति व्यक्ति एक कलाध्य व्यक्ति समझा जाता है। इस अर्थ में संस्कृति प्रायः उन गणों का समुदाय समझी जाती है, जो व्यक्तित्व को परिष्कृत एवं समृद्ध बनाते नर-विज्ञानियों के अनुसार 'संस्कृति' और 'सभ्यता' शब्द पर्यायवाची हैं।

हमारी समझ में संस्कृति और सभ्यता में अन्तर किया जाना चाहिये। सभ्यता से तात्पर्य उन आविष्कारों, उत्पादन के साधनों एवं सामाजिक-राजनीतिक संस्थाओं से समझना चाहिये, जिनके द्वारा मनष्य की जीवन-यात्रा सरल एवं स्वतन्त्रता का मार्ग प्रशस्त होता है। इसके विपरीत संस्कृति का अर्थ चिन्तन तथा कलात्मक सर्जन की वे क्रियाएँ समझनी चाहिये, जो मानव व्यक्तित्व और जीवन के लिए साक्षात् उपयोगी न होते हुए उसे समृद्ध बनाने वाली है।

इस दृष्टि से हम विभिन्न शास्त्रों, दर्शन आदि में होने वाले चिन्तन, साहित्य, चित्रांकन आदि कलाओं एवं परहित साधन आदि नैतिक आदर्शों तथा व्यापारों को संस्कृतिकी संज्ञा देंगे। मोक्ष धर्म अथवा पर्णत्व की खोज भी संस्कृति का अंग मानी जायगी। थोड़े शब्दों में और व्यापक अर्थ में किसी देश की संस्कृति से हम मानव-जीवन तथा व्यक्तित्व के उन रूपों को समझ सकते हैं। जिन्हें देश-विशेष में महत्त्व अर्थात् मूल्यों का अधिष्ठान समझा जाता है। उदाहरण के लिए, भारतीय संस्कृति में 'मातृत्व' और 'स्थितप्रज्ञता' की स्थितियों को महत्त्वपूर्ण समझा जाता है, ये स्थितियाँ जीवन अथवा व्यक्तित्व की स्थितियाँ हैं और इस प्रकार भारतीय संस्कृति का अंग है।⁵⁶

किसी भी समाज या समूह के जीवन का तरीका ही संस्कृति है। जिसमें उस समूह के सभी भौतिक व अभौतिक उत्पाद शामिल हैं, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी

को प्रेषित होते हैं।

क्रोबर एवं क्लक्होन के मतानसार— “व्यवहार के व्यक्त अथवा अव्यक्त पैटर्न जो प्रतीक के रूप में उपार्जित व संप्रेषण किए जाते हैं।” संस्कृति का आवश्यक सार परंपरागत धारणाओं व मूल्यों में निहित रहता है।

रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार—“संस्कृति का विषय अपार है। व्यक्ति के लिए तो यह सम्भव ही नहीं है कि अपने सारे जीवन में भी वह उसके साथ परा न्याय कर सके। मैंने जो इस काम में हाथ डाला, वह इस कारण नहीं कि इतिहास की सेवा करना चाहता था। बल्कि इसलिए कि स्वतन्त्रता के बाद से देश में संस्कृति के नारे बड़े जोर से लगाए जा रहे हैं, किन्तु जनसाधारण के सामने ऐसी सामग्री का, प्रायः अभाव है, जिससे वह यह समझ सके कि भारत की संस्कृति क्या है? कैसे-कैसे वह बढ़ती आई है, और आगे वह कैसे रूप ले सकती है।”⁵⁷

1.14.1 संस्कार

संस्कार किसी भी समाज एवं संस्कृति के प्राण होते हैं। डी. एस. शर्मा संस्कार को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि- “यदि धर्म तलना मानव शरीर से की जाए तो इसके संस्कारवाद पैर होंगे, इसकी नैतिकता हाथ, इसकी पूजा हृदय और इसका दर्शन मस्तिष्क होगा। पैर यद्यपि शरीर के सबसे निचले अंग हैं, परन्तु इनके बिना कोई शरीर खड़ा नहीं हो सकता। इसी प्रकार, संस्कारवाद के बिना कोई धर्म खड़ा नहीं हो सकता।”⁵⁸

1.14.2 परम्परा

“भारतीय समाज की जननीति शभाशुभ की संकल्पना जोड़ लेने के बाद वह रूढ़ि या परम्परा कहलाती है। नैतिकता की भावना पर परम्परा आधारित होती है।

इसका पालन न करने पर समाज में कछ देने का प्रावधान होता है। समाज रहन-सहन, खान-पान, तथा आचरण के कछ तरीके होते हैं। यह समाज स्वीकृत पद्धतियाँ ही परम्परा कहलाती हैं। परम्परा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मिलाती है। परम्पराएं व्यक्तियों के व्यवहार पर नियंत्रण रखती हैं।⁵⁹

1.14.3 रीति-रिवाज

भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों में प्रचलित रीति-रिवाजों में काफी भिन्नता पायी जाती है, परन्तु यह अन्तर भी विधि मात्र का है। इनकी आन्तरिक भावना एक ही है।

भारतवर्ष में लौकिक रीति-रिवाजों पर विश्वास तथा अंधविश्वास निर्भर रहते हैं। रीति-रिवाज दो प्रकार के होते हैं। एक व्यक्तिगत और पारिवारिक तथा दूसरा सामाजिक और सामाजिक।

नंदकमार सोमानी के अनुसार— “यदि हम अपने चारों ओर नजर दौड़ाएं तो तत्काल स्पष्ट हो जाएगा कि भारत के अधिकांश लोग किसी न किसी अंधविश्वास के शिकार हैं। बहुत से लोगों की दाहिनी कलाई रंगीन सती राखी नमा डोरी से बंधी रहती है, जो ब्राह्मण लोग एकाध मंत्र बेहद यांत्रिक या अशब्द रूप से पढ़ते ; यजमान की कलाई पर बांध देते हैं। शत्रुनाश की ध्वनि के साथ यजमान को समचीन सुरक्षा का आश्वासन देते हैं। और रक्षा सत्र बंधने के बाद प्रत्येक को विश्वास होने लगता है कि कोई अदृश्य शक्ति चौकीदार या बॉडीगार्ड के रूप में उनकी रक्षा करेगी।”⁶⁰

1.14.4 अंध विश्वास

अंधविश्वास भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख अंग बन गया है। अंध विश्वास

के कारण आज भी लोगों के विकास की आशा कम दिखाई दे रही है। शिक्षित व्यक्ति सच और झूठ को जानते हुए भी अंधविश्वास संबंधित मूल्यों से घिरा हुआ है।

1.14.5 मेले, गीत तथा त्यौहार

भारत संस्कृति प्रधान देश है। “मानव उत्सव प्रिय है। भारत जैसे प्राचीन संस्कृति के देश उत्सवों की कमी नहीं। उत्सव के विभिन्न प्रकार हैं- जैसे धार्मिक उत्सव, सामाजिक उत्सव, राजनीतिक उत्सव आदि। धार्मिक उत्सवों में देवी-देवता, ग्राम देवता, वीर पजा आदि के उत्सव किए जाते हैं। पर्व-त्यौहार, आदि आज भी भारत में बड़े हर्ष और उल्लास से मनाए जाते हैं। सामाजिक उत्सवों में विभिन्न सामाजिक पर्व, महात्मा की जयंतियाँ, समाज की उन्नति के लिए जिन्होंने प्रयास किया उनकी जयंतियाँ मनायी जाती हैं। राजनीतिक उत्सवों में स्वतंत्रता दिवस भी बड़े उत्सवों के रूप में मनाया जाता है।”⁶¹

मेले, कथा, गीत, त्यौहार भारतीय संस्कृति के प्रमुख अंग हैं। इन मूल्यों का आधार पर भारतीय संस्कृति की विशेषताओं का मूल्यांकन होता है। इनमें आधुनिकता के कारण परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं।

भारतीय संस्कृति अन्य देशों की संस्कृति से विशेष मानी जाती है। संस्कार, परंपरा, रीति-रिवाज भारतीय संस्कृति के आज भी बनाये रखा है। आधुनिकता और पश्चात्य प्रभाव भारतीय संस्कृति पर होने पर भी जीवन मूल्यों में भी कोई विशेष परिवर्तन नहीं है।

1.15 धार्मिक परिस्थितियाँ-जीवन मूल्य के संदर्भ में

विश्व का कोई भी समाज विभिन्न परिस्थितियों से गुजरता है। इन अनेक परिस्थितियों में इसकी भी गणना की जाती है। धर्म एक भाव है। इस भाव

परिभाषित नहीं किया जा सकता है. न ही सीमा में बांधा जा सकता है. और न ही इससे मुक्त हुआ जा सकता है।

ध्वन के अनुसार— “धर्म एक सजीव भावना है. जिसका विकास समाज के विकास के अनुसार होता है। धर्म का कार्य सामाजिक व्यवस्था को सामंजस्य बनाए रखना तथा व्यक्ति की आत्मा का मार्ग दर्शन इस प्रकार करना है. कि उसे अपनी अंतर्निहित शक्तियों को प्राप्त करने की शिक्षा मिल सके।”⁶²

1.15.1 ईश्वरवाद

यह मानना कि ईश्वर है और वही सारी सृष्टि का रचयिता है।⁶³

ईश्वर पर विश्वास भारतीय जनता का विशेष महत्व है। भारत में कई धर्म होने पर भी लोग अपने-अपने ईश्वर पर विशेष ध्यान देते हैं। और दूसरों के ईश्वर को भी श्रद्धा और भक्ति के साथ मानते हैं। ईश्वरवाद. संस्कृति मूल्यों में भारतीय समाज विश्वास के प्रतीक है।

1.15.2 धार्मिक विश्वास

संसार के ज्यादातर देशों में धर्म आस्था का विषय है। यह श्रद्धा पर आधारित होता है न कि वैज्ञानिक सबतों पर। आस्था व श्रद्धा विवेक से परे होती है। इसलिए धर्म की व्याख्या वैज्ञानिक रूप से नहीं हो सकती। धर्म तथा अन्य आस्थाएं प्रत्यक्ष रूप से समाज को प्रभावित करती हैं। इसीलिए समाज को समझने के पूर्व धर्म को समझना समीचीन होगा।

महाभारत में शान्तिपर्व में धर्म की व्याख्या इस प्रकार की गई है—

“धारणाद धम्र इति अहः”

अर्थात् मनष्य जो धारणा करे वही उसका धर्म है। इसके अनुसार धर्म का

सम्बन्ध व्यक्ति के कर्तव्य से है।

1. धार्मिक-वि० (सं०) (भाव धार्मिकता)

व्यापक चिंतन-शक्ति तथा सहिष्णुता के परिचायक इस दर्शन पर आधारित जीवन व्यतीत करने का साधन धर्म है। धर्म से अभिप्राय यह है कि धारण कर वाला। पाश्चात्य दार्शनिक कांट ने इसे नैतिकता की संज्ञा प्रदान की है। वास्तव में धर्म नीति अविच्छिन्न रूप से संग्रथित हैं। यह नीति, व्यक्तिगत भी है और सामहिक भी। इस तरह धर्म व्यक्तिगत एवं सामहिक नीति का नाम है। धर्म, किसी भी ऐसे कृत्य को आश्रय-प्रश्रय नहीं देता, जो नीति सम्मत न हो। धर्म का वास्तविक स्वरूप कर्म-काण्डों, अंधविश्वासों से संबंधित नहीं है। धर्म के आश्रयत्व में मानव-जीवन में सह-अस्तित्व, विश्व, मातृत्व तथा सामाजिक नियमों-उपनियमों को बल मिलता है इस तरह धर्म से मानव जीवन में संतुलन आता है।

भारतीय संस्कृति में धर्म का मनष्य, मनष्य जीवन और उसकी संस्कृति : प्रगाढ संबंध है। धर्म ही सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों एवं कार्यकलापों मलाधार रहा है। वस्तुस्थिति यह रही है कि परंपरा में धर्म जीवन से पथक नहीं देखा गया। वस्तुतः भारतीय जीवन की प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से धर्म के प्रति आस्था और विश्वास अपने आप में एक विशेषता रही है। मध्यकालीन सांस्कृतिक दृष्टिकोण धार्माश्रित था, धार्मिक भावना एवं मूल्यों की समाज में प्रमुखता थी। समस्त लौकिक आचार-व्यवहार धर्म पर आधारित थे।

मोक्ष, कर्मवाद और पुनर्जन्म के संबंध में यगीन अट्ट आस्था देखने मिलती है। आधुनिकता के इस तथाकथित प्रभाव से मनष्य ईश्वर संबंधी अप आस्था से मुक्त हुआ। और वैज्ञानिक उन्नति और आविष्कारों के रूप में विकास ने

परंपरागत धार्मिक मूल्यों एवं ईश्वर की सत्ता में अटूट विश्वास के बारे में आमल-चल परिवर्तन किया।

सामाजिक संदर्भ में धर्म का विशेष योग है। आदिकाल से धर्म ने मानव की समाज-विरोधी प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखा है। आदिम समाज में जब विधान एवं राज्य का प्रादुर्भाव नहीं हुआ था, तब धार्मिक भावना से प्रेरित होकर ही सामाजिक नियमों का पालन किया जाता था। समाज व्यवस्था को बनाये रखने का महत्त्वपूर्ण कार्य धर्म ने ही किया। ईश्वर के दण्ड का भय, स्वर्ग-नरक का विचार, कर्म फल का सिद्धान्त, पाप-पुण्य की धारणा आदि बातें ऐसी थीं, जिनके कारण मानव बुरे कर्मों से बचता रहा। धर्म-रक्षार्थ कितने ही यद्ध लड़े गये। यही कारण है कि बड़े-बड़े यद्धों को धर्म यद्धों की संज्ञा दी गई। तब धर्म ही देश-भक्ति का माध्यम था। संसार की महत्त्वपूर्ण क्रांतियाँ धर्म-प्रवर्तकों द्वारा ही हुईं। बद्ध, ईसा, महम्मद साहब ने, धर्म को आधार बनाकर ही विश्व में आमल-चल परिवर्तन किया।

आज का यग धर्म को मानने वालों और न मानने वालों का यग है। यह लम्बी बहस का विषय है। किन्तु इतना तो अवश्य ही है कि अर्थ की जीवन-शक्ति इतनी प्रबल है कि आज के भौतिक यग में धर्म के स्वरूप पर किए गये काफी प्रहारों के उपरान्त धर्म जीवित है, भौतिक-मशीनी यग की नीरसता में यह रस का संचार करता आ रहा है। आज धर्म के परंपरागत स्वरूप में यगानुरूप भले ही परिवर्तन हो चुका है, और ईश्वर आदि अलौकिक सत्ता पर आधारित धर्म को अब मानवीय आधार मिल चुका है। इस कारण, धर्म के विभिन्न रूप भले ही मिले किंतु सभी का अंतिम विलय मानव-धर्म है। भावात्मकता से सम्बद्ध धर्म के परंपरागत रूप को अब बौद्धिकता की कसौटी पर परखकर उसकी व्याख्या प्रस्तुत की जाने लगी है, किन्तु इतना तो अवश्य

ही है कि धर्म एवं धार्मिक मत्तों के प्रति वैज्ञानिक दष्टिकोण होना आवश्यक है विज्ञान तथ्यों पर आधारित है. और मानव के चिंतन-मनन. व्यवहार और कर्म उचित-अनचित का निर्णायक सत्ता के रूप में कार्य करता है। वस्तुतः धर्म. मानव के लिए बड़ा सम्बल है।

धर्म का पालन करने की आवश्यकता पर बल देते हुए व्यक्ति मन को स्वार्थ से हटाकर परमार्थ की ओर ले जाने की प्रवृत्त करता है। इसके मल में मनष्य को कर्म के लिए प्रेरित करने का भाव रहा है। इस हेतु स्थापित आदर्श है. 'धार्मिक मत्त'।

1.15.3 उपवास

धर्म के प्रति अपनी श्रद्धा और भक्ति को प्रकट करने का माध्यम उपवास है। उपवास के माध्यम से लोग अपने आपको कई इच्छाओं को त्यागकर अपनी इच्छ प्रकट करते हैं।

1. नियत समय पर और उसके बाद समय तक भोजन न करना. फाका
2. वह व्रत जिसमें भोजन नहीं किया जाता।
3. रोग होने पर उसकी शांति के लिए भोजन न करना।⁶⁴

1.15.4 रोजा

इस्लाम धर्म में रोजा रखने को भी कहा गया है। इनकी सहायता से मनष्य अपनी आत्मा की शुद्धि करता और हृदय को सांसारिक बराइयों आदि से बचाता है। रोगों के ही माध्यम से मनष्य अपना आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास कर सकता है. ऐसी इस्लाम धर्म की धारणा है। इसी कारण इस्लाम में प्रत्येक वयस्क को रमजान के महीने में रोजे रखना आवश्यक है। रमजान का महीना इसलिए चना गया क्योंकि कि इसी महीने में सबसे पहले करान उतरा था।⁶⁵ करान शरीफ में मसलमानों पर रोजा

फर्ज आयद किया गया है।’⁶⁶ रोजे के दिनों में सूर्यास्त से पूर्व किसी भी मसलमान को ऐसी कोई भी वस्तु जिससे तरावट और ताजगी मिले अथवा जो सौन्दर्य-प्रसाधन सिद्ध हो। प्रयोग का हक नहीं है। रोजे के दिनों में प्रत्येक वयस्क मसलमान केवल एक समय अर्थात् सूर्यास्त पर ही खाना खा सकता है।

1.15.5 नमाज

नमाज इस्लाम की रीढ़, दीन का स्तम्भ मोक्ष की शर्त इमान की रक्षक और पवित्रता की नींव।⁶⁷ “सबसे पहली चीज जिसका कयामत के रोज बन् हिसाब-किताब लिया जाता है, वह नमाज है। अगर वह ठीक रही तो कामयाब हुआ और अगर वह खराब निकली तो नाकाम, नामराद हुआ। अगर उसके फराइज में कछ कमी नजर आई तो अल्लाह-तआला कहेगा कि देखो मेरे बंदे के नामा-ए-एमाल में कछ नाफिली नमाजें हैं।”⁶⁸

ईदगाहों और मस्जिदों में सामूहिक नमाज इस्लाम धर्म की एक ऐसी विशेषता है, जिसने इस धर्म की एकता और संगठन में महत्त्वपूर्ण योग दिया। मसलमानों का एक जगह इकट्ठा होना, एक साथ झुकना, एक साथ सज्दा करना, खड़े होना एक प्रभावकारी दृश्य होता है।

1.15.6 ज्योतिषी-साध संत

भारतवर्ष में साध संत, ज्योतिषियों की संख्या बहुत ज्यादा पाया जाता है। डॉ० राधा कमल मुखर्जी के अनुसार— “ऐसा जीवन निर्वाह करने वाले की उपस्थिति सदा ही जीवन के इन सर्वोच्च आदर्शों भी, त्याग चिन्तन और आत्म साक्षात्कार की महत्ता का स्मरण दिलाती रहती है। संन्यास आश्रम की महत्ता एक ओर दृष्टि से सर्वोच्च है, कि उसमें जाति-पांति के विभेद और तज्जनित संकीर्णता के लिए कहीं स्थान नहीं

है।⁶⁹

ज्योतिष-साध संत पर भारतीय लोगों का विश्वास प्राचीन काल से चला आ रहा है। धार्मिक विश्वास के साथ-साथ इन पर भी लोगों का विश्वास अटूट है। इस विश्वास के कारण लोगों को कोई विशेष लाभ प्राप्त नहीं हुआ।

1.15.7 पाप-पण्य

सभी धर्मों में पाप और पण्य का मामला है। यदि आप अच्छे कर्म करते हैं तो स्वर्ग में जाएंगे और अगर बुरे कर्म करेंगे तो नरक में जाएंगे। ऐसा सभी धर्मों की मान्यता है। पाप-पण्य मनष्य के कर्म से माना जाता है। धार्मिक व्यक्ति पाप-पण्य पर अधिक विश्वास रखता है। अच्छे कर्म के अनुसार पण्य बुरे कर्म के अनुसार पाप मनष्य का प्राप्त होने की मान्यता है। पाप-पण्य संबंधों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं है। ये मानव को एक व्यस्थित दिशा की ओर ले जाता है।

1.15.8 मन्त-प्रार्थनाएं

सभी धर्मों के लोग अपनी मर्यादा पर करने के लिए मन्त मांगते हैं। कोई मजार पर जाता है, तो कोई मंदिर में शरण लेता है, मन्त पूरी होने पर वह चढ़ावा चढ़ाते हैं। प्रार्थनाएं सभी धर्म के लोग करते हैं।

धार्मिक मूल्य संबंधित परिवर्तन में कोई विशेष परिवर्तन नहीं दिखाई देता है। भारतीय समाज धार्मिक है। शिक्षित एवं आधुनिक समाज के विकास का प्रभु धार्मिक मूल्यों पर ना के बराबर है। ईश्वर पर विश्वास अन्य धार्मिक मूल्यों संबंधित विचार में कोई कमी नहीं दिखाई दे रही है। सांप्रदायिक एकता में कमी और झगड़े भारतीय समाज की विशेषता में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं।

1.15.9 साम्प्रदायिक भावनाएं

भारत स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय साम्प्रदायिक भावना ने और विकराल रूप धारण कर लिया. और देश को इस कारण से अत्यन्त विशाल रूप में जन-धन की क्षति उठानी पड़ी। साम्प्रदायिकता के उक्त उत्तरदायी कारकों को विकसित करने के साथ ही साथ स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय और उपरान्त भारतीय नेताओं प्रतिक्रियावादी नीतियों से भी इस समस्या का विकास हुआ। भारत में चुनावों के साथ विभिन्न दलों द्वारा साम्प्रदायिकता की जड़ों को खोदा जाता है।

संदर्भ

1. वामन अपटे. संस्कृत हिन्दी कोश. अशोक प्रकाशन. संस्करण. 2013. प. 780
2. डॉ. राम जी तिवारी. स्वतन्त्रोत्तर हिन्द समीक्षा में काव्य मल्य अतल प्रकाशन कानपुर. प्रथम संस्करण. 1986. प. 15
3. रमेश कन्तल मेघ. सौन्दर्य मल्य और मल्यांकन. नेशनल पब्लिशिंग हाउस. संस्करण-2008. पष्ठ-11 मख बंध से.
4. फिलासफी. एनउंटोडकशन. रेंडाल और बश्लर भमिका से
5. दी आडडिया ऑफ वैल्य. जान लेयर्ड. भमिका से उद्धत
6. रत्ना लाहिडी. मल्य संस्कृति. साहित्य और समय नेशनल पब्लिशिंग हाउस. संस्करण-1987 ई.. पष्ठ-1
7. वही. प. 30
8. वही. प.-82
9. वही. प.-88
10. वही. प.-94
11. वही. प.-107
12. Urban, As anything that further or conserves life fundamental also fethics. p. 16
13. ओम प्रकाशन. प्रकाश सारस्वत. बदलते मल्य और आधुनिक हिन्दी नाटक. १ पब्लिकेशन. रोहतक. प्र.स. 1984 ई.. पष्ठ-6
14. डॉ. प्रभाकर माचवे. हिन्दी कोश. भाग-01. पष्ठ-658
15. प्र. ग. सहस्र बद्धे. जीवन-मल्य भाग-2. सरुचि प्रकाशन. चतुर्थ. संस्करण-2014. पष्ठ-141
16. Dictionary of thought life- Ravindra nath thakur P. 341

17. डॉ. देव राज उपाध्याय. साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन. एस. चंद्र एण्ड कंपनी. दिल्ली
18. डॉ. बैजनाथ सिंघल. नई कविता. मल्ल मिमासा शारदा प्रकाशन नई दिल्ली. पृष्ठ-117
19. हिंदी विश्व कोश. खण्ड-9 नागरी प्रचारिणी सभा. वाराणसी.
20. Urban, fundamentals of Ethics. p. 163
21. डॉ. आर. एम. देश मुख. आठवे दशक की हिन्दी कहानी में जीवन-मल्ल. विद्या प्रकाशन.
प्रथम संस्करण-1994 ई. प.-23-24
22. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा. हिन्दी साहित्य कोश भाग-2 ज्ञान मण्डल. लिमिटेड. वाराणसी. संस्करण
परिमण्डण. जलाई-2013. पृष्ठ-353
23. नामवर सिंह. आलोचना. अक्टूबर. दिसम्बर. राजकमल प्रकाशन. पृष्ठ-3
24. डॉ. भैरुलाल गर्ग. स्वतंत्र्योत्तर. हिन्दी कहानी में सामाजिक परिवर्तन. संस्करण-197
पृष्ठ-13
25. कमलेश्वर. नयी कहानी की भूमिका से. अक्षर प्रकाशन. दिल्ली-6. संस्करण-1976 ई.. प.
-31
26. डॉ. शिवदान सिंह. नवलेखन स्थिति और समस्याएं. कल्पना. नवलेखन विशे
अगस्त-दिसम्बर. 1969. पृष्ठ-9
27. डॉ. भैरुलाल गर्ग. स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में सामाजिक परिवर्तन. संस्करण-1979 ई.. प.
-156
28. नामवर सिंह. कहानी नयी कहानी. लोक भारती प्रकाशन. संस्करण. 2014 ई. प.-16-17
29. राइट. एलिमेन्ट्स ऑफ. सोसाइटी. प.-5
30. M. Sherif and C. W. Sherif, Amoutline of Social Psychology. P. 4
31. J. F. Brown, Psychology and Social order, P. 1
32. Kim ball Young, A hand book of Social Psychology. P. I

33. F. H. All Port Social psychology. p. 11
34. राम अहजा. भारतीय सामाजिक व्यवस्था-रावत पब्लिकेशन. प.-16
35. रावत हरिकृष्ण. समाजशास्त्र विश्व कोश. रावत पब्लिकेशन. जयपुर एवं दिल्ली. प.-34
36. सं. मा. गर्गे (सम्पादक) भारतीय समाज सिज्ञान कोश. खण्ड-2 प.-179
37. डॉ. धर्मवीर महाजन. प्रारम्भिक समाज शास्त्र. अर्जन पब्लिकेशिंग हाउस नई दिल्ली पृष्ठ-211
38. फरहत परवीन. आजकल. मदला गर्ग. आजकल. प्रकाशन विभाग. मार्च-2014. प-15
39. वही. कानन झीगन. पृष्ठ-18
40. वही. चन्द्रकान्ता. पृष्ठ-20
41. दिनेश खरे. सामाजिक विचारधारा. द्वारा उदत पृष्ठ-80
42. डॉ. संजीव महाजन. भारतीय समाज. अर्जन पब्लिसिंग हाउस. प्रथम संस्करण-2004 ई.. पृष्ठ-68
43. डॉ. बाबू राम गप्त. उपन्यास कार नागार्जन. पृष्ठ-235
44. डॉ. उर्मिला गम्भीर. प्रताप नारायण श्रीवास्तव के उपन्यासों. का समाजशास्त्रीय अध्ययन शोध प्रकाशन. मेरठ. संस्करण-1970. प-129
45. डॉ. पी. बी. नेमा. राजनीति समाजशास्त्र. यनिवर्सिटी पब्लिकेशन. नई दिल्ली. संस्करण-2007. पृष्ठ-112
46. प्रो. हमाय कबीर. द इंडियन हेरिटेज. पृष्ठ-117
47. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा. हिन्दी साहित्य कोश. भाग-1. ज्ञान मण्डल. लिमिटेड. वाराणसी. संस्करण-जलाई. 2013 पृष्ठ-473
48. सं. श्यामसुन्दर दास. हिन्दी शब्द सागर. भाग-5. नागरी प्रचारिणी काशी. संस्करण-1970. पृष्ठ-2632

49. सं. धीरेन्द्र वर्मा. हिन्दी-साहित्य कोश. भाग-1. ज्ञान मण्डल. लिमिटेड. वाराणसी संस्करण-जलाई-2013. पष्ठ-347
50. रविंद्र घडिया अंड. नैतिकता. कानन और राज्य. हंस. पर्णांक-227. अगस्त-2005
51. राम अहजा. मकेश अहजा. समाज सास्त्र विवेचना एवं परिप्रेक्ष्य. रावत पब्लिके संस्करण-2008. प-407-408
52. डॉ. मोहम्मद फरीदददीन. राही मासम रजा के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन ऋषभचरण जैन. एवमसन्तति. संस्करण-अगस्त-1984. पष्ठ-44
53. प्रो. जी. पी. नेमा. राजनीतिक समाजशास्त्र. यनिवर्सिटी पब्लिकेशन. नई दिल्ली-2007. पष्ठ-300-301
54. वही. पष्ठ-112
55. अंड. रविंद्र घडिया. नैतिकता. कानन और राज्य. हंस. पर्णांक. 227. अगस्त-2005
56. डॉ. व्यंकट किशन राव पाटिल. मैत्रेयी पप्पा के साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन. अमन प्रकाशन. प्रथम संस्करण-2011. प.-65
57. रामधारी सिंह दिनकर. संस्कृति के चार अध्याय. लेखन का निवेदन से. लोक भारती संस्करण-2013
58. डॉ. संजीव महाजन. भारतीय समाज. अर्जन पब्लिकेशन. हाउस. प्रथम संस्करण-2004 ई.. पष्ठ-68
59. डॉ. व्यंकट किशन राव पाटिल. मैत्रेयी पप्पा के साहित्य का समाज शास्त्रीय अध्ययन. अमन प्रकाशन. प्रथम संस्करण-2011 ई.. पष्ठ-65
60. नन्द कुमार सोमानी. नव भारत टाइम्स. 'बहस' मंगलवार. 16 जनवरी-2007 ई.
61. डॉ. व्यंकट. किशन राव पाटिल. मैत्रेयी पप्पा के साहित्य का समाज शास्त्रीय अध्ययन. अमन प्रकाशन. प्रथम संस्करण-2011 ई.. पष्ठ-65

62. धवन. महात्मा गाँधी के राजनीतिक दर्शन. पष्ठ-324
63. आचार्य रामचन्द्र वर्मा. बहत प्रामाणिक हिंदी कोश. लोक भारती प्रकाशन. संस्करण-2012 ई.. पष्ठ-112
64. वही. पष्ठ-130
65. रामधारी सिंह दिनकर. संस्कृति के चार अध्याय लोक भारती संस्करण-2013. पष्ठ-271
66. सर-अल-बकरा. जमीला अली. जाफरी. हिन्दी कविता. इस्लामी संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में सं. 1975. पष्ठ-36
67. वही. पष्ठ-61
68. वही. पष्ठ-63
69. डॉ. राधा कमल मखर्जी. भारतीय समाज. विन्यास शीर्षक. आश्रम व्यवस्था. पष्ठ-44

द्वितीय अध्याय

2.0 हिन्दी-महिला कहानिकारों की कहानियों का सर्वेक्षण जीवन मल्य के परिप्रेक्ष्य में

2.1 कृष्णा अग्निहोत्री. काँटो के झरमट. जिंदा आदमी-1986

‘काँटो के झरमट’ कहानी में आदिवासियों के समाज में जो टोना-भत-पैशाच आदि का अंधविश्वास प्रचलित है. उसे सम्बन्धित सांस्कृतिक जीवन मल्यों को कृष्णा अग्निहोत्री ने अभिव्यक्त किया है। इस कहानी में माधवी और टोनिया पति-पत्नी रहते हैं और टोनिया जादू-टोना. झाड़ू-फूंक का काम करता है। उसका भाई सोमरो रहता है। एक दिन टोनिया कहता है कि नर का बलि चाहिए तो सोमरो और टोनिया मिलकर माधवी को जंगल में ले जाते हैं और उसकी हत्या कर देते हैं और कहते हैं कि वह मनहस थी. उससे हम लोगों का गला छट गया। टोनी सोचता है कि— “सारी दीनता. कराहट. शांत हो गयी थी। परा वन सन्नाटे से गंज रहा था और वे दोनों एक नये विश्वास के साथ उगले चांद को ताक रहे थे। अपनी उदात्त. अवदात्त प्रवृत्तियों से उत्पन्न व्याधियों में बेखबर।

माधवी के खून के छींटे प्रकृति की उस असीमित हरियाली में कांटो के झरमट जैसे छप गये थे।”¹

2.2 कृष्णा अग्निहोत्री. रमकलिया. जिंदा आदमी-1986

‘रमकलिया’ कहानी में निम्न वर्ग के लोगों द्वारा राजनीति में हस्तक्षेप सम्बन्धित जीवन मल्यों को दर्शाया गया है। इस कहानी में रमकलिया की शादी छठ पहलवान से हो जाती है लेकिन कुछ दिनों के बाद छज्ज की मृत्यु हो जाती है तो वह मायके चली जाती है। उसका पिता उसकी दूसरी शादी कर देता है जिससे उसे एक

लडका भी पैदा होता है। लेकिन रमकलिया वहाँ से भी चली आती है। फिर वह घरों में नौकरानी का काम करने लगती है। उसके बाद उसका दूसरा पति आता है। उसे सौ रुपये देता है जिससे वह दकान खोल लेती है कुछ दिनों के बाद वह बाइयों के यूनियन की अध्यक्ष बन जाती है। एक आदमी आता है और कहता है कि एम.एल.ए. के चुनाव में खड़ी हो जाओ। वह खड़ी हो जाती है और चुनाव में जीत जाती है।

रमकलिया भाषण देते हुए कहती है कि— “मैंने गरीबी देखी है... दुनिया में दःख-सख देखे हैं... आपने हमें अपनी सेवा के लिये चना है मैं आपकी सच्ची सेविका बनूँगी। देख लीजिएगा कि एक दिन मैं देश को मिटाकर रहूँगी...?” तभी बगल से किसी ने उसको नोंचा और रमकलिया संभलकर बोली : “मेरा मतलब है कि देश से गरीबी मिटाकर रहूँगी।”²

2.3 कृष्णा अग्निहोत्री. जिंदा आदमी. जिंदा आदमी—1986

‘जिंदा आदमी’ कहानी में आशीष और स्वरा की प्रमुख भूमिका है। कहानी में राजनीतिक पार्टियों का सामाजिक दखल सम्बन्धित जीवन मूल्यों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी में आशीष इंस्पेक्टर की नौकरी करता है। इससे स्वरा खश नहीं होती है वह चाहती है कि वह गेजस्टेट ऑफिसर बने लेकिन उसको राजनीति का शिकार होना पड़ता है क्योंकि वह किसी पार्टी से नहीं जुड़ा हुआ है। वह कई जगह इंटरव्यू देने जाता है लेकिन उसका सेलेक्शन नहीं होता है। उससे पूछा जाता है कि किसी पार्टी के साथ जुड़े हो तो वह कहता है कि नहीं। तो उसे कहा जाता है कि पहले से ही फिक्स रहता है कि किसको लेना है। वह बहुत नाराज होता है। आशीष सोचता है कि “उसका डबता मन एक बार जोर से उछालें लें लगा था कि वह भागे और भागता हुआ देश की सारी पार्टियों के झंडे फेंक दे और

कहे. “हाँ-हाँ. मैं किसी झंडे के नीचे नहीं परन्तु राष्ट्रीय झंडे के नीचे तो हूँ। माना कि मैं किसी पार्टी का आदमी नहीं. परन्तु इस देश का एक योग्य. होनहार. जिंद आदमी तो हूँ. जिसे सही जिंदगी जीने का अधिकार नहीं दिया जा रहा है...”³

2.4 कण्ठा अग्निहोत्री. सेनानी. जिंदा आदमी—1986

‘सेनानी’ कहानी में भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के दयनीय जीवन मूल्यों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी में अंजना एक स्वतंत्रता सेनानी की पढ़ी लिखी लड़की रहती है। लेकिन उसके पिता की मृत्यु के बाद उसकी शादी तय नहीं होती है क्योंकि वे लोग दहेज देने में असमर्थ होते हैं। इसीलिए उसकी शादी एक किसान. गरीब परिवार में हो जाती है। अंत में बरेली के पास एक गाँव में मैटिक पास खेतिहर नवयवक अंजना से ब्याह को तैयार हो जाता है। एक दिन उसकी सास कहती है कि टोरो को चारा डाल और हमारे साथ खेत चलो।

पति देखता है कि “पढ़ी-लिखी पत्नी को दरांती लटकाये खेत पर आते देख पति की आँखें बेहद चमकदार हो गयी थीं... और वे दोनों स्नेह से भीगे खेत में काम करने लगे थे।”⁴

2.5 मदला गर्ग. तीन किलो की छोरी. शहर के नाम—1990

‘तीन किलो की छोरी’ कहानी में शारदाबेन बच्चा जनवाने का काम करती है। जब लड़का पैदा होता है तो उसे अच्छा पैसा मिलता है. लेकिन लड़की पैदा होती है तो उसे सकड़ी भी नहीं मिलती है। एक दिन लल्ली बहन को लड़की पैदा हुई. परे तीन किलो की। शारदाबेन बहुत खश हुई. लेकिन दुःख भी हुआ कि लड़का पैदा होता तो कुछ पैसा मिल जाते। वह घर आती है तो उसका पति उसे मारने लगता है।

उसकी तनख्वाह सौ रुपये होती है। उसका लडका अब स्कूल में पढ़ने लगा। लल्लीबेन के घर भैंस भी रहती है। लेकिन उसका दूध लडकी को पीने नहीं दिया जाता है। मास्टर भाई की बहू बहुत बीमार रहती है। शारदाबेन उसके पास जाती है। शारदा बेन सोचती है कि—“मटकी छाछ के साथ ढेर सारे रोटले ठकारकर उठी हो जैसे। बदन की थकान मिट गयी। महीने के सौ रुपये फल कर पाँच सौ हो गये छान की मिठास से बँधे हाथ और सधकर चले और मन में उस तीन किलो की छोरी को छोरे माफिक पाल-पसवा लेने का हौसला पैंग भरने लगा।”⁵ इस कहानी में लडकियों के प्रति सामाजिक भेदभाव का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया गया है। जो टटते हुए जीवन मूल्यों को उजागर करते हैं।

2.6 मदला गर्ग. वह मैं ही थी. शहर के नाम—1990

‘वह मैं ही थी’ कहानी में सीमेंट के कारखाने से उठते दूषित कणों से उत्पन्न बीमारियों का चित्रण किया गया है। इन कारखानों के कारण साँस की समस्याओं के साथ ही जच्चा-बच्चा की मृत्युदर में भी वृद्धि हुई है। प्रस्तुत कहानी में उमा के पति का तबादला कस्बे की सीमेंट फेक्ट्री में हो जाता है। उमा गर्भवती रहती है उससे पहले जिस कमरे में रखते हैं वहाँ एक गर्भवती स्त्री की मृत्यु हो गयी रहती है। उमा को भी डर बना रहा है। उसे साँस लेने में परेशानी होती है। वहाँ कायदे का हॉस्पिटल भी नहीं था। न डॉक्टर. न ही दायी ही थी। एक दिन जब उसकी हालत खराब होती है तो दायी को बलाया जाता है। बच्ची तो बच जाती है लेकिन उमा की मृत्यु हो जाती है। दायी देखती है कि— “देखा चींटियों ने उसके परे बदन को ढँक लिया था पर उसकी आँखों में खौफ नहीं. अपार करुणा भरी हुई थी। उन्होंने मर चुकी औरत की आँखें बन्द कर दीं और अभी पैदा हुई औरत को चींटियों के बीच से उठा. उस

कमरे में दौड़ गयीं. जहाँ साध से बना पराना पलंग रखा था।”⁶ इस कहानी में सीमेंट कारखाने के पास बढ़ती जच्चा-बच्चा मृत्युदर को दिखाया गया है। जिसका कारण कारखाने का दूषित वातावरण है। यह कहानी पँजीवादी व्यवस्था के विघटित जीवन मूल्यों को उजागर करता है। जहाँ पँजी के आगे मानव-जीवन का कोई मूल्य नहीं है।

2.7 मदला गर्ग. शहर के नाम. शहर के नाम—1990

‘शहर के नाम’ कहानी में जो लोग अपने घर छोड़कर विदेशों में शिक्षा ग्रहण करने चले जाते हैं तब भी अपने देश से उनके मन में अपने माता-पिता से संबंध इच्छा रहती है। इसका वर्णन है। कहानी में 1975 में जब देश में आपातकाल की घोषणा होती है। उसका जिक्र किया गया है। वह अपने पिता को खत लिखती है कि मैं शादी करूँगी और चार-चार बच्चे पैदा करूँगी तो उसके बप्पा नाराज हो जाते हैं। उसका पैसा बंद कर देते हैं. वह होटल में काम करने लगती है। फिर वहाँ से पढ़ाई पूरी करने के बाद अपने शहर वापस लौटती है। देश में आपात काल घोषित हो चुका था। वह दुःखी होती है। वह सोचती है कि—“तम न जानो तो अच्छा है कि मैं अपने शहर लौट आयी हूँ। और खत भी नहीं लिखूँगी। खत लिखने की मेरी जरूरत आज खत्म हो गयी। यह मेरा आखिरी खत है। इसे फाड़ूँगी नहीं। आखिरी वक्त आने पर अपने शहर के नाम छोड़ जाऊँगी। उस शहर के नाम. जो मेरा अपना नहीं था पर जिसमें मेरे शहर की आत्मा जरूर थी।”⁷ इस कहानी में 1975 में लगे भारती आपातकाल के चित्रण के साथ ही विदेशों में रहने वाले भारतीयों के अंतर्गमन जीवित पारिवारिक जीवन मूल्यों को उजागर किया गया है।

2.8 चंद्रकांता. पत्थरों के राग. ओ सोनकिसरी—1991

‘पत्थरों के राग’ कहानी में आज के समाज में व्याप्त पढ़े-लिखे लड़के-लड़कियों

को नौकरी मिलने के बाद शादी नहीं करने की प्रवृत्ति का चित्रण किया गया है। इस कहानी में सोनल एक नौकरी पेशा वाली लड़की है। उसकी उम्र 35 वर्ष से ज्यादा हो गयी है। वह घर का सारा कारोबार संभालती है। वह अपने से छोटी बहन की शादी करा देती है। एक दिन उसे सतीश नाम का यवक मिलता है जो विवाहित है। कोणार्क का मंदिर घूमने जाते हैं। वहां की कलाकृति को देखते हैं। इसके बाद वह सतीश को अपने घर भी ले जाती है और खद भी उसके घर जाती है। कोणार्क मंदिर से आने के बाद वह सतीश के बारे में सोचती है कि— “उन्नीसवीं सदी में ‘काला पहाड़’ मूर्ति-भंजक बनकर आया. पर ये आदिम राग पत्थरों पर खदे रह गये...” तभी अचानक सोनल के दो पंख उग आए। वह थोड़ी दूर उड़ी और फिर दीवार पर अंकित प्रतीक्षारत नायिका की खंडित प्रस्तर-प्रतिमा में समा गई।”⁸ भारतीय समाज में विवाह सामाजिक मूल्य के अंतर्गत ही आता है। इस कहानी में एक ऐसा वर्ग है जो विवाह से दूर भागता है। प्रस्तुत कहानी विवाह के माध्यम से विघटित सामाजिक जीवन मूल्यों को उजागर करती है।

2.9 चन्द्रकांता. मेरी माँ कहा करती थी. ओ सोनकिसरी-1991

‘मेरी माँ कहा करती थी’ कहानी में परानी पीढ़ी की स्त्रियों और नयी पीढ़ी की स्त्रियों के अंतर्द्वन्द्व को दिखाया गया है। इस कहानी में कमलावती के बारे में उसकी लड़की सोचती है कि मेरी माँ कहा करती थी कि मेरे जमाने में क्या मजाल की सास के सामने आदमी कुछ बोल दे। जब तक लड़के की शादी नहीं हयी रहती है. वह अपने घर का सभी काम करता है। लेकिन जब शादी हो जाती है तो वह घर के लोगों को भलकर अपने बीबी के साथ दूसरी जगह रहने लगता है। कमलावती की बेटी सोचती है कि—“उहँ! आज भला किसे फरसत है घड़ी-पल मिल-बैठकर दो बोल

कहने-सनने की। अब नए को क्या दोष दें. पराने का ही हाल देखो! मेरी माँ कहा करती थी...।”⁹ इस कहानी में पराने और नये के अस्तित्व का अंतर्द्वन्द्व प्रस्तुत किया है। कहानी में टटते पारिवारिक जीवन मूल्यों को अभिव्यक्ति किया है।

2.10 चन्द्रकांता. ओ सोनकिसरी. ओ सोनकिसरी—1991

‘ओ सोनकिसरी’ कहानी में समाज में व्याप्त दहेज प्रथा का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। इस कहानी में सोना की बहन रित की शादी के लिए लोग आते हैं. दहेज की बात करते हैं. रित की शादी हो जाती है। क्योंकि सोना नौकरी करती है वह दहेज देने के लिए तैयार हो जाती है। सोना और उसका पति अजय. रित के माँ को पसंद नहीं करते हैं तो रित को उसकी माँ सोनकिसरी की कहानी सनाती है तो रित सोचती है कि— “...और रित की आँखों के आगे अब सोना है— माँ सोना! माँ के माथे पर नागमणि चमकती है। लेकिन वह बड़ा दरवेश? अहाँ. माँ को शायद उसकी तलाश नहीं. रित आँखें बंद ही रखती है। वह इस तिलस्म को टटने न देगी। नहीं. किसी कीमत पर नहीं. आखिर है न वह सोना रित. तेरी ही बेटी?”¹⁰ प्रस्तुत कहानी में दहेज प्रथा जैसी भयानक सामाजिक बुराई का चित्रण किया गया है। जिसके जन्म से जीवन विघटित होते हैं।

2.11 नमिता सिंह. जंगल गाथा—जंगल गाथा—1994

‘जंगल गाथा’ कहानी में साहब बहादुर एक जमींदार रहते हैं जिनको शिकार खेलने का बहुत शौक था। वह हमेशा शिकार खेलने जाते थे। एक दिन जब चैत और सरसत्ती की शादी होने वाली थी तो साहब ने कहा कि चैत को बला लाओ। उसे बलाया जाता है। उसे साहब घर पर रख लेते हैं। सरसत्ती के बारे में गाँव में चर्चा रहती है कि वह अपना रूप बदल लेती है। उसमें देवी का वास है। एक दिन सरसत्ती

को धोखे से साहब बलाते हैं और उसके खाने में कछ मिला दिया जाता है। व बेहोश हो जाती है और जब साहब उसके साथ गलत काम करना चाहते हैं, तब वह अपना रूप बदल लेती है। उसके सिर पर सींग आ जाते हैं और साहब को चारों तरफ खन-ही-खन दिखायी देता है। जिससे उनका हृदय परिवर्तन हो जाता है और व शिकार को त्याग देते हैं। उसका सेवक कहता है कि— “मालिक, मालिक! सो गये क्या मालिक?” उनका कोई सेवक आवाज दे रहा था।

मालिक कसीं पर लटके पड़े थे। अधखला मंह जैसे कछ कहना चाहते हों। सर ढलककर एक ओर गिर गया था और हाथ ढीले होकर लटक गये थे।”¹¹ इस कहानी में लेखिका ने जमींदार शिकारी और सरसती के माध्यम से जीवन मूल्यों में परिवर्तन दिखाया है।

2.12 नमिता सिंह, बन्तों, जंगल गाथा—1994

‘बन्तो’ कहानी में लम्बरदार रहता है जो बन्तों के पिता उससे कर्ज लिए रहते हैं, नहीं चकाते हैं वह उनका भैंस खोल ले जाता हैं। इससे घर में और तंगी हो जाती है। एक दिन जब बन्तों के पिता का दोस्त बलवीरा उसके घर आता है तो उसकी माँ उसके साथ जाने को कहती है और कहती है कि वही तम्हारा मरद है। वह चौंक जाती है। लेकिन उसके साथ चली जाती है। वहां लोग बहत खश रहते हैं। बलवीरा बहत दबंग आदमी था। उसका भाई सतबीरा की शादी नहीं हई थी। एक सतबीरा की दल्हन आती है, एक तरह खशी और एक तरफ गमी का माहौल है उसकी सास बहत परेशान होती है, लेकिन कछ दिनों के बाद वह कहती है तम्हारी दो लगायी हो गयी अब सख-चैन से रहो। वह एक दिन उसके कमरे में जाने को रहती हैं। सतबीरा जाता है। लेकिन वह कहती है कि अपने लगायी के पा

जाओ। बन्तो सोचती है कि— “वापस अपने बिछौने पर जा पड़ी बन्तो। उसे लगा कि जैसे आज नम्बरदार को उसने बिना भैंस खोले वापस दर तक खदेड़ दिया। थोड़ी ही देर बाद वह गहरी नींद में थी।”¹² इस कहानी में लेखिका ने नम्बरदार के द्वारा बन्तो के पिता पर शोषण को दिखाया है। समाज में व्याप्त सामाजिक जीवन मूल्यों के विघटन को दर्शाया गया है।

2.13 नमिता सिंह. चाँदनी के फल. जंगल गाथा—1994

‘चाँदनी के फल’ कहानी में कॉलेजों में व्याप्त नये यवक और यवतियों शराब के नशे के प्रचलन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी में एक अध्यापिका रहती है जो चाहती है कि मेरा तबादला हमेशा होता रहे जिससे मैं हर बार नये-नये लोगों से मिलूं और नयी जगह भी देखने को मिले। उनका एक जहग तबादला हो जाता है. वहाँ उनको बहुत परेशानी होती है। जब उनको कमरा दे दिया जाता है. वह कमरा बहुत ऊँचाइयों पर रहता है. वह चढ़ते-चढ़ते थक जाती है। वह कवयित्री भी है। वहाँ उनको दृश्य बहुत अच्छा लगता है। लेखिका कहती कि— “उसका मन खशी से झम उठा। ऐसा लगा कि वह थोड़ी देर के लिए सबको भूल गई है—उसका कालेज. विमल भाई. वह कली. गेस्ट हाउस का काटेज- इस अँधेरे अन्जान रास्ते ने उसे जिन्दगी का कौन-सा रहस्य समझा दिया? क्या दे दिया उसे अचानक? कौन कहता है। कि वह इधर-उधर भटक रही है— कि वह बढ़ा रही है कि वह अकेली है। उसके पास तो अथाह भण्डार है। समुद्र लहरा रहा है। उसका चारों ओर। वह कितना कष्ट कर पाती है। अपनी झोली में...¹³ प्रस्तुत कहानी में कॉलेज की नई पीढ़ी में व्याप्त शराब के नकारात्मक प्रभाव को अभिव्यक्त किया गया है। इस आदत के कारण सामाजिक जीवन मूल्यों की जड़ें कमजोर होते अभिव्यक्त

किया हैं।

2.14 नमिता सिंह. राम-लीला. नील गाय की आँखें-1997

‘रामलीला’ कहानी में अतल और दीपा दोस्त रहते हैं। दशहरे का मेला होता है. तो एक दिन जब अतल का दोस्त बीमार हो जाता है. तो उसके स्थान पर अतल को सीता का पाठ करने के लिए कहा जाता है। वह तैयार नहीं रहता है. लेकिन पंडित जी जबरदस्ती उसे तैयार कर लेते हैं. तो वह सीता का पाठ करता है. लेकिन ये बात दीपा को पता नहीं होती है. कि वह सीता का रोल किया है. तो वह नाराज हो जाती है. और अतल से कहती है कि— “भाग जाओ तम। मैं नहीं बोलती तमसे। तम राम नहीं बन सकते थे? बोलो! राम क्यों नहीं बने तम? और कछ नहीं था तो रावण ही बन जाते? तरकश में से ढंढ-ढंढकर न जाने कैसे-कैसे बाण चला रही थी दीपा!”

‘रामलीला’ कहानी में गाँव में रामलीला में जो पात्र होते हैं. उनका सचि वर्णन किया गया है। यह कहानी नारी के अपने जीवन मूल्यों के अधिकार के प्रति जागरूकता को उजागर करती है

2.15 नमिता सिंह. नील गाय की आँखें. नील गाय की आँखें-1997

‘नील गाय की आँखें’ कहानी में सदानन्द जी हिंदी साहित्य परिषद के चेयरमैन पद पर रहते हैं. एक दिन प्रीतीश रंजन नाम का नौयवक उनके पास जाता है. तो वे उसका मजाक उड़ाते हैं. और उसे नौकरी देने से मना कर देते हैं. नेहा के पिता मंत्री पद के दावेदार में से हैं. लेकिन चुनाव हार जाते हैं। प्रीतीश एक अच्छा पत्रकार है. जो उन्हें पसन्द है. नेहा भी उसे पसंद करती है. एक दिन नेहा के पिता शादी की बात करते हैं. तो दोनों की शादी हो जाती है। उसके बाद हिन्दी साहित्य परिषद का

चेयरमैन पद से सदानन्द जी को हटा दिया जाता. और प्रीतीश को चेयरमैन बन दिया जाता है। तब भी वह सदानन्द जी के सम्मान में प्रोग्राम करना चाहता लेकिन लोग हामी नहीं भरते हैं लेकिन बाद में तैयार हो जाते हैं. वह सोचता है कि— “नेहा भी तो हैरान रह गयी थी. जब मीटिंग से दो दिन पहले प्रीतीश ने आइडिया उसके सामने रखा था और फिर. उसके बाल अपनी उँगलियों से बिखेरती हई मस्करा दी थी। उस वक्त प्रीतीश ने सोचा था कि वह उसे जंगल के और घायल नीलगाय की आँखों के बारे में बताये. लेकिन फिर कुछ सोचकर. चप रहा। पता नहीं. नेहा समझ पाती या नहीं. जो प्रीतीश कहना चाहता था।”⁴

‘नील गाय की आँखें’ कहानी में लेखिका ने नीलगाय के माध्यम से हठ परिवर्तन होते हुए दिखाया है। प्रस्तुत कहानी में जीवन-मल्ल के विघटन के साथ ही उसकी स्थापना को भी उजागर किया गया है।

2.16 नासिरा शर्मा. विरासत. सबीना के चालीस चोर—1997

‘विरासत’ कहानी में नगरोन्मुखता की लालसा का चित्रण है। हिम्मतशाह और बल्लन दो भाई कब्रें खोदने का अपना परंपरागत धंधा करते हैं। इस पेशे से बल्लन तो खश रहता है लेकिन हिम्मतशाह अमीर बनने की इच्छा के कारण इलाहाबाद जाकर बैंक में नौकरी करता है। गाँव वापस आने के बाद वह अपने बड़े भाई बल्लन को भी इलाहाबाद चलने की विनती करता है—“फायदा है... बहुत फायदा है. जब समझो तब ना! मैंने वहाँ किसी को नहीं बताया कि हम जात के फकीर हैं. पेशे से तकियादार हैं... मैं कब्र खोदता हूँ। मझे यह सब अच्छा नहीं लगता है। मैंने सबको बताया है कि मैं वाजिद अलीशाह का परपोता हूँ...शाही खानदान से हूँ।”¹⁴ लेकिन उनका बड़ा भाई बल्लन इलाहाबाद जाने से इन्कार करता है। बल्लन को अ

पर्वजों के पेशे के प्रति प्यार है। इसलिए वह बाहर नहीं जाना चाहता। प्रस्तुत कहानी में नगरोन्मुखता और ग्रामीण पारंपरिक पेशे के बीच अंतर्द्वन्द्व को प्रस्तुत किया गया है। कहानी संकेत करती है कि सामाजिक परिवर्तन के साथ ही जीवन मूल्यों में भी परिवर्तन होते हैं।

2.17 नासिरा शर्मा. चाँद-तारों की शतरंज. सबीना के चालीस चोर—1997

‘चाँद-तारों की शतरंज’ आर्थिक समस्या प्रधान कहानी है। शरफ अपने दोनों बेटे फखरू और शेख की सहायता से पतंग बनाने का व्यवसाय आरम्भ करता है। फखरू और शेख की मेहनत और कार्य कशलता से बड़े-बड़े ऑर्डर आने लगते हैं। एक दिन ऐसे ही ऑर्डर के पतंग तैयार थे। सलीम चपके से सारे पतंग को छेद करके जाता है। इससे पतंग के ठेकेदार पतंग खरीदने से इन्कार कर देते हैं। शरफ को इस घटना से भारी नकसान उठाना पड़ता है। “अभी हम जिंदा हैं, फिर दो ऑर्डर हमारे पास और हैं।”¹⁵ शरफ बेटों को धीरज देने की कोशिश करता है। बेटे भी पिता की बात मानकर दबारा लगन से काम करने लगते हैं। कहानी में समाज में चल रहा धोखाधड़ी और परस्पर ईर्ष्या की ओर संकेत किया गया है। साथ-साथ आर्थिक समस्या का चित्रण किया गया है। समाज में जीवन-मूल्य का स्तर इतना नीचे गिर गया है कि किसी के पेट पर लात मारने से भी लोग नहीं हिचकते। इसका अलग उदाहरण प्रस्तुत है—

2.18 नासिरा शर्मा. इमाम साहब. सबीना के चालीस चोर—1997

‘इमाम साहब’ आर्थिक समस्या प्रधान कहानी है। इस कहानी में इशकीलददीन की आर्थिक समस्या का यथार्थ चित्रण किया गया है। यह कह इलाहाबाद के एक छोटे महल्ले से प्रारम्भ होती है। वहाँ एक आदमी की मृत्यु है

जाती है। वहाँ के लोगों को बहत दर जनाजे की नमाज में जाना पड़ता है। लोगों को बहत परेशानी का सामना करना पड़ता है। क्योंकि वहाँ के लोग दकानदार हैं। वहीं का एक आदमी कहता है कि बगल में लडका और शहर में ढिढोरा।

वहाँ पर एक जंगल में मस्जिद होती है। चंदे लगाये जाते हैं। उसके बाद एक इमाम साहब की बात की जाती है। उनके खाने और रहने की बात की जाती है वहाँ के हाजी साहब के पास सभी लोग जाते हैं। तो हाजी साहब रहने का इंतजाम करते हैं और तनख्वाह और उनके खाने का इंतजाम सभी को करने के लिये कहते हैं। सभी लोग तैयार हो जाते हैं। एक गाँव से इमाम साहब को बलाया जाता है। 500 रुपये तनख्वाह पर रखा जाता है। इमाम साहब वहाँ इमामत करने लगते हैं। लेकिन खाना सही वक्त पर नहीं आता है तो इमाम साहब टहलते हुए कहते हैं— “अजान का वक्त तंग हो रहा था। आँतें कल हो अल्लाह पढ़ रहीं थीं मगर खाने का दर-दर तक पता नहीं था।”¹⁶

खाना वक्त पर नहीं पहुँचता है। एक वक्त ऐसा भी आता है कि उनको घर पर जाकर खाना-खाना पड़ता है। और तो और घर का काम भी करना पड़ता इससे उनकी सेहत काफी खराब हो जाती है लेकिन उसकी पत्नी को दसरा ही शक है कि वह किसी को रख तो नहीं लेते हैं। लेकिन बाद में सब पता चलने पर उसको बहत अफसोस होता है। मेरे पति ऐसे नहीं हैं। मस्जिद तो जर्जर स्थिति में रहती ही है एक दिन आँधी-तफान में शहीद हो जाती है और फिर इमाम साहब अपना बोरिया बिस्तर लेकर अपने गाँव वापस चले जाते हैं। नासिरा जी ने ‘इमाम साहब’ कहानी में आर्थिक एवं धार्मिक जीवन मूल्यों को पेश किया है।

2.19 नासिरा शर्मा. ततडया. सबीना के चालीस चोर-1997

‘ततडया’ कहानी नारी शोषण को उजागर करती है। विवाहित शन्नो को एक आदमी मेले से घसीटकर ले जाता है। घर से नई-नवेली दल्हन एकाएक गायब होने के कारण उसकी सास बारिन क्रोधित होती है। शन्नो को अपवित्र कहकर उससे साथ बरा व्यवहार करने लगती है। बेटा यद्वीर अपनी माँ को बार-बार समझाता है कि शन्नो बेकसर है लेकिन वह मानने को तैयार नहीं होती। यद्वीर की माँ पर बिरादरी की मखिया है। दसरोँ पर होने वाले अन्याय के प्रति लड़ती है।

“दसरोँ के लिये लड़ती है मगर अपनी... उसके अन्दर न्याय का यह दोहरा मापदंड क्यों? कहीं वह अपने को सास समझकर आँखों पर पट्टी तो नहीं बाँधे हए है?”¹⁷ अंत में सास को जब पता चलता है कि बह के पैर भारी है तब कहीं जाकर अपने पोते के लिए उसके मन में बह के प्रति स्नेह उमड़ उठता है। समाज में नारी के प्रश्नों को लेकर लड़ने वाली दोहरी प्रवृत्तियों की ओर लेखिका ने इशारा किया है। इस कहानी में सामाजिक और परंपरागत जीवन मूल्यों को प्रस्तुत किया है।

2.20 नासिरा शर्मा. गंगी गवाही. सबीना के चालीस चोर-1997

‘गंगी गवाही’ कहानी में वर्तमान व्यवस्था और समाज में फैल रही अराजकता का यथार्थ चित्रण मिलता है। यह कहानी हबीब हज्जाम पर केन्द्रित है। उस लड़का चाँद एक दिन गायब हो जाता है। पूरे परिवार में गम का माहौल होता है। हबीब हज्जाम जब पुलिस को बताता है तो वह भी उसकी बात को नहीं मानते हैं और उसे रोजाना बेगारी पर बलाते हैं लेकिन एक दिन पता चलता है कि डर महल्ले के तीन लड़के शामिल हैं जो खण्डहर में ले जाकर मार डाले हैं। लेकिन तब

भी उन पर कोई कार्यवाही नहीं होती है। क्योंकि दरोगा भी इसमें मिला हुआ है वह तीनों लडकों में पिता से पैसे ले लेता है। और उन पर कोई कार्यवाही नहीं होने देता। जिससे हबीब हज्जाम को इंसाफ नहीं मिलता है।

दरोगा रहीम जराह से कहता है कि—‘कफन-दफन का इंतजाम कर’। इतना कह दरोगा जी डंडा घमाते घर से बाहर निकले और गजरते रिक्शे को हाथ दिखा उस पर बैठ गए। शहर में अमन रहे. मोहल्ले में शांति बनी रहे. इसके लिए. उन्हें जल्दी से हवलदारों को मस्तैद करना होगा ¹⁸ इस कहानी में स्वार्थ और प्रशासिक भ्रष्टाचार को उजागर किया गया है। जहाँ नैतिक और सामाजिक जीवन मूल्यों का कोई महत्व नहीं है।

2.21 नासिरा शर्मा. सतघरवा. सबीना के चालीस चोर—1997

‘सतघरवा’ कहानी में आधुनिक और परानी पीढ़ी के संघर्ष के साथ उच्चवर्ग और निम्न वर्ग के संघर्ष का चित्रण मिलता है। यह कहानी उच्चवर्ग के लोगों से शुरू होती है। वहां लॉन में एक नीम का पेड़ होता है उस पर मधमखियाँ छत्ता रहता हैं। एक दिन जब साहब मीटिंग के लिए जा रहे होते हैं तो एकाएक मधमखियाँ काट लेती हैं जिससे वह मीटिंग में नहीं जा पाते हैं। उसी छत्ते को निकालने के लिए एक आदमी को बलाया जाता है जो अनपढ़ है। छत्ते निकालने का काम करता है। उसी घर में एक बूढ़ी माँ भी रहती है जिससे आदमी से घल-मिल जाती है। ये उन लोगों को अच्छा नहीं लगता है क्योंकि वह छत्ता निकालने वाला निम्न वर्ग का लडका था। ये लोग उच्च वर्ग के थे। एक दिन जब वह घर में दादी से मिलने आता है. तो वे लोग पुलिस से पकड़वा देते हैं. लेकिन उसका कोई कसर नहीं रहता है। पि

उसको पुलिस छोड़ देती है।

अब्दल दरोगा से कहता है कि “साहब. अब अब्दल को आप इस शहर में नहीं देखेंगे। जब अब्दल यह धंधा ही नहीं करेगा तो फिर इधर किसलिए आएगा? अब्दल बचन का पक्का है. आखिर है तो पठान का बच्चा।”¹⁹ प्रस्तुत कहानी में उच्चवर्ग और निम्नवर्ग के बीच फैली गहरी खाई को उजागर किया गया है। जहाँ निम्नवर्ग और उच्चवर्ग के जीवन मूल्यों की सार्थकता का कोई मूल्य नहीं है।

2.22 नासिरा शर्मा. उसका बेटा. सबीना के चालीस चोर—1997

‘उसका बेटा’ कहानी में आर्थिक स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है। कहानी में एक मँगफली वाले की गरीबी का चित्रण किया गया है। एक दिन उसका बच्चा बीमार पड़ता है तो वह गाँव से उसे लाकर एक सरकारी अस्पताल में भर्ती कर देते हैं। लेकिन नर्सों की लापरवाही की वजह से उसका बेटा मर जाता है। सरकारी अस्पताल में अक्सर ये देखने को मिल है। डॉक्टर जब ये कहकर जाता है कि बच्चे को ऑक्सीजन लगा देना. लेकिन नर्सें उसकी बात को नहीं मानती हैं और जब बच्चा मर जाता है. तब ऑक्सीजन लगा देती है ताकि डॉक्टर जब राउण्ड पर निकले तब उसको हकीकत पता नहीं चले। लेकिन उसके माता-पिता को यह पता है। लेकिन गरीबी के कारण वे लोग किसी से कुछ कह नहीं पाते। मँगफली वाले डॉक्टर से बेटे के बारे में पछा तो उसने बताया है—“वह तो तभी गजर गया था साहब जी!” उसके मँह से निकला। उसका सारा अस्तित्व करुणामय हो उठा और मझे ठंडे लोहे व छान से झरझरी-सी आ गई।”²⁰ यह कहानी संकेत करती है कि इस भ्रष्टाचारी यग में गरीब के जीवन का कोई मूल्य नहीं है। हमारी सरकारी व्यवस्था में जीवन-मूल्यों के लिए कोई स्थान नहीं है।

2.23 नासिरा शर्मा. तक्षशिला. सबीना के चालीस चोर—1997

‘तक्षशिला’ कहानी में नारी शोषण का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी में निगार एक पत्रकार है। उसकी शादी के लिए उसकी मम्मी कहती है लेकिन निगार तैयार नहीं होती है। कहती है मम्मी अभी दो वर्ष और रुक जाओ फिर मैं शादी करूँगी। एक दिन उसकी मम्मी एक लडका देखती है। जो निगार को पसंद आ जाता है। उसी से उसकी शादी हो जाती है लेकिन एक दिन निगार को पन्द्रह दिन के लिए अमेरिका जाना पड़ता है वहाँ से आने के बाद वह बहुत घबरायी हुई रहती है। वहाँ एक पत्रकार अंसारी भी साथ गया होता है। वह निगार के स बदतमीजी करता है जिससे निगार बहुत गस्से में रहती है। इसके बारे में अपने पति परवेज से भी कहती है लेकिन परवेज उसकी बातों पर ध्यान नहीं देता है उससे वह और खफा हो जाती है। एक स्थान पर एक पत्रकार का पति उसके छोड़कर चला जाता है। निगार सोचती है— “आज दीवार पर लगी तक्षशिला की वह पेंटिंग. पतझर की रंगता का वातावरण लिए. नंगी-टटी दीवारों पर उगा घास-फस निगार को केवल संदर नहीं बल्कि अर्थपूर्ण भी लगने लगा था। ‘मैंने तो संघर्ष का आधा समंदर पार किया है। अभी आधा तय करना बाकी है।’”²¹ प्रस्तुत कहानी नारी की अस्मिता और स्वाभिमान के प्रश्न को उठाती है। यह जीवन मूल्यों के विघटन का दौर है। जहाँ नारी को भी उचित सम्मान मिलना कठिन हो गया है।

2.24 नासिरा शर्मा. चिमगादड़ें. सबीना के चालीस चोर—1997

‘चिमगादड़ें’ कहानी में शिक्षा क्षेत्र में चल रही अराजकता का चित्रण दिखाई देता है। दूसरी ओर कहानी में एक आदर्श प्रिंसिपल मिसेज गोवा का भी दर्शन होता है। मिसेज गोवा अपनी मेहनत. लगन एवं निष्ठा से स्कूल की नींव डालती है। स्कूल

के बारे में अपने वांछित अरमान परे करती हैं। बढापे के कारण वह स्कल छोडकर चली जाती है। मिसेज हसैन नई प्रिंसिपल बनकर आती है। उन्हें चापलसी र खशामद भाती है। स्कल में वह नमाज का पीरियड शुरू करती है जिससे स्कल मे तनाव बढता है। “मिसिज गोवा जहाँ घर-घर जाकर दलित वर्ग के लोगों को स्कल भेजने के लिए उकसाती थीं. बढावा देती थीं. वहाँ मिसेज हसैन इस ओर से एक दम उदासीन थीं।”²² मिसेज हसैन जब स्कल छोडकर अरब चली जाती है। तब स्कल की हालत नाजक हो जाती है। मिसेज हसैन अपने तेज प्रवाह में बहत कछ बहा ले गई थी। इस हादसे से स्कल को वह सिर्फ बहाव और आतंक देती है। इस हादसे से स्कल आखिर तक उभर नहीं पाता। लेखिका ने शिक्षा क्षेत्र में धर्म और भ्रष्टाचारी लोगों के प्रवेश पर चिंता व्यक्त की है। प्रस्तुत कहानी शिक्षा केन्द्रों की कर्तव्य निष्ठा पर प्रश्न उठाती है। अध्यापक ही बच्चों को जीवन का पाठ पढाते हैं लेकिन जब अध्यापक ही नैतिक रूप से विभक्त हों तो वे छात्रों को नैतिक मल्यों का महत्व कैसे सिखा पायेंगे।

2.25 नासिरा शर्मा. नौ-तपा. सबीना के चालीस चोर-1997

इस कहानी में कलई करने वाले लोगों के शोषण का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया गया है। कछ वर्षों पहले कोतवाली की परली तरफ ठठेरी बाजार में जायसवाल बर्तन भण्डार के सामने नापदान के ऊपर खाली जगह पर सलमान कलईगर बैठता था उधर ग्राहक ने नया वर्तन खरीदा डधर सलमान ने उसकी पताई-रंगाई कर उजल बना दिया। उसकी पत्नी को बर्तनों का बहत शौक था। लेकिन एक दिन बब्ब कँजडे ने इन दोनों पति-पत्नी को जान से मरवा देता है और उसके घर पर कब्जा कर लेता है। उसका लडका घर से बचकर भाग जाता है। वही जब बडा होता है तो लच्छ कलईगर होता है। अपनी माँ के बर्तनों को देखने के लिए उसी गली में आता है। एक

दिन वह कहता है कि ये घर मेरा है तो बब्बन कँजडे के गण्डों ने उसकी बहत पिटाई कर देते हैं। उसके बाद रंगरेजिन अपने छत से देखती है कि “रंगरेजिन क उतारना छोड उसके पास जाकर खडी हो गई। मकानों. दरख्तों के परे से सडक का एक टुकडा बडी मशिकल से नजर आ रहा था। नजरें ठहरी तो उसने देखा. पेशाबघर के सामने कडेदान के नजदीक खन से लथपथ कोई औंधा पडा है और अगल-बगल में दो-तीन मरगिल्ले कत्ते उसे सँघते-चाटते बैठे हैं।”²³

इस कहानी में समाज में चल रही ईर्ष्या, द्वेष और गण्डागर्दी का यथार्थ चित्रण. गरीब को दबाकर अमीर आदमी अपने गण्डागर्दी के बल पर उनका सर्वनाश कर देता है। स्वार्थ और लालच जीवन मल्यों के विघटन का सबसे बड़ा कारण है। प्रस्त कहानी में इसी सत्य को उजागर किया गया है।

2.26 नासिरा शर्मा. सबीना के चालीस चोर. सबीना के चालीस चोर-1997

सबीना के चालीस चोर कहानी में जो परे भारतवर्ष में साम्प्रदायिक दंगों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

इस कहानी में शब्बीर साहब आई.एस. ऑफिसर थे। ईमानदार और मजहबी। चँकि टीचर के बेटे थे इसलिए अफसर होकर भी अपनी नर्मी और अच्छे-बरे पहचान की आदत को छोड नहीं पाए थे। फिरोजाबाद में पश्तैनी मकान छट्टियों में वही जाते थे। एक बार ऐसा फसाद में फँसे कि जान बचाकर निकल तो आए मगर उस हंगामे में जवान बेटा न जाने कहाँ गम हो गया? न लाश मिली और न ही कोई खबर। घर अलग लट-लटा गया। मकान बेच कर आखिरी पोस्टिंग चँकि दिल्ली की थी तो दिल्ली में रह गए। इकलौती बेटी सबीना की शादी भी शाहरुख से हुई जो पेशे से इंजीनियर है। सबीना भी एक लडकी है। सबीना बडे दिनों के बाद

पैदा होती है। घर के लोग बहुत खश होते हैं। लेकिन वह बहुत तेज है। वह हर बात पर सवाल पछती रहती है इससे उसके माता-पिता बहुत परेशान रहते हैं। उसके पिता सबीना से कहते हैं कि— “किसी को बचाने के लिए किया गया काम कभी गलत नहीं होता बेटी।” शाहरुख ने हाथ की खरपी फेंक. बेटी को सीने से लगा लिया। दोनों के दिल की घटन एक साथ निकली। शाहरुख को महसूस हुआ नाउम्मीद थकन और गम के बादल एक साथ छुट रहे हैं और रोशनी की शक्ति में नई नस्ल अपने अंदाज से इंसानियत. मोहब्बत और ईमानदारी का परचम लेकर अँधेरे दाखिल हो रही है।”²⁴

इस कहानी में में सांप्रदायिक दंगों उसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है। यह कहानी बाल मनोविज्ञान पर भी आधारित है। इसमें सबीना के माध्यम से बाल मनोविज्ञान का चित्रण किया गया है। प्रस्तुत कहानी साम्प्रदायिक दंगों की विभीषिका को प्रस्तुत करती है और सबीना के माध्यम से जीवन-मृत्यों के अनकरण की कथा भी कहती है।

2.27 नासिरा शर्मा. आया बसंत सखी. सबीना के चालीस चोर—1997

“आया बसंत सखी” कहानी में स्त्रियों का आर्थिक शोषण लाला के द्वारा किया जाता है। वह स्त्रियों से कर्ते में कढ़ाई का काम करवाता है उसके बदले उन्हें कम पैसा देता है। इस कहानी में शिया-सन्नी के साम्प्रदायिक दंगे का वर्णन किया गया है। इस कहानी में सल्लाना नायक स्त्री है। वह भी कढ़ाई का काम करती है। उसकी बेटी का नाम सायरा है उसको टी.बी. की बीमारी हो जाती है। उनके पास खाने के पैसे नहीं हैं तो वह इलाज कैसे कराते। एक दिन किसी डॉक्टर को दिखाने के लिये ले जाते हैं तो वह ये कहता है कि इस इलाज के लिए बसंत का महीना सही

रहेगा। इसी इंतजार में सायरा रहती है कि बसंत का महीना आ कर चला जाता है। उनके पास इतना पैसा नहीं होता है कि इसका इलाज करा सके। सल्लाना का बेटा भी मारा जाता है। सल्लाना और सायरा में बातें होती हैं तो सकीना कहती है “बसंत तो आएगा और आकर रहेगा। अम्मा! आखिर ये बसंत को कब तक बाँधकर रखेंगे?” जाने कैसे यह बात सायरा के मँह से निकली। सायरा की आँखों में आज दःख की बदली नहीं थीं, बल्कि उसके चेहरे पर एक चनौती का हाल खिंचा था। पता नहीं, यह गम की अधिकता का निशान था या जल्म न सहने का इंकार था।²⁵ प्रस्तुत कहानी आर्थिक रूप से कमजोर और अभावग्रस्त उन स्त्रियों की कहानी है जिनका उच्च वर्ग द्वारा शोषण किया जाता है। यह कहानी संकेत करती है कि उच्च वर्ग का जीवन मल्य केवल उच्च वर्ग के लिए है गरीबों के लिए नहीं।

2.28 ममता कालिया. सेमिनार. जाँच अभी जारी है-1997

ममता कालिया की कहानी ‘सेमिनार’ की नायिका कथाकार ‘पाखी’ समाज में रहकर समाज का भला चाहती है। पाखी के जीवन का नक्शा वैसे भी बड़ा जटिल था। उसमें आराम, सैर, चर्चा और शान्ति जैसी नियामतों की गंजाईश ही नहीं थी। शायद उतनी स्वतंत्रता भी न थी। शिमला सेमिनार का निमन्त्रण उसे कुछ दिनों के लिए इन तीनों से निजात दिला सकता था। इसलिए उसने सहमति भेज दी। स्वतंत्रता का समर्थन करने वाली पाखी अपने विचारों का समाज के साथ संबंध दिखाती हर्ड कहती है कि “आपके पास अपनी विचारधारा ही न हर्ड तो आप समाज को क्या देंगे, सिर्फ अपनी कंठाएँ और बीमार दृष्टि?”²⁶ और नारी-स्वतंत्रता का समाज में साथ संबंध जोड़ते हुए स्वयं भी स्वतंत्रता का अनभव करना चाहती है। इस कहानी में परान पीढ़ी और नयी पीढ़ी के रचनाकारों के बीच द्वन्द्व दिखाई पड़ता है। प्रस्तुत कहानी

परंपरागत और नवीन जीवन मूल्यों के द्वन्द्व को उजागर करती है। यह कहानी स्वस्थ और सार्थक जीवन-दृष्टि और जीवन-मूल्य का समर्थन करती है।

2.29 ममता कालिया. उमस. जाँच अभी जारी है—1997

‘उमस’ कहानी में एक मध्यवर्गीय परिवार में बी.ए. पास बह का चित्रण किया गया है. जो पराने विचारों की दबंग सास अत्याधुनिक पति और तेज-तर्रार बेटे. सबके द्वारा मर्ख बनाई जाती है और सास की डांट तो अक्सर ही खाती रहती है। व्यंग्य स्थितियों को धारदार बनाता है। बह के चरित्र में एक अजीब ढंग का फिसड्डीपन है। घर का माहौल खराब न हो जाए. इस डर से रानी बिस्तर पर लेट ज “लेटे-लेटे उसे लगा वह यह बिस्तर नहीं कब्र है। जिसमें वह पड़ी है. निस्पंद. निश्चेष्ट उसके आसपास गहरा गाढा अंधेरा है। कभी न खत्म होने वाली एक निरंतरता उसे मिल गयी है: उसमें न किसी की डाँट है. न फटकार. न आरोप. न खंडन। यहाँ वह परी तरह स्वतंत्र और स्वधर्मी है। वह अपने फैसले खद ले सकती है।”²⁷

प्रस्तुत कहानी में ममता कालिया नारी के पारिवारिक शोषण को उदघाटित करने के साथ ही पारिवारिक जीवन मूल्यों के विघटन को भी उजागर करती है।

2.30 ममता कालिया. जाँच अभी जारी है—जाँच अभी जारी है—1997

‘जाँच अभी जारी है’ कहानी में कैसे नारियों के शोषण पर चित्र प्रस्तुत किया है। ‘जाँच अभी जारी है’ कहानी में नायिका अपर्णा एक सम्मानित राष्ट्रीयकृत बैंक में नियुक्ति पाकर फली नहीं समाती। विद्यार्थी जीवन में ही उसे बैंक की नौक आकष्ट करती थी। उसे महसूस होता है—“‘शक्ति’ सच्चाई और नैतिकता जैसे मूल्यों का अहसास जितना बैंक में हो सकता है. उतना अन्य किसी नौकरी में नहीं। हाथ नोटों से भरे रहे फिर भी दिमाग विचलित न हो. यह एक अग्नि परीक्षा ही हो

होगी। हालांकि इससे छः महीने पहले अपर्णा की नियुक्ति विश्वकर्मा डिग्री कॉलेज में हो चुकी थी। उसने इस नौकरी की खातिर लैक्चरशिप छोड़ दी। शिक्षक प्राध्यापक उसे बासी और निरीह लगते थे।²⁷ अपने अस्तित्व के गौरव को वह मन ही मन महसूस करती है।

प्रस्तुत कहानी एक ऐसी स्त्री की कहानी है जो वैयक्तिक-मूल्यों के आकर्षण में बैंक में नौकरी करती है। लेकिन वहाँ नारी का शोषण होता है और नैतिकता का अवमूल्यन होता है।

2.31 ममता कालिया. दाम्पत्य. जाँच अभी जारी है-1997

‘दाम्पत्य’ कहानी में मध्यवर्गीय दाम्पत्य जीवन के बासीपन, संबंधों के ठंडेपन, प्रेम की जगह नीरस आर्थिक चर्चा का चित्रण किया गया है। ‘दाम्पत्य’ कहानी में आलोक और उसकी पत्नी सनीता एक साथ रहते हैं। उनके विवाह के बीस साल हो चुके हैं लेकिन पति में कोई बदलाव नहीं आया है। इसी वजह से पत्नी-पति से नाराज रहती है। उनके पति-पत्नी संबंधों में बिखराव की अनभति होती है। आलोक इस विषय को लेकर काफी उदास रहता है। एक दिन दूसरे कमरे में लेटते हुए वह सोचता है कि—

“आलोक को लगा उसका दाम्पत्य जीवन बहुत गलत चल रहा है इसे सधारने के लिए उसे एक नया बीस सत्री कार्यक्रम तैयार करना होगा। वह चाहता तो साइड टेबिल से उठ कर कागज और पैन ले कर वे सब बातें नोट कर डालता, जिनसे उसकी पत्नी चिढ़ती है। लेकिन उसे यह कोशिश बचकानी लगी। अपने बीस साल परां दाम्पत्य जीवन पर इतनी माथापच्ची उसे गवारा न आई। बहरहाल वह सह सहानभति, सहयोग, संजीदगी और सहनशक्ति जैसे कुछ शाश्वत सत्र सोचते हुए सो

गया।”²⁹ प्रस्तुत कहानी दाम्पत्य जीवन मल्यों के अंतर्विरोधों को उजागर करती है। प्रेम जीवन का सबसे बड़ा मल्य है, लेकिन आज के भाग-दौड़ भरी जिंदगी में ‘प्रेम’ का अस्तित्व भी खतरे में है।

2.32 ममता कालिया. अनभव. जाँच अभी जारी है— 1997

‘अनभव’ कहानी में दिल्ली जैसे बड़े नगरों में घरेल नौकर के रूप में काम करने वाले यवकों का चित्रण किया गया है। इसमें उस एक रात का भी वर्णन किया गया है, जब वह यवक नौकरी से निकाले जाने के बाद पराने दिल्ली के किसी बैंक में बरामदे में जाड़े की रात गजारता है और एक भीख मागने वाली औरत को अपनी पत्नी के रूप में ग्रहण कर लेता है।

‘अनभव’ कहानी में ‘राम’ घरों में काम करने वाला नौकर रहता है। एक दिन एक घर में काम करता रहता है। उस घर में पति-पत्नी रहते थे। पत्नी का किस दूसरे आदमी से संबंध रहता है। राम से जबरदस्ती उसके पति ने सब पछ लिया दोनों तरफ से प्रताडित होकर वह नौकरी से निकल दिया जाता है। वहां से जाने के बाद एक बैंक के पास रात में सो जाता है। वहां एक भिखारिन सोई रहती है। उसे उससे प्यार हो जाता है। वह कहता है कि—

“आज से तम भीख मांगने नहीं जाओगी. समझीं।”³⁰

इस कहानी में शहरों में घरों में काम करने वाले नौकरों की स्थिति का वर्णन किया गया है। नौकर अपने मालिकों द्वारा निरंतर प्रताडित होते रहते हैं। प्रस्तुत कहानी यह संकेत करती है कि इन अभावग्रस्त नौकरों में भी जीवन-मल्य का भाव जीवित है।

2.33 जाँच अभी जारी है— पहली— ममता कालिया—

‘पहली’ कहानी में मध्यवर्गीय नौकरी पेशा की पारिवारिक जिन्दगी में पहली तारीख के महत्त्व का अंकन किया गया है. जिसमें बच्चों को सारी खशियाँ, पति-पत्नी का प्रेम सब पहली तारीख में ही सिमट कर रह जाता है। बीसवीं सदी में मध्यवर्गीय परिवार एक ऐसे संक्रान्ति काल से गजर रहे थे जहाँ दो विपरीत मानसिक स्थितियों वाली पीढ़ियाँ आपस में टकरा रही थीं। पर उसका खामियाजा केवल स्त्रियों व भगतना पडा था। परानी पीढ़ी अपने पराने मल्यों और विचारों से जकडी हर्ड थी और उसे किसी प्रकार भी छोडने को तैयार न थी। नये विचारों वाली पढी-लिखी लडकी परिवार में बह के रूप में आते ही इस परानी मानसिकता से टकराने को बाध्य थी। लडकी का पति उच्च शिक्षा पाने के बावजद माता-पिता और पत्र के परम्परागत मल्यों से मुक्त नहीं हो पाया था। अतः वह भी पराने मल्यों का निष्क्रिय समर्थक हो जाता था और कभी-कभी आक्रामक समर्थक भी। पत्नी इस माहौल में बिल्कल ही अकेली पड जाती थी। इस माहौल में परानी पीढ़ी द्वारा जिसे सास, ससर के अलावा परिवार और पडोस के अन्य लोग, यहां तक कि स्त्रियां भी होती थीं। लडकी मार-मारकर बह बना दी जाती थी।

इस कहानी में समाज में व्याप्त बह को लेकर समस्याओं को उजागर किया गया है। प्रस्तुत कहानी परंपरागत और नवीन जीवन-मल्यों के द्वन्द्व को उजा करती है। प्रायः ऐसी स्थिति पारिवारिक कलह का कारण भी बन जाती है।

2.34 ममता कालिया, वर्दी, जाँच अभी जारी है—1997

इस कहानी में पलिस द्वारा कैसे दकानदारों पर शोषण किया जाता है। इसका यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया गया है।

‘वर्दी’ कहानी की नायिका आशा तो स्वयं वर्दी वाले की पत्नी है। अपनी इच्छा के अनुसार अपने बच्चे का प्यार से लालन-पोषण करने का अधिकार उसे नहीं दिया गया। ममतामयी माँ ने अपने पत्र को होली के दिन रंग लाने के लिए पति से पछे बिना पैसे क्या दिये। कानन की नजरों में दोषी ठहराई गई। वर्दी का रोब इतना है कि आशा को कछ पैसे पास रखने का अधिकार नहीं। अन्दर जाकर रमाशंकर ने अलमारी की जाँच की. बन्द थी। अब घबराहट के कारण “आशा ने सफाई देने में ही खैर समझी. “भय्या के भेजे ग्यारह रुपये थे जी मेरे पास. उसी में से मैंने दिये थे। मझे क्या पता था यह रंग लायेगा।”³²

रमाशंकर के सो जाने के बाद आशा बच्चे के पास गयी। वह चाहती थी राज उसके साथ खाना खा ले। माँ के डरपोकपने पर राज को हमेशा गस्सा आता था। पिता के सामने वे बिल्कल भीगी बिल्ली बन जातीं और बाद में उनकी हरकतो पर असंतोष दिखातीं। नारी के अधिकारों की उपेक्षा का बोध उसे कब का हो चका है। यह कहानी नारी के अधिकारहीन जीवन और परुषवादी वर्चस्व को उदघाटित करती है। कहानी में पारिवारिक जीवन मूल्यों के विघटन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया गया है।

2.35 ममता कालिया. डरादा. जाँच अभी जारी है—1997

‘डरादा’ कहानी की नायिका शांति का मन मोहभंग की दारुण स्थिति से बंद रेशनदान में पखेरू की तरह फडफडाता रहता है। विवाह के पश्चात जितनी देर वह काम करती. उसे ख्याल न होता. पर दो पल भी खाली होते उसका मन आकांक्षाओं की चिन्ता से अकल हो जाता है। अगर किसी दिन वह अपनी थकान का इजहार करती. उसका पति तयौरी चढ़ा लेता। अब उसे अपने उन्तकृत जीवन के

अनभव की कोई आस नहीं बची थी। हर बार यही नाटक होता है। हर बात शांति के मन में एक थम-भरा गस्सा उबलता। शादी के बाद इन तीन सालों में उस पाया कि परिवार के काम कछ इस प्रकृति के हैं कि उनमें कर्तव्य में से और कर्तव्य जन्म लेते हैं। अधिकार नहीं। दफ्तर जाने के सिवा और सभी काम उसके कर्तव्य क्षेत्र में आते थे। उसके कामों में समय की कोई सीमा नहीं थी। प्रस्तुत कहानी नारी की त्रासद स्थिति का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती है। हमारे समाज में यह परंपरा है कि घर की बह ही सब काम करेगी। कहानी उस परुषवादी सोच पर प्रश्न उठाती है जहाँ स्त्री जीवन-मल्यों के लिए कोई स्थान नहीं है।

2.36 मेहरुनिशा परवेज. अम्मा. अम्मा-1997

‘अम्मा’ कहानी में समाज में व्याप्त पति-पत्नी के संबंध विच्छेदन का यथार्थ चित्रण किया है। भोपाल के स्टेशन पर वह जल्दी से भीड़ के बीच से निकलकर ट्रेन के डिब्बे में चढ़ने वाली थी। तभी पीछे से उसके जीजा जी ने कहा समन ये मेरी पत्नी मध है। समन को झटका लगा कि जीजा जी इतनी जल्दी शादी कर लि बताये भी नहीं। तब वह अपने दीदी के बारे में सोचने लगती है। और अपनी माँ के बारे में भी सोचती है। दीदी नौकरी करने लगती है। लेकिन उसके ससराल वालों को बरा लगता था। सास ने तो साफ कह दिया था कि या तो नौकरी छोड़ो या ससराल। वह जीजा जी को देखकर सोचती है कि—

“अम्मा थीं तो कितनी सरक्षा सी लगती थी. पर आज अम्मा के न रहने से उसे लगने लगा था. वह भी एक दिन ऐसे ही खो जायेगा”³³ इस कहानी में पति-पत्नी के संबंध-विच्छेद की समस्या को उठाया गया है। हमारे परुषवादी समाज में नारी की अस्मिता और स्वाभिमान का कोई मल्य नहीं है। नारी का अस्तित्व उसके

ऊपर निर्भर न होकर एक परुष पर निर्भर होता है। नारी के जीवन की यह सबसे बड़ी विडंबना है। इस कहानी में पति-पत्नी संबंधों में समाज में व्याप्त विच्छेदन जीवन मल्य को दर्शाया गया है।

2.37 मेहरुनिशा परवेज. सजा. अम्मा-1997

‘अम्मा’ कहानी से अन्तरजातीय विवाह का वर्णन किया गया है। इस कहानी में नायिका उमा रहती है। पढ़-लिखकर नौकरी करने लगती है। उसके बाद घर की आर्थिक स्थिति सधर जाती है। दो साल तक सब ठीक-ठाक रहता है। एक दिन जब उमा घर आती है और कहती है कि मैं शादी करना चाहती हूँ, तो घ हक्का-बक्का रह जाते हैं। इसलिए क्यों कि लडका दसरी जाति का होता है। उसके बाद उमा घर से भाग जाती है और आर्य समाज के मंदिर में शादी कर लेती है उसके कुछ दिनों के बाद उसके पिता का देहान्त हो जाता है। तब वह अपने पति के साथ घर आती है। सब लोग देखकर हैरान हो जाते हैं। शाम के वक्त बैठे-बैठे उमा बोलती है कि— “दीदी, तम सोचती हो, मैं इस घर से चली गई थी? नहीं मैं तो इन्हीं किवाड़ों से लगकर बरसों खड़ी रही कि शायद कोई द्वार खोल देगा। ठंड, बरसात और गरमी, यानी हर मौसम में मैं यही बाहर खले में पड़ी रही।”³⁵

इस कहानी में लेखिका ने अन्तर्जातीय विवाह का समर्थन किया है। प्रस्तुत कहानी यह संकेत करती है कि नारी के लिए आत्मनिर्भरता आवश्यक है क्योंकि तभी वह स्वतंत्र निर्णय ले सकने में समर्थ होती है। परंपरागत जीवन मल्यों को बदलकर एक स्वस्थ जीवन मल्य का निर्माण पर लेखिका ने प्रकाश डाला है।

2.38 मेहरुनिशा परवेज. अम्मा. लौट जाओ बाबजी-1997

‘लौट जाओ बाबजी’ कहानी में अन्तर्जातीय प्रेम विवाह का यथार्थ चित्र

किया गया है। इस कहानी में नायक और नायिका घर से भागकर शादी कर लेते हैं। इसलिये क्योंकि घर वाले इस शादी को नहीं करने देते क्योंकि लड़के की जाति दूसरी थी। लेकिन लड़की के पिता लड़की की खशी के लिए तैयार हो जाते हैं और दोनों घर से भागकर शादी कर लेते हैं। एक साल के बाद जब लड़की के पिता उसके घर जाते हैं तो वह बहुत खश नहीं होती है। लड़की के पिता उन्हें मनाने जाते हैं लेकिन वह मानते नहीं हैं। लड़की नाराज हो जाती है। उसके बाद लड़की के पिता अचानक अपने घर चले जाते हैं। जब टेन छटी तो लड़की सोचती है कि—

“टेन जब छटी तो उसने यह कहाँ सोचा था कि यह बाब जी से अंतिम भेंट है। चलती टेन के डिब्बे से बाब जी ने हाथ बढ़ाकर उसे छुना चाहा था. पर गाड़ी की तेज होती रफ्तार में उसके दौड़ने के बावजूद वे उसे छ नहीं पाए। उसे क्या पता था. ये आशीर्वाद देते हाथ शून्य में हमेशा के लिए खो जाएँगे।”³⁶

इस कहानी में नायक-नायिका का अन्तर्जातीय प्रेम विवाह का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत कहानी स्पष्ट करती है कि नयी पीढ़ी परंपरागत मूल्यों के बंधन में नहीं जीना चाहती। वह अपने लिए नवीन जीवन मूल्यों का निर्माण करना चाहती है।

2.39 मेहरुनिशा परवेज. प्राण-प्रतिष्ठा. अम्मा—1997

‘प्राण-प्रतिष्ठा कहानी में अनमेल विवाह का चित्रण प्रस्तुत किया गया है। एक गाँव में महात्मा आने वाले थे। वहाँ उनको मर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा करनी थी। गाँव वालों ने बड़ी धम-धाम से उनका स्वागत किया। जब वे आराम कर रहे थे एक लड़की आती है और कहती है कि— आपको माँ ने बलाया है। वे आश्चर्यचकित हो जाते हैं। जब वे रात में मिलने जाते हैं तो उस स्त्री ने कहा मैं आप की पत्नी हूँ। वे बताती

है कि मैं जब नौ वर्ष की तब आप से शादी हई थी। फिर गवना हुआ। उसके बाद गाँव में एक साध आया उसी के साथ आप चले गये फिर लौटकर नहीं आये। मेरी शादी हो गयी मेरे बच्चे भी हैं। तब फिर लौटकर चले आते हैं उनको पहले की बात सोचकर बहुत दःख होता है। वे सोचते हैं कि—

“वे उठे। देखा. सब लोग सो रहे थे। उन्हें उनका मन धिक्कार रहा था। उन्हें चले जाना चाहिए। अच्छा अवसर है। वे चपचाप उठे और अपना थोड़ा-सा सामान समेटकर दबे पाँव बाहर आ गए. वैसे ही जैसे बीस साल पहले वे भागे थे. वैसे ही तेज-तेज कदम रखते वे चल दिए।”³⁷

इस कहानी में लेखिका ने समाज में व्याप्त अनमेल विवाह और साध-सन्तों के पलायनवादी चरित्र का वर्णन किया है। यह कहानी संकेत करती है कि साध संत जो दूसरों को जीवन-मल्य का पाठ पढ़ाते हैं. वे स्वयं जीवन-मल्यों का निर्वाह नहीं करते हैं।

2.40 मेहरुनिशा परवेज. घरे का बिरवा. अम्मा—1997

‘घरे का बिरवा’ कहानी में भोपाल गैस त्रासदी में वहाँ के लोगों का जो हाल हुआ है उसका चित्रण प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी में एक मैडम रहती है उसके सामने झग्गी-झोंपड़ी में रहने वाले लोग रहते हैं। वहाँ से चिल्लाने की आवाज आती है। तो मैडम एक दिन वहाँ पहुँच जाती है। तो देखती है कि वहाँ एक लड़का है जो चारपाई पर पड़ा है उसके न हाथ हैं और न पैर हैं। तभी उसकी माँ आ जाती है। तब पता चलता है कि जब भोपाल गैस त्रासदी हुई थी। उसका पति उसमें मर जाता है। वह गाने बजाने का काम करता था। उसकी माँ पीहर गयी हुई थी। फिर मैडम कहती है कि आप लोगों को मआवजा मिला तो उन लोगों ने कहा नहीं तब वह

फार्म भरने के लिये कहती है और कहती है कि किसनवा को भी ले जाना। एक दिन वह आती है तो पता चलता है कि उन्हें दस हजार मिला है। वह बहुत खश होती है। लडका कहता है कि और देने के लिये कहा है। मैडम सोचती है कि— “मैं लगा. किसनवा की आँख मेरी पीठ पर लदी है। नहीं-नहीं. किसनवा की आज नहीं. कण्ण की आँख को मैं अपनी पीठ पर लदा महसूस कर रही थी।”³⁸

इस कहानी में लेखिका ने भोपाल गैस त्रासदी का मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है। पंजीवादी व्यवस्था में जीवन-मल्यों के लिए कोई स्थान नहीं। लेकिन समाज में एक वर्ग ऐसा भी है जहाँ जीवन-मल्य अभी भी जीवित हैं।

2.41 मेहरुनिशा परवेज. पापा का घर. अम्मा-1997

‘पापा का घर’ कहानी में समाज में जब किसी परुष की स्त्री मर जाती है तो वह दूसरी शादी कर लेता है और अपना निजी जीवन-यापन सचारु रूप से चलाने लगता है। इस पर अपने विचार प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी की नायिका दीपा अपने ससराल चली जाती है। कुछ दिनों के बाद उसकी माँ का देहान्त हो जाता है। एक दिन दीपा के पिता दूसरी शादी कर लेते हैं। जब वह अपने शादी में बलाते हैं तो उनका बड़ा लडका मना कर देता है। तो वे नहीं जाती है। फिर बहुत दिनों के बाद घर जाती है उसे सभी चीज उखड़ा-उखड़ा सा लगता है। सभी चीज नये सलीके से सजाया गया है। उसे सिर्फ अपनी माँ की याद आती है। और उसकी आँखें भर आती हैं। उसका भाई अमेरिका चला जाता है। बहन भी लंदन चली जाती है। जब वह घर से जाने लगती है तो सोचती है कि—

“दहलीज पार करते मम्मी बेहद याद आ रही थीं। उसने भर आई आँखों को जबरन रोक लिया। उसने ऑटो में बैठते हुए सखे गलमोहर को देखा। गलमोहर की

तरह ही उनके संसार में भी चट्टान आ गई थी और देखते-देखते हरा-भरा घर सख गया था। नहीं, सखा तो मम्मी का घर था। यह नया घर तो अब पापा का है। जिसमें तो अब बस कभी अजनबी की तरह ही आना था!”³⁹

इस कहानी में लेखिका ने समाज में पुरुषों की दूसरी शादी कर मानसिकता को दर्शाया है। प्रस्तुत कहानी में पुरुष की दूसरी शादी का परिवार के अन्य सदस्यों पर पड़ने वाले प्रभाव को उजागर किया गया है। पहले बच्चों के बड़े हो जाने पर यदि पत्नी की मृत्यु हो जाए, जो पुरुष नैतिकता और समाज के दबाव में दूसरी शादी नहीं करता था। लेकिन अब नैतिक जीवन मूल्यों का विघटन हो चुका है।

2.42 मेहरुनिशा परवेज, अपने-अपने लोग, अम्मा-1997

‘अपने-अपने लोग’ कहानी में ब्राह्मण जाति और कायस्थ परिवारों के लड़के-लड़की का प्रेम विवाह का चित्रण किया है। इस कहानी की नायिका समन नौकरी करती है। और उसी के पैसे से ससराल वाले राज करते थे। उसको घर का सारा काम करना पड़ता है। समन का भाई महेश अपनी माँ के साथ रहता है। एक दिन महेश आत्म हत्या कर लेता है। क्योंकि वह अपाहिज है। एक दिन इसी सिलसिले में उस सहेली समन के ससराल जाती है। समन की माँ वहाँ रहेगी। उसके घर वाले पहले राजी नहीं होते हैं। लेकिन बाद में दीदी के कहने पर वे लोग राजी हो जाते हैं। उसके मन में प्रसन्नता होती है। समन के सखी के द्वारा—

“बाहर आई तो समन मझसे लिपट गई। खशी से उसकी आँखें बह उठीं। मैंने महसूस किया, जिंदगी जैसे भी मिले, उसमें अपने लोगों का होना बहुत जरूरी है। वे हमें बल देते हैं, शक्ति देते हैं। बिना समझाए हमारे मन को पढ़ लेते हैं। उस दिन

जब लौटी तो मेरे मन पर समन के मन का बोझ बेताल के शव की तरह लदा था। पहली बार जान रही थी अपने-अपने लोगों की परिभाषा।”⁴⁰

इस कहानी में दो धर्म-जाति के लोगों एक साथ रहने का चित्रण किया गया है। और ब्राह्मण और कायस्थ जाति के प्रेम-विवाह का वर्णन दिखाया गया है। प्रस्तुत कहानी जीवन मूल्यों के विघटन के साथ ही, आदर्शवादी प्रभाव के कारण, उसकी स्थापना का भी मार्ग प्रशस्त करती है।

2.43 मैत्रेयी पष्पा, शतरंज के खिलाड़ी, गोमा हँसती है—1998

इस कहानी में स्वतन्त्रता के बाद जब जमींदारी प्रथा का अंत हो जाता है तब की निम्न वर्गों का जमींदारों के द्वारा किया गया शोषण का यथार्थ चित्रण किया गया है। जमींदारी प्रथा के बाद भारत सरकार द्वारा संविधान निर्मित किया जाता है। उसमें गाँवों में प्रधान पद के लिये चुनाव करने का प्रावधान किया गया है। इसी वजह से गाँव में चुनाव के लिए तारीख निकलती है। लेकिन इस बार आरक्षण के वजह से महिला उम्मीदवार होती है। जमींदार साहब को ये लगता है कि किसको च लड़ाया जाये। आरक्षण में निम्न वर्ग की महिला की सीट होती है। जमींदार पीतम सिंह कामता से कहता है कि अपनी बीवी से कहो लेकिन दर्गा मना करती हई कहती है कि “तम ही चाँपो उनके चरन चरनों पर मँडी घरे रहो, तब भी तमको वे ऊँचा आसन देने वाले नहीं। पचकारेंगे, पटियाँएंगे, पर अपने समाज में शामिल नहीं करेंगे। उनके तो रीति ही ऐसी चली आ रही है। कि पकारो तो गालियाँ देकर, दत्कारो तो गालियों के संग। हत्यारे एक-दसरे को गरियाते भी हैं। तो हमारी जाति को उधाड़ खोलकर धरते हैं। हमें अपनी औकात मालम है। प्रधानी नहीं, वे हमें फरेब देंगे हमारी छीछालेदर कराँएंगे। हमको उनके फंदा में अपनी घिची (गर्दन) नहीं डालनी।”²²⁻²³

इस कहानी में पीतम सिंह और घनपत आपस में लडकर मर जाते हैं। कहानी में जमींदारों के द्वारा निम्न वर्ग के लोगों के शोषण का चित्र प्रस्तुत किया गया है। नीति के अनुसार न कोई ऊँच है, न कोई नीचा, न कोई छोटा है, न कोई बड़ा है। लेकिन हमारे समाज में आज भी ऊँच-नीच की भावना प्रबल रूप में मौजूद है। इन दोनों चक्की के बीच में जीवन मल्य पिसते रहते हैं।

2.44 मैत्रेयी पष्पा. राय प्रवीण. गोमा हँसती है-1998

‘राय प्रवीण’ कहानी में राय प्रवीण नामक वेश्या की कथा का चित्रण हुआ है। यह राजा इन्द्रमणि के दरबार में नाचने गाने वाली वेश्या थी। ओरछा के मधकर सिंह के राजा तिलक के समय ग्वालियर की कंचना नर्तकी को नृत्य करने के लिए बलाया है। उसे ओरछा में ही रोक लिया गया। कंचना को बेटी हई उसका नाम सावित्री रखा। सावित्री जब बड़ी हई तब राजा इन्द्रमणि सिंह गददी पर बैठे थे। सावित्री को राजा इन्द्रमणि सिंह ने राय प्रवीण का खिताब दिया। बादशाह राय प्रवीण की मांग करते हैं। राजा इन्द्रमणि सिंह देने के लिए तैयार नहीं होते हैं तब यद्द से खन-खराबा होने की नौबत आती है। राय प्रवीण खन-खराबा होने से रोकने के लिए अकबर के दरबार में चली जाती है। बादशाह के सामने उसने खडे ही खडे दोहा रच डाला और कहा—

“विनती राय प्रवीण की सनिए चतर सजान।

जठी पातर भखत है. बारी वायस स्वान।।”

हे बादशाह, मैं राजा इन्द्रमणि सिंह का झठा भोजन हूँ। और झठा भोजन तीन जातियाँ ही खाती हैं— महतर, कौवा और कत्ता।”⁴²

इस लोक कथा से स्पष्ट होता है कि समाज में स्त्री की क्या स्थिति थी, वह

अपने आपको झठा भोजन मानती है। उसे केवल भोग का साधन मानकर परुष एक दूसरे के सामने एक वस्तु के रूप में पेश करता है। प्रस्तुत कहानी में परुषवादी समाज में व्याप्त नारी की यथार्थ स्थिति को उजागर किया गया है। नारी को केवल भोग की वस्तु समझा जाता है। नारी को केवल 'वस्तु' के रूप में देखना, हमारे परम्परागत जीवन मूल्यों के का प्रमाण है।

2.45 मैत्रेयी पष्पा. बिछड़े हए. गोमा हँसती है—1998

'बिछड़े हए' कहानी में सग्रीव नाम का आदमी रहता है। उसकी शादी होती है उसके पास पत्नी और बेटी रहती है। लेकिन एक दिन वह उन्हें छोड़कर सन्यासी हो जाता है। बहुत दिनों के बाद जब वह उसी गाँव में आता है तो मास्टर साहब उसे पहचान लेते हैं। लोग उसे देखने के लिए इकट्ठा होते हैं। वह अब सग्रीव से स्वामी शतानन्द हो गये हैं। उसी समय उसकी पत्नी की शादी होने वाली होती है। लोग कहते हैं कि सही समय पर आया है। कन्यादान कर देगा। 20 वर्षों के बाद वह गाँव में आता है। उसके चाचा आते हैं वह भी सग्रीव को पहचान लेते हैं लेकिन सग्रीव की पत्नी उसे पहचानने से इन्कार करती हई कहती है कि—

“...मगर बोरे को सँभालते हई चंदा बेटी के पास जा पहुँची। टटती आवाज में बोली”। “मगना बेटी. त यहाँ...घर में तो कितना काम फैला है। इस गाँव के आदमी तो बाबरे ठहरे. जो भी साध आता है. उसे ही तेरा पिता...”⁴³ फिर पीछे मडकर नहीं देखा उसने। मगना को लिवाकर चली गई। स्वामी शतानन्द फटी-फटी आँखों से देखते रहे दर तक देर तक। भीड़ घटने लगी। नारी का स्वाभिमान एव ऐसा मूल्य है जो उसकी अस्मिता की रक्षा करता है। प्रस्तुत कहानी नारी अप स्वाभिमान की शक्ति को उजागर करती है और परुष के पलायनवादी जीवन मूल्य

के चरित्र को फटकार लगाती है।

2.46 मैत्रेयी पष्पा. प्रेम भाई एंड पार्टी. गोमा हँसती है-1998

‘प्रेम भाई एंड पार्टी’ कहानी में नरेन्द्र की लड़की की शादी रहती है। लेकिन नरेन्द्र की लड़की पढ़ी-लिखी रहती है। इसीलिए उसकी शादी करने में परेशानी आती है। लड़के वाले दहेज माँगते हैं। नरेन्द्र एक प्राइमरी स्कूल का टीचर है। इसी वजह से वह दहेज ज्यादा नहीं दे सकता। जब लड़के वाले मन्नी को देखने आते हैं तो बीच में चंदन कहता है। कि सौदान सिंह नरेन्द्र के भाई हैं। तब जाकर शादी तय होती है। लेकिन लड़के के पिता बार-बार यही पछते हैं कि सौदान सिंह नहीं आये। लेकिन शादी के दिन सौदान सिंह आ जाते हैं। सभी लोग बहुत खश होते हैं उसी बीच मंत्री जी के आवभगत में सभी लोग लग जाते हैं। जब मन्नी की माँ गहने लेने जाती है। तो गहना चोरी हो जाता है। इसी वजह से वह बेहोश हो जाती है। लेकिन किस तरह दूसरों का गहना पहनाकर दल्हन को विदा दी जाती है। नरेन्द्र ने तारा भतीजी को बलाया और कहा कि— “अपनी मँदरी. बालियाँ और जंजीर मन्नी को पहना दो बिटिया। ससराल से आते ही लौटा देगी।”³⁷

मंत्री साहब वहाँ पर पानी भी नहीं पीते हैं। क्यों कि लड़की के शादी में वह कुछ खाते-पीते नहीं है। इस कहानी में समाज में व्याप्त दहेज की समस्या का चित्र प्रस्तुत किया गया है। हमारे समाज में दहेज प्रथा ने भयानक रूप ले लिया है। लालच और स्वार्थ में पड़कर हमारा समाज जीवन मूल्यों को निरंतर भलता जा रहा है।

2.47 मैत्रेयी पष्पा. ताला खला है पापा. गोमा हँसती है-1998

इस कहानी में निम्न वर्ग और उच्च वर्ग के लड़के. लड़की का प्रेम प्रसंग का मार्मिक वर्णन प्रस्तुत किया गया है। बारहवीं कक्षा में थे तब से अरविन्द और बिन्दों

में प्रेम प्रसंग चल रहा था। लेकिन घर वालों को पता नहीं था। लेकिन जब घर वालों को पता चला तब उसको एक घर में बन्द करके रखने लगे। उसी में खाना-पान दिया जाता था। एक दिन जब अरविन्द घर आता है। और कहता है कि तम मझे भल जाओ। तो वह बहत रोती है। लडकी के पापा को भी एक अफसर की बेटी से प्यार हो जाता है। लेकिन एक ही जाति होते हैं तब भी शादी नहीं हो पाती है क्योंकि ये गरीब थे।

“एक बार मन हुआ कि पीछे मड़कर देखें. मगर सोच लिया. इस रंग-बेरंग दनिया की अथाह गहराई बिन्दों नाप सकती है। हालाँकि पीछे से एक महीन स्व उनका पीछा करता चला आया।

“ताला खला है पापा”⁴⁵

इस कहानी में निम्नवर्ग और उच्चवर्ग की असफल प्रेम कथा का मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया गया है। मनष्य के स्वार्थ और लालच ने प्रेम के मल्य को भी कम कर दिया है।

2.48 मैत्रेयी पण्णा. साँप-सीढ़ी. गोमा हँसती है-1998

‘साँप-सीढ़ी’ कहानी में परानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी के दरमियान जो विचारों में मतभेद है। उसका यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया गया है।

राजन जबसे नागपर से रेलवे स्टेशन मास्टर का टैस्ट देकर आया है. उसी दिन रुपये का सवाल उठाया था। वह खेत बेचकर पैसा देने के लिए कहता है। तो उसके ताऊ मना करते हैं। लेकिन वह मानने के लिए तैयार नहीं होता है। एक दिन उसकी पत्नी घर छोड़कर चली जाती है। मना करने पर भी नहीं मानती है तो राजन फटकार कर कहता है कि—

“साली कतिया! तेरी ही खातिर कर रहा था मैं सारे जगाड. किसी और के लिए तो नहीं। हरामजादी. तेरे मायके की बारी आई तो... बेटिचो ने दिया है एव फटा सिक्का भी? मैं पछता हूँ. त नहीं उठाएगी ऐशोआराम?”⁴⁶

इस कहानी में नयी पीढ़ी और परानी पीढ़ी के लोगों के विचारों में मतभेद का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। यह कहानी घसखोरी की समस्या को भी उठाती है। भ्रष्टाचार के कारण जीवन-मल्यों में विघटन होता है।

2.49 मैत्रेयी पष्पा. उज्रदारी. गोमा हँसती है—1998

उज्रदारी कहानी में जब सोम के पिता का देहान्त हो जाता है. तब उन लोगों पर आर्थिक स्थिति का संकट आता है। परिवार में किसी परुष की मृत्यु हो जाए तो उसकी विधवा पत्नी को घर से बाहर निकालकर उसकी संपत्ति परिवार के असदस्य हड़पने का प्रयास करते हैं।

‘उज्रदारी’ कहानी में सोम के पिता की मृत्यु होने के बाद उसके चाचा सोम तथा उसकी माँ को घर से निकालने का प्रयास करते हैं। जेठ जी के सामने पर्दा करने वाली बहू ने किवाड की आड़ में खड़े होकर अधिकार माँगती है। तब सोम तब उसकी माँ को मारने का षडयंत्र किया जाता है. घर के सामने कूँआं खोदने बहाना कर उन दोनों को उसी गड्ढे में नींद की गोलियाँ देकर सलाना चाहते कभी न जागने के लिए। सोम की अम्मा ने अपना हिस्सा माँगा था तो उसे देने के बजाय उसे परिवारजन मौत देना चाहते हैं। इस तरह स्वार्थी प्रवृत्ति समाज में बढ़ने के कारण संयुक्त परिवार टूटते जा रहे हैं। प्रस्तुत कहानी पारिवारिक कलह में नैतिक मल्यों के हनन को उजागर करती है। स्वार्थ और लालच नैतिक और पारिवारिक जीवन मल्यों के सबसे बड़े शत्रु हैं।

2.50 मैत्रेयी पष्पा. रास. गोमा हँसती है-1998

‘रास’ कहानी में जैमन्ती एक नाईन की लडकी रहती है। जिसका विवाह एक हाथरस के अच्छे परिवार में उसकी शादी हो जाती है। उसके कई दिनों के बाद उसका गवना होता है। वह अपने ससराल चली जाती है। उस समय उसके पति की उम्र कम रहता है। जैमन्ती उस दिन एक रास गीत गाती है। जो उसके ससर के पसंद आ जाती है। वह जब रात को सोई रहती है तो उसका ससर उसके स दष्कर्म करना चाहता है। इतने में वह जाग जाती है। घर के सभी लोग जग जाते हैं। तब जैमन्ती कहती है कि मझे अपने पीहर पहुँचा दो। तो उसका देवर पहुँचा देता है। उसकी माँ दःखी होती है। वह कहती है। कि नाऊ की बेटी हँ मैं अपना काम चला लँगी। आपको चिंता करने की जरूरत नहीं। उसी बीच मनसखा महाराज आ जाते हैं। उनसे जैमन्ती प्यार करने लगती है। ये उसकी गलतफहमी होती है। जाने : समय वह कहते हैं कि— “ये धोतिया हैं। अब ललिता-बिसाजा की नहीं रही। आप कहें तो इस नाई की लडकी को दे दें।”⁴⁸ इससे उसको आघात पहुँचता है। वह घर पर आकर सोई रहती है। उसकी माँ कहती है कि लाला के यहाँ जाना है। बै बाँटना है। कब तक सोयी रहेगी। तब वह उठकर वहाँ चली जाती है

इस कहानी में जैमन्ती के ससर द्वारा उसके साथ दष्कर्म करने का प्रय दिखाया गया है। समाज में ये बराई किस कदर फैल रही है। नारी की अस्मिता अब कहीं भी सरक्षित नहीं है। जीवन-मल्यों के विघटन के कारण समाज की कत परायणता निरंतर समाप्त होती जा रही है

2.51 मैत्रेयी पष्पा. बारहवीं रात. गोमा हँसती है-1998

‘बारहवीं रात’ कहानी में सरेन्द्र नाम के लडके से सीता का विवाह हो जाता

है। सरेन्द्र की माता उसको हमेशा दहेज के लिए कोसा करती है। कि तम्हारा बाप एक लाख देने की बात किया था लेकिन वह चालीस हजार ही दिया। एक दिन गस्से में आकर वह फाँसी लगा लेती है। उसके बाद सरेन्द्र को पलिस पकड़कर ले जाती है। फिर उसके माता-पिता परेशान रहते हैं। कि कैसे अपने लडके को पलिस के फंदे से छड़ाये। तो वे लोग सरेन्द्र की दूसरी शादी करने को सोचते हैं। लडकी वाले से अस्सी हजार मिल जाएगा तो हम लोग अपने सरेन्द्र को उसी पैसे से छड़ा लाएंगे। लेकिन नाई ये खबर लेकर आता है कि— “सरेन्द्र की अम्मा. होश में आओ। मालम है. संदेश किसका था? नाई कह रहा था कि क्या करे धमना वाले. उनकी बिटिया अडी है कि दददा हमें कँआरे रहना मंजर है। कतल होने उनके घर नहीं...”¹⁴⁹

इस कहानी में लेखिका ने जो समाज में दहेज की वजह से ल आत्महत्या कर ले रही हैं उसी का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत कहा दहेज प्रथा के भयंकर रूप को प्रस्तुत करती है। यह ऐसी प्रथा है जहाँ मनष्य जीवन का कोई मल्य नहीं। स्वार्थ और लालच से जीवन मल्यों की निरंतर दया हो रही है।

2.52 मैत्रेयी पण्णा. गोमा हँसती है. गोमा हँसती है—1998

‘गोमा हँसती है’ कहानी में किडा सिंह रहता है। उसकी शादी इसलिए नहीं होती है कि उसकी एक आँख नहीं है। क्योंकि माता मडया की वजह से बचपन में ही उसकी एक आँख चली गयी थी। लेकिन कलबतिया चाची उसके पिता से उसकी शादी के लिए कहती है। वह तैयार नहीं होता है। बाद में तैयार हो जाता कलबतिया चाची की भतीजी रहती है गोमा उसी से किडा सिंह की शादी हो जाती है। लेकिन वह कम उम्र की लडकी रहती है तो उसकी चाची किडा सिंह को छेड़खानी

करने को मना करती है। उसमें उसका दोस्त रहता है। बलीसिंह उसी पर उनका शक जाता है। कि बच्चा उसी का है तो किडा सिंह परेशान होता है। गोमा के घर जब कपड़ा लेकर जाता है तो गोमा के भाइयों बलीसिंह की बहत बरी तरह से पिटाई कर देते हैं कि 'साले तम्हीं हमारे बहनोई हो तम्हारी खातिरदारी हम खब करेंगे ले साले। बहत मारते हैं और मर्दा समझ कर छोड़ देते हैं। रास्ते में नाऊ मिल जाता है। वह किउडा सिंह को बताता है तो किडा सिंह मजबर होकर उसको सार्डकिल पर बिठाकर गाँव ले आता है।

इस कहानी में जो समाज में पर स्त्री पर बरी नजर रखने वाले लोगों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। नाई कहता है कि—

“जि समझ लो कि जो प्रधान बीच-बिचाव न करें तो लहास हो जातीं। : दोऊ भइया तो ऐसे फैले कि पछो मत कछ। लठिया, जता तो कछ हाथ पडा-धमाधम। लात-घँसा तडातड, लगै चाँद में, लगै पीठ में, पाँयन में। एक ही बात बोले-बता, त हमारा जीजा है? बहनोई है? ला, हम खबाब तझे मेहमानी। ला, हम दें तझे बिदा। ले, जता खा। ले डंडा खा। ले घँसा खा। ससर जी, अब आना अगली बेर।”⁵⁰ प्रस्तुत कहानी में पर स्त्री गमन की समस्या को उजागर करने के साथ ही नारी की त्रासद स्थिति का चित्र भी प्रस्तुत किया है। हमारे समाज में आपसी रिश्तों से भी जीवन मूल्यों का निरंतर विघटन हो रहा है।

2.53 नासिरा शर्मा, खदा की वापसी, चार बहनें शीशमहल की—2001

‘चार बहनें शीशमहल की’ कहानी में चार बहनें रहती हैं। उन्हीं पर ये कहानी केन्द्रित है। जिस घर में पहली लड़की के जन्म पर खशियाँ मनाई थीं उसी घर में अब चार बेटियाँ पैदा होती हैं। तब शरीफ की माँ अपने बेटे को दूसरी शादी करने की

सलाह देती है। बेटा शरीफ दसरी शादी करने के लिए मना कर देता है। लड़कियाँ बड़ी होती हैं। हालात ने बचपन से उन्हें एक ओर असुरक्षा की भावना दी थी. तो दसरी ओर उन चारों में एक विचित्र किस्म का विश्वास जगाया था। बाजार में लगी आगे के कारण करीम की दकान जल जाती है। उसी रात करीम को लकवा मार जाता है. और सारा बोझ शरीफ के कंधों पर आता है। दकान में बरकत होती है। एक दिन शरीफ के चचेरे भाई अकरम और अकील घर आते हैं. और हथियार रखकर जाते हैं। उसी रात घर पर हल्ला होता है. और चारों बहनों गण्डो से लडते हुए मर जाती हैं।

‘चार बहनों शीश महल की’ कहानी में लेखिका ने चारों बहनों की जिद. साहस और निर्भयता का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत कहानी के संबंध में समाज में फैले पर्वग्रह को तोड़ती है जहाँ नारी को बोझ समझा जाता है। यह जीवन-मृत्यों के विघटन का चरम बिन्दु है जहाँ हम विश्व की जननी को ही बोझ समझने लगते हैं।

2.54 नासिरा शर्मा. खदा की वापसी. ‘खदा की वापसी-2001

‘खदा की वापसी’ कहानी इस संग्रह की सर्वश्रेष्ठ कहानी है। इस कहानी में जबैर और फरजाना पति-पत्नी के रूप में अपना जीवन यापन करते हैं। इनके संबंधों में एक समय ऐसा आता है। कि उनमें मन-मटाव हो जाता है। सहाग रात के दिन जबैर अपनी पत्नी को फसलाकर उससे मेहर की रकम माफ करवा लेता है। जबैर अपनी पत्नी फरजाना से कहता है कि. “देखिए अगर आप मेहर के रुपये चाहती हैं तो मझे कोई एतराज नहीं है. हम बिजनेस क्लासवाले हैं। चेक अभी काटकर आपके हवाले कर सकता हूँ. मगर बात कछ और है. वह औरत शौहर के लिए बहत मबारक

होती है. जो पहली रात अपने शौहर का मेहर माफ कर दे। वह बड़ी पाकदार समझी जाती है।”⁵¹

मेहर माफ करवाए बगैर वह अपनी पत्नी को हाथ न लगाने की बात करता है. तो फरजाना मेहर माफ कर देती है। बाद में उसे मालम पडता है. कि मेहर माफ करने संबंधी कानून कहीं भी नहीं है। तब वह भी जबैर के बच्चे की माँ न बनने का निश्चय करती है। बाद में फरजाना पति से यह बात कहकर उसका घर छोड़व मायके में रहने लगती है। प्रस्तुत कहानी नारी के स्वाभिमान को उजागर करने व साथ ही पुरुष के दो मँहे चरित्र को भी उजागर करती है। लेकिन कहानी में समझाया है कि. दाम्पत्य जीवन में भी जीवन-मल्यों का महत्व समाप्त हो रहे हैं।

संदर्भ :

1. कृष्णा अग्निहोत्री. 'कांटों के झरमट'. जिंदा आदमी. प्रकाश ज्ञान भारती. रूपनगर दिल्ली. प्रथम संस्करण— 1986 ई0. पृष्ठ-6
2. कृष्णा अग्निहोत्री. 'रमकलिया'. जिंदा आदमी. प्रकाश ज्ञान भारती. रूपनगर दिल्ली. प्रथम संस्करण— 1986 ई0. पृष्ठ-20-21
3. कृष्णा अग्निहोत्री. 'जिंदा आदमी'. जिंदा आदमी. प्रकाश ज्ञान भारती. रूपनगर दिल्ली. प्रथम संस्करण— 1986 ई0. पृष्ठ-86
4. कृष्णा अग्निहोत्री. 'सेनानी'. जिंदा आदमी. प्रकाश ज्ञान भारती. रूपनगर दिल्ली. प्रथम संस्करण— 1986 ई0. पृष्ठ-76
5. मदला गर्ग. 'तीन किलो की छोरी'. शहर के नाम. भारतीय ज्ञानपीठ. प्रथम संस्करण— 1990 ई0. पृष्ठ-27
6. मदला गर्ग. 'वह मैं ही थी'. शहर के. भारतीय ज्ञानपीठ. प्रथम संस्करण— 1990 ई0. पृष्ठ-76
7. मदला गर्ग. 'शहर के नाम'. शहर के नाम. भारतीय ज्ञानपीठ. प्रथम संस्करण— 1990 ई0. पृष्ठ- 112
8. चंद्रकांता. 'पत्थरो के राग'. ओ सोनकिसरी. राजकमल प्रकाशन. नयी दिल्ली. प्रथम संस्करण—1991 ई0. पृष्ठ- 26
9. चंद्रकांता. 'मेरी माँ कहा करती थी'. ओ सोनकिसरी. प्रकाशन. राजकमल प्रकाशन. नयी दिल्ली. प्रथम संस्करण— 1991 ई0. पृष्ठ- 118
10. चंद्रकांता. 'ओ सोनकिसरी'. ओ सोनकिसरी. राजकमल प्रकाशन. नयी दिल्ली. प्रथम संस्करण— 1991 ई0. पृष्ठ- 164-165
11. नमिता सिंह. 'जंगल गाथा'. जंगलगाथा. वाणी प्रकाशन. प्रथम संस्करण—1994 ई

पष्ठ-35

12. नमिता सिंह. 'बन्तो'. जंगल गाथा. वाणी प्रकाशन. प्रथम संस्करण— 1994 ई०. पष्ठ-52

13. नमिता सिंह. 'चाँदनी के फल'. जंगल गाथा. वाणी प्रकाशन. प्रथम संस्करण— 1994 ई०.

पष्ठ-130

14. नमिता सिंह. 'रामलीला'. नील गाय की आँखें. वाणी प्रकाशन. नई दिल्ली. द्वि

संस्करण-1997 ई.. पष्ठ-76

15. नमिता सिंह. 'नील गाय की आँखें'. नील गाय की आँखें. वाणी प्रकाशन. नई दिल्ली. द्वितीय

संस्करण-1997. पष्ठ-161-162

16. नासिरा शर्मा. 'विरासत'. सबीना के चालीस चोर. प्रथम संस्करण—दिसंबर 1997 ई०.

पष्ठ-24

17. नासिरा शर्मा. 'चाँद-तारों की शतरंज'. सबीना के चालीस चोर. प्रथम संस्करण—दिसंबर

1997 ई०. पष्ठ-48

18. नासिरा शर्मा. 'डमाम साहब'. सबीना के चालीस चोर. प्रथम संस्करण—दिसंबर 1997 ई०.

पष्ठ-50

19. नासिरा शर्मा. 'ततडया'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर. प्रथम संस्करण—दिसंबर

1997 ई०. पष्ठ-73

20. नासिरा शर्मा. 'गँगी गवाही'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर प्रकाशन.

संस्करण—दिसंबर 1997 ई०. पष्ठ-

21. नासिरा शर्मा. 'सतधरवा'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर. प्रथम संस्करण—दिसंबर

1997 ई०. पष्ठ-112

22. नासिरा शर्मा. उसका बेटा. सबीना के चालीस चोर. किताब घर. प्रथम संस्करण—दिसंबर

1997 ई०. पष्ठ-119

23. नासिरा शर्मा. 'तक्षशिला'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर. प्रथम संस्करण—दिसंबर 1997 ई0. पष्ठ-141
24. नासिरा शर्मा. 'चमगादड़ें'. सबीना के चालीस चोर. प्रथम संस्करण—दिसंबर 1997 ई0. पष्ठ-155
25. नासिरा शर्मा. 'नौ-तपा'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर. प्रथम संस्करण—दिसंबर 1997 ई0. पष्ठ-174
26. नासिरा शर्मा. 'सबीना के चालीस चोर'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर. प्रथम संस्करण—दिसंबर 1997 ई0. पष्ठ-195
27. नासिरा शर्मा. 'आया बसंत सखी'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर. प्रथम संस्करण—दिसंबर 1997 ई0. पष्ठ-208
28. ममता कालिया. 'सेमिनार'. जाँच अभी जारी है. लोक भारती. पेपरबैक्स. प्रथम संस्करण—1997 ई0. पष्ठ-17
29. ममता कालिया. 'उमस'. जाँच अभी जारी है. लोक भारती. पेपरबैक्स. प्रथम संस्करण—1997 ई0. पष्ठ-26
30. ममता कालिया. 'जाँच अभी जारी है'. जाँच अभी जारी है. लोक भारती. पेपरबैक्स. प्रथम संस्करण—1997 ई0. पष्ठ-27
31. ममता कालिया. 'दाम्पत्य'. जाँच अभी जारी है. लोक भारती. पेपरबैक्स. प्रथम संस्करण—1997 ई0. पष्ठ-74
32. ममता कालिया. 'अनभव'. जाँच अभी जारी है. लोक भारती. पेपरबैक्स. प्रथम संस्करण—1997 ई0. पष्ठ-102
33. ममता कालिया. 'वर्दी'. जाँच अभी जारी है. लोक भारती. पेपरबैक्स. प्रथम संस्करण—1997 ई0. पष्ठ-125

34. मेहरुनिसा परवेज. 'अम्मा'. अम्मा. ज्ञान गंगा. प्रथम संस्करण. 1997 ई0. पष्ठ-17
35. मेहरुनिसा परवेज. 'सजा'. अम्मा. ज्ञान गंगा. प्रथम संस्करण. 1997 ई0. पष्ठ-28
36. मेहरुनिसा परवेज. 'लौट आओ बाब जी'. अम्मा. ज्ञान गंगा. प्रथम संस्करण. 1997 ई0. पष्ठ-43
37. मेहरुनिसा परवेज. 'प्राण-प्रतिष्ठा'. अम्मा. ज्ञान गंगा. प्रथम संस्करण. 1997 ई0. पष्ठ-52
38. मेहरुनिसा परवेज. 'घरे का बिरवा'. अम्मा. ज्ञान गंगा. प्रथम संस्करण. 1997 ई0. पष्ठ-62
39. मेहरुनिसा परवेज. 'पापा का घर'. अम्मा. ज्ञान गंगा. प्रथम संस्करण. 1997 ई0. पष्ठ-82
40. मेहरुनिसा परवेज. 'अपने-अपने लोग'. अम्मा. ज्ञान गंगा. प्रथम संस्करण. 1997 ई0. पष्ठ-155
41. मैत्रेयी पष्पा. 'शतरंज के खिलाडी'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण— 1998 ई0. पष्ठ-22-23
42. मैत्रेयी पष्पा. 'राय प्रवीण'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण— 1998 ई0. पष्ठ-43
43. मैत्रेयी पष्पा. 'बिछडे हए...'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण— 1998 ई0. पष्ठ-64
44. मैत्रेयी पष्पा. 'प्रेम भाई एंड पार्टी'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण— 1998 ई0. पष्ठ-76
45. मैत्रेयी पष्पा. 'ताला खला है पापा'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण— 1998 ई0. पष्ठ-90
46. मैत्रेयी पष्पा. 'साँप-सीढी'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण— 1998 ई0. पष्ठ-109
47. मैत्रेयी पष्पा. गोमा हँसती है. रास. प्रथम संस्करण— 1998 ई0. किताब घर प्रकाशन

पष्ठ-151

48. मैत्रेयी पष्पा. 'बारहवीं रात'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण— 1998

ई0. पष्ठ-165

49. मैत्रेयी पष्पा. 'गोमा हँसती है'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण—

1998 ई0. पष्ठ-195-196

50. नासिरा शर्मा. 'चार बहनें शीश महल की'. खदा की वापसी. भारतीय ज्ञानपीठ. तृतीय

संस्करण-2001. पष्ठ-49

51. नासिरा शर्मा. 'खदा की वापसी'. खदा की वापसी. भारतीय ज्ञानपीठ. तृतीय संस्करण-2001.

पष्ठ-18

तृतीय अध्याय

3.0 हिन्दी-महिला-कहानीकारों की कहानियों में अभिव्यक्त सामाजिक जीवन मूल्य

विश्व में प्रत्येक समाज की एक संरचना होती है, जो उसकी विभिन्न परम्पराओं में निहित होती है। परम्पराएं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होते हुए समाज की विरासत को प्रकट करते हैं। बदलते सामाजिक परिवेश के अनुसार सामाजिक मूल्य में परिवर्तन देख सकते हैं। हिंदी के महिला कहानीकारों ने कहानियों में बदलते सामाजिक मूल्य को चित्रित किया है। मूल्यों में परिवर्तन के कारणों पर भी प्रकाश डाला है। सामाजिक मूल्य जैसे जाति, परिवार, प्रेम, विवाह, नारी संबंधी अपने विचार पात्रों के माध्यम से अंकित किये हैं।

“समाज लोगों का एक समूह है, जो भौगोलिक क्षेत्र में निवास करता जिसकी एक निश्चित संस्कृति होती है, उनमें एकता की भावना होती है, तथा स्वयं को एक विशिष्ट अस्तित्व के रूप में मानते हैं। जिनके पास एक व्यापक सामाजिक तंत्र होता है, जिसमें मानव की मूल-भूत आवश्यकताओं को संतुष्ट कर आवश्यक मूल-भूत सामाजिक संस्थाओं का समावेश होता है।”¹

3.1 जाति

“भारत वर्ष में करीब 3000 से भी ऊपर जातियाँ और उपजातियाँ हैं। इनकी उत्पत्ति इसी समाज के भीतर से हुई परन्तु सामाजिक सम्मिलन की दृष्टि से जातिगत विविधता ने भारतीय समाज में बड़ा अलगाव पैदा किया है। विवाह, छआछत, जाति के प्रति भक्ति, दूसरी जातियों के प्रति ऊँच-नीच की भावना और उससे उत्पन्न घणा

आदि के कारण भी भारतीय समाज में विविधता पाई जाती है।”²

जाति व्यवस्था के परम्परागत मूल्यों द्वारा समाज में जाति विशेष को लेकर जो विसंगतियाँ थीं वे आधुनिक समाज में परिवर्तित दिखायी देते हैं। मैत्रेयी पण्णा और मेहरुन्सिसा परवेज की कहानियों में जाति व्यवस्था के विरुद्ध आवाज प्रस्तुत है।

‘रास’ कहानी में नाई जाति की जैमन्ती अपने ससराल छोड़कर आ जाती है तो वह घम-घम कर गाँव के लोगों के घर का काम करती रहती है। वह नाई की बेटी है। शादी-विवाह पर्व त्यौहार में जाती रहती है। लेखिका कहती है कि—“नाई की बेटी है जैमन्ती। गीतों के आखर सने बिना गजारा भी कहाँ? ब्याह-परव से लेकर चाव-चबैनी तक हिस्सेदारी, ताबेदारी निभानी होती है। जिजमानों के गीत आनगाँव ले जाने हों तो सिर पर बतासों-भरी डलिया और गले में ढोलक लटकाकर औरतों के रंग-बिरंगे, सजे-बजे समह के आगे-आगे चलना होता है।”³

आधुनिक समाज में प्राचीन जाति संबंधित मूल्यों के विरुद्ध आवाज दिए हैं। मैत्रेयी पण्णा की कहानी ‘उज्रदारी’ में भोला राम जाति विशेष के विरुद्ध आवाज देता है। सोम के पिता का देहान्त के पश्चात उसकी माँ को घर वाले तंग करते हैं तो भोला कहता है—“तम मारते रहो और हम चप रहें? कम्हार-चमार की बात छोड़ो। जाति बखान कर हमें चप कर देने के जमाने लद गए, हाँ!”⁴

इसी प्रकार के बदलते मूल्य हम मेहरुन्सिसा परवेज की कहानियों में देख सकते हैं। ‘सजा’ कहानी में मेहरुन्सिसा परवेज एक जाति का दूसरी जाति से विवाह होने पर परिवार द्वारा विरोध को प्रस्तुत किया है। “सारे घर में सगबगाहट सलगती रही कि उमा ब्याह करना चाहती है, वह भी अपने मन पसंद हीरो, से जो दूसरी जाति का है। उमा की ब्याह की बात घर में दोबारा शुरू होते ही जैसे हँगामा सा खड़ा हो

गया। जो चर्चा पहले सखद लगती थी. वही अब दःखद लगने लगी थी।”⁵

इसी कहानी की नायिका उमा जब नौकरी करने लगती है. वहाँ उसे ए दसरी जाति का लडका पसंद आ जाता है। वह उसी से शादी करना चाहती है। घर वाले तैयार नहीं होते. हैं तो वह भाग कर शादी कर लेती है। “ठीक आठवें दिन उमा का टेलीग्राम दिल्ली से आया कि उसने आर्य समाज के मंदिर में दिनेश से ब्याह कर लिया है। टेलीग्राम की सचना ने तो जैसे घर पर बिजली गिरा दी थी। सब भौचक्के! मर्दनी-सी छा गई। उमा ऐसा करेगी. किसी ने भी नहीं सोचा था। बात धीरे-धीरे बंद दरवाजों से निकलकर हवा के साथ बाहर मोहल्ले में फैल गई।”⁶

इसी प्रकार ‘लौट जाओ बाब जी’ में नायिका दसरी जाति के लडके से शादी कर लेती है। कुछ दिनों के बाद जब लडकी के पिता उसके घर जाते हैं तो लडकी खश हो जाती है। दोनों में बातें होने लगती हैं। तो उसके बाब पछते हैं तो वह कहती है कि—“हाँ बाबजी! एकाएक उसे लगा. गले में कछ फँस गया है. और वह गल साफ करते बोली. गिरीश अच्छे हैं।”⁷

जाति व्यवस्था के कारण उच्च जाति वाले निम्न जाति के लोगों का छः खाना या पीना नहीं चाहते. अगर वे उनका छआ खा लेते हैं तो वे लोग पाप समझते हैं। ‘ततडया’ कहानी में जब गाँव में मेला लगता है. तब शन्नों मेला देखने जाती है। वहाँ एक आदमी उसे उठा ले जाता है। इससे बारिन बहत नाराज होती है। घर आने के बाद भी उसके हाथ का बना हुआ कछ खाती पीती नहीं है। एक दिन जब वह चाय-पानी रखती है. तो बारिन कहती है कि—“क्यों धर्म भ्रष्ट करने पर उतारु है. कलमँही? तेरे हाथ का जल पीकर नरक जाना है क्या? जा बैठ कोप भव नटनी।”⁸

चन्द्रकांता की 'पत्थरों के राग' कहानी में भारतीय जाति प्रथा का उदाहरण प्रस्तुत है। सोनल की उम्र ज्यादा हो जाती है। महल्ले वाले ताना कसते हैं। इस पर सोनल के पिता उन लोगों से कहते हैं कि—“हम ब्राह्मण. संस्कारनिष्ठ परिनाते-रिश्तेदारी. सोना-जैसी लडकी को कएँ में तो नहीं धकेल सकते? घर में चातर्मास. ब्रत. अनपठान सब यो विधिवत चलता है। हरि-कपा है।”⁹

जाति प्रथा एक प्राचीन प्रथा है। वर्ण व्यवस्था के आधार पर जाति प्रथा का विकास हुआ है। जाति संबंधित जीवन मूल्य में परिवर्तन पूर्णरूप से संभव नहीं है। जाति संबंधित जीवन-मूल्यों में परिवर्तन शिक्षा के अध्ययन से संभव है। महि कहानीकारों ने अपनी कहानियों में जाति संबंधित जीवन-मूल्यों पर प्रकाश डाला है।

3.2 परिवार

परिवार समाज का आधार स्तंभ माना जाता है। यह सामाजिक समूह व इकाई है जिसके सामान्यतः वे ही सदस्य होते हैं जिनके आपस में या तो रक्त सम्बन्ध होते हैं अथवा विवाह द्वारा संबंध स्थापित होते हैं। परिवार के सदस्य कानूनी, नैतिक तथा आर्थिक अधिकार एवं कर्तव्यों के द्वारा भी आपस में बंधे रहते हैं।

“परिवार वह सामाजिक समूह है, जो एक ही आवास में रहता है, आर्थिक रूप से एक दूसरे को सहयोग करता है। तथा संतानोत्पादन करता है ¹⁰ परिवार में व्यक्ति आर्थिक संसाधनों का साझा उपयोग करता है, साथ-साथ काम करता है तथा संतानोत्पत्ति करता है। परिवार की संरचना समाजों के अनुसार निश्चित होती है। परिवारों की संस्कृतियों में भी विभिन्नता पाई जाती है।

“परिवार वह समूह है जिसके अन्तर्गत स्त्री-पुरुष का यौन सम्बन्ध पर्याप्त निश्चित हो और उनका संबंध ऐसा हो जिससे सन्तान उत्पन्न हो और उ

पालन-पोषण भी किया जाये।”¹¹

प्राचीन समाज में परिवार के सभी सदस्य एक ही जगह पर रहते थे म आधुनिक समाज में मल्य विघटित होने लगे हैं मैत्रेयी पष्पा की कहानी में संयुक्त परिवार का चित्रण है।

‘प्रेम भाई एंड पार्टी’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने नरेन्द्र के माध्यम से कल-परिवार. खानदान का वर्णन किया है। मन्नी की शादी करने लडके वाले के पास नरेन्द्र और चंदन जाते हैं. वहाँ वह लोग तैयार नहीं होते हैं। तारा को समझाते हुए नरेन्द्र कहता है कि—“तारा. यह तो हमारा दिल ही जान रहा था कि वह पहाड़-सी रकम हमारी मामली हैसियत से नहीं लाँधी जाएगी। हारकर दहाई देनी पड़ी। चंदन ही बोला कि माते जी. अपने तो अंतिम दाम बोल दिए. पर खानदान भी तो देखो। कल म रखता है। पडसा-टका नहीं धरा रहता जीवन-भर। नातेदार अच्छे होने चाहिए. वे ही वक्त-जरूरत काम आते हैं।”¹²

‘इरादा’ कहानी में ममता कालिया ने गिरीश के माध्यम से परिवार में पति का जो पत्नी पर अधिकार है. उसको दर्शाया है।

परिवार को बनाये रखने के लिए स्त्री का अहम स्थान होता है सदियों से स्त्री परिवार को बनाये रखने में अपने स्वार्थ को त्याग करती आयी है। मगर आधुनिकता के कारण स्त्री में बनियादी अधिकारों के प्रति जागृति हुई है जिससे उसके विचारों में परिवर्तन होने लगे हैं।

नायिका जब अपने पति गिरीश के साथ रहने लगती है. तो वह उ अधिकार जताने लगता है। उसका कहना था कि—“ब्याह के बाद नए लोग. न जीवन को ही याद रखना चाहिए। ससराल को ही सबकछ समझना चाहिए।”¹³

‘इरादा’ कहानी में लेखिका ने शांति के माध्यम से ससराल के लोगों के द्वारा मोह भंग को दर्शाया गया है। शांति मायके से ससराल जाती है। उसी वक्त उसका पति डयटी से आता है। और शांति पर गस्सा करता है। शांति सोचती है कि—“मैं क्या इस घर की बंधआ मजदूर हूँ जो मझे सस्ताने का भी हक नहीं। बीमार पड़ने की भी आजादी नहीं।”¹⁴

3.2.1 पारिवारिक संबंध

भारतीय समाज में पारिवारिक संबंधों में तीन प्रकार का संबंध देखा जा सकता है। पति-पत्नी के संबंध, माता-पिता व संतान के संबंध और बह तथा सास-ससर के संबंध।

पारिवारिक संबंध महत्त्वपूर्ण संबंध हैं ये संबंध खन के रिश्तों से बनते हैं और खन के रिश्तों के साथ विवाह होने वाले और उनके परिवार से भी बनते हैं। परिवार के सदस्य एक-दूसरे से इस प्रकार संबंधित रहते हैं कि वह उनके दःख और सख को अपने निजी जीवन के दःख और सख जैसे समझते हैं। समस्याओं का समाधान ढूँढने का प्रयत्न करते हैं। और समाधान होने पर खश होते हैं।

भारतीय समाज में पारिवारिक संबंधों का मूल्य अधिक मान्य रहा है। लेकिन आधुनिकता शिक्षा, वैश्वीकरण आदि के कारण पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन हो रहे हैं।

पति-पत्नी के संबंध

परम्परागत परिवार में परिवार संबंधी निर्णय लेने में पत्नी को कोई अधिकार नहीं दिया जाता है। पत्नी पति को परमेश्वर मानती थी। पति तथा परिवार को खश रखना अपना कर्तव्य समझती थी। पति भी पत्नी को सम्मान एवं अधिकार देता है।

मगर आधुनिक समाज में पति-पत्नी से संबंधित मूल्य कम होने लगे हैं। पति-पत्नी में एक-दूसरे पर विश्वास, प्रेम और आदर कम होने के कारण पति-पत्नी के जीवन में सख कम होने लगा है। हिन्दी महिला कहानीकारों ने पति-पत्नी के विगड़ते हुए मूल्यों को अपने कहानियों के माध्यम से दर्शाने की कोशिश की है।

‘गोमा हँसती है’ कहानी में लेखिका ने भगतजी के माध्यम से पति-पत्नी संबंध का वर्णन किया गया है।

‘गोमा हँसती है’ कहानी में पति-पत्नी संबंध के परंपरागत विचार पेश हैं किडडा बलीसिंह पर बहत नाराज है तब ध्यान आता है कि भगत जी क्या कहते हैं, वह सोचता है कि “जो स्त्री अपने पति को माता की तरह भोजन परोसकर खिलाए, विपत्ता आने पर मंत्री की तरह सलाह दे, सेज पर रंभा परी अप्सरा के समान व्योहार करे, वह सच्ची पतिव्रता नारी है। गोमा सब गणों की खान है। किड्डा परम मढ ठहरा बात-बात पर अपनी प्राण-प्यारी सकमारी से उलझ बैठता है। ऐसे आदमियों को भगज्जी झाड-झंखाड कहते हैं।”¹⁵

‘दाम्पत्य’ कहानी में ममता कालिया ने आलोक के माध्यम से पति पत्नी संबंध में जो विसंगतियाँ आ रही हैं, उसका चित्रण प्रस्तुत किया गया है। आलोक और सनिता में किसी बात को लेकर बहस हो जाती है। आलोक इसी बात को लेकर सोचता है कि उसका दाम्पत्य जीवन गलत चल रहा है। “अपने बीस साल पराँ दाम्पत्य जीवन पर इतनी माथापच्ची उसे गवारा न हई। बहरहाल वह सहा सहानभूति, सहयोग, संजीदगी और सहनशक्ति जैसे कुछ शाश्वत सत्र सोचते हुए सो गया।”¹⁶

‘बारहवीं रात’ कहानी में लेखिका ने पति-पत्नी के अन्तर्संबंधों में जो जीवन

मल्य टटते दिखायी देते हैं। उसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है। सीता बह फाँसी लगा कर मर जाती है। तो उसके सास-ससर में वार्तालाप होता है। वे एक-दसरे को दोषी ठहराने की कोशिश करते हैं। तो सरेन्द्र के पिता कहते हैं कि—
पच्चीस बरस से झेल रहा हूँ। साली कतिया! घर घरा कर दिया तेरे पीछे। हमारी माँ झूठ नहीं कहती थी कि जो औरत अपने बच्चे का हिस्सा भी चाट ले। वह सौ डायनों की डायन।”¹⁷

‘इमाम साहब’ कहानी में नासिरा जी ने जलेखा के माध्यम से यह दिखाने का प्रयत्न किया है। कि गलत-फहमी से पति-पत्नी के संबंध में विच्छेद हो जाता है। इसीलिए सोच समझ कर फैसला लेना चाहिए। नहीं तो पति-पत्नी संबंधित जीवन मल्य ऐसे ही टटते हैं।

इसी कहानी में इमाम साहब शहर चले जाते हैं और वहाँ से आने के बाद उनकी सेहत गिरि हई रहती है। पत्नी को शक होता है। तीनों वक्त खाना खाने के बाद उनकी सेहत कैसे खराब हई। जरूर कोई बात है। वह कहती है—कहीं शहर में किसी को रख तो नहीं लिया। जो निगोडी सारी ताकत चस रही है? इस बार इनके साथ किसी बच्चे को करना पड़ेगा।”¹⁸

इमाम साहब शहर में इमामत करने चले जाते हैं तब उनका सेहत गिर जाती है। बीबी को शक होता है। लेकिन जब इमाम साहब सच्चाई बताते हैं तब पत्नी को पछतावा होता है। वह कहती है कि—“हाय अल्लाह! जलेखा की आँखें भर आयीं। उसको अपने बेमतलब शक पर पछतावा हो रहा था। माटी मिली मैं क्या खराफात सोच बैठी थी।”¹⁹

जलेखा के माध्यम से व्यक्त किया है कि जब पति दर रहता है। तो इस तरह

के विचार पत्नी के मन में होते हैं. उसका मार्मिक चित्रण किया है।

‘बिछड़े हए’ कहानी में चंदा के माध्यम से पति-पत्नी के संबंध का सचि प्रस्तुत किया है। सग्रीव चंदा को छोड़कर सन्यासी हो जाते हैं. तब चंदा विरह अपना जीवन-यापन करती है. और अपनी माँ से चंदा विरह में कहती है कि—“माँ. तेरे दामाद ने झगड़े में. छेड़खानी में एक बार नथनी तोड़ डाली. दूसरी बार हाथ से मंदरी कहीं खो गई. लेकिन मैं अपने सजन से कभी रूठी नहीं. कोई शिकायत नहीं की।”²⁰

‘दाम्पत्य’ कहानी में आलोक के माध्यम से पति-पत्नी की बातों में मतभेद का वर्णन किया गया है। आलोक और सनिता पति-पत्नी हैं। वे हेमन्त भाई के बच्चे की सालगिरह में नहीं जा पाते हैं तो आलोक दूसरे दिन जाने की बात करता है। लेकिन सनिता मना कर देती है। इस पर आलोक सोचता है—“आलोक को चोट लर्ग हल्की-फल्की बातों में भी उन दोनों में मतभेद जाहिर होने लगते हैं। सनिता हर बात में फायदा-नकसान जैसे शब्द कहाँ से निकाल लाती है. और उसकी समझ का रोना तो वह रोती ही रहती है।”²¹

‘इरादा’ कहानी में ममता कालिया शांति के माध्यम से पति-पत्नी के संबंधों में विच्छेद को दर्शाया है। शान्ति पीहर से आने के कुछ दिन बाद फिर घर जाना चाहती है तो उसकी सास अपने बेटे से शिकायत करती है. वह नहीं जाने देता है. शांति अपने पति से कहती है कि—“रात मैंने सोचा था. मैं नहीं जाऊँगी. पर अब मे इरादा बदल गया है। मैं अगली गाड़ी से जा रही हूँ। अब जब तम्हारा दिमाग एक-दम ठीक हो जाएगा. तभी वापस आऊँगी।”²²

माता-पिता और संतान

माता-पिता और संतान का संबंध परिवार का आधार स्तंभ है। माँ ममता का प्रतीक है। माँ अपनी संतान को बहुत पसंद करती है। माता-पिता अपनी संतान से बिछड़कर नहीं रहना चाहती है। अगर बिछड़कर रह रही है तो उसकी याद उ हमेशा दःखी करती है

‘विरासत’ कहानी में पल्ला और पल्लाइन एक दम्पति हैं जिनका बेटा, बह. और उनके पोता सब गाँव से बाहर अमेरिका चले गये हैं. वे कभी गाँव नहीं आते हैं। इसीलिए उनके माता-पिता दःखी रहते हैं। दूसरों की औलादों को देख पल्लाइन अपने को रोक नहीं पाती थी। पल्लाइन दूसरों के बच्चों को प्यार करती है—“बलाएँ लेती. गोद में बिठाती. सर पर हाथ फेरती और बार-बार माथा चमती थी। यही हाल पल्ला मियां का था। ऊपर से इजहार न करें. मगर दिल चाहता था. कि बेटों के कंधे पर हाथ रखकर उठें-बैठें. अपनी सोच उनसे साझी करें।”²³

इस कहानी में पल्ला और पल्लाइन का मन अपने बेटों के व्यवहार से बहुत दःखी है. इसमें माता-पिता बेटा के प्रति टटते जीवन-मल्य को दिखाया है।

‘साँप-सीढ़ी’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने पिता-पुत्र संबंध को सही ढंग से निर्वाह करने का प्रयत्न किया है। पिता अपने पुत्र को प्रेरणा देता रहता है कि वह चाहता है कि अपना पुत्र एक अच्छा जीवन जिये मेहनत करे और गलत रास्ते पर न जाये।

राजन स्टेशन मास्टर का टैस्ट देकर आता है. तो वह ताऊ से खेत बेच कर पैसा माँगता है. लेकिन ताऊ मना करते हैं। लेकिन वह नहीं मानता है। अपने बीबी के बहकावे में आकर बातें करता है. ताऊ समझाते हुए कहते हैं कि—“बेटा मेहनत करो। खेती में पसीना बहाओ तो यह शर्तिया बात है कि सोना नहीं तो धरती माता

इतना अन्न जरूर देगी कि इज्जत से खा-पहन सको। ईमानदारी से जी पाओ। ताऊ ने समझाया था राजन को कि हारना नहीं चाहते थे. बेटे पर चढ़े जनन से?”²⁴

‘चांद-तारों की शतरंज’ कहानी में नासिरा जी ने समाज में अपने भाई द्वारा ईर्ष्या का चित्रण किया गया है। शरफ अपने दोनों बेटे फखरू और शेख की सहायता से पतंग बनाने का व्यवसाय आरम्भ करता है। एक दिन उसका चाचा सलीम चपके से आता है. और सारे पतंग में छेद करके चला जाता है। तब वह अपने बेटे व समझाता है. “पतंग का धंधा पेंच लड़ाए का है. तो किसी न किसी की पतंग त कटनी होती है वेटवा...ई बार हमरी बारी रही. चलो सब करो चिंता की का बात है? अभी हम जिंदा हैं फिर दो आर्डर हमरे पास और हैं।”²⁵

‘अनभव’ कहानी में ममता कालिया ने माता-पत्र का संबंध प्रस्तुत किया है। राम को नौकरी से निकाल दिया जाता है. तो वह एक बैंक के नीचे जाकर सो जाता है। वहां एक भिखारिन सोयी रहती है। उसका बच्चा भी वहाँ सोया रहता है और बच्चे को ठण्ड लगती है। “बच्चे में शायद रोने की ताकत भी खत्म हो चली थी। वह थोड़ी देर मिनमिनाकर. हाथ-पांव पटकता रहा। रजाई ऊपर से उसकी माँ थपकती रही फिर शायद वह सो गया। औरत वापस बरामदे की तरफ चली गयी।”²⁶

‘उज्रदारी’ कहानी में सोम और उसकी माँ के माध्यम से माता-पत्र के संबंध का वर्णन किया गया है। एक दिन जब सोम और उसकी माँ में वार्तालाप चल रहा होता है. तो सोम की माँ पढ़ने की बात कहती है। तो सोम कहता है कि—“अम्मा री. त तार्ई की तरह बनाया कर न! मैं तेरे चल्हे के पास बैठकर खाया करूँगा. बीरू भडया की तरह। अम्मा री. मैं पढ़ने भी जाया करूँगा. झोला लेकर। हरी कह रहा था. तेरी अम्मा मजरिन है। मजरो के बालक पढ़ते नहीं. मजर बन जाते हैं।”²⁷

नासिरा जी 'ततडया' कहानी में यद्वीर के माध्यम से माता के प्रति पत्र का स्नेह दिखाया है। सन्नो बारिन है जिसका पति पन्द्रह वर्ष पहले मर चुका है। इसीलिए वह दो बच्चों का काम करती है। उसी से वह दो लड़कियों का और एक लड़के का पालन-पोषण करती है। जब उसका लड़का 12 वीं पास करने के बाद बिजली घर में नौकरी करने लगता है, तो उसको अच्छा नहीं लगता है, वह अपनी माँ से कहता है— “अब तझे इस खटाराग की क्या जरूरत है माँ? चैन से लेटक ललाइन काकी की बह से हाथ-पैर दबवा न।”²⁸

‘ताला खला है पापा’ कहानी में मैत्रेयी पण्णा ने माता-पिता-पत्नी के संबंध का चित्रण प्रस्तुत किया है। अरविन्द और बिन्दो में प्रेम प्रसंग चलता है, बिन्दो माता-पिता को पता चलने पर बहुत नाराज होते हैं। क्योंकि अरविन्द निम्न जाति का होता है, और बिन्दो उच्च जाति की। जगदीश चौबे सोचते हैं—“तो? बेटी ही होती है घर की इज्जत-आबरू? बेटी ही होती है माता-पिता की नाक! बेटी के ऊपर ही बाप मँछ तानकर चलता है! क्या-क्या टिका है बेटी के ऊपर?”²⁹

‘पापा का घर’ कहानी में दीपा के माध्यम से पिता-पत्नी के संबंध को दर्शाया गया है। ‘दीपा’ अपने ससराल चली जाती है। उसके कुछ दिनों के बाद उसकी माता का देहान्त हो जाता है, तब उसके पिता दूसरी शादी कर लेते हैं, उसके बाद दीपा जब अपने घर जाती है, तो वह सोचती है कि—“पापा को खश देख उसे अच्छा लगा। पापा अपनी उम्र से कम लग रहे थे। उफ! जिस साल मम्मी मरी थीं, पापा कितने बड़े और कमजोर दिखने लगे थे। पापा को स्वस्थ देख उसे अच्छा लगा। अच्छा हई कि पछे, अब उनकी डायबिटीज कैसी है? पर वह कुछ सोचकर चप रह गई शायद अब बीमारी की चर्चा करना पापा को पसंद न हो।”³⁰

‘अम्मा’ कहानी में मेहरुन्निसा परवेज ने माँ-बेटी के संबंधों को दर्शाया है। नायिका अपने घर से जाती है तो स्टेशन पर उसके जीजा जी दूसरी पत्नी के साथ मिल जाते हैं। तो समन सोचती है, कि—“आज अम्मा नहीं है- यानी इस दुनिया में नहीं है, और लगता है, सबको अपने से जोड़े-बाँधे रखनेवाला वह स्तंभ ही टट गया है, अम्मा उनके परिवार की रीढ़ की वह हड्डी थीं, जिसके सहारे सारा शरीर खड़ा था, गति में था। अम्मा के न रहने से जैसे शरीर ढहकर ढेर हो गया था।”³¹

इसी प्रकार ‘सबीना के चालीस चोर’ कहानी में साम्प्रदायिक दंगा हो जाता है किसी तरह लोग जान बचाकर भाग जाते हैं। सबीना की गड़िया छट जाती है, तो उसे समझाते हुए सकीना कहती है कि—“सब्र कर बेटी और शक्र उस ऊपर वाले का जो हर बार बाल-बाल बची वरना यह चोर-लटेरे आज के जमाने में अगर घर का पहचान लेते हैं तो फिर रहने वालों को नहीं छोड़ते, अम्मा ने आँखें गम में बंद की, जैसे यादों को आँस की शक्ति में निचोड़ रही हो।”³²

“राय प्रवीण’ कहानी में मैत्रेयी पण्णा ने गोविन्द के माध्यम से पिता-पत्नी संबंध को दर्शाने का प्रयत्न किया है। गाँव में बाढ़ आ जाता है, उसके बाद बाहर कैम्प लगता है। कैम्प में सावित्री जाती है, उसके साथ यौन-शोषण होता है, वह शर्म के मारे नदी में कद कर जान दे देती है। गोविन्द पर्यटकों से कहता है कि—“बाप-बेटी का छाती फट दख और विलाप तमाशबीनों को खासा करुणा-भरा आनंद दे रहा था। तभी तो लाश न होते हुए भी लोग मास्साहब और दमयंती को देखने के लिए दो घंटे खड़े रहे।”³³

बहन-भाई संबंध

बहन-भाई का संबंध रक्त संबंध होता है। दोनों एक दूसरे को बहुत चाहते

हैं। 'सबीना के चालीस चोर' कहानी में नासिरा जी ने सकीना के माध्व बहन-भाई के संबंध का वर्णन किया है। एक दिन सकीना और शाहरुख में वार्तालाप होती है तो शाहरुख कहता है, कि तम इतना परेशान क्यों रहती हो? तो सकीना कहती है कि— “इसलिए कि तम्हारा बचपन अमन-चैन से गजरा और मेरा बचपन डर और वहशत से भरा हुआ. जहाँ मौत हर बार करीब आकर कहीं छप जाती थी। उसी ने रियाज को मझसे दर किया। जानते हो, रियाज को मैं भल नहीं पाती और हरदम यह बात दिल में चभती रहती है, कि मेरा बड़ा भाई कहाँ खो गया? जिंदा है या....?”³⁴

सास-ससर-बह का संबंध

सास-ससर और बह का संबंध रक्त संबंध न होकर आपसी रिश्तों का संबंध होता है. इस संबंध में सास-ससर और बह के बीच हमेशा समझौता होता है। बह सास और ससर के अधिकार को मानती है उनके आदेश का पालन करती है. अगर बह सास और ससर के विरुद्ध अपने विचार प्रकट करे तो वह उनके प्रिय नहीं रहती है। ससर-बह का पक्ष लेता है। मगर वह अपनी पत्नी के विरुद्ध निर्णय नहीं ले पाता है।

‘ओ सोनकिसरी’ कहानी में कमलावती के माध्यम से नयी पीढ़ी की बह और परानी पीढ़ी की सास का चित्रण किया गया है। मेरी माँ कहा करती थी। कहानी में जब कमलावती के लड़के की शादी हो जाती है, तो उसका बहओं पर अधिकार नहीं रहता. तब वह अपने बेटों से कहती है कि— “समझो, मेरा काम बड़ा देते हैं। बहओं की तो चाँदी समझो। स्वाद न लगे, अपने हाथ से पका लो। इसमें वे भी खश! टंटा छटा उनका तो। यो जब से बहएं आई हैं, मैं ज्यादा दखल नहीं देती। क्या करूँ:

सास की जात यों भी बदनाम जाता हई। सीधा कहो तो उल्टा समझेंगी।”³⁵

‘उमस’ कहानी में ममता कालिया ने सास के द्वारा बह को डांटते हुए दिखाया है। रानी घर का सारा काम करने के बाद दोपहर में गहलक्ष्मी कार्यक्रम आकाशवाणी से सनती और सनते-सनते उसे झपकी लग जाती। तो सास डांटती हई कहती कि—“बाल बच्चे वालियाँ कहीं दिन-दोपहर इस तरह पैर फैलाकर सोती हैं. अरे थोड़ी देर सई सलाई लेकर बैठ. कपडे पडे हैं। स्त्री फेर ले। शाम का काम अभी शुरू भी नहीं किया तने।”³⁶

‘इरादा’ कहानी में ममता कालिया ने शांति के सास के माध्यम से समाज में सास-बह का वाद-विवाद चित्रण किया गया है। शांति जब पीहर से ससराल आती है और कुछ दिनों के बाद फिर पीहर जाने को कहती है. तो उसकी सास चिढ़ व कहती है कि—“इधर मैं मरास पडी हँ. न टाँग चले. न हाथ। इसकी कोई फिक नहीं. उधर से दो दिन चिटठी न आए तो दौरा पड जाता है. तझे! दध पीती बच्ची तो है नहीं त जो याद आ गई और रोबे बैठ गई! यो जरा-जरा सी बात पर आँख-नाक सजाएंगी तो तेरी गिरस्ती कैसे चलेगी।”³⁷

‘बारहवी रात’ कहानी में मैत्रेयी पण्णा ने सरेन्द्र की माता के माध्यम से अपनी बह के बारे में चित्रण किया गया है। सरेन्द्र की पत्नी फाँसी लगा लेती है. तब सरेन्द्र को पुलिस पकड़कर ले जाती है। इसी संबंध में सरेन्द्र के माता और पिता में वार्तालाप होता है. तो सरेन्द्र की माता कहती है कि—“ठीक है. तम यह बताना चाहते हो कि वह नकटी-बेसरम नहीं थी. ससर-जेठों की मरजाद मानती थी।...पर बाहरी परदानसीन। आंड घंघट के चलते ही मटका दिए नैन? नहीं तो कैसे पहुँच गयी सब बातें तम तक? अब खींच लो मरी जीभ। सांची बात कहने की खातिर तो हम सली चढने को तैयार

हैं. समझे? हमारे और सीता के बीच की बातचीतें....अरे वाह रे ससर साब ।”³⁸

इसी कहानी में सरेन्द्र की शादी होती है. तो सीता की हर बात में सरेन्द्र के पिता आगे-आगे रहते । ये बात सरेन्द्र को अच्छा नहीं लगता है । एक दिन सरेन्द्र की माँ कहती है कि—“अब हमारे माथे मढो. सो विरथां है । हमने तो साडी तम्हारे हाथ से इस मारे खींच ली कि सरेन्द्र ही बरा मान रहा था । कह रहा था कि बाई. तमने दी. हम दे देते. पिता काये घसे फिरते है. सीता के मामलों में?”³⁹

सरेन्द्र की बह मर जाती है. तो सरेन्द्र के पिता अपने पत्नी को दोष देते हैं कि तेरे वजह से ही ये हादसा हुआ है । वे कहते हैं कि— “बह के खातिर दो पइसा खर्च कर दिए तो आसमान उठा लिया सिर पर कि तम माल-मिठाई उडवा रहे हो । बह को. कि दधन-अस्नान करा रहे हो ! ऐसा किया होता तो अभागिन का गरभ न गिरता । पहला गरभ खंडित हुआ और ते उसे भर पेट रोटी नहीं दे रही थी । साली कर्कशा ।”⁴⁰

महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में परंपरागत पारिवारिक मूल्यों पर प्रकाश डालते हुए आधुनिकता के कारण इन मूल्यों में परिवर्तन को दर्शाया परिवार को बनाये रखने में नारी का स्थान प्रमुख है । इस बात पर प्रकाश डाला गया है । मगर आधुनिक नारी बदलते सामाजिक परिस्थितियों के कारण इन मूल्यों विघटित होते हुए दिखायी देती हैं । पारिवारिक संबंधों पर भी वाणी प्रदान की है ।

3.3 प्रेम

“प्रेम का अनभव है. लेकिन इसके अन्दर न जाने कितने अनभव हैं । घणा. रति. आत्मरति. प्रतिहिंसा. दाह. दःख. आनन्द । कोई अनभव नहीं जो प्रेम के अनभव में नहीं ।”⁴¹

सामाजिक तथा पारिवारिक संबंधों का मलाधार प्रेम ही है । नासिरा जी

सेमिनार कहानी में निगार और संपादक के बीच प्रेम के मल्य का वर्णन किया है।

निगार एक पत्रकार है. एक दिन जब वह संपादक महोदय से बात करती है. कमल जी कहते हैं कि मैं तम्हें प्यार कर सकता हँ? तो निगार कहती है 'नहीं'। मगर अन्दर-अन्दर वह डर जाती है। वह सोचने लगती है—“जैसे कछ हआ ही न हो मगर अन्दर-अन्दर वह घबरा गई थी। डर भी गयी थी। लज्जा से गड भी गई थी। मगर ऊपर से सामान्य बनी रहती थी। बातें ही कब अधिक करती थी। संवेदनाओं की एक बाढ सदा उसे घेरे रहती थी। महसस करना. देखना. समझना सब इत तीव्रगति से होता कि जबान उसके दिमाग का साथ नहीं दे सकती थी।”⁴²

इसी कहानी में अरविन्द और बिन्दों के बीच प्रेम प्रसंग चलता है। जब ये बात उनके माता-पिता को पता चलता है. तो वे बहत दःखी होते हैं. जगदीश चौबे सोचते हैं कि—“बात ऐसा नाजक मोड ले जाएगी. सोचा न था। यह मौन समझौता उनके और बिन्दों के बीच था। वह जो कछ कर रही है. जानती है. कि गल माता-पिता की नाक कटाने वाली बात है। फिर भी कर रही है। उस अपराध बोध के कारण ही वे ताला लगाकर जाते हैं. तो वह बंद हो जाती है. चपचाप।”⁴³

महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में प्रेम के मल्य पर अपने विच प्रकट किये हैं। सामाजिक परिस्थितियों के कारण प्रेम के मल्यों में परिवर्तन सहज है। इस बात को कहानियों के माध्यम से समझाने की कोशिश की गयी है।

3.4 विवाह

भारतीय समाज में स्त्री और परुष के संबंध पति और पत्नी के रूप में विवाह द्वारा बनते हैं। विवाह वैध संबंध को स्थापित करता है। भारतीय समाज में स्त्री और परुष का विवाह होना अनिवार्य है। अगर विवाह के बिना संबंध स्थापित हो जाये तो

ये अवैध संबंध माने जाते हैं। लड़की का पिता जल्द से जल्द अपनी लड़की का विवाह करना चाहता है। ताकि कन्यादान से उसे पण्य प्राप्त हो

‘गोमा हँसती है’ कहानी में कलबतिया चाची किड़ा के विवाह की बात उसके पिता से करती है कि उसकी जल्दी से जल्दी शादी करा दो सही उम्र में शादी हो जाए तो अच्छा है। “बड़े आदमी के क्या रास-रंग? उसके पास तो लगाई सपने में भी नहीं झाँकती। जोर-जबरन ले भी आओ तो कब्जा नहीं मानती। बलीसिंह बखत ही ते चक गया। डोल रहा है. कँआरा- लांगरिया। अपनी जात-बिरादरी में वैसे भी जनानी जिंस कम है।”⁴⁴

‘तक्षशिला’ कहानी में निगार एक पत्रकार है। उसकी माँ उसकी शादी व बात करती है। तो निगार कहती है. कि माँ अभी दो वर्ष और रुक जाओ तब उसकी माँ कहती है कि— “बोलो. तम क्या कहना चाहती हो? आज मैं तम्हारी हर बात मान लूँगी।” “तम शादी की बात को मजाक में मत टालो। ढलती उम्र में शादी-ब्याह सिर्फ दःख देते हैं. समझी! अब पच्चीस खत्म कर चकी हो तम।”⁴⁵

‘चार बहनें शीश महल की’ कहानी में शरीफ की चार लड़कियाँ हो जाती हैं तो शरीफ की माँ शरीफ से कहती है. कि—“मेरी मानो तो दूसरी शादी कर लो बेटा. लड़कियाँ भी पल जाएंगी और तम्हारी गहस्थी भी संभल जाएगी। हो सकता है...खदा रसल के हकम से होगा। मरदों को चार शादियों की इजाजत है. फिर ऐसा क्या है. जो नहीं हो सकता।”⁴⁶

‘बिछड़े हए’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा गाँव के लोगों के माध्यम से कन्यादान का वर्णन किया है। सग्रीव जब गाँव में 20 वर्षों के बाद आते हैं. उसी समय उनकी पत्नी मगना की शादी होने वाली रहती है। तो गाँव के लोग कहते हैं कि— देखो तो भाई.

यह होता है. करम का फेर! आज बीस बरस बाद बहरा है। अपनी देहरी पर। भाग बली है बेटी का। मगना के ब्याह के चार दिन पहले... बाप के हाथ का कन्यादान बढ़ा था।”⁴⁷

विवाहेत्तर संबंध

विवाहित पुरुष या स्त्री का विवाहित पुरुष या स्त्री अथवा अविवाहित पुरुष या स्त्री से संबंध विवाहेत्तर संबंध माना जाता है। समाज द्वारा विवाहेत्तर संबंध स्वीकार नहीं किया जाता है।

‘गोमा हँसती है’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने किछा के माध्यम से पति-पत्नी के अंतःसंबंध के बारे में वर्णन किया गया है। किस तरह वैवाहिक जीवन के पश्चात् पति-पत्नी में संबंध विच्छेदन होता है। गोमा की शादी के बहत दिनों के बाद एक बेटा पैदा होता है। तो बात-बात में वह बलीसिंह का नाम लेती है। इससे किछा भडक उठता है। और वह गोमा से कहता है कि—“आयंदा यह मेरे घर आया तो तेरा सिर फोड़ डालंगा कतिया! इस हरामी को फेंक दँगा गोद से उठाकर। उस भजंगी देखकर खिलती है सरजमखी। मझे देखकर तो तेरा मँह तोरई की तरह लटक जाता है।”⁴⁸

‘अनभव’ कहानी में ममता कालिया ने राम के माध्यम से पति-पत्नी विवाहेत्तर संबंधों को दर्शाया है। राम को घर से निकाल दिया जाता है. तो वह एक बैंक के पास जाकर सो जाता है और साहब और मेम साहब के बारे में सोचता है कि— “बड़े लोगों की बातें कितनी अजब और पेचीदा होती हैं। जो इनके बीच बोले वह मरे। सच्ची-सच्ची बोलकर कोई इनके बीच रह सकता है भला? जब मेम साहब बम्बई जाती हैं साब लताबाई को बला लाता है। और साब जब दफ्तर जाता है तो

मेम साब उस डिपी साहब को पकड़ लाती है। राम यह सब जानता है तो राम नीच है।”⁴⁹

इसी कहानी में राम जहाँ काम करता है। मेम साहब और उसकी पत्नी रहते थे। मेम साहब का किसी दूसरे के साथ प्रेम संबंध था। एक दिन साहब जल्दी आ गये। दोनों में बातें होने लगीं। साहब ने मेम को डांटते हुए कहा कि— “तम्हें शर्म नहीं आती नाटक करते? मैं तम्हारे चेहरे की रंगत देखकर बता सकता हूँ कि तम् उससे रोज मिलती हो। मेरे सामने तम्हारी तबीयत खराब रहती है। मेरे जाते ही तम उसे फोन कर बला लेती हो।”⁵⁰

‘प्रेम भाई एंड पार्टी’ कहानी में मैत्रेयी पण्णा ने नरेन्द्र के माध्यम से दहेज का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।

एक दिन जब जगदीश चौबे बिन्दो के कमरे में जाते हैं वहाँ पत्र मिलता है। पत्र पढ़ने लगता है। बिन्दों की अपनी माँ से जो शादी के बाद लेकर हर्ड थी वह पत्र में लिखती है—“अरविन्द वह कहता है. एक पैसा खर्च नहीं होना चाहिए ब्याह-शादियों में। मैं तमसे ब्याह करुंगा।”⁵¹

भारतीय विवाह व्यवस्था को महिला कहानीकारों ने बहुत ही अच्छी तरह से मल्यों के आधार पर समझाया है। इसके साथ-साथ दहेज प्रथा, अनमेल विधवा विवाह आदि की समस्याओं पर भी प्रकाश डाला है। विवाह संबंधी मल्यों में परिवर्तन दिखाने की कोशिश की है।

3.5 दहेज

भारतीय समाज में दहेज एक विषय जैसे फैला हुआ है। जिससे समाज में स्त्री जाति का जीवन का विनाश हो रहा है। दहेज के कारण अनमेल विवाह, बाल विवाह,

जैसे बराइयाँ प्रचलित हैं। दहेज के कारण स्त्री अपना स्वतन्त्र विवाहित जीवन नहीं जी पाती हैं। विवाह के उपरान्त भी उसे ससराल में दख और कष्ट झेलना पड़ता है।

नरेन्द्र की लड़की की शादी रहती है। नरेन्द्र और तारा में दहेज की बात होती है। वह कहता है कि लड़के वाले को बहुत दहेज चाहिए। वह अपनी पत्नी से कहता है कि—“जानती हो तो फिर यह भी सन लो कि इस संबंध को करते समय हमारे आगे कोई उपाय न बचा था। लड़के का बाप इक्यावन हजार का ब्राह्म-वाक्य मख से निकालकर उसी से चिपक गया। बारात की खातिरदारी के निर्देश अलग। तमाम दलीलें की लड़का तो घर हर-हमेश आएगा। बराती कब-कब आएँगे आपके द्वारे याद रखने लायक स्वागत-सत्कार होना चाहिए।”⁵²

‘ताला खला है पापा’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने बिन्दो के माध्यम से निम्न जाति के अरविन्द से शादी का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है।

‘गोमा हँसती है’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा कलबतिया चाची के माध्यम से दहेज का वर्णन किया गया है। किड्डा की शादी की बात कलबतिया चाची और किड्डा के पिता के चलती है। वह किड्डा की तरफदारी करती है और कहती है कि किड्डा की शादी देखकर ही करना है। हमारी भतीजी है उम्र में कम है, तो वह कहती है कि—“बड़े तम इतनी उमर पाकर भी बैयर की जिंदगानी नहीं जाने समझे? बछिया-पडिया, कि डंगर से भई गजरी! पौहे (पश) की रस्सी पकड़ाते बबंत मालिक यह तो देखता है कि अगले के खँटा पर अवस जीव दःख नहीं पाएगा। पर बेटी का सौदा करते हए तो यह मानकर चलते हैं कि दख में ही धकेल रहे हैं। अभागिन को।”⁵³

‘सांप-सीढी’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने दहेज से समाज में हो रही बराइयों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। ताऊ की लड़की रज्जो को पढ़ाते-लिखाते हैं ताकि दहेज

कम देना पड़ेगा. लेकिन लडकों वाले बहुत ज्यादा दहेज माँगते हैं. “दनिया में खल ही नहीं. सज्जन भी होते हैं। एक अच्छा घर. एक सज्जन पिता और एक विनयशील पढ़ा-लिखा लडका मिल गया। संबंध पक्का करके ताऊ फले न समाए। नहीं तो इस अंधेरी दनियां में रज्जो का हाथ किसको गहाते? सबके सब किकियाते सियार....एक लाख. दो लाख. तीन लाख....।”⁵⁴

‘सेनानी’ कहानी में अंजना की शादी होने वाली है तब उसके पिता की मृत्यु हो जाती है। स्वतंत्रता सेनानी की पत्नी से शादी कौन करेगा “दहेज की भारी रकम चकता करने की किसकी हिम्मत थी. और पितृविहीन लडकी का परिचय भी क्या था? स्वतंत्रता संग्राम सेनानी की बेटी! न किसी बड़े परिवार से संबंधित....और न किसी बड़े पदाधिकारी से रिश्ता।”⁵⁵

‘बारहवीं रात’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा सरेन्द्र की माता के द्वारा दहेज की बातों का वर्णन किया है। सरेन्द्र की शादी होती है. सरेन्द्र की पत्नी ज्यादा दहेज नहीं लाती है. तो सरेन्द्र की माता उसको कोसा करती है. कि तम्हारे पिता क्या दिये हैं दहेज में सरेन्द्र की माता अपने पति से कहती है कि— “हाँ मानते हैं कि तमने गहना-गरिया बनवाया। पर हमें तो देखो कि नेठम ही अपने गाँठ से...मायके से तम्हारी पढ़ी-लिखी मैम बह कानों में ऐसी बाली लटकाए आयी थी’ जैसी आठ नौ साल की लरका-बिटिया पहने। अब इतने तो तम्हें भी समझ होगी कि गरीब से गरीब माँ-बाप बिटिया वं नाक-कान के लाने ढंग की चीज-वसत बनवा देते हैं।”⁵⁶

समाज में खलेआम दहेज की समस्याएँ उभर कर आ रही हैं। इसका यथार्थ चित्रण किया गया है। सरेन्द्र की पत्नी आत्म-हत्या कर लेती है। सरेन्द्र के ससर दहेज में एक लाख देने की बात करता है। लेकिन वह चालीस हजार ही देता है। सरेन्द्र

के पिता अपने पत्नी से कहते हैं कि—“सीता का बाप ही दगा दे गया। साले ने एक लाख बटे थे. चालीस हजार टिपाकर हाथ जोड़ दिए। झूठे बेईमान आदमी पर गस्सा नहीं आएगा? त उससे मस्तकिल खफा हो बैठी. पर मेरा मानना था कि इसमें उस बेचारी का क्या दोष?”⁵⁷

‘नौ-तपा’ कहानी में रंगरेजिन के माध्यम से दहेज प्रथा की बात कही गयी है। लच्छ कलईगर होता है. जो बहुत दिनों के बाद आता है. तो लोग घरों से करवाने निकलते हैं. उसमें से एक रंगरेजिन भी निकलती है। वह लच्छ से कहती है कि छब्यों की शादी है। इसलिए इस पानदान पर कलई कर दो। “तम तो बरा मान बैठे...मेरा मतलब कछ और था। अपनी झब्बो के ब्याह की तारीख तय हो गई है। बखरीद की पहली को बारात रातपर से आएगी। तम तो जानते हो. लडकी के जहेज रौनक पानदान से ही बढ़ती है।”⁵⁸

‘प्रेम भाई एंड पार्टी’ कहानी में मैत्रेयी पण्णा ने नरेन्द्र के माध्यम से समाज में व्याप्त दहेज की समस्या का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। शिवदान सिंह के पास से लौटकर आता है तो पत्नी कहती है कि उनके आने से ही लडकी की शादी नहीं होगी तो नरेन्द्र कहते हैं कि नहीं क्योंकि उसका ससर चाहता है कि शिवदान सिंह शादी में आये। नरेन्द्र अपने पत्नी तारा से कहता है कि— “....और लडके वाले. साले हाथ नहीं धरते देते। हमने यही गनाह किया न कि लडकी को चार अक्षर पढा दिए। विकट समस्या यही बन गई कि अब न उसे किसी कबड्डी के गले बाँध सकें. और न पढे-लिखे वर के लिए प्रचलित दहेज जटा सकें।”⁵⁹

‘साँप-सीढी’ कहानी में रज्जो के ससर खलेआम दहेज मांगते हैं। रज्जो की शादी लग गयी उस समय तो उसके ससर ने रुपये-पैसे की बात नहीं करता है जब

बारात उसके दरवाजे पर जाती है तो वह अपना असली रूप अखतियार कर लेता है। ताऊ से कहने लगता है कि—“एक लाख के बिना भाँवर नहीं पड़ेगी और पचास हजार बिना विदा नहीं होगी।”⁶⁰

इसी प्रकार ‘ओ-सोनकेसरी’ कहानी में कमलावती के माध्यम से समाज : व्याप्त दहेज की समस्याओं को उजागर किया गया है। कमलावती अपने दोनों बहनों की बात करते हुए कहती है कि—“एक बात और भी है। सच कहूँ तो। छोटीवाली दान-दहेज भी लाई है घर में। वह भी देखना हुआ न। टुक भरकर सामान आया। यों है तो बी.ए. पास. पर बड़ी की एम.ए.पी.एच.डी. से मैं क्या माँगूँ? छोटा भाग्यशाली है। उसे मिलना भी चाहिए था।”⁶¹

इसी कहानी में जब सोना की बहन का रिश्ता आता है तो सोना के पिता के रिश्तेदारों से कहते हैं कि—“उसने नकियाती आवाज में बड़ी उदारता से। नचाकर नाना से कहा था- दान-दहेज का क्या है? भाग्य में हो तो छप्पर फाड़कर बरसात है। फिर कोई आबरूवाला अपनी लड़की को नंगी-बच्ची ठँठ सी घर से थोड़ी निकालेगा।”⁶²

3.6 अनमेल विवाह

अनमेल विवाह से पीड़ित स्त्रियों का जीवन दयनीय है। अनमेल विवाह का प्रमुख कारण दहेज प्रथा है। अनमेल विवाह के कारण विवाहित जीवन के मल्य टट जाते हैं। अनमेल विवाह विवाहित स्त्री के कारण जीवन विधवा के रूप में परिवर्तित हो जाता है। जब उसका बड़ा पति का देहान्त हो जाता है

‘प्राण-प्रतिष्ठा’ कहानी में मेहरुन्सिसा परवेज ने अनमेल विवाह का वर्णन किया है। जो समाज में अभी तक चल रहा है। महात्मा की शादी कम उम्र में हुई

जाती है. तो बाराती जब घर लौटते हैं. लेखिका के द्वारा “ब्याह के तीन दिन : उत्सव और रीति-रिवाजों से थके वे लोग लौट तो इस बार साथ में नए कपड़ों के ढेर में गडी-मडी एक छोटी सी कन्या भी साथ थी. जो उनकी दल्हन थी। उसके हाथ-पैरों में मेहँदी रची थी। पैरों में महावर. चाँदी और सोने के चमचमाते गहने. लाल बनारसी साड़ी पहनी थी। सोरे रास्ते वह माँ-माँ कहकर रोती रही. हिचकियाँ लेती रही। उम्र उसकी उनसे कम थी।”⁶³

3.7 विधवा

विधवा जीवन से पीड़ित नारी अनमेल विवाह. दहेज-प्रथा का शिकार होती है। पति के देहान्त के बाद विधवा जीवन बिताने वाली नारी का कोई जीवन मल्य नहीं होता है। वह समाज द्वारा अंधविश्वास के कारण पीड़ित होती है। अग्न पर्णविवाह का अवसर प्राप्त हो तो भी वह एक खशहाल जीवन नहीं बिता पाती है।

‘उज्रदारी’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने सोम की माँ से विधवा जीवन की यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। सोम के पिता की मृत्यु हो जाती है. तो उसके घर वाले उसे सताने लगते हैं। वहाँ के लोग घर तोड़ने की बात बड़ी-बड़ी कहती है तो सोम की माँ कहती है कि—“मैं जानती थी सबकछ। इसमें नया क्या था? हर औरत की आदमी मरने के बाद यही दशा होती है। गाँव में क्या दो-चार विधवाएं नहीं? वे विधवा स्त्री नहीं फिर दोर पशुओं में मिला दी जाती हैं— मछीका (मंहु ढकने की जाली) बाँधकर बैल की तरह काम करने का साधन....। मैं आदमी तब तक. जब तक आदमी का हाथ सिर पर था। जब तक श्याम-नारायण की पत्नी थी। अब इसमें गरेज ही क्या मानना?”⁶⁴

3.8 नारी

भारतीय नारी की स्थिति दयनीय है. पुरुष और स्त्री के स्थान निर्धारण : भारतीय समाज में स्त्री को निम्न और पुरुष को उच्च अधिकार दिया जाता है. पुरुष को समाज में निर्णय देने का अधिकार है। स्त्री की पुरुष के अधिकारों एवं निर्णय का पालन करना पड़ता है। नारी परिवार एवं समाज के कशल जीवन के लिए अपना सब कुछ निछावर करती है। मगर इसके बदले में उसे सिर्फ अन्याय और दःख ही मिलता है। आधुनिक नारी समाज में अपना स्थान बनाने के लिए संघर्ष कर रही है। मगर समाज उसके प्रयत्न में बाधा करके उसे असफल बना रहा है। नारी के जीवन मूल्य में परिवर्तन दिखायी देते हैं।

“नारी को न पजा जरूरत है. न ताड़ता की। वह सिर्फ समता चाहती है असहमति. विद्रोह और सधार की परम्पराओं ने न्याय की मांग उठाई। वे आंशिक रूप से सफल भी हुई।”⁶⁵

भारतीय समाज में नारियों की ऐसी स्थिति थी कि वह किस बात पर विरोध नहीं कर सकती थी। लेकिन अब आधुनिक समाज में नारी द्वारा विरोध का स्व दिखायी देता है।

‘साँप सीढ़ी’ एक दिन राजन एक लड़की को भगाकर घर ले आता है. उसके ताऊ और माँ बहुत नाराज होते हैं। लेकिन सोचते हैं कि जिसकी लड़की है. उसकी समाज में बड़ी बेइज्जती होगी। इसीलिए वह उसे घर से भगाते नहीं है। वह सोचते हैं कि—

“आदमी कँआरी लड़की के मर जाने की बात देखता रहता है. अपने समाज में. इस भागी हुई को लौटा दें तो काटकर बेतवा में बहा दी जाएगी। माफ किसी तरह

न की जाएगी। देहरी की मरजाद और बाप-चाचाओं की नाक-मँह उखाड़ने कसरवार बेटी... इस इलाके में अपनी इज्जत का झंडा फहराने की खातिर करबान कर दी जाएगी। वह नादान...वे बिलबिला उठे. ऐसा नहीं होने देंगे।”⁶⁶

‘उज्रदारी’ कहानी में सोम के माता द्वारा अपने जेष्ठ से अपनी हक की बात करने का वर्णन किया गया है। सोम के पिता के मृत्यु के उपरान्त सोम के माता को बहत घर वाले परेशान करते हैं। उस पर सोम की माता कहती है कि. मझे थोड़ा जमीन दे दें छप्पर डालने के लिए. लेकिन उसके ताऊ तैयार नहीं होते हैं. तो वह कहती है कि—“रोटी. कपड़ा पर जिंदगी बेचनी होगी तो यही घर नहीं। यहाँ तो मैं आधे की मालकिन हूँ। एक बालिशत जगह माँगकर अपना ही हम कम कर रही हूँ। इतने में ही समझ लो।”⁶⁷

“सदियों की गलामी. सामाजिक स्थिति और असुरक्षा में बने रहने के. नारी के सारे आत्मविश्वास को छीन लिया है। उसे अपने ‘होने’ और बनने की हर स्थिति में परुष की स्वीकृति. समर्थन चाहिए। कुछ क्षेत्रों में वह नारी को उन्मत्त अनमोद देता है. तो कुछ में झिडक देता है. तम्हारे बस का नहीं ‘या’ तम्हारे मतलब का नहीं है।”⁶⁸

‘तीन किलो की छोरी’ कहानी में मदला गर्ग ने शारदाबेन के माध्यम से नारी की समानता और असमानता की बात कही गयी है। लड़की पैदा होती है तो लोगों को खशी नहीं होती है। मोटीबेन. शारदा बेन से कहती है कि—“छोरे-छोरी में अब फरक नहीं रहा। देख न शारदाबेन मैं भी तो छोरी हूँ. पर परा-का-परा फाउण्डेशन मेरे दम पर चलता है। है कि नहीं?” सच्ची-खरी बात कहीं थी मोटीबेन ने।”⁶⁹

‘बन्तो’ कहानी में पारिवारिक मदभेद को उसके पति के माध्यम से दर्शाया

गया है। उसका पति शराब पीता है। उन लोगों को अच्छा नहीं लगता है। इससे बन्तो भी बहुत परेशान रहती है। एक दिन वह सोचती है कि—“माँ उबलती-उफ़ रहती। रात गये मँह चतता वह चोरों की तरह घर में घसता। उस समय एक लफ़्ज़ भी उसके मँह से निकलना कयामत होता। माँ का उबाल बाहर आ उठता। चा-तरफ़ आग के शोले बरसते। भाप के कतरे बिखरते-बहते। चीख-चिल्लाहट-धरपटक। माँ कभी सर पीटती और कभी खद पिटती. गालियाँ देती। अन्त में बाब लटा-पिटा कोने में पड़ा रहता।”⁷⁰

गाँव में बाढ़ आ जाती है। बाढ़ खत्म हो जाने के बाद कैम्प लगता है। उसमें सरकारी कर्मचारी लोगों के साथ दराचार करते हैं। सावित्री के साथ भी दराचार होता है। गोविन्द पर्यटकों से कहता है कि—“करुणा के रास्ते गजरते हए लोग सावित्री की बहादरी तक आ पहुँचे। कहते हैं न. मरे पत की बड़ी-बड़ी आँखें....सावित्री सममच की सावित्री निकली। शीलभंग हआ। सतीत्व नष्ट हआ’ पर अपने आदमी पिछौरा मैला होने से पहले अपनी जान पर खेल गयी। बाप को मँह दिखाने काबिल न रही तो जल में छलांग लगा दी। भाई. इन्हीं सतियों के दम पर कायम है संसार.....।”⁷¹

‘राय प्रवीण’ कहानी में गोविन्द के माध्यम से नारी के सती सवित्री रूप का वर्णन किया गया है।

‘तक्षशिला’ कहानी में नासिरा जी ने परवेज के माध्यम से अरब के देशों में औरतों की दशा का चित्रण किया है। निगार एक पत्रकार है। जब वह अमेरिका चली जाती है वहाँ अंसारी उसके साथ बदतमीजी करता है। इससे निगार बहुत नाराज़ होती है। परवेज के पछने पर वह नहीं बताती है। लेकिन परवेज उसे समझाते हुए

कहता है कि—“घर से बाहर निकलोगे तो तजर्बे होंगे। उसको लेकर इतना परेशान मत हुआ करो। शक्र करो कि यहाँ तमको खला आसमान देखने को मिलता है बाहर अरब देशों में... उफ... औरत की हालत बहुत दर्दनाक है। बीबी घर में कैद रहती है। न आना न जाना। बाहर निकलती है तो लाख पर्दों में बखदा निगार, तीन वर्ष दबई में, दो वर्ष सऊदी में रहा हूँ, अभी हालत बयान नहीं कर सकता हूँ इन पाँच सालों में उस औरत समाज की किस घटन को मैंने देखा है।”⁷²

“सिर्फ औरत ऐसी चीज है, जिसे कहीं से उखाड़कर कहीं फेंका जा सकता है, इस धारणा के साथ कि वह जड़ें जमा ही लेंगी। ऐसे तो कोई कीकर-बबली से पेश नहीं आता। कसर किसका है? खद औरत का न।”⁷³

‘वह मैं ही थी’ कहानी में औरत होना यही नारी का पैदाइश गनाह मा जाता है। इसीलिए पत्र पैदा होने पर खशियाँ मनायी जाती हैं, और जब लडकी पैदा होती है, तब मातम मनाया जाता है

‘जाँच अभी जारी है’ कहानी में ममता कालिया ने नारी के नैतिक मल्यों का चित्रण किया है।

अपर्णा लेक्चरशिप की नौकरी छोड़कर बैंक की नौकरी करती है। लेक्चरशिप की नौकरी बासी लगती है। “एक सम्मानित राष्ट्रीयकृत बैंक में नियुक्ति पाकर वह फली नहीं समायी। विद्यार्थी जीवन से ही उसे बैंक की नौकरी आकर्ष करती थी। उसे लगता शक्ति, सच्चाई और नैतिकता जैसे मल्यों का एहसास जितना बैंक में हो सकता है, उतना अन्य किसी नौकरी में नहीं।”⁷⁴

‘पत्थरों के राग’ कहानी में सोनल के माध्यम से नारी के बदल रहे नैतिक मल्य को दर्शाया गया है। सोनल और सतीश कोणार्क का मंदिर घमने के लिए जाते हैं तो

पति-पत्नी के संबंध की बात होती है। सोनल सतीश से कहती है कि— “और वक्त के इस दौर में? सोनल ने जोड़ दिया. जबकि हमारे नैतिक मानदंड बदल गए हैं।”⁷⁵

‘खदा की वापसी’ कहानी में नासिरी जी ने नारी के अधिकारों के हनन का उल्लेख किया है। संग्रह के निवेदन में लिखा है कि— “मझे शिददत से महसूस हो रहा था कि हमने काफी समय उन अधिकारों को पाने के संघर्ष में गँवा दिया. जिसके लिए हमारा समाज. धर्म और मानसिकता तैयार नहीं थे. मगर हमने उन अधिकारों की तरफ ध्यान नहीं दिया जो हमें मिले हुए हैं. और हम उनसे बेजर सिर्फ इसलिए हैं कि परुष प्रधान समाज उसे हमें देना नहीं चाहता हैं।”⁷⁶

‘सेमिनार’ कहानी में नारी का परिवर्तित रूप निश्चित ही परम्परागत नारी के व्यक्तित्व को भंग कर देने वाला लगता है। ‘बी’ फैशनपरस्त नारियों का प्रतिनिधित्व करती है। “बीना लम्बी छरहरी और सन्दर महिला थी। उसकी उम्र पच्चीस चालीस के बीच कछ भी हो सकती है। लिखती वह हिन्दी में थी। पर बोलती अंग्रेजी थी। उसकी कहानियाँ फन्तासी और प्रतीक के बीच की धन्ध में लिपटी रहती थीं। उसके होठ लगातार सिगरेट पीने से जामनी रंग के हो चके थे। लेकिन उसकी लम्बी. पतली उँगलियों पर निकोटिन का असर नहीं था। जब वह एक जगह से उठव दसरी बैठती तो उसे अपना काफी सामान उठा कर चलना पड़ता। बीना के पास बड़ा सा हैंड बैग था। लेकिन सिगरेट की डिब्बी और माचिस वह हाथ में ही पकड़ती दसरे हाथ में वह अपना जिन का ग्लास थाम लेती और जहाँ बैठती. वहाँ एक और कर्सी खिसकाकर अपना सामान उस पर बिछा लेती। वह आँखे बंद कर चर्चा सनती और जिस समय किसी को उम्मीद न होती. आँखे खोलकर कहती. ‘नाउ दैट बॉज ए पायन्ट।’ फिर वह एक दम नये तले शब्दों में शाश्वत मल्यों पर एक वक्त

देती।”⁷⁷

‘तीन किलो की छोरी’ कहानी में बेटी के जन्म पर किये जा रहे कथन कन्या जन्म की हिकारत को स्पष्ट करता है। मनवेन ने शारदाबेन से कहा—“खा-खा कर मराती रहो. हरामखोर. हमें पता था. तीसरी भी छोरी जनेगी कमजात डाल कमबखत को तो अपने भाग से. जिये तो अपने भाग से।”⁷⁸

यह स्पष्ट होता है कि हम 21वीं सदी में पहुँच गये। ‘कल्पना चावला’ अंतरिक्ष’ की सैर की फिर भी हम ‘कन्या’ को घणा एवं हिकारत से गालियाँ देकर उसका जीना और मरना ‘न’ के बराबर मानते हैं।

‘मेरी माँ कहा करती थी’ कहानी में कमलावती के माध्यम से तमिलनाडु गाँव में नारी की विडम्बना पूर्ण कथा का वर्णन किया गया है। कमलावती के घर से उसके लडके के रिश्ते के लिए आते हैं तो वह उनसे कहती है कि—“कल ही ये कह रहे थे. कि उधर तमिलनाडु के किसी गाँव में. क्या कहें कोई कोल्लर जात के लोग जन्मते ही लडकियों का गला टीप देते हैं। सला देती हैं कछ खिला-खिलकर माँएं आप ही। यह कहकर कि जो उम्र-भर रोएं कपाल पर हाथ धरकर. सो एक बार ही चं मारकर रो लें और मक्त हो जाएँ।”⁷⁹

‘लौट जाओ बाब जी’ कहानी में लेखिका ने शाल के माध्यम से समाज में व्याप्त नारी की दयनीय स्थिति का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। गिरीश और शाल शादी कर लेते हैं. उसके बाद शाल के पिता जब उसके ससराल जाते हैं. वहां दोनों पति-पत्नी के बातों में विचारों में मतभेद होता है। वह कहता है कि मैं अपने पिता का अपमान सह नहीं सकता तो उसके विरोध में शाल कहती है कि—“विरोध तो. गिरीश. तमसे ज्यादा मैंने सहा है। नारी को कितना और क्या-क्या झेलना पड़ता है।

यह तम क्या जानो? रही बात पैर छने की. तो इसके लिए मैंने उन्हें मना किया हमारी शादी परंपराओं से हटकर हर्ड है. फिर उन फालत की विरासती परम्पराओं को ढोने से लाभ? हमारे पढ़ा-लिखा होने का फायदा? मेरे पिता केवल इसलिए छोटे हो गये कि वे बेटी के पिता हैं? तम्हारा तो कहीं कछ नहीं छटा. पर मेरा तो सब कछ कट गया. जैसे बाढ में आकर किनारा काट दिया हो।”⁸⁰

‘अपने-अपने लोग’ कहानी में मेहरुन्निसा परवेज ने प्रेम-विवाह और सामाजिक विवाह में अन्तर को स्पष्ट किया और स्त्री की स्थिति को दर्शाया है। “प्रेम-विवाह और सामाजिक विवाह में अंतर क्या था? स्थिति घम-फिरकर वहीं आ टिकी थी और आकर गति उसी चढाई पर रुक जाती थी. जहाँ से नारी को खच्चर समझ लिए जाता है। सामाजिक विवाह कर आई बह तो सारे घर की मालकिन बन जाती है और प्रेम-विवाह वाली को तो हर समय तलवार लटकती-सी जान पडती है. जाने कब खट से तलवार गिरे और एक बार में सारे रिश्तों के धागों को काट दे।”⁸¹ समाज में व्याप्त शादी के बाद नारी के स्थिति का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।

इसी कहानी में मेहरुन्निसा परवेज ने समाज में नारी के साथ लोगों के व्यवहार का वर्णन किया है। “यह सब देख मझे लगता. जाने हमारा भारतीय समाज कब सधरेगा? पत्नी से काम भी करवाते हैं और उससे गलामों-सा व्यवहार करते हैं। नारी को अपने कमाए रुपए पर भी उसका अपना अधिकार नहीं था। मायके वालों की सबके सामने मदद नहीं कर सकती थी. क्योंकि संस्कार. धर्म. लोग-लाज आडे आते थे। सास और पति ढिढोरा पीटने लगते कि बेटी की कमाई खाते हैं।”⁸²

‘शहर के नाम’ कहानी में मदला गर्ग ने नारी जीवन की समस्याओं का चित्रण किया है। कहानी की नायिका विदेश पढने के लिए चली जाती है। वहाँ से रु

लिखती है कि मैं शादी करूंगी और चार-चार बच्चे पैदा करूंगी इस पर उसके पिता नाराज हो जाते हैं. तो वह सोचती है कि—“वे यही मतलब लगाते थे. मैं अब समझ गयी हूँ। पर गलत है। मैं क्या सिर्फ जिस्म हूँ? जिस्म तो घर है मेरा। मैं उसके अन्दर रहती हूँ। हर घर की एक आत्मा होती है। मेरे घर की भी है। मैं उसी आत्मा को लोगों में बाँटना चाहती थी। घर ही उनके हवाले कर देती तो आत्मा कहाँ रहती?”⁸³

‘वह मैं ही थी’ कहानी में मदला गर्ग ने उमा के माध्यम से समाज में व्याप्त नारियों की समस्याओं को उजागर किया है। उमा के पति का तबादला दूसरे शहर में हो जाता है. वहाँ वह अपने बारे में सोचती है कि—“बदकिस्मत या महज औरत. उमा सोचती। यह उसकी कहानी है। या मेरी हर उस औरत की. जो अपने वर्ग और स्थान से तोड़कर दूसरी जगह फेंक दी जाती है? जब वह शादी से पहले कॉलेज में अर्थशास्त्र पढ़ाया करती थी. तो उसकी हेड ने एक बार कहा था. विवाह करते हए जिस बात का ख्याल रखना चाहिए. वह है स्थानमलक तष्टिगण. यार्न यटिलिटी। उमा समेत सब हँस दिये थे।”⁸⁴

इसी कहानी में मदला गर्ग ने उमा के माध्यम से नारी की मनोवैज्ञानिक दशा का भी वर्णन किया है। उमा के पति का तबादला हो जाता है वह उस वक्त गर्भवती रहती है। उसे वहाँ परेशानी होती है। उमा सोचती है कि—“ऐसा नहीं था कि उसके बच्चा पैदा करने या पालने में उन्हें हाथ बटाना पड़ता. बच्चा अस्पताल में डॉक्टर-नर्स के भरोसे पैदा होता. पर बेफिक्री और तफरीह में कछ मनोवैज्ञानिक फर्क पड़ जाता। माहौल भी कोई चीज होती है।”⁸⁵

‘ओ-सोनकिसनी’ कहानी में चन्द्राकांता ने सोना के माध्यम से नारी को नारी की ही दश्मन कहा है। सोना के घर जब रित को देखने के लिए लोग आते हैं तो

उसके जीजा की हरकत पर सोना सोचती है कि—“औरत ही औरत की रखतरनाक दश्मन है. तमने कहा नहीं. पर तम्हारे खिचे-तने चेहरे पर वह वाक्य फ़ैसले की तरह लिख गया था। भरी महफ़िल में तम्हारा निष्कासन। यह स्वतः चना हुआ निष्कासन तम्हारी जिद को भले सहलाता हो. पर तम उस हरकत से जीजी बना-बनाया काम बिगाड़ सकती थीं। जिंदा रहने की शर्तों में वक्त-बे-वक्त समझौते भी तो शामिल हैं. सोना।”⁸⁶

“आधुनिक शिक्षा-दीक्षा. आर्थिक-सामाजिक स्वतंत्रता से स्त्री आत्मनिर्भर हो चकी है। वह अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व प्राप्त करने के लिए कई स्तरों पर यत्न की मद्रा में दिखायी देती है। उसके जीवन और परिवेश के दबावों. तनावों से आन्तरिक और बाह्य संघर्ष पुरुष के आदिम से टकराकर नये सम्बन्धों की सृष्टि कर रहे हैं। फलतः संयुक्त परिवार के टटने की प्रक्रिया पति-पत्नी के दाम्पत्य को भी ‘क्रास’ कर चकी है। इसलिए मध्यवर्गीय परिवार की टटन. कटन. घटन की त्रासदी नवे दशक की कहानियों की मुख्य संवेदना है।”⁸⁷

विवेचित कहानियों में नारी की स्थिति एवं उसके जीवन मूल्यों पर प्रकाश डाला गया है। पुरुष स्वार्थ के कारण दब रहे नारी के जीवन मूल्यों पर सामाजिक अधिकार की कमी पर महिला कहानीकारों ने कलम चलाई है। नारी के जीवन मूल्यों में परिवर्तन लाने की कोशिश अपनी कहानियों के माध्यम से किया है।

3.9 वैयक्तिक. मानव एवं नैतिक जीवन मूल्य

आज के आधुनिक समाज में व्यक्ति-व्यक्ति के बीच सौहार्द. मानवी सदभावना की कमी है। व्यक्ति और समाज में एक अविच्छिन्न संबंध है। व्यक्ति का अपने माता-पिता से वंशानुक्रमण द्वारा शारीरिक तथा मानसिक विशेषताएं प्रा

होती रहती हैं। पर इन विशेषताओं का पूर्ण विकास समाज या सामाजिक परिस्थितियों में ही होता है। व्यक्ति के सामाजिक जीवन का आधार समाज ही है। आज समाज में व्यक्ति का दृष्टिकोण समय के साथ बदलता जा रहा है। और उसके साथ मूल्यों में भी बदलाव आ रहे हैं। मगर अच्छे आदर्श परक व्यक्ति के वैयक्तिक मूल्य बढ़ते हुए अन्याय और अत्याचार से भी नष्ट होते हैं। भारतीय समाज वैयक्तिक मान और नैतिक मूल्यों के लिए प्रसिद्ध है मगर बदलते परिवेश और विदेशी संस्कारों के प्रभाव के कारण इन मूल्यों में परिवर्तन दिखायी देता है।

वैयक्तिक

सेमिनार कहानी में पाखी शिमला जाती है। वहाँ सेमिनार में जब बीना व नम्बर आता है। तब वह अपने प्रिय विषय पर बोलती है। तब पाखी सोचती कि—“उसका अपना जीवन बेहद फीका, सपाट और घटनाविहीन रहा था। बल्कि अपने जीवन की ऊब, एक रसता और थकान से निजात पाने के लिए ही वह लिखती है।”⁸⁸

एक दिन जब लच्छू कलर्ड करने आता है बड़ी बी बोलती हैं कि तम्हारा पिछ बकाया है। तो वह चौक जाता है क्योंकि वह बर्तनों को देखने के लिए आता है। एक दिन जब बर्तन नहीं मिलता है। वह पछता है। तो बड़ी बी झंझलाकर बोलती है। कि त हमारा कछ लगता है। क्या तो लच्छू कहता है—

“आप का क्या लगँगा, मगर इन बर्तनों से अपना पराना रिश्ता है।” मन ही मन कह उठा लच्छू।⁸⁹

‘बिछड़े हुए’ कहानी में सग्रीव नाम का एक आदमी रहता है। वह एक दिन अपनी पत्नी बेटी को छोड़कर संन्यासी हो जाना चाहता है। सांसारिक बंधन से मुक्त

होना चाहता है. सग्रीव सोचता है कि—“दनियावी झंझट ने घेर लिया था. उ खेती. फसल. गजर-बसर. कर्ज. सद. पत्नी-बच्ची...कच्चे सत में लिपटकर छटपटाने लगा वह। जीवन केवल पेट भरने के लिए? माया के बंधनों में जकड़ने के लिए है? नमक. तेल. लकड़ी की चिंता में आत्मा होम देने से लाभ क्या? त्रस्त सग्रीव दख भरे संसार से मोक्ष चाहता था। भागने के सिवा रास्ता भी क्या था?”⁹⁰

‘विरासत’ कहानी में जब हिम्मत शाह इलाहाबाद से नौकरी करके घर आता है. वह अपने बड़े भाई बल्लन शाह को इलाहाबाद ले जाने के लिए कहता है. तो उसे बल्लन शाह मना कर देता है। तो हिम्मत शाह क्रोधित हो जाता है. और कह है—“मझे नफरत है अपने घर से. अपने पेशे से. अपनी पहचान से नहीं चाहिए यह गलामी...”⁹¹ तब बल्लन शाह. हिम्मत शाह को समझाता है. कि तम घर छोड़े. फिर रहन-सहन. कपडा लत्ता. फिर अपनी बोली घोड़ी. अब सोच-विचार आखिर भाग कर कहां जाओगे।

सेमिनार कहानी में नौकर के माध्यम से समाज में मल्य में बदलाव की बात कही गयी है। कमरे में चमगादड अन्दर आ जाता है. तो मानसिंह ने वीना जी का झाड लेकर उसे मार देता है. और कहता है कि—“अरे वह तो झाड था। झाड ; विसतडया. चमगादड नहीं मारेगे तो क्या तेंदआ मारेगें। उसने बाकी झाडएं डेसिंग टेबिल के ऊपर से गिराते हुए कहा. झाड की जगह वहाँ है. मोरी पर. यहाँ व भगवान के माफिक सजाया है।”⁹²

मानव मल्य

गोमा हँसती है कहानी में किड्डा की शादी हो जाती है. तो गोमा पानी भरने कंए पर जाती है. तो ये बलीसिंह को खराब लगता है. एक दिन बलीसिंह किड्डा से कहता

है कि—“यार. असल जड है पीपल वाले कंए पर पानी भरने जाना। बह-बेटी को हर बरी-भली नजर के नीचे से गजरना पडता है। गाँव के तो गाँव के. आन गाँव : रसिया प्यासे बटोही बन. पस (अंजली) आगे कर देते हैं। मेरी माने तो हैंडपंप लगवा ले।”⁹³

अस्पताल खला था. आस-पास की बस्तियों के मरीज भी आने लगे थे। छोटा सा अस्पताल. दवा-दारू की कोई खास सहलियतें नहीं. तो भी डॉक्टर जितना क सकते थे. करते थे। कभी-कभी मर्ज बेकाव होने पर उचित उपचार की सविधा : मिलने पर मरीज मर जाते थे। इस कहानी के माध्यम से मानव मल्य दिखाया गया है कि— कभी उनका शव सगे-संबंधी ले जाते थे। कभी-कभी लावारिश मर्दों व जिम्मेदारी समस्या बन जाती। गैर को अपने कब्रिस्तान में गाडने को कोई राजी नहीं होता और डधर-उधर दबाना मश्किल था।”⁹⁴

‘उसका बेटा’ कहानी में नासिरा जी ने नीता के माध्यम से नर्सों की लापरवाही का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। मँगफली वाले का लडका बीमार होता है. तो उसे अस्पताल में भर्ती कराया जाता है. लेकिन नर्सों की लापरवाही के वजह से बच्चा मर जाता है. तो नीता अपने पति से कहती है—“इनका लडका रात ही मर गया था डॉक्टर ने ऑक्सीजन लगाने को कहा था। नर्सों ने ध्यान नहीं दिया. बैठी बात करती रहीं। जब रात को बेटा छटपटाया तो माँ नर्स को बलाने कई बार गई। जब तक नर्स आयी तो बेटा ठंडा हो चका था। अब नर्स ने कुछ देर पहले ऑक्सीजन स्लेंडर मर्दा बच्चे के मँह में लगाया है। डॉक्टर का राउंड होने वाला है न....तम कुछ करो...कह दो डॉक्टर से सब कुछ।”⁹⁵

मँगफली वाले का लडका मर जाता है. तो उसके बाद डॉक्टर साहब राउंड पर

आते हैं. लेकिन उनको हकीकत मालम नहीं रहता है वह अफसोस करते हुए कहते हैं कि—“उन्होंने डेथ सर्टिफिकेट बनाने को कहा फिर अफसोस से गर्दन हिलाई और धीरे से कहा कि शाम को बड़ा इम्प्रवमेंट था. यकायक यह हुआ कैसे? ऑक्सीजन भी समय पर दी गई फिर...?”⁹⁶

उसका बेटा कहानी में डॉक्टर के माध्यम से निराशा का चित्रण किया गया है. लेकिन डॉक्टर को यथार्थ पता नहीं है. इसीलिए ये बात कह रहा है। यहाँ नर्सों की लापरवाही के वजह से लड़के की मौत हुई है। उसी अस्पताल में सभाष की बेटी भी भर्ती रहती है. वह अच्छी हो जाती है. उसके पिता उसको लेकर बाहर निक हैं—जब हम आशा के साथ भरे-परे खश-खश लौट रहे थे. उस समय माँ. बेटे की लाश को गोद में लिए सीने से लिपटाए विलाप कर रही थी। उसे घेरे कई मर्द. औरत गठरी बने मँह ढाँके उस पेड के नीचे बैठे थे। उनके दुःख को देखकर मन के कोने में एक संतोष फड़फड़ाया कि हमारे साथ ऐसा नहीं हुआ। सब कुछ चलचित्र की तरह गजर गया।”⁹⁷

उसका बेटा कहानी में नासिरा शर्मा ने मानव-मल्यों का चित्रण प्रस्तुत किया है। शिमला में सेमिनार का आयोजन होता है. वहाँ लोग अपनी-अपनी कहानियों का पाठ करते हैं. उसमें लोग तरह-तरह की बातें करते हैं. सभी बड़े रचनाकारों के हवाले से बातें करते हैं. लेखिका के माध्यम से ये बात सामने आती है कि—“वे कुछ विदेशी आलोचकों का हवाला देते. प्रेमचंद की सीमाओं का उल्लेख करते. प्रसाद की विराटता बताते और समझते कि कहानी को अखबारीपन. सपाटबयानी और राजनीति प्रतिबद्धता से बचाते हुए कैसे सही मानव-मल्यों से जोड़ा जा सकता है।”⁹⁸

नैतिक मल्य

सबीना के चालीस चोर कहानी में एक दिन जब सबीना नानी से अलीबाबा चालीस चोर की कहानी सनती है वह अपने पिता शाहरुख से कहती है. नानी कहती है कि चोर घर पहचान लेते हैं। तो क्या यह चोर भी चालीस चोर की तरह अली बाबा का घर पहचान लेंगे. अब्ब? दोनों अचम्बे में पड जाते हैं और सोचने लगते—“वह तो कहानी की जबान से हकीकत की जबान जिस तरह समझ रही थी. उसको मिटाना था. झठलाना. उसको एक नई शक्त देना कछ भी उनके वश में नहीं रह गया था। माहौल उनकी दी तालीम से कहीं अधिक ताकतवर हो उठा था।”⁹⁹

सब लोग आपस में बातें कर रहे होते हैं. उसमें लकड़ी का जिक्र आता है. तो सबीना सोचती है कि—

“अलीबाबा की लकड़ी तो बहुत मशिकल से बिकती थी। बेचारा कि गरीब था। सारे दिन जंगल में लकड़ी काटता और जमा करता रहता था. फिर... और कफन कौन बेचता है? इसकी दकान तो मैंने पहले कभी देखी नहीं। लाश को सिलने कौन आएगा? दर्जी? वही दर्जी जो अब्ब के कर्ते-पायजामें की नाप लेने आया था? मगर उस लंबे दर्जी की आँख पर पट्टी कौन बाँधेगा?”¹⁰⁰

सबीना अपने पिता से बडों जैसे बातें करने लगती है. वह कहानी के माध्यम से यथार्थ रूप में प्रस्तुत करती है. तो उसके पिता शाहरुख परेशान हो जाता है. और कहता है. कि तम और तम्हारी माँ मझे जीने नहीं दोगे तो सबीना क कि—“अब्ब मैं मरजीना बनूँगी. आपको मरने नहीं दूँगी. किसी को मरने नहीं दूँगी. न गोपाल अंकल को. न रमेश अंकल को...वैसे अब्ब मरना क्या होता है?”¹⁰¹

‘रास’ कहानी में जैमन्ती के माध्यम से अपने ससर की माता के द्वारा की गयी

आदर-सम्मान का वर्णन किया गया है। लाला के घर शादी होने वाली रहती है। उसमें मनसखा महाराज आने वाले रहते हैं। उनके बारे में बात-चीत चलती है रमला चाचा कहते हैं कि—“मंडली का मालिक दयाराम बता रहा था। मनसखा ऊधोंपर के हैं चालीस से ज्यादा हो गयी उमर। सिर के लंबे घंघराले बालों में डक्का-दक्का सफेद बाल हो तो थहो हो। देह ऐसी बनी है। ज्यों पच्चीस बरस की छोकरी। मौजी आदमी ठहरे। नाचते-गाते ही काट दी अवस्था। गाँव-गिराज घरबार छूट गया। मंडली ही है उनका आसरा।”¹⁰²

पल्ला और पल्लार्डन आपस में बातें कर रहे होते हैं। तो पल्ला मरने की बात कहता है। तो पल्लार्डन कहती है कि—“ऐ नौज...मरें तम्हारे दश्मन। कैसी मनह बातें कर रहे हो? मेरे मरने की बात तो तम किया न करो। मझे बड़ी दहशत होती है। रातों की नींद उड़ जाती है। तौबा-तौबा....कैसी घटन होगी कब्र में...दम द जाएगा।”¹⁰³

‘विरासत’ कहानी में लेखिका ने पल्लार्डन के माध्यम से मानव मल्य मनहसी की बात कही है।

विरासत कहानी में नासिरा जी ने बताया है कि अपने सगे-संबंधी को अपने लोगों से लगाव नहीं रह गया है। इस प्रकार टूटते हुए जीवन-मल्य दिखायी दे रहे हैं।

नौ तपा कहानी में लच्छ के माध्यम से स्नेह को दर्शाया है।

महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में वैयक्तिक मानव एवं नैतिक मल्यों पर बल दिया है। आधुनिक समाज में बदलती परिस्थितियों के कारण समाजिक मल्य में परिवर्तन हो रहा है। इसलिए व्यक्ति एवं नैतिक मल्यों के महत्व में कमी हो रही

है। एक मानव दूसरे मानव के विचार एवं समाज में अपने व्यवहार पर लोगों विचार को लेकर चिंतित नहीं है। जिससे सामाजिक व्यवस्था में दरार उत्पन्न हो रहा है। महिला कहानीकारों ने इन बिगड़ते मूल्यों पर प्रकाश डालकर इनमें सधार व कोशिश की है।

महिला कहानीकारों की कहानियों में सामाजिक मूल्यों का अच्छा चि उपलब्ध है। जाति. परिवार. प्रेम. विवाह. नारी और व्यक्ति मानव एवं नैतिक मूल्यों पर प्रकाश डाला गया है। परंपरागत जीवन मूल्य एवं उन परंपरागत जीवन मूल्यों में परिवर्तन को दर्शाया है।

संदर्भ :

1. राम अहजा. मकेश अहजा. समाज शास्त्र विवेचना एवं परिप्रेक्ष. रावत पब्लिके
संस्करण-2008. पष्ठ- 87
2. डॉ. संजीव महाजन. भारतीय समाज. अर्जन पब्लिशिंग. प्रथम संस्करण. 2004. पष्ठ- 92
3. मैत्रेयी पष्पा. 'रास'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण- 1998 ई0.
पष्ठ- 135
4. मैत्रेयी पष्पा. 'उज्जदारी'. गोमा हँसती है. किताब घर. प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई0.
पष्ठ-123
5. मेहरुन्निसा परवेज. 'सजा'. अम्मा. ज्ञान गंगा. प्रथम संस्करण. 1997 ई0. पष्ठ-25-26
6. मेहरुन्निसा परवेज. 'लौट आओ बाबजी'. अम्मा. ज्ञान गंगा. प्रथम संस्करण. 1997 ई0.
पष्ठ-32
7. मेहरुन्निसा परवेज. 'लौट जाओ बाब जी'. अम्मा. पष्ठ-25-26
8. नासिरा शर्मा. 'ततडया'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-
1997. पष्ठ- 69
9. चंदकांता. 'पत्थरों के राग'. ओ-सोनकिसरी. राजकमल प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1991
ई0. प्रकाशन. पष्ठ-15
10. राम अहजा. मकेश अहजा. समाज विवेचना और परिप्रेक्ष्य. रावत पब्लिकेशन्स. संस्करण.
2008 ई0. पष्ठ-303.

Murdock, Georgl P., Social Structure, Macmillon company, New yaork,
1949.
11. Maciver R.M.. AND PAGE CHARLES h., SOCIETY, AN INTRODUCTORY
ANALYSIS, MACMILLAN AND CO. LTD. LONDON, 1962

12. मैत्रेयी पष्पा. 'प्रेम भाई एण्ड पार्टी'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई०. पष्ठ-67
13. मेहरुन्निसा परवेज. 'अम्मा'. लौट आओ बाबजी. ज्ञान गंगा. प्रथम संस्करण. 1997 ई०. पष्ठ-33
14. ममता कालिया. 'इरादा'. जाँच अभी जारी है. लोकभारती पेपर बैक्स. प्रथम संस्करण. 1997 ई०. पष्ठ-153
15. मैत्रेयी पष्पा. 'गोमा हँसती है'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई०. पष्ठ-193
16. मैत्रेयी पष्पा. 'दाम्पत्य'. 'जाँच अभी जारी है'. लोक भारती पेपर बैक्स. प्रथम संस्करण 1997 ई०. पष्ठ-74
17. मैत्रेयी पष्पा. 'बारहवीं रात'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई०. पष्ठ-158
18. नासिरा शर्मा. 'इमाम साहब'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर- 1997. पष्ठ- 53
19. वही. पष्ठ- 54
20. मैत्रेयी पष्पा. 'बिछड़े हए...'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई०. पष्ठ-59
21. ममता कालिया. 'दाम्पत्य'. जाँच अभी जारी है. लोकभारती पेपर बैक्स. प्रथम संस्करण. 1997 ई०. पष्ठ-70-71
22. ममता कालिया. 'इरादा'. जाँच अभी जारी है. लोकभारती पेपर बैक्स. प्रथम संस्करण. 1997 ई०. पष्ठ-160
23. नासिरा शर्मा. 'विरासत'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण.

- दिसम्बर- 1997. किताब घर. पष्ठ- 26
24. मैत्रेयी पष्पा. 'सांप-सीढी'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई०.
पष्ठ-100
25. नासिरा शर्मा. 'चांद-तारों की शतरंज'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर- 1997. किताब घर. पष्ठ- 48
26. ममता कालिया. 'अनभव'. जाँच अभी जारी है. लोक भारती पेपर बैक्स. प्रथम संस्करण. 1997 ई०. पष्ठ-98
27. मैत्रेयी पष्पा. उज्रदारी. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई०.
पष्ठ-111
28. नासिरा शर्मा. 'ततडया'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. अक्टूबर- 1997. किताब घर. पष्ठ- 63
29. मैत्रेयी पष्पा. 'ताला खला है पापा'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई०. पष्ठ-79
30. मेहरुन्निसा परवेज. 'पापा का घर'. अम्मा. ज्ञान गंगा प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1997 ई०.
पष्ठ-66
31. मेहरुन्निसा परवेज. 'अम्मा'. अम्मा' ज्ञान गंगा प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1997 ई
पष्ठ-10
32. नासिरा शर्मा. 'सबीना के चालीस चोर'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर- 1997. पष्ठ- 175
33. मैत्रेयी पष्पा. 'राय प्रवीण'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई०.
पष्ठ-55
34. नासिरा शर्मा. 'सबीना के चालीस चोर'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर प्रकाशन.

- प्रथम संस्करण. दिसम्बर- 1997. पष्ठ- 178
35. चन्द्रकांता. 'मेरी माँ कहती थी'. ओ-सोनकिसरी. राजकमल प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1991 ई.. पष्ठ-109
36. ममता कालिया. 'उमस'. जाँच अभी जारी है. लोकभारती पेपर बैक्स. प्रथम संस्करण 1997 ई0. पष्ठ-20
37. ममता कालिया. 'डरादा'. जाँच अभी जारी है. लोकभारती पेपर बैक्स. प्रथम संस्करण. 1997 ई0. पष्ठ-154
38. मैत्रेयी पष्पा. 'बारहवीं रात'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई0. पष्ठ-158
39. मैत्रेयी पष्पा. 'बारहवीं रात'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई0. पष्ठ-158
40. वही. पष्ठ-158
41. श्री सरेन्द्र. 'दशा. दिशा. संभावना'. नयी कहानी'. अपोलो प्रकाशन. जयपर. संस्करण 1966 पष्ठ-236
42. नासिरा शर्मा. 'तक्षशिला'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर- 1997. पष्ठ- 123
43. मैत्रेयी पष्पा. 'ताला खला है पापा'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई0. पष्ठ-78-79
44. मैत्रेयी पष्पा. 'गोमा हँसती है'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई0. पष्ठ-172
45. नासिरा शर्मा. 'तक्षशिला'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर- 1997. पष्ठ- 121

46. नासिरा शर्मा. 'चार बहनें शीश महल की'. खदा की वापसी. भारतीय ज्ञानपीठ. तीसरा संस्करण. 2001. पष्ठ- 49
47. मैत्रेयी पष्पा. 'बिछडे हए...'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई0. पष्ठ-62
48. मैत्रेयी पष्पा. 'गोमा हँसती है'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई0. पष्ठ-192
49. ममता कालिया. 'अनभव'. जाँच अभी जारी है. लोकभारती पेपर बैक्स. प्रथम संस्करण. 1997 ई0. पष्ठ-96
50. ममता कालिया. 'अनभव'. जाँच अभी जारी है. लोकभारती पेपर बैक्स. प्रथम संस्करण. 1997 ई0. पष्ठ-94
51. मैत्रेयी पष्पा. 'प्रेम भाई एण्ड पार्टी'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई0. पष्ठ-66-67
52. मैत्रेयी पष्पा. 'ताला खला है पापा'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई0. पष्ठ-86
53. मैत्रेयी पष्पा. 'गोमा हँसती है'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई0. पष्ठ-173
54. मैत्रेयी पष्पा. 'सांप-सीढी'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई0. पष्ठ-94
55. कष्णा अग्निहोत्री. सेनानी. जिंदा आदमी. ज्ञान भारती रूप नगर दिल्ली. पष्ठ-76
56. मैत्रेयी पष्पा. 'बारहवीं रात'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई0. पष्ठ-156
57. वही. पष्ठ-160

58. नासिरा शर्मा. 'नौ-तपा'. सबीना के चालीस चोर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-160
59. मैत्रेयी पष्पा. 'प्रेम भाई एण्ड पार्टी'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई०. पष्ठ-66
60. मैत्रेयी पष्पा. 'सांप-सीढ़ी'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई०. पष्ठ-94
61. चन्द्रकांता. 'मेरी माँ कहती थी'. ओ-सोनकिसरी. राजकमल प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1991 ई.. पष्ठ-115
62. वही. पष्ठ-155
63. मेहरुन्निसा परवेज. 'प्राण-प्रतिष्ठा'. अम्मा. ज्ञान गंगा. प्रथम संस्करण. 1997 ई०. पष्ठ-50
64. मैत्रेयी पष्पा. 'उज्जदारी'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई०. पष्ठ-112
65. श्याम चरण दबे. परम्परा बोध और संस्कृति. राधाकृष्ण प्रकाशन. पष्ठ-30
66. मैत्रेयी पष्पा. 'सांप-सीढ़ी'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई०. पष्ठ-97
67. मैत्रेयी पष्पा. 'उज्जदारी'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई०. पष्ठ-118
68. राजेन्द्र यादव. कहानी अनभव और अभिव्यक्ति. वाणी प्रकाशन. संस्करण-1996 ई. आवृत्ति. 2009. पष्ठ-134
69. मदला गर्ग. 'तीन किलो की छोरी'. शहर के नाम. भारतीय ज्ञानपीठ. प्रथम संस्करण. 1990 ई.. पष्ठ-19
70. नमिता सिंह. 'बन्तो'. जंगल गाथा. वाणी प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1994 ई. पष्ठ-39

71. मैत्रेयी पष्पा. 'राय प्रवीण'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई०.
पष्ठ-55
72. नासिरा शर्मा. 'तक्षशिला'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण.
दिसम्बर- 1997. पष्ठ- 136
73. मदला गर्ग. 'वह मैं ही थी'. शहर के नाम. भारतीय ज्ञानपीठ. प्रथम संस्करण. 1990 ई०.
पष्ठ-68
74. ममता कालिया. 'अनभव'. जाँच अभी जारी है. लोकभारती पेपर बैक्स. प्रथम संस्करण.
1997 ई०. पष्ठ-96
75. ममता कालिया. 'जाँच अभी जारी है'. जाँच अभी जारी है. लोकभारती प्रकाशन. प्रथम
संस्करण. 1997 ई०. पष्ठ-27
76. चन्द्रकांता. 'पत्थरों के राग'. ओ-सोनकिसरी. राजकमल प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1991 ई.
. पष्ठ-8
77. नासिरा शर्मा. 'निवेदन से'. खदा की वापसी. भारतीय ज्ञान पीठ. संस्करण. 1998. पष्ठ-
07
78. ममता कालिया. 'सेमिनार'. जाँच अभी जारी है. लोकभारती पेपर बैक्स. प्रथम संस्करण.
1997 ई०. पष्ठ-12
79. मदला गर्ग. 'शहर के नाम'. तीन किलो की छोरी. भारतीय ज्ञानपीठ. प्रथम संस्करण. 1990
ई०. पष्ठ-22
80. चन्द्रकांता. 'मेरी माँ कहती थी'. ओ-सोनकिसरी. राजकमल प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1991
ई०. पष्ठ-55
81. मेहरुन्निसा परवेज. 'लौट जाओ बाब जी'. अम्मा. ज्ञान गंगा. प्रथम संस्करण. 1997 ई०.
पष्ठ-40

82. मेहरुन्निसा परवेज. 'अपने-अपने लोग'. अम्मा. ज्ञान गंगा. प्रथम संस्करण. 1997 ई०.
पृष्ठ-149-150
83. वही. पृष्ठ-150-151
84. मदला गर्ग. 'शहर के नाम'. शहर के नाम. भारतीय ज्ञानपीठ. प्रथम संस्करण. 1990 ई..
पृष्ठ-98
85. मदला गर्ग. 'वह मैं ही थी'. शहर के नाम. भारतीय ज्ञानपीठ. प्रथम संस्करण. 1990 ई..
. पृष्ठ-67
86. वही. पृष्ठ-70
87. चन्द्रकांता. 'ओ सोनकिसरी'. ओ-सोनकिसरी. राजकमल प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1991
ई०. पृष्ठ-156
88. ममता कालिया. 'सेमिनार'. जाँच अभी जारी है. लोकभारती पेपर बैक्स. प्रथम संस्करण.
1997 ई०. पृष्ठ-16
89. नासिरा शर्मा. 'नौ-तपा'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण.
दिसम्बर- 1997. पृष्ठ- 170
90. मैत्रेयी पष्पा. 'बिछड़े हए'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई०.
पृष्ठ-57
91. नासिरा शर्मा. 'विरासत'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण.
दिसम्बर- 1997. पृष्ठ- 24
92. ममता कालिया. 'सेमिनार'. जाँच अभी जारी है. लोकभारती प्रकाशन. प्रथम संस्करण
1997 ई०. पृष्ठ-18
93. मैत्रेयी पष्पा. 'गोमा हँसती है'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण
दिसंबर. 1997. पृष्ठ- 12

94. नासिरा शर्मा. 'उसका बेटा'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर- 1997. पष्ठ- 117
95. वही. पष्ठ- 118
96. वही. पष्ठ- 118
97. वही. पष्ठ-119
98. ममता कालिया. 'सेमिनार' जाँच अभी जारी है. लोकभारती पेपर बैक्स. प्रथम संस्करण. 1997 ई0. पष्ठ-13
99. नासिरा शर्मा. 'सबीना के चालीस चोर'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर- 1997. पष्ठ- 179
100. नासिरा शर्मा. सबीना के चालीस चोर. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर- 1997. पष्ठ- 185
101. नासिरा शर्मा. सबीना के चालीस चोर. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर- 1997. पष्ठ- 182
102. मैत्रेयी पष्पा. 'रास'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1998 ई0 पष्ठ-138
103. नासिरा शर्मा. 'विरासत'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर- 1997. पष्ठ- 15

चतुर्थ अध्याय

4. हिन्दी-महिला कहानीकारों की कहानियों में अभिव्यक्त. शैक्षणिक. आर्थिक और राजनीतिक जीवन-मल्य

4.1 शैक्षणिक-जीवन मल्य

शिक्षा आवश्यक ज्ञान और दक्षता प्रदान करती है. जो व्यक्ति को आद व्यक्ति के रूप में समाज में कार्य करने योग्य बनाती है। शिक्षा आधुनिक समाज के आधुनिकीकरण और पुनर्गठन के लिए शक्तिशाली साधन है। शैक्षणिक संस्थ समाज के अभिन्न और संवेदनशील अंग हैं। शैक्षणिक व्यवस्था समाज के मूल्यों और प्रतिमानों प्रभावित किए बगैर बिना नहीं चल सकती है।

ब्राह्मण यग में शिक्षा का प्रमुख विषय वैदिक साहित्य था। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य वेदों का ज्ञान था। लेकिन शूद्रों को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखा गया था। शिक्षा योग्यता एवं रुझान की अपेक्षा जाति के आधार पर दी जाती थी। स्त्रियों को भी शिक्षा से बहिष्कृत रखा गया था। आधुनिक यग में लोग शिक्षा के महत्त्व को समझने लगे हैं। शिक्षा से देश, समाज, परिवार और व्यक्ति का आर्थिक विकास होता है। लोग पहचान गये हैं कि शिक्षा अनिवार्य है।

4.1.1 शिक्षा का महत्त्व

शिक्षा के महत्त्व को समझ कर जो व्यक्ति शिक्षित हुआ है उसको समाज में नौकरी, मान-सम्मान एवं आदर के साथ लोग देखने लगे हैं। शिक्षा मानव को सभ्य बनाता है। उच्च विचार देता है, और सच्चाई का रास्ता दिखाता है। इस बात को लोग समझने लगे हैं। इसलिए खुद को और अन्य सभी लोगों को शिक्षित होने की सलाह देते हैं जो अशिक्षित हैं वह समाज की बुराईयों एवं गलत-सही पहचान के बिना मन

के विचार के आधार पर अपने आप को और दूसरों को कष्ट पहुँचाता है।

‘साँप-सीढ़ी’ कहानी में ताऊ पत्र राजन है। उसको डाक उठा ले जाते हैं। डाकओं से राजन को छड़ाने के लिये ताऊ खेत बेच देता है “मैं रा पढ़ाऊँगा-लिखाऊँगा। वह नई-नई बातें सीखेगा। नौकरी करे या खेती। इल्म के बल पर करेगा। दस बीघा नहीं। बीस खरीद लेगा। और न भी खरीदे....परवाह नहीं। पत सपत तो क्या धन संचय? जेहन का तेज और नजर का धनी है। राजन।”¹

‘पापा का घर’ कहानी में दीपा अपने मम्मी के शिक्षा के प्रति विचार सोचती है— “शहर के सारे तौर-तरीके सीख लिये। कोई उन्हें गाँव का नहीं समझ सकता था। मम्मी बच्चों की पुस्तकों से देख-देख काफी पढ़ना-लिखना भी सीख गई थीं। मम्मी खद पढ़ नहीं पाई थीं। इसलिए उन्हें पढ़ाई में बहुत रुचि थी। सबके पीछे लगी। रहती कि पढ़ो। भगवान् की तरह ही पुस्तकों का आदर करतीं। दीपावली पर लक्ष्मी की पूजा के समय पुस्तकों को भी पूजा में रखती है। हमेशा कहती। ‘हमारी तो यही जायदाद है। हमारी गहस्थी तो इन्हीं पुस्तकों ने ढोई है। हमारी गहस्थी की खेती के यही बैल हैं।’”²

‘ताला खला है पापा’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा बिन्दों के पत्र के माध्यम से निम्न वर्ग में शैक्षणिक योग्यता की कमी पर विचार प्रस्तुत किया है। कहानी में एक दिन जब जगदीश चौबे बिन्दो के कमरे में जाते हैं। वहाँ कुछ पत्र मिलते हैं। उसको पढ़ने लगते हैं। उसमें लिखा रहता है कि— “तो पढ़ाई में इस कदर तेज नहीं होते नीच कौम के बालक। पापा कहते हैं। सो तो है अपना गाँव छोड़कर। माता-पिता से अलग बआ की देहरी पर पड़ा है। तमाम बेगार करता है। ऊपर से तेरे-मेरे काम। अम्मा कहती है।”³

महिला कहानीकारों ने अपने कहानियों में शिक्षा के महत्त्व को बहुत अच्छी तरह से समझाया है। शिक्षित होने की प्रेरणा देते हुए अशिक्षित लोगों की दयनीय स्थिति पर अपने विचार प्रकट किये हैं।

4.1.2 स्त्री-शिक्षा

भारत में स्त्री शिक्षा का विरोध किया जाता है। शिक्षा ज्ञान की कंजी है। इस कंजी से जो लाभ उठाता है, वह ज्ञान से परिपक्व हो जाता है। शिक्षा रूपी कंजी नारी की उन्नति में सहायक सिद्ध हुई है। इसके जरिए वह अपने जीवन में सधार लाने में सफल सिद्ध होती है। इसका ज्ञान लोगों में कम दिखता है। “शिक्षा ने नारी व समस्त अंधविश्वासों से मुक्त कर तार्किक दृष्टिकोण प्रदान किया है।”⁴ लेकिन स्त्री को शिक्षा प्राप्त करने में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

‘चिमगादडे’ कहानी में जमींदार घरानों की उम्रदराज अनपढ़ लड़कियों व लड़कियों का नाम स्कूल में लिखवा दिया जाता है। इसे स्कूल की प्रसिद्धी दर-दर तक फैल जाती है। लोग लड़कियों को देखने के लिए आते हैं। प्रिंसिपल साहिब बहुत खश होते हैं।

“अब बड़े-बड़े फंक्शन में, बड़े-बड़े घरानों की बेगमात, अच्छी लड़कियाँ देखने आ जाती थीं। इसका असर हुआ कि डरे-सहमे जमींदार घरानों ने भी अपनी खाली उम्रदराज लड़कियों का नाम स्कूल में लिखवा दिया यह सब देखकर प्रिंसिपल बड़ी खश होती थीं।”⁵

इसी कहानी में मिस हमैरा को समझाते हुए प्रिंसिपल साहिबा कहती हैं कि— हमारे यहाँ भी इससे भी बदतर है। वे भी शायद दो वजहों से भेजते हैं, एक फीस कम है, और फिर यह एक मुस्लिम संख्या है। जिसमें बदनामी का डर नहीं।

थोडा-बहत पढने के बाद लडकियों की शादियों में आसानी होती है। ये पराने खयालों के घराने नई तब्दीली पंसद नहीं करते हैं। अगर ये मजबरी न हो तो शायद वे लडकियों को आज स्कूल भेजे भी न।”⁶

मिस हमैरा कहती है कि— “मैं बहत शर्मिदा हूँ. मैडम. और साथ ही बहत खश। आपसे बातें करके इस प्रोफेशन के बारे में मैं ज्यादा जिम्मेदारी महसूस कर रही हूँ। मझे आप के खयालातों से जो ताकत मिली है. वह क्या बताऊँ...काश मैं भी इस तरह बन सकती।”⁷

स्त्री को शिक्षा देना भारतीय समाज में अनिवार्य नहीं माना जाता है। उ अशिक्षित बनकर घर का काम कराया जाता है। स्त्री को शिक्षित बनाना कितना अनिवार्य है इस बात पर महिला कहानीकारों ने जोर दिया है।

4.1.3 अशिक्षा

‘ततडया’ कहानी में नासिरा जी ने गायक बाब के माध्यम से भारत अशिक्षा की स्थिति को उजागर किया है। एक दिन गाँव में मेला लगा है. वहाँ मेला देखने बहत लोग आते हैं। उसमें यद्ववीर की पत्नी भी मेला देखने आती एकाएक एक आदमी ने उसे घसीट ले जाता है। उसे गायक बाब देखकर कहते हैं कि— “यद्ववीर बड़ा भला लडका है। इस मोहल्ले में वही कुछ पढा-लिखा गंभीर है. वरना तो...चलता हूँ। स्थिति आंक कर मैं खोलूँगा। हो सकता है. मेरी भल हो वह लडकी कोई और हो?”⁸ अशिक्षा के कारण सरकारी नौकरी नहीं मिलती है।

‘सतघरवा’ कहानी में अब्दल कभी भी उधर से जाता है. तो दादीजान को सलाम करके ही जाता है. एक दिन दादीजान और अब्दल आपस में बात करते हैं अब्दल दादीजान से कहता है कि— “मजाक करती है. दादीजीन आप तो। अरे मैं

वहाँ टेढ़ी-मेढ़ी लकड़ी चनने जाता हँ। यह बड़े लोगों का शौक है न। उसको रंगकर कमरे में सजाते हैं। अपने दोस्त हैं त्रिवेदी जी. वह फारिस्ट ऑफिसर हैं। कहते हैं. अब्दुल त परा बन्दर है। यदि पढ़ा-लिखा होता तो मैं। तझे सरकारी नौकर दाखिल कर देता।”⁹

‘बारहवीं रात’ कहानी में मैत्रेयी पण्णा ने सरेन्द्र के पिता अशिक्षित व्यक्ति के स्वभाव का वर्णन करती है। सरेन्द्र की पत्नी आत्म-हत्या कर लेती है. सरेन्द्र माता-पिता में वार्तालाप होता है। सरेन्द्र के पिता अपनी पत्नी से कहते हैं कि “मख खोला तो समझ लेना. फिर...पिछली बातें हम नहीं कर रहें. त ही उखाड़ रही थी. गड़े-मर्दे। इतनाकि वह की कोमल उमर कचल डालने में आनन्द आ रहा था तझे। कहती थी हम देवता नहीं सो सहन कर जाएँ. मनिख की जात हैं। अरे. हम कहते हैं कि साली त जाहिल औरत खौफनाक दोसी हैं”¹⁰

‘उसका बेटा’ कहानी में नीता अनपढ़ लोगों की स्थिति वर्णन किया है। कहानी में मँगफली वाले का बेटा अस्पताल में नर्सों की लापरवाही की वजह से मर जाता है. तो सभाष की पत्नी बहुत परेशान होती है. कि ये लोग अनपढ़ और गरीब हैं जो कि कछ भी बात डॉक्टर से नहीं कर सकते. वह सभाष से कहती है कि “वे बेर अनपढ़ देहाती कछ समझ ही नहीं पाए हैं। सभाष...। नीता ने प्रतिरोध स्वर कहा।”¹¹

‘वर्दी’ कहानी में ममता कलियो गाँव की अशिक्षित महिलाओं का यथ चित्रण प्रस्तुत किया है। आशा का पति पलिस में काम करता है. लेकिन आशा ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं थी। इसलिए उसको समझ में नहीं आता है। वह सभी औरतों को अभागा मानती हैं. “वर्दी के बते पर उसके पति को हर-चीज मफ्त हासिल हो जाती।

आशा गाँव के स्कूल में आठ जमात के आगे नहीं पढ़ी थी। इससे अधिक सोच-विचार का उसे अभ्यास नहीं था। उसने तो यही सोचा कि शायद सरकार ने यह रमाशंकर को इसीलिए दी है कि वह अपनी पत्नी को और घर को खशहाल रखे।”¹²

‘चिमगादड़ें’ कहानी में नासिरा शर्मा ने मन्नी के माध्यम से बताने का प्रयत्न किया गया है कि समाज में अभी भी कितने अनपढ़ लोग हैं। मुस्लिम इलाका के बच्चे पढ़ने आते हैं। लेकिन जब होमवर्क दिया जाता है, तो वह करके नहीं लाते हैं। टीचर के कहने पर बहाना बनाते हैं। मन्नी टीचर से कहती है कि— “भैया को न खिलाओ तो अम्मा मारती है। कपड़े गिनवाने न जाओ तो अब्बा की गाली सनो। कि यह कौन सी पढ़ाई है। जो सारे दिन के बाद रात को भी चलती है? काम नहीं होता तो आप डांटती हैं हम क्या करें?”¹³

विवेचित कहानियों के माध्यम से समाज में अशिक्षित व्यक्ति की स्थिति पर यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। अशिक्षित व्यक्ति के शून्य जीवन मूल्य पर प्रकाश डालते हुए शिक्षा के महत्त्व को बताया गया है।

4.1.4 शिक्षा व्यवस्था

भारत की शिक्षा व्यवस्था की स्थिति ही नहीं बल्कि विद्यालय की स्थिति भी बहुत खराब है। पुरानी इमारतें जिसकी मरम्मत के बिना स्थिति इतनी बुरी हो गयी है कि वहाँ पढ़ने से विद्यार्थियों का जीवन खतरे में है। इसके साथ-साथ शिक्षा व्यवस्था में भ्रष्टाचार एवं नकल भी विद्यमान है, जो शिक्षा के स्वरूप माहौल को बिगाड़ रहा है।

‘चिमगादड़ें’ कहानी में नासिरा जी मुस्लिम संस्था के इमारत की स्थिति का वर्णन किया है। कहानी में मुस्लिम संस्था का स्कूल है इसकी इमारत बोसीदा

“गली-दर गली में बसा यह स्कूल एक मामली-सी मुस्लिम संस्था थी। इस बोसीदा इमारत का कोई भी कमरा साबुत नहीं था। कभी यह शानदार शैतान की आँत जैसी इमारत कोतवाल साहब की कोठी के नाम से मशहूर थी। मगर अब जमाने की गर्दिश के निशान ने उसका हलिया ही बिगाड़ दिया था।”¹⁴

इसी कहानी में प्रिंसिपल मिस गोवा के माध्यम से बोसीदा इमारत का वर्णन किया है। एक दिन स्कूल में सभी लोग मौजद होते हैं। अचानक बारिश शुरू हो जाती है। सभी को ले जाने के लिए रिक्शावाला आता लेकिन स्कूल की छट्टी पहले हो गयी थी। इसी वजह से 20-25 लड़कियाँ घर नहीं जा पाती हैं। मिस हमैरा और प्रिंसिपल में बात होती है। प्रिंसिपल साहिबा कहती हैं कि— “खैर आप आधे घंटे तक इंतजार कर लीजिए। इसके बाद सबको दाई और चपरासी के साथ दीजिए। इस मौसम में स्कूल में ठहरना किसी भी लड़की का ठीक नहीं है। इमारत ढह गई तो परेशानी में पड़ जाएँगे।”¹⁵

कहानी में जब मिस गोवा रिटायर्ड हो जाती हैं तब मिस हमैरा बहुत परेशान रहती है क्योंकि जो दूसरी प्रिंसिपल आयी है, उसका व्यवहार सीधा विपरीत है। मिस हमैरा सोचती है कि— “जो कुछ भी उन्हें मिस गोवा ने पिछले सालों में दिया था, उसका अब कोई मूल्य नहीं रह गया था। वे सब बातें अब व्यावहारिक रूप परिवर्तित हो रही थी। मिसिज हसन व्यवहार कशल थीं। चापलसी, खशामद, तारीफ, मक्कारी उन्हें पसंद थी।”¹⁶

‘चिमगादड़ें’ कहानी में प्रिंसिपल के माध्यम से स्कूलों में भ्रष्टाचार्य यथाः चित्र प्रस्तुत है।

मिस हमैरा जब परेशान हो जाती है, तो वह प्रिंसिपल से मिलने जाती है सोचती है कि वह पैसे पर साइन कर देगी। लेकिन सब हमैरा प्रिंसिपल से मिलने

जाती है। तो प्रिंसिपल की गस्से भरी आवाज से बोलती है— “खाक सच कह रहे हैं। कालिया साहब! यह मेरे ऊपर डलजाम है. अगर यह बात सच भी है तो उन हैसियत क्या है? मझ पर उँगली उठाने की...वह अकेले हैं....निपट अकेले...मैं उनकी खाट खडी कर दूँगी। वह होते कौन हैं। हिसाब की जाँच करने वाले...मैं तो कहूँगी वह खद बहत बडे भ्रष्ट हैं। साबित करते रहें अपनी बेगनाही को अब वह...कोई नहीं सनेगा उनकी आवाज को..राय प्रवीण’ कहानी में गोविन्द नाम का एक गाइड रहता है। वह शाम को कमाई के बाद जब घर जाता है. तो उसके सामने एक खबसरत लडकी अवतरित होती है। वह लडकी पढने में तेज नहीं रहती है। उसकी छोटी बहन तेज रहती है। वह सोचता है कि— “सीधी बह सावित्री और भी सहम-सिकड गयी। सिकड जाना स्वाभाविक था। दसवीं कक्षा को वह शब्द नकल के दम पर लाँघ पाई थी. जिसमें दमयंती ने अपनी कशलता और प्रतिभा का परिचय दिया था। पर्चे हल करके परीक्षा कक्ष में पहुँचाए थे।”¹⁸

भारत की शिक्षा व्यवस्था की कमियाँ एवं भ्रष्टाचार पर कलम चलाते हुए हिंदी महिला कहानीकारों ने शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन की माँग की है।

निष्कर्षतः शैक्षणिक मल्य के अंतर्गत महिला कहानीकारों ने शिक्षा का महत्त्व. स्त्री शिक्षा. अशिक्षित. शिक्षा व्यवस्था पर प्रकाश डाला है। शैक्षणिक मल्य परिवर्तन एवं विकास के विचार प्रकट करते हुए भारतीय सामाजिक मल्य में विकास की आशा प्रकट किया है।

4.2 आर्थिक जीवन मल्य

भारत की अर्थ-व्यवस्था बहत पिछडी है। लोगों का यह विश्वास था स्वतंत्रता के बाद भारत के अर्थ-व्यवस्था में परिवर्तन होगा. मगर ऐसा नहीं हुआ स्वतंत्रता के पर्व उच्च वर्ग. मध्य वर्ग एवं निम्न वर्ग जैसे थे. वैसे ही स्वतंत्रता के बाद

भी भारत में हैं। उच्चवर्ग के लोग आज भी सम्पन्न हैं और सखी जीवन जी रहे हैं। सरकार से मिल रही सभी सविधाओं का लाभ उठा रहे हैं। मगर मध्यवर्ग और निम्न वर्ग पीडित हैं। कशल जीवन से वंचित है। सरकार से कोई सविधा का लाभ उन्हें नहीं मिल रहा है। अर्थ नहीं रहने के कारण उन्हें पीडित एवं पक्षपात किया जा रहा है।

‘वह मैं ही थी’ कहानी में सरकारी व्यवस्था का चित्रण गाँव में उमा के पति का तबादला हो जाता है। वह अस्पताल. दायी की वहाँ व्यवस्था नहीं होती “माँ-बाप की सहानभूति भी अपने माहौल के प्रति थी। उमा उन्हें क्या दोष देती। शादी से पहले वही कहाँ जानती थी कि हिन्दुस्तान में ऐसे गाँव-कस्बे भी हैं. जहाँ डॉक्टर. अस्पताल. चिकित्सा-यन्त्र. आक्सीजन तो दर. मामली दवाइयाँ और इंजेक्शन भी नहीं होते। होता है एक प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र. कम्पाउण्डर. दाई. एस्पिरिन की गोली और उबला गरम पानी। जानती तो अन्जान अन्धे की तरह. गर्भ धर. इस कस्बे में न चली आती। पर...जाती कहाँ?”¹⁹

4.2.1 निम्न. मध्य एवं उच्च वर्ग

1. भारतीय समाज में तीन वर्ग के लोग रहते हैं। निम्न. मध्य और उच्च वर्ग निम्न वर्ग के लोग मध्य एवं उच्च वर्ग के लोगों पर आश्रित हैं यह लोग नौकर. मजदूर वर्ग के लोग हैं। जो रोज की कमाई पर अपना गजारा करते हैं।
2. जब देश आजाद हुआ तो घोषणा की गयी कि गरीबी को हटाया जायेगा। हर एक व्यक्ति ‘अर्थ’ के स्तर पर समान रहेगा। आर्थिक समस्या को सलझाने के लिए हर तरीके से प्रयास किये जाएंगे। उच्च वर्ग अपने वैभव के नशे में अन्धा होकर मस्ती से जनता का शोषण कर रहा है। मस्ती की नींद सो रहा है।
3. मध्य वर्ग के लोग उच्च वर्ग पर आश्रित हैं. यह लोग अपना जीवन एक छोटी

सी पँजी. खेती. सरकारी नौकरी करके गजारा करता है

4. “मध्यवर्ग में समाज वह समदाय विशेष आता है. जो आर्थिक दृष्टि से ज्यादा अच्छा है. और न बरा. उसमें विशेष रूप से निम्न मध्यवर्ग की दशा दयनीय है।”²⁰

मध्य वर्ग न उच्चवर्ग की समस्त सविधाओं की इच्छा करने पर उसे प्राप्त कर सकता है. और न ही निम्नवर्ग की तरह जीवन जी सकता है। मानो त्रिशंक बना है।

5. उच्च वर्ग के लोग जमींदार वर्ग. रईस वर्ग के लोग होते हैं। यह लोग निम्न एवं मध्य वर्ग के लोगों से काम लेते हैं और धन इकट्ठा करते हैं. शोषण करते हैं. विलास पर्ण जीवन बिताते हैं।

चिमगादड़ें कहानी में अध्यापकों के अर्थ सम्बन्धित मृत्यु का वर्णन किया है।

मिस गोवा के जाने के बाद. मिस हसैन आ जाती है. और अपने परवाह में सब बहा कर ले गयी। तीन वर्षों तक रही उनके जाने के बाद सीनियर में से प्रिंसिपल बना दिया गया। फिर नयी प्रिंसिपल आ गयी। सभी टीचरों को कठिनाइयां समझ में आ गयी थीं। “काफी कठिनाइयों के बाद उन्हें यह बात समझ में आ गई थी कि वह सिर्फ नौकर हैं. मजदूर हैं और अगर वह कल काम पर न आई तो दूसरा मजदूर मिल जाएगा। समाज. मृत्यु. दिशा. भविष्य. देश ये सारी बातें सिर्फ शब्दकोश में अच लगने वाले मर्दा शब्द हैं। जिनमें अर्थ है. मगर अर्थ की हलचल और गर्मी गाय है।”²¹

‘जिंदा आदमी’ कहानी में रमकलिया के माध्यम से निम्न वर्ग का यह चित्रण किया गया है। कहानी में रमकलिया निम्न वर्ग की महिला रहती है जो घरों में बाइयों का काम करती है। वह बहुत गरीब है. उसकी मालकिन उसे बगीचे में गिरे

फल भी उठाने नहीं देती. चाय. नाश्ता तो दर की बात है वह कहती है कि— “अरे इतने फल बगीचे में गिरकर सख जाते हैं। मैं यदि भगवान को चढ़ाने के लिए लेती हूँ तो बड़ी मेरे नाते-रिश्तेदार गिनाने लगती है। न चाय दे. न नाश्ता। सामने मेज पर परांठे चबाती है। अरे. हम गरीब हैं तो क्या हमारे पेट पर पत्ते चिपके हैं?”²²

‘तीन किलो की छोरी’ कहानी में स्त्री को तीन किलो की लडकी पैदा होती है। तब शारदाबेन को खाना का ख्याल आता है। वह कहती है कि— “खा लूँगी पापी. सबर कर. उसने अपने पिचके पेट पर चपत लगाकर कहा और खी-खी कर हँस दी। ऐसा न खाने वाली हूँ आज. रुखा रोटला-प्याज. आज तो इस तीन किलो की छोरी की माँ सकड़ी लिये बगैर न मानूँगी।”²³ कहानी में लेखिका ने निम्नवर्गीय लोगों की आर्थिक संकट का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है।

‘पहली’ कहानी में निम्नवर्गीय नौकरी पेशा की पारिवारिक जिंदगी में पहली तारिख का महत्त्व दिखाया गया है। इस कहानी में पति-पत्नी में घर चलाने को लेकर बहस होती है। तो पत्नी पति से कहती है कि— “क्या ज्यादा कर देती हूँ। तम पाँच सौ में घर चला कर दिखाओ तो जानूँ। दस दिन में रो जाओगे।”²³

‘इमाम साहब’ कहानी में जब इमाम साहब शहर चले जाते हैं। इमामत वं लिए जो जरूरत की सभी चीजें चाहिए। इतने कम पैसे में जरूरत की सभी चीजें परी नहीं हो पायेगी। एक दिन जब वह अपना जता सही करवाने मोची के पास पहुँचते हैं तो मोची कहता है कि— “इमाम साहब. यदि आप कहें तो बढिया चप्पल बना दूँ। ज्यादा नहीं सिर्फ चमड़े का पैसा लूँगा। परे पचास रुपये और गारंटी परे पचास साल की’ सनकर शकीलददीन हंस पड़ते और धीरे से कहते- ‘सोचकर बताऊँगा’।”²⁵

‘राय प्रवीण’ कहानी में गाँव में बाढ़ के कारण निम्न वर्ग की हालत. आर्थिक

स्थिति का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

‘राय प्रवीण’ कहानी में गाँव में बाढ़ आता है। सब कुछ डब जाता है। लोग घर से बेघर हो जाते हैं। लोगों के पास खाने के लिए कुछ भी नहीं बचा रहता है। उन लोगों को पता चलता है कि कैम्प लगा है। लोग वहाँ जाने लगते हैं। गोविन्द कहता है कि— “गाँव के बड़े लोगों ने मदद के लिए हाथ बढ़ाया। टैक्टर में ठिलिया लगा ली। वे हरिजन टोले से गरीब औरतों को ले जा रहे हैं। यह भी जरिया है. राहत लेने का। भखी-प्यासी मजबूर कमजोर, बीमार औरतें कैम्प तक पहुँचने की भरपूर कोशिश में जटी हैं। वे अन्य नहीं. जिंदगी लेने जा रही हैं।”²⁶

‘इमाम साहब’ कहानी में शकीलददीन को शहर की मस्जिद में इमामत का नौकरी मिल जाती है। तब सलेखा कहती है कि अब हम लोग आराम से रहेंगे और पति की सेहत में सधार हो जायेगा— “यहाँ इमामी में कौन-सा धन लटता था। चादर ऐसी की सिर ढको तो पैर खला. पैर ढको तो सिर खला। ऊपर से इस गाँव में अब खर्चा चलना वैसे भी मुश्किल हो गया है. जब से प्लास्टिक की फैक्टरी खली है. और उसके अफसरों ने बाजार आना शुरू किया है. हर चीज मंहगी हो गयी है।”²⁷

‘तक्षशिला’ कहानी में नासिरा शर्मा ने निगार के माध्यम से भारत के निम्न वर्ग की गरीबी का वर्णन किया है।

निगार एक बार गाँव में पहुँचती है. वहाँ देखती है कि वहाँ के लोग वैसे गरीबी में जीवन-यापन करते हैं। उन लोगों के पास रहने के लिए घर. कपड़ा. रोटी नहीं है. लेकिन भारतीय जनता उसी में अपना जीवन-यापन कर रही है— वहाँ आग लगने से सब कुछ जल गया था। वहाँ पर एक अफसर आता है. और कहता है कि जब तम लोग काम करोगे तब खाना मिलेगा। निगार सोचती है कि—“काश. इ

सबके हाथ हथियार बन जाएँ. आत्म सम्मान की ज्वाला से सलग उठे. माथे पर लगी दरिद्रता की मोहर मिटा दें। मगर ऐसा कब होगा? कभी नहीं। भारत की दरिद्रता एक न समाप्त होने वाली सरंग है। जैसे-जैसे वे दसरे आस-पास के गाँवों में घमते गये. साथियों का दःख बढ़ता गया। लगता रहा. भारत और गरीबी का चोली-दामन का साथ है. जो कभी छटेगा नहीं।”²⁸

‘बिछड़े हए’ कहानी में सग्रीव शतानन्द बनकर 20 वर्ष बाद गाँव में आते हैं. तो उन्हें देखने के लिए भीड़ लग जाती है। उनकी चाची आती है. और कहती कि— “चंदा तो समझती रही कि त गंगा में डब मरा। महीने गंगाघाट पर पड़ी रही। धप-ताप. ठंड. बरसात नहीं देखी। अपनी देह नहीं मानी. हर संकट को झेलती रही। वैसे तो घर में था भी क्या? छोटा-मोटा नाक-कान का कील-काँटा. जो भी पास था. बेच डाला। खेत टेहन चढते-चढते बिक गया। मल्लाहों की मंजरी भरती रही। गंगा मडया की लहर-लहर छनवा ली नादान ने।”²⁹

‘इमाम साहब’ कहानी में जब इमाम शकीलददीन शहर की मस्जिद शही होने के बाद घर वापस आते हैं और बाजार घमने जाते हैं. उन्हें याद आती है कि वह वहां के लोगों के लिए तरह-तरह का सामान खरीदते थे। लेकिन अपने लोगों के खरीदने के लिए कछ भी नहीं है तो हैं— “सब्जी. फल. कपडे. खिलौने. रू मशीनों से दकाने भरी होती जिन्हें देखकर उन्हें याद आता कि रोज जाने कित रुपयों की खरीदारी कर वह सामान घरों में पहुँचाते थे। यहाँ अपने घर के लिए वह कोई सामान नहीं खरीद सकते हैं। ठन-ठन गोपाल बने खाली हाथ के साथ उन अपना घर लौटना बरा लगता।”³⁰

इसी कहानी में मोहल्ले वाले अपनी मस्जिद में एक इमाम को रख लेते हैं. उस

इमाम साहब को न समय पर तनख्वाह देते थे. न ही समय पर खाना भिजवाते थे। एक दिन अजान का वक्त हो रहा था। लेकिन खाना नहीं आता है. शकीलददी कहते हैं—

“अजान का वक्त तंग हो रहा था। आँते कल हो अल्लाह पढ़ रही थी मगर खाने का दर-दर तक पता नहीं था। शकीलददीन बेचैनी से टहल रहे थे। ‘लगता है आज फिर भखा रहना किस्मत में लिखा है.’ कहते हुए बाहर निकले।”³¹

इमाम शकीलददीन एक दिन हाजी साहब से अपनी तकलीफ बता दे जिसके दबाव में कछ बच्चे करान पढ़ने आने लगते हैं। शकील कहते हैं- “उसे समय तो कट जाता था मगर आमदनी फिर भी नहीं होती थी। अभी अगले माह देने का वायदा परा न होता कभी बीस-पच्चीस रुपये हाथ आता भी वह ऊपर के खर्च में उड़न छ हो जाता।”³²

‘चाँद-तारों की शतरंज’ कहानी में नासिरा शर्मा ने शरफ और कमरू माध्यम से भारत में निम्न वर्ग की आर्थिक स्थिति का मार्मिक चित्रण किया है।

कहानी में घर में पतंग बनाने का कारोबार चलता है। उसी समय कमरू और शरफ में वार्तालाप चलता है। कि गरीबी किस कदर परे भारत में है तो कमरू शरफ से कहता है— “अरे परे भरतवा में रॉंडे ईकाम कर रही हैं। बेचारी दखयारी. जो मजदरी दे दे ओही पर राजी। न आगे नाथ न पीछे पगहा। सच पछो गरीब की मिट्टी हर जगह खराब है।”³³

‘घरे का विरबा’ कहानी में मेडम के माध्यम से झोंपड़-पट्टी में रहने वाले लोगों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। भोपाल गैस त्रासदी के बाद भोपाल के लोगों के साथ हस्र हुआ है. मेडम जब किसनवा के पास से लौटती है. तो वह सोचती है कि—

“लौटते में मैं सोच रही थी. किसनवा की अम्मा एक सगी माँ है. पर बेटे के अपाहिज जीवन ने जिंदगी की कड़वाहट ने. जिंदगी की सच्चाइयों ने उसे चिड़चिड़ा-सा बना दिया है। पेट की भख तो सबको लगती है. इस पेट की आग ही तो है जो इन्सान को बड़े-बड़े गनाह करने पर मजबूर करती है। भख तो महल में रहने वालों को भी लगती है। और झोंपड़े में रहने वालों को भी।”³⁴

‘चिमगादड़ें’ कहानी में नासिरा जी ने निम्नवर्ग के मुस्लिम गरीब लोगों मकानों की स्थिति का वर्णन किया है। स्कूल की इमारत तो बोसीदा थी ही। वहाँ के लोगों का घर भी इससे भी बोसीदा था। इस कहानी में नासिरा जी कहती हैं कि— “यह कोई ऐसी बड़ी बात न थी. जो किसी को यह सब खलता। वहाँ तो सबके मकान इससे अधिक बोसीदा. अधिक खस्ता और तंग थे। बरसात में किसी न किसी का कच्चा घर गिरता था।”³⁵

इसी कहानी में मिस गोवा के माध्यम से निम्नवर्ग के मुस्लिम लोगों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया गया है। मिस हमैरा के कहने पर लड़कियाँ होम वर्क नहीं लाती हैं तो वह बहुत परेशान होती हैं. तब वह प्रिंसिपल मिस गोवा से कहती हैं. तब मिस गोवा. मिस हमैरा को समझाती हई कहती हैं कि— “जिनको दो समय का खाना नहीं मिलता है. जिनके घरों में सारे दिन की मेहनत-मजदरी के बाद सूखी-सूखी रोटी पर जिंदगी गजरती हो. वहाँ पढ़ाई का क्या काम? पढ़ाई उन्हें क्या देगी? मैं एक बात साफ बता दूँ. इन घरानों से आई लड़कियाँ पाँचवे के बाद नहीं पढ़ेंगी। यही क्या कम है कि इस संस्था के जरिए उन घरों में तालीम की बनियाद डाल रहे हैं। जिनके घरों में पेट के अलावा कोई अन्य चीज वजद नहीं रखती है।”³⁶

‘नौ-तपा’ कहानी में लच्छ कलई करने जिस इलाके में जाता है वहाँ के लोग

बहत ही ज्यादा गरीब होते हैं। एक बर्तन को कई बार कलई करवाते हैं. उनके पास पैसे नहीं होते हैं. कि दसरा बर्तन खरीद लें। लच्छ सोचता है कि— “उसे सबके सब कबाड़ी के हाथ बेचने वाले लगे। इस्तेमाल की अधिकता से इतना घिस चके थे. कि लच्छ को उन पर कलई फेरते डर लगता है. मगर यह लोग क्या-क्या कबाड़ी को देंगे जिनकी परी गहस्थी ही कबाडखाना हो।”³⁷

इस कहानी में लच्छ कलईगर जब काम करके आता तो उस काम से उसका जीवन-यापन नहीं चलता है. वह रात को जब सोता है. तो वह स्वप्न देखता है- “सपने में जाने कहाँ-कहाँ भटकता कभी बड़ी नक्काशीदार चमचमाती सेन पीला-नारंगी. मीठा. जर्दा मेवों से भरा देखता तो कभी बड़े जग में लाल-लाल ठंड मीठा शरबत या फिर झिलमिल करती कटोरियों में फिरनी. जिसे देख जब वह हाथ आगे बढ़ाता तो सारे बर्तन गायब हो जाते।”³⁸

‘आया बसंत सखी’ कहानी में सल्लाना काम करके आती है तो सायरा कहती है. कि बखार कल तक ठीक हो जाएगा. तो मैं काम पर जाऊँगी। सल्लाना कहती है. कि वहाँ रुमाल की बनाई दिन में बीस. तीस पैसा इससे दो वक्त की रोटी भी नहीं मिलती है। सल्लाना सायरा को समझाती हई कहती है कि— “उन्हें गरीबों के घर का हाल क्या पता कि हम न सावन हरे न भादव! खदा से यही दआ है. कि या इर गरीबी से नजात दे या फिर मझे ऊपर बला ले।”³⁹

इसी कहानी में सल्लाना काम करके आती है तो सायरा खाने को मांगती है। उसके पास खाने के लिए कोई सामान नहीं रहता है। किचन में जाती है। वहाँ भी कछ नहीं रहता है. तो सल्लान बेटी से कहती है कि— “हाँ बन्नो! तमने आज तक कछ नहीं माँगा है. मझसे...रात के नौ बज रहे हैं। भख तो हर किसी को लगेगी. मगर मैं

क्या दँ खाने को? बस अपनी बोटियाँ ही काटकर खिला सकती हँ! खाली डिब्बों को झाडती-पटकती सल्लाना बडबडाई।”⁴⁰

‘विरासत’ कहानी में सबह-सबह गाँव के अस्पताल में कोई बढिया मर जाती है। वह पास के गाँव की थी। अस्पताल में भी कोई कब तक लाश रखता। नाम था जलेखा बीबी। डॉ० त्रिपाठी ने पल्लामियां के घर आदमी दौडाता है। कफन-दफन के लिए कछ चंदा जमा हो जाता है। लाश सआरत हो गयी। बल्लन की बीबी शबरातन कहती है कि— “यहाँ पर लावारिस का कब्रिस्तान बनाए के मालिक ने हमरे खच् पानी का न सोचा...अब न कब्र की खोदाई मिलती है. न मर्दों के घर से खाना आता है। वहीं बस मोहरम या ताजिया सजाए. उठाए. दफनाए में जो चढावा हिस्सा मिल जाए। ईद या एक जोडी नया कपडा...उससे रोज का भखा पेट कहां भरत है। जो खेत-क्यारी कभी मिला रहा ओहि से उपजे अनाज से एक समय पेट भर जात है।”⁴¹

इस कहानी में नासिरा जी ने शबरातन के माध्यम से निम्न वर्ग की आर्थिक स्थिति का वर्णन किया है. जीवन-मल्य को दर्शाया है।

‘राय प्रवीण’ कहानी में लेखिका ने सावित्री के माध्यम से निम्न वर्ग का चित्रण किया है। कहानी में गाँव में बाढ का प्रकोप बढ जाता है. चारों तरह त्राहि-त्राहि मची रहती है. सावित्री सोचती है कि—“सामने तीन-चार पक्की अटरियाँ हैं- गाँव के बीच दाँए-बाँए छिटकी हई। वह ललचाती हई नजरों से देखकर सोचती है- पैसे वाले लोगों का बेतवा भी कछ नहीं बिगाड सकती। इन्द्र भगवान भी उन्हें नहीं डरा सकतं सबका जोर-जल्म कमजोरों पर...कच्ची भीतों और मिटटी ओटली पर...।”⁴²

मध्य वर्ग

‘ओ-सोनकिसरी’ कहानी में सोनल के माध्यम से मध्यम वर्ग आर्थिक स्थिति को दर्शाया है। कहानी में सोनल के घर जब उसकी छोटी बहन के शादी के लिए आते हैं, तो वे लोग दहेज की माँग करते हैं। एक दिन जब सोनल बाहर जाती है तो माँ पछती है कि— “कहीं बाहर जा रही हो?” माँ ने पछा। यों वह प्रश्न नहीं पछती। बेटी के प्रति आश्वस्त हैं। पैंतीस पार कर रही है। आर्थिक रूप से स्वतंत्र है। छोटे भाई-बहन की शादी करा चकी है। दस तरह के लोगों से मिलना है। घर-भर का दायित्व सँभालती है। अभी तक पिंजरे से बाहर नहीं निकली। अब कहाँ उड़ जाएगी।”⁴³

उच्च वर्ग

सतधरवा कहानी में मेम साहब के माध्यम से नासिरा जी ने उच्च वर्ग के लोगों द्वारा निम्न वर्ग पर विचार को प्रस्तुत किया है। अब्दुल दादी जान से मिलने के लिए आता है, यह साहब और मेम साहब दोनों को बहुत बरा लगता है। एक दिन जब वह दादीजान से मिलने आता है, तो मेम साहब थाने को फोन कर देती हैं। उ पलिस पकड़कर ले जाती है। दरोगा और मेम साहब में बात होती है। तो मेम साहब कहती है कि—“आप भी उसकी बातों में आ गये हैं? साहब घर पर नहीं हैं, और मैं अकेली...आप समझते क्यों नहीं कि ये लोग कितने गंदे और घटिया होते हैं, इनकी नीयत कभी साफ नहीं होती है। यह जरूर चोरी या कत्ल के इरादे से आया था। अब बातें बना रहा है।”⁴⁴

निम्न वर्ग की दयनीय स्थिति तथा गरीबी के कारण कठिन जीवन को जीने वाले निम्नवर्ग पर महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में यथार्थ चित्रण प्रस्तुत

किया है। मध्यवर्ग के संघर्षशील जीवन तथा उच्च वर्ग के विलासपूर्ण जीवन और निम्नवर्ग पर उनके निम्न विचार पर भी प्रकाश डाला है।

4.2.2 शोषण

मध्यवर्ग एवं निम्नवर्ग के लोग उच्चवर्ग के लोगों द्वारा शोषित होते आ रहे हैं। उन्हें उच्चवर्ग के लोग अपने अर्थ बल से हमेशा दबाकर रखना चाहते हैं। आर्थिक रूप से उन्हें उन पर निर्भर रहने के लिए विवश करते हैं। मध्य वर्ग एवं निम्न वर्ग लोगों की स्थिति दयनीय है। रोटी, कपड़ा और मकान के लिए भी तरस रहे हैं। और उच्च वर्ग की दशा के लिए उनके पैरों तले अपना जीवन बिता रहे हैं।

‘शतरंज के खिलाड़ी’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने निम्न वर्ग पर आर्थिक शोषण का वर्णन किया है। गाँव में एक जमींदार रहता है, उसके पास काम करने वाला कामता रहता है। बधवा मजदूर की तरह एक आवाज पर मालिक के सामने हाजिर हो जाता है। एक दिन मालिक अन्दर कमरे में बैठे हुए आवाज लगाते हैं उस वक्त वह सानी कर रहा होता है। भागा हुआ आता है कि— “जल्दी-जल्दी हाथ चलाकर उसने काम खत्म किया और पास ही रखी बाल्टी को तनिक औंधी करके अपने हाथ धो डाले। फिर अपने पंचार धोती का आधा भाग। के कोने से गीली हँथेलियाँ पोंछता हुआ बैठक में हाजिर हो गया।”⁴⁵

‘ताला खला है पापा’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने महाजन द्वारा शोषण का चित्र प्रस्तुत है। कहानी में जगदीश चौबे बिन्दो के कमरे में जाते हैं, तो वहाँ पत्र मिलता है। उसे जगदीश चौबे पढ़ने लगते हैं। आगे बिन्दो लिखती है कि— “आजकल अम्मा जिज्जी के ब्याह के कर्जे से दःखी हैं। मरोडा का महाजन हमारी भैंस खोल ले गया है। पापा उदास हैं। अम्मा कह रही थीं, फसल आते खलिहान में से तला ले जाता

है. फिर भी कर्ज ज्यों का त्यों। अम्मा कराह-कराह कर गाली देती है। हमें बेईमान ठहराया गया. ऊपर से भैंस कर्म।”⁴⁶

‘आया बसंत सखी’ कहानी में गलाबो के माध्यम से आर्थिक शोषण का वर्णन किया गया है। कहानी में जो स्त्रियां काम करती हैं वह अनपढ़ हैं. जब किसी काम के लिए उनसे अंगठा लगवाया जाता है तो उनको क्या पता रहता है कि अंगठा चार पर लगा कि पांच पर। इसका फायदा लाला उठाते हैं। गलाबो कहती है कि— “अब मैं क्या जानूँ अंगठे का निशान मैंने चार पर लगाया था या पाँच पर! पढ़ना तो जानती नहीं। मगर मझे अच्छी तरह याद है कि उसने चार करते मझे दिए थे। अब कहता है. कि तेरी मजदरी से उस करते का हर्जाना भरूँगा। भला हमें मिलता ही क्या है. जो हम हर्जाना भी भरें और पेट की आग भी बझाएँ।”⁴⁷

इसी प्रकार कहानी में सल्लाना लाला के लडके द्वारा यौन शोषण की शिकार हो जाती है। कहानी में सभी स्त्रियां आपस में बातें करती हैं कि इस शकर ने किसी का काम चलने नहीं दिया है. जो पैसा दे रहे हैं वही बहत है तो सल्लाना कहती है. कि— “अरे! उस शबरातन की जवान लडकी का हाल किसी से छपा है! पेट से थी। लाला का लडका ज्यादा मजदरी देने का लालच दिखा डज्जत लटता रहा। बाद में जान से गई गरीब। करती क्या? शीशा पीसकर फाँक गई। हमारे लिए तबिचौलिया ही भले हैं. जो कई दूसरी परेशानियों से हमें बचाते हैं।”⁴⁸

इसी कहानी में शकर बिचौलिए से पैसा बढ़ाने को कहती है. तो वह सफाई देता है. कि पैसा नहीं बढ़ेगा. उसी पर सब काम करने वाली स्त्रियां आपस में बात करती है। गलबानो कहती है कि— “पाँच रुपये सैकड़ा जेब कटाई और चार रुपये सैकड़ा काम की बनवाई। अरे इससे तो वहीं अच्छे फकीर हैं. जो सिर्फ हाथ फैलाकर

सारे दिन में पाँच-दस रुपया कमा लेते हैं। यहाँ तो दस्तकारी के नाम पर हाथ. कमर. आँख फोड़ो और तोड़ो. तो भी इस पेट के दोजख के कंबख्त आग सलगती रहती है।”⁴⁹

आगे कहानी में नासिरा जी ने लाला के द्वारा काम करने वाली स्त्रियों व आर्थिक शोषण करते हुए चित्रित किया है। कहानी में जो औरतें लाला के रुमाल बनाने का काम करती हैं। वह शकर बिचौलिए से पैसा बढ़ाने की मांग करती हैं। शकर बिचौलिया कहता है कि— “अरे भाई. हम कहते क्यों नहीं हैं मजद बढ़ाने के लिए. मगर भैया उनका तो बस एक ही जवाब है. कि सबको अलग-अलग हर काम का बीस या तीस पैसा देते-देते कई रुपयों की मजदरी उन पर बन जाती है। उनका हिसाब सनकर चप रह जाता हूँ. कि यही मजदरी उनको महंगी लगती है भाई।”⁵⁰

‘गँगी गवाही’ कहानी में दरोगा का निम्न वर्ग पर शोषण पर चित्रित किया है। कहानी में हबीब हज्जाम का लडका घर से गायब हो जाता है. तब गंगी लडकी के वजह से पता चलता है. और ये भी पता चलता है कि मोहल्ले के तीन लडके उसको बहला-फसला कर ले गये हैं। उसको मार डाले हैं। दरोगा को पता चलता है तो वह तीनों लडकों से अपना काम करवाता है।

“हर रोज तीनों से बारी-बारी मालिश करवाता है। परसों काशी तेली के घर से सारदा र असली कड़वा तेल आता देखा था। कई दिनों से करैशी हर रोज कभी गर्दा-कपरा कभी कीमा-कलेजी भेज रहा था। मडभजन का लडका भी हवलदार के घर पलँगो की अदवाइन कसने. घड़ा भरने और झाड़ लगाने पहुँचा रहता है।”⁵¹

‘इमाम साहब’ कहानी में नासिरा शर्मा ने औरतों से इमाम साहब का शोषण

का वर्णन किया है। कहानी में इमाम शकीलददीन वहां रहने लगते हैं वहां के लोग उनसे तरह-तरह के घर के काम करने के लिए कहते हैं और वे हंसी खशी सभी काम कर दिया करते हैं। किसी के बलावे पर दौड़े चले आते और झटपट काम कर दिया करते हैं। वहां की औरतें कहती हैं— “जाओ. शकील माम से कहना गैस खत्म हो गयी है। इस नम्बर पर फोन कर दें। लाख रिश्तेदार आडी-तिरछी आँखें मटकार शकील माम पहुँचाने वाले डाकिया बन गये थे। उनकी इस मददगार तबियत ने बिना किसी बनियादी कारण के घर में मर्दों के दिलों में खटास डाल दी थी।”⁵²

इसी कहानी में इमाम शकीलददीन इमामत करने शहर में चले जाते हैं। वहां के लोग उनको समय से खाना नहीं देते हैं और उन्हें घर का काम भी करना पड़ता है— “मगर रोज-रोज के रोटी के रिश्ते ने उनका अजीब हाल बना दिया कभी उन्हें कोई बच्चा पकड़ा देता कि इमाम साहब इस शैतान को पकड़िए तो रोटी डालें। जब तक रोटी उलटी. उतरती. इमाम के कपड़े तर हो जाते। कभी कोई हरी धनियाँ की गडडी लेने भेज देती ताकि चटनी पिस सके।”⁵³

कछ दिनों के बाद उनके लडकों ने जिद करके साथ चलने को कहते हैं लडके समझते हैं कि उनको अच्छा खाना-खाने को मिलता होगा। लेकिन वहां माजरा दसरा ही था। उनसे वहां के लोगों ने बेगार करना शुरू कर दिया था। कोई कहता था— “ए लडके जरा सनना...ए मियां सारे दिन बैठे रहते हो. आकर खाना ले जाओ दोनों घर-घर खाना लेने जाने लगे। एक दिन अन्दर से आयी आवाज ने बड़े व आँखें में पानी भर दिया। एक था ही रोज का झंझट...ऊपर से दो मस्टंडे और लेकर आ गया है। मआ इमाम।”⁵⁴

‘उज्रदारी’ कहानी में मैत्रेयी ने सोम के ताऊ द्वारा सोम का कैसे शोषण

किया जाता है। इसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। कहानी में सोम के पिता का देहान्त हो जाने के बाद सोम से उसका बड़ा ताऊ बहुत ज्यादा काम करवाते हैं। उसे खेती का काम भी कराते हैं। देर रात तक खेतों में पानी चलाता है अकेले इसी पर उसकी माँ कहती हैं कि— “ग्यारह साल का बच्चा खेत में पानी काट रहा है। पच्चीस साल का नितआ तक नहीं रुकता था। इतनी रात गए तक। ये कसाई इतना तक नहीं सोचते कि कोई सियार-जिनावर...बच्चे का बता कितना? चीख-चिल्ला भी नहीं पाएगा। पर रोज-रोज यही हालत...।”⁵⁵

‘रास’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने दिखाया है कि छोटी जाति के लोगों से गलती हो जाती है, तो बड़े जाति वाले उन पर कैसे व्यवहार करते हैं। मनसखा महाराज गाँव में आ जाते हैं उनकी सेवा-सतकार में लोग जाते हैं, नाई को उनका सेवा करने के लिए कहा जाता है। वह उसका बदन तेजी से दबा देता है। जिससे उनके बदन से खून निकल आता है। दयाराम नाई से कहता है कि— “साले उल्ल के पट्टे नाऊ, त नाऊ है कि घसखोदा? कोमल-नाजक औरतों को ऐसे गहते-थामते हैं? हजामती हाथ अपना रहा था। लौंडे पर, कि पहलवानी मालिश दिखा रहा था? कौन-सी मौज में आकर चिरंजी की छाती खरच डाली? चोली-कचकी क्या तेरे माँ को...तेरी बहन को...।”⁵⁶

‘तक्षशिला’ कहानी में नासिरा जी ने निगार के माध्यम से निम्न जाति के नारी शोषण का वर्णन किया गया है। निगार अमेरिका से वापस आती है, परवेज और निगार में वार्तालाप होता है। परवेज निगार को तक्षशिला की तस्वीर दिखाते हैं कहता है। निगार तस्वीर देखकर सोचती है कि— “जैसे इस इमारत के खंडहर के पास छत नहीं है... उन पर छत कौन डालेगा...क्या कोई मर्द? वही शोषित बेचारी

और होगी...। और को यह काम स्वयं करना होगा। मर्द तो अपना अति अधिकार इतनी जल्दी वापस नहीं करेगा। निगार इन दरिन्दों. इन हथ्थी भेड़ियों से यँ उडकर कहां तक भागोगी।”⁵⁷

‘जंगल-गाथा’ कहानी में नमिता सिंह ने सरसती के माध्यम से नारी शोषण को उजागर किया है।

‘जंगल-गाथा’ कहानी में जमींदार साहब रहते हैं। उनके यहां एक ठेकेद रहता है। वह उनका सारा काम करता रहता है। सरस्ती के साथ गलत काम करना चाहता है. तो वह सोचती है कि— “वह कहता है कि शहरी. बाब लोग से बचकर रहना। जंगली जानवर को साथ लो तो वह कछ न बोलेंगे। लेकिन ये बाब लोग... ये तो जंगल के बिगड़े बाघ से भी ज्यादा भखा और खतरनाक होता है। हजम कर जायेगा और डकार भी नहीं लेगा...”⁵⁸

‘बन्तो’ कहानी में बन्तो के माध्यम से निम्न वर्ग की गरीबी और कर्ज की बात कही गयी है। बन्तो के पिता ने नम्बरदार से पैसे कर्ज लिये रहता है। कर्ज चकाने पर वह भैंस खोल ले जाता है। बन्तो सोचती है कि— “माँ चीख-चीख कर बाबा को गालियाँ देती जा रही थी. और ऊँचे स्वर में रोती जा रही थी। आस-पड़ोस जट आया था। सब तमाशा देख रहे थे. कोई छिपाने वाली बात न थी। जो कछ था सब खल्लम-खल्ला। कर्जे के पैसे नहीं चकाये तो नम्बरदार भैंस खोल ले गया। बहुत सीधी बात। कहन-सनन की कोई गंजाइश नहीं।”⁵⁹

विवेचित कहानियों में निम्न वर्ग पर उच्च वर्ग के शोषण का यथार्थ चित्रण उपस्थित है। निम्न वर्ग की स्त्रियों पर यौन शोषण का भी चित्रण है। महिला कहानीकारों ने उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग पर एवं मध्य वर्ग पर शोषण का चित्रण बताते हुए निम्न

वर्ग के आर्थिक जीवन मूल्य की स्थिति का अंकन किया है।

4.2.3 बेरोजगारी

भारत में बेरोजगारी की समस्या एक रोग की तरह फैली हुई है। इस समस्या का समाधान आज तक नहीं हुआ है। उचित शिक्षा एवं क्षमता के अनकल लोगों को रोजगार नहीं मिल रहा है। इसलिए लोग मजदूर बनकर अपना जीवन बिताने के लिए विवश हैं। यह बेरोजगार घर में हैं।

‘तक्षशिला’ कहानी में नासिरा शर्मा जी ने संपादक महोदय के द्वारा बेरोजगारी का वर्णन प्रस्तुत किया है ‘तक्षशिला’ कहानी में निगार और संपादक महोदय का वार्तालाप चलता है। निगार भावुक हो जाती है। संपादक महोदय निगार को समझाते हुए कहते हैं कि— “किसी स्कूल की टीचर को आप माफ करेंगी क्या इस व्यवहार पर? आज बेरोजगारी है। रोज पचास लड़कियों में नई आत्मा, नई जागृति, नई उमंग जो दिया करती थी। वह भी हाथ से छूट गई। मैं नहीं कहता कि आज की लड़कियाँ कल ही हमें कामयाबी देगी, नहीं। लड़कियों का समय बहुत लंबा है, केवल हमारी नस्ल को नहीं, बल्कि आने वाली नस्ल को भी जड़ना पड़ेगा महासंग्राम में। समझें आप?”⁶⁰

‘साँप-सीढ़ी’ कहानी में मैत्रेयी पण्णा ने आज-कल के नौजवान शिक्षित होने पर भी बेरोजगार घम रहे हैं। राजन नागपुर से पढ़कर आता है। वह अपने पिता कहता है कि वह खेत बेच दे वह नौकरी के लिए हमेशा परेशान रहता है क्योंकि बेरोजगारी इतनी है, कि नौकरी नहीं मिल रही है। “नौकरी के लिए आवेदन-पत्र भरता था, वे खारिज होते थे। तो खेती में लग जाता था। एक समय ऐसा आया कि बस आवेदन-पत्र ही भरता रहा। उनके पीछे शहर-शहर घूमता रहा और खारिज होता

रहा। अपना खारिज होना किसे अच्छा लगता है? वह झँझलाने लगा. खद घरवालों पर जो भी उसका अपना था. उस पर।”⁶¹ कहानी में आशीष के माध्यम से बेरोजगार नव यवकों का यथार्थ चित्रण किया गया है।

‘जिंदा आदमी’ कहानी में आशीष की बेरोजगारी का वर्णन किया गया है। वह एक दिन जब ‘डटरव्य देने जाता है। दो लोग बातें करते हैं। आशीष कहता है कि “यहां आसपास चने-फटाने भी नहीं मिलते...एक मरा-मरा-सा चाय का ठेला उधर गेट पर खड़ा है...एक नाक पोंछता लडका चाय बना रहा है। चाय में पीता नहीं... इसलिए नहीं पीता कि आदत हो गयी तो बेकारी में रोज का खर्चा बर्दाश्त कौ करेगा?”⁶²

महिला लेखिकाओं की कहानियों में बेरोजगारी के कारण लोगों की स्थिति का वर्णन सराहनीय है। बेरोजगारी को मिटाने का सरकार द्वारा प्रयास तो है मगर इस प्रयास में सरकार की कमी के कारण सफलता प्राप्त नहीं है।

आर्थिक मूल्यों के अंतर्गत निम्न मध्य एवं उच्च वर्ग. शोषण. बेरोजगारी से संबंधित जीवन मूल्यों पर प्रकाश डालते हुए भारतीय समाज के लोगों के आर्थिक जीवन मूल्यों का यथार्थ चित्रण महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है।

4.3 राजनीतिक जीवन मूल्य

भारत में राजनीतिक सम्बन्धित जीवन मूल्य में परिवर्तन बहुत है। राजनीति में प्रवेश करने वालों की योग्यता आजकल बदल गयी है। राष्ट्र के प्रति प्रेम के बिना. सभ्यता. शिक्षा अनशासन के बिना. व्यक्ति गण्डागर्दी. अन्याय और मर्खता से पेश आने वाला व्यक्ति राजनीति में प्रवेश करके सफलता पूर्वक जीवन बिताता है। महिला

कहानीकारों ने अपनी कहानियों में राजनीति के क्षेत्र में टटते जीवन-मल्यों पर प्रकाश डाला है।

‘सबीना के चालीस चोर’ कहानी में सरजीत सिंह के माध्यम से सभी प्रदेशों की राजनीतिक स्थिति का वर्णन किया गया है। कहानी में एक जगह सब लं डकटठा होते हैं। किसी का जन्मदिन मनाया जाता है। उसमें राजनैतिक वार्ताला होते हैं। घोष बाब कहते हैं कि सब य.पी. पॉलिटिक्स है. हमारा बंगाल इससे दर है। तो सरजीत सिंह जबाव देते हैं कि— “सँभल के भड परुष यह घमंड साउथ वालों को भी था. मगर देखिए क्या हाल हो गया वहाँ। मेघालय. पंजाब. कश्मीर. गजरा काठियावाड कहाँ आग नहीं लगी और किसका घर नहीं जला? सभी घायल औ जख्मी हैं। मगर अपनी-अपनी जमीन पर अपने-अपने घर और मोहल्ले में दःख तो यही है कि...”⁶³

इसी कहानी में आपस में सभी लोग बैठ कर बातें करते हैं. शाहरुख अपनी बात करते हैं. तो शाहरुख के जबाव में मिश्रा जी कहते हैं कि— “यह सब जिहालत का नतीजा है। अपनी-अपनी जबान के कैदी सब बन गए हैं। अरे अक्ल के दश्मनो आपस में लडकर देश का सत्यानाश कर रहे हो। एक-दसरे की जबान : एक-दसरे को पहचानो। मिल-जल कर गरीबी को बाँटो। मगर साहब. हममे राष्ट्रीय भावना है कहाँ? सब अपना घर भरने को लगे हैं।”⁶⁴

‘शतरंज के खिलाडी’ कहानी में प्रधानी का चनाव होता है। पीतम सिंह और नथ्य आपस में बातें करते हैं। पीतम सिंह बात करते-करते झंझलाते हैं और कहने लगते हैं कि— “तम भी नथ्य...राजनीति में आदमी को अपने सिवा अपनी छाया पर भी भरोसा नहीं करना चाहिए। अँधेरे में ससरी वह भी साथ छोड जाती है। धनपाल

तो जिसमें जदा शख्स ठहरा।”⁶⁵

‘साँप-सीढ़ी’ कहानी में आज की यवा पीढ़ी जो बेरोजगार है. वह जल्दी : जल्दी राजनीति से सोहरत कमाना चाहते हैं। गलत तरीका से ही सही. इस प्रकाश डाला गया है।

‘साँप-सीढ़ी’ कहानी में राजन जब स्टेशन मास्टर का टेस्ट देकर आता है। तब र अपने माता-पिता को परेशान किये हए रहता है। वह दसरो की बातें करता रहता है. कि वह पहले क्या था. अब क्या हो गया है। वह अपने ताऊ से कहता है कि- “हमारे साथ पढा है. सो दोस्त मानता है। उसने हमें खद बलाया. बलाकर बताया था। बी.जे.पी. का चक्का जाम चल रहा है। बस वहीं गोलियाँ दागने का काम है। अपनी दोपिस्तौलें भेजी तो थीं। कहा था कि संग में कछ लट-पाट और हो जाए तो सोने पर सहागा। चककदार प्रभाव जमजाता।...पर तम! तम दो देहरी पर लोट गए थे। विलाप करने लगे. जैसे हम तम्हारे ही सगों को मारने जा रहे है।”⁶⁶

4.3.1 नेता

आधुनिक समाज में नेता का चरित्र एक सभ्य मनष्य का न होकर एक जाहिल मनष्य का चरित्र हो गया है। नेता अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए नीच से नीच कार्य करने के लिए तैयार हैं। जनता को इसका ज्ञान होते हए भी नेता चाहे किसी प्रकार का हो. उसके पक्ष में रहते हैं। इसलिए नेता बिना किसी डर के अपना जीवन बिता रहा है।

‘शतरंज के खिलाडी’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने पीतम सिंह राजनीति विश्वास की बात को मना करता है।

‘प्रेम भाई एंड पार्टी’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने नेता का समाज पर प्रभाव और

टटते धार्मिक मत्स्य मंदिरों में लोग उतना श्रद्धा से नहीं जाते जितने कि मंत्रियों को देखने के लिए जाते हैं। इस पर विचार प्रकट किया है।

‘प्रेम भाई एंड पार्टी’ कहानी में नरेन्द्र की लड़की की जिस दिन शादी रहती है। उसी दिन मंत्री शिवदान सिंह आने वाले रहते हैं। उन्हें देखने के लिए गाँव के लोग भीड़ लगा देते हैं। “संभवतः आस-पास के गाँवों में खबर लग गई और ऐसी भीड़ उमड़ी जैसे जन्माष्टमी-शिवरात्री को भी इस गाँव के मंदिर में नहीं जड़ती।”⁶⁷

‘गोमा हँसती है’ कहानी में मैत्रेयी पण्णा ने नाऊ के माध्यम से राजनीति में प्रधान को बचाव पक्ष की तरफ ध्यान देने का वर्णन किया गया है।

‘गोमा हँसती है’ कहानी में किडडा का बच्चा पैदा होता है। तो जो कपडा ले दामाद घर वाले जाते हैं। वहाँ पर बलीसिंह चला जाता है। उसकी पिटाई किडडा के ससराल वाले कर देते हैं। रास्ते में नाऊ मिलता है। वह किडडा को बताता है कि— “जि समझ लो कि जो प्रधान बीच-बचाव न करें तो लहास हो जाती। वे दोऊ भड़या तो ऐसे फैले कि पछो मत कछ। लठिया. जता जो कछ हाथ पडा-धमाधम। लात-घँसा तडातड. लगै चाँद में. लगै पीठ में. पाँयन में। एक ही बात बोले-बता. त हमारा जीजा है? बहनोई है? ला. हम खबाबें तझे मेहमानी। लो हम दें तझे विदा। ले. जता खा। ले डंडा खा। ले. घँसा खा। ससर जी. अब आना अगली बेर।”⁶⁸

‘गंगी गवाही’ कहानी में नासिरा शर्मा ने हबीब हज्जाम के माध्यम से राजनेता की बात का वर्णन किया गया है। कि समाज में कितने मतलब परस्त नेता हैं।

‘गंगी गवाही’ कहानी में हबीब हज्जाम का लड़का जब गायब हो जाता है। तब उसी गाँव की एक गंगी लड़की उसको ले जाते हुए देखती है। लेकिन वह गंगी है। इसीलिए उसकी कोई बात समझ में नहीं आती है। सभी लोग यह हार कर बैठते हैं।

तो हबीब हज्जाम कहता है कि— “पीपल तले वाले काजी कल रात गजर गये न.. .बडी मशिकल से निपटे हैं...परा बदन घाव से बजबजात रहा...कहत रहे कि लेटे-लेटे बडे सोरस होए गवा रहा..मिट्टी में बहत लोग आए रहे. तोहरे एम.एल.ए भी रहे। पछत रहे कि बेटवा का कछ पता चला. फिर खद कहिन. का बतावे. अगर सत्ता में होते तो परा कस्बा खँगलवाए डालते....।”⁶⁹

कहानी में शैक्षणिक मामले में अध्यापक अपने स्कूल के लिए राजनेता से कैसे मदद माँगते हैं. इसका वर्णन किया गया है। कहानी में गाडड गोविन्द हिंदी मास्साब को कहानी सनाता है। उनकी बेटी सावित्री को वेश्या का रोल करना था। गणित मास्साब को प्रिंसिपल ने ऑफिस में आदर के साथ कर्सी पर बैठाते हैं। गोविन्द कहता है कि— “मामला स्कूल की प्रतिष्ठा का था. और मध्यप्रदेश सरकार के शिक्षामंत्री से भारी रकम की मंजूरी लेनी थी। नाटक के बहाने धनराशि उनसे ऐंठी जा सकती थी।”⁷⁰

‘प्रेम भाई एंड पार्टी’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने नरेन्द्र की पत्नी के माध्यम से राजनेता के मल्ल प्रकाश डाला है। कहानी में नरेन्द्र की बेटी की शादी रहती हैं मंत्री शिवदान सिंह आने के लिए रहते हैं इसके कई चक्कर लगाने पड़ते हैं. तब पत्नी नरेन्द्र से कहती है कि— “क्या होगा? कुछ नहीं। नहीं आते तो न सही। उनके बिना क्या हमारी मन्नी का ब्याह नहीं होगा? यह तम्हें नई झूठ क्या सवार हई? उनका आना ऐसा जरूरी कैसे बन गया कि एडी-चोटी का पसीना...।”⁷¹

‘सबीना के चालीस चोर’ कहानी में नासिरा जी ने नेता के मल्ल में निराशा का वर्णन किया है हिन्दुस्तान के खशहाल और पढ़े-लिखे वर्ग की जिंदगी की गाढ़

चलते-चलते एकाएक रुक जाती है। नासिरा जी कहती हैं कि—“इसी तबके शाहरुख का भी ताल्लक है. जो एक खला नजरिया जिंदगी जीने का रखता है। वह पिसने वालों में और पीसने वालों के साथ नहीं बल्कि वह उनके साथ है जो अपनी सारी समझदारी और दरदर्शिता के बावजूद व्यवहारिक तौर पर थोड़े समय के लिए लियासत के दाँव-पेच के आगे बाजी जरूर हार जाते हैं मगर उसके आगे सिजदे में नहीं गिरते हैं।”⁷²

‘नील गाय की आँखें’ में लेखिका नेता सदानंद जी का वर्णन किया गया है। सदानंद जी हिंदी साहित्य परिषदे चेयरमैन रहते हैं। उनके बारे में याचना कहती है कि—“नो-नो! इम्पॉसिबल! सदानंद शर्मा ‘शलभ’. खर्गट अफसर! भतपर्व सरका की सांस्कृतिक योजनाओं का सलाहकार! उस बीते जमाने के मुख्यमन्त्री की नाक के बाल। ऐसे शलभ जी और याचना? कतई ममकिन नहीं।”⁷³

विवेचित कहानी में नेताओं की स्थिति एवं समाज के लोगों द्वारा नेताओं के प्रा विचार का सच्चा चित्रण उपस्थित है। नेताओं के टटते जीवन मल्य पर प्रकाश डालते हुए उनमें परिवर्तन की आशा जताई है।

4.3.2 चनाव

भारत के हर नागरिक को अपने अधिकारों के आधार पर देश के लिए एक अच्छा नेता चुनने का अधिकार. चनाव देता है। मगर जनता चनाव के महत्त्व के समझे बिना गलत व्यक्ति को क्षेत्रियता. अर्थ. जाति और बल के आधार पर चुनती है। चनाव में खड़े होने वाले नेता इस बात को समझ कर किसी न किसी तरह लोगों को झूठे विश्वास दिलाकर चनाव में जीतने का प्रयास करते हैं

‘रमकलिया’ कहानी में कृष्णा अग्निहोत्री ने उच्च जाति के लोगों पर निम्न

जाति की लोगों का जीत के जश्न का वर्णन किया है। यहां मल्ल टटते हुए दिखायी देते हैं।

‘रमकलिया’ कहानी में रमकलिया बाइयों की यूनियन की अध्यक्ष बन जाती है। तो उसे एम.एल. एम. का चुनाव लड़ने के लिए कहा जाता है। और वह जीत जाती है। “वोटिंग हर्ड। रमकलिया ने अपनी प्रतिद्वंद्वी को हजार वोट से परास्त कर दिया सारी रात दारू माँ-बहन की गालियाँ रमकलिया के महल्ले में बहने लगी...ढोलको पर शोहदे नाच उठे. सैंया भये कोतवाल अब डर काहे का.. डर काहे का।”⁷⁴

‘शतरंज के खिलाडी’ कहानी में मैत्रेयी पण्णा ने मालिक के माध्यम से चुनाव व्यवस्था का चित्रण किया है।

‘शतरंज के खिलाडी’ कहानी में गाँव में चुनाव होने वाला है। इसकी चर्चा हर जगह होती है। मालिक और नथ्थ सिंह भी चुनाव की बातें करते हैं। माँ आरक्षण की बात होती है। मालिक नथ्थ सिंह से कहते हैं कि— “कोई किसी दंड बहकावे में नहीं आता। उम्र में हमसे छोटा है. तो इसका यह मतलब नहीं कि वह दधपीता बच्चा है। और फिर तम क्या देख नहीं रहे। आजकल दध पीता बच्चा भी बोट चुनाव की बातें सनकर दध छोड़ देता है।”⁷⁵

‘शतरंज के खिलाडी’ कहानी में मैत्रेयी पण्णा ने चुनाव में आरक्षण के प्रभाव पर प्रकाश डाला है। गाँव में चुनाव होने वाला होता है। इसी को लेकर विशेष चर्चा होती है। सभी लोग खश हैं कि इस बार चुनाव में आरक्षण की बात चल रही है। सभी गाँव के छोटे लोगों में उत्साह है। “आरक्षण को लेकर विशेष खलबली है। सब चौकन्ने और सतर्क हैं। हलवाहे-चरवाहे तक प्रधान बनने की चिंता करने ल चुनाव की आँधी ने हर आदमी की नजर धँधली कर रखी है।”⁷⁶

‘जिंदा आदमी’ कहानी में कृष्णा अग्निहोत्री ने चुनाव के दौरान डयटी दे वाले अधिकारियों की समस्याओं को उठाया है। आशीष इंस्पेक्टर के पद पर होता है। किसी गाँव में उसकी डयटी लगती है। वहाँ इंतजाम सही नहीं रहता है। “८ बताया गया है कि चुनाव के लिए बहुत खर्च हो रहा है। चुनाव में काम करने वालों को बहुत सविधाएं दी जा रही हैं। परन्तु आशीष हैरत में पड़ा रह गया। जब सरपंच ने उसके भोजन तक की व्यवस्था ढंग की नहीं की। दो घंटे बाद कुछ आटा व आलू उसे भेज दिया गया। खिचड़ी के अतिरिक्त और कुछ बनाने की तो आशीष : आदत नहीं थी...आखिर एक चपरासी ने जैसे-तैसे रोटियां बना दीं।”⁷⁷

‘शतरंज के खिलाड़ी’ कहानी में नथु के माध्यम से चुनाव में धोखाधड़ी का चित्रण किया है। कहानी में नथु सिंह और मलिक के बीच चुनाव को लेकर चर्चा होती है। नथु सिंह मलिक से कहता है कि— “साला धाकड़ और बदमाश तो है। पर कमीना नहीं। बरे समय पर धोखा दिया है। पिछले चुनाव में कैसे सारा का अपने हाथ में ले लिया था और ‘जीत’ तम्हें पकड़ा दी।”⁷⁸

इसी प्रकार ‘साँप-सीढ़ी’ कहानी में राजन के द्वारा चुनाव जो धोखाधड़ी व यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है। कहानी में वह जब से टैस्ट देकर आया तरह-तरह की बातों में अपने माँ-बाप को फसाने का प्रयत्न करता रहता है। वह कभी नेता, कभी अफसरों की बातें करता है। वह एक दिन कहता है कि— “परसरा उन्हीं डकैतों से शहरी मकान खाली कराता है। किरायेदारों के पास दो-एक दिन भेज दो, उनकी लड़कियाँ छिड़वाओं, लड़कों की पकड़ की धमकी न मानें तो ठकार-पिटार्ड। कब तक नहीं आएगा। आदमी काब में? दस लाख के मकान वाला दो लाख तो दे ही जाता है। ऐसे ही चुनाव का काम। बी.डी.ओ. साहब परसराम को बहुत मानते

हैं। इलैक्शन अफसर सब जानते हैं। चार घण्टे के लिए रात में पेटियाँ अन्दर लगवा दो और विरोधी के बैलेट पेपरों पर दूसरी मोहर ठोंक कर उन्हें अनवैलिड करार करा दो. अपना आदमी तो फिर जीतना ही है. लाखों के बारे-न्यारे।”⁷⁹

‘शतरंज के खिलाडी’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने ठकराइन के माध्यम से चुनाव के कारण भाई-बहन के संबंध में जो जीवन-मल्य टटते जा रहे हैं इसका वर्णन किया है।

‘शतरंज के खिलाडी’ कहानी में गाँव में चुनाव होने वाला है। पीतम सिंह की बहन बीमार रहती है। तब भी पीतम सिंह देखने नहीं जाता है। तब उसकी पत्न झंझलाकर कहती है कि— “हद है! जिंदगी से बड़ा है चुनाव? बहन से ज्यादा कीमत है प्रधानी? भाँजों पर ठीकरे धरे है। लिहाज. प्यार. अपनापन. दया. माया-ममता कछ भी नहीं...सब चुनाव में भसम कर दिया।”⁸⁰

‘शतरंज के खिलाडी’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने चुनाव के प्रचार पर प्रकाश डालते हुए एक आदमी के माध्यम से कामता को बंधवा मजदूर बताता है। कहानी में गाँव में चुनाव का चहल-पहल रहता है। एक आदमी दूसरे आदमी को अपने बोट के लिए मेहनत करता है। एक आदमी आता है। और कामता से कहता है कि अपना बोट हमें दे दो लेकिन कामता नहीं मानता है. तो आदमी कहता “मालिक-मालकिन को जमीन-जायदाद मानते रहे हो. तभी तो आज तक तम्हारी यह हालत है। हम-तम जैसे लोगों को ये लोग जमीन-जायदाद का मालिक कभी ना बनने देंगे और तम हो कि अपना वोट भी अपना नहीं मानना चाहते।”⁸¹

महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में भारतीय चुनाव व्यवस्था और इस चुनाव व्यवस्था से संबंधित जीवन मल्यों पर प्रकाश डाला गया है। चुनाव के महत्व व

बताते हुए चुनाव के निर्णय पर बदलते जीवन मूल्यों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत है।

4.3.3 सरकार एवं भ्रष्ट प्रशासन व्यवस्था

भारतीय जनता ने स्वतंत्रता की लड़ाई इसलिए लड़ा था कि भारत एक स्वतंत्र देश बना। भारत की सरकार किसी प्रकार के भेद-भाव के बिना निष्पक्ष सरक चलायेगी। मगर ऐसा नहीं हुआ। सरकार की व्यवस्था में भ्रष्टाचार, पक्षपात, अन्याय आदि पनपने लगे हैं। आज भी सरकारी व्यवस्था भ्रष्ट व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत है। सरकारी अफसर, पुलिस विभाग, कानून आदि में भ्रष्टाचार एक बहुत बड़े पैमाने पर पनप रहे हैं। इसके कारण भारत में न्याय, अधिकार, सुरक्षा, विश्वास आदि का कोई महत्त्व नहीं है। नैतिक और मानव मूल्य टूट रहे हैं।

‘शहर के नाम’ कहानी में मदला गर्ग ने नायिका के माध्यम से देश आपातकाल का जिक्र किया है।

‘शहर के नाम’ कहानी में देश में प्रधान मंत्री इंदिरा गाँधी की सरकार के दौर आपातकाल की घोषणा की जाती है। तो नायिका अमेरिका से आती है और अपनी माँ से कहती है कि— “जानती नहीं आप। 1975 में सरकार ने उन्हें बन्दी बनाने के लिए महल का घेरा डाला था। समर्पण करने से इनकार जो कर दिया था। हमारा यवराज ने। शहर का कोई अफसर उनकी गिरफ्तारी लेने को तैयार नहीं। राजधानी से आयी थी। पुलिस और घेर लिया था महल को।”⁸²

इसी कहानी में नायिका आगे कहती है कि “1975 में? हाँ, कुछ तारीखें ऐसी होती हैं, कि बिना कहे सब कुछ समझा देती हैं। शहरों की तरह तारीखों की आत्मा होती है। वही साल तो था जब बप्पा ने मुझे देश निकाला दिलवाया था। इस शहर का भूतपर्व यवराज और राजधानी की सरकार, एक ही देश के नागरिकों के

प्रतिनिधि थे. पर कौन नागरिक है. कौन नहीं. तय करने का अधिकार मेरे बप्पा जैसे लोगों के हाथ में था उन दिनों। तभी न मझे निकाल बाहर किया गया आपातकाल था. वह मेरे लिए और भतपर्व यवराज के लिए जो तब सांसद था. विपक्ष का।”⁸³

‘नील गाय की आँखें’ कहानी में नमिता सिंह ने इमरजेंसी का वर्णन किया है। कहानी में जब चुनाव होने वाला है. तब देश में इमरजेंसी की बात होती है. “यह उन्हीं दिनों की बात है. जब देश की राजनीति के ऊपर घटाघोट काले बादल छाने लगे थे। इमरजेंसी का तफान लोगों के दिलों-दिमाग को जकड़ने लगा। होंठ नीले पड़ने लगे. और हाथ की कलम सर्द होकर अकड़ने लगी थी।”⁸⁴

‘राय प्रवीण’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने शासन व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है।

‘राय प्रवीण’ कहानी में गाँव में बाढ़ के कारण सभी लोग परेशान हैं। गाँव के बाहर कैम्प लगा हुआ है. वहाँ लोग कतार में अनाज लेने के लिए खड़े रहते हैं। मरियल सिपाही के हाथ में डंडा लेकर भीड़ को देखता है। गोविन्द कहता है कि— “इतनी बड़ी भीड़ मरियल से आदमी के काब में है। वह न भी होता. तो भी अंतर नहीं पड़ता। सब कुछ इसी तरह चलता। निर्बल लोग बिना हिले-डले कतारों में खड़े रहते। वे बाढ़ में घिर जाने के अपराधी हैं. इसलिए आशा मानकर भी डंडा झेल रहे हैं। शायद इनकी सहनशक्ति में अन्य की आशा शामिल है।”⁸⁵

‘सेनानी’ कहानी में कृष्णा अग्निहोत्री ने देवेन्द्र के माध्यम से देश में व्याप्त राजनैतिक भ्रष्टाचार का वर्णन किया है। कहानी में जो अफसर ईमानदार होता है। उसका राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं होता है उसका तबादला होता रहता है। “उस बार

बड़े अफसर जब दौरे पर आये तो देवेन्द्र अपने घर उनके साथ कुछ ही लोगों के आमंत्रित कर सका और उसने बेहद सादा भोजन परोसा- पर इसके बाद ही शासन ने उसे बेहद गतिशील बना दिया- निरंतर एक-दो वर्ष में ग्यारह तबादले।”⁸⁶

‘गोमा हँसती है’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने किडडा के माध्यम से राजनीति में जो भ्रष्टाचार है, उसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। कहानी में किडडा की शादी गोमा से हो जाती है। किडडा को लडका होता है। बलीसिंह कपडा लेकर जाता है। वहां उसकी बरी तरह पिटाई हो जाती है। किडडा उसे सार्डकिल पर ले जाता है। वह बलीसिंह से कहता है कि— बलीसींगा, सो गया क्या रे? देख ले, कब से हल्ला है नई सड़क बनने का? प्रधान के बाप जब प्रधान थे और हम लोग नाक पोंछना तक न जानते थे, तब से सनते चले आ रहे हैं। सड़क अब बनी, तब बनी। अब तो मे ख्याल में हमारे नाती-बेटा थी इसी रेत भरे दगरे में साडकिल घसीटेंगे। बन गई सास सड़क।”⁸⁷

‘जाँच अभी जारी है’ ममता कालिया ने खन्ना और सिन्हा के माध्यम से बैंको में भ्रष्ट तन्त्र को उजागर किया है। अपर्णा जब बैंक में नौकरी करने लगती है, उसके बाद बैंक के लोग शाम में पार्टी रखते हैं। अपर्णा उसमें जाने से मना कर देती है, तो उस पर इल्जाम लगाकर उसे बैंक से निकाल दिया जाता है। उसके अधिकारी आपस में बातें करते हुए कहते हैं कि— “खन्ना ने सिन्हा को बलाकर सलाह की। तय यही हुआ कि ये जो नये अपरिपक्व, अनशासनहीन अधिकारी हैं, उन्हें सबक सिखाए जाये और उनकी लीपापोती कतई मंजूर न की जाये।”⁸⁸

‘शतरंज के खिलाडी’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने नथू लाल के माध्यम सरकार सम्बन्धित मल्यों पर व्यंग्य किया है। कहानी में गाँव में प्रधानी का चुनाव

होने वाला होता है। नथथलाल और पीतम सिंह में बातें होती हैं। बीच में नथथलाल पीतम सिंह से कहते हैं कि— “यह सरकार थी. ससरी...शहर में बैठकर गाँवों के लिए कानन पास करती रहती है. आँख-कान मढ़ें रहते हैं. मंत्री-संत्रियों के! अरे यहाँ रहे. देखें. तब तो पता चले कि जवान पढ़ा तो अपनी अस्मत् बचा नहीं पा रहे हैं. औरत किस खेत की मली है? बगल में चाय ले जाए कोई तो मालम भी नहीं पड़ेगी। और जवान सधड़ औरत तो वैसे ही बीच बाजार लट जाएगी। ‘कहो’. हम झूठ तो नहीं कह रहे?”⁸⁹

‘चाँद-तारों की शतरंज’ कहानी में नासिरा शर्मा ने शरफ के माध्यम राजनीतिक लोगों के मल्यों पर करारा व्यंग्य किया है। कहानी में शरफ के दोनों बेटे कोई काम नहीं करते हैं। शरफ और उसकी औरत दोनों बेटों को लेकर परेशान रहते हैं। अपने लड़कों को समझाता है कि लाटरी और जआ सरकार खद खेलाती है शरफ कहता है कि— “बेटवा सरकार तो जआ खद खेलावत है. अभी लॉटरी के नाम पर तो कभी मकाबला के नाम पर।”⁹⁰

‘तक्षशिला’ कहानी में नासिरा जी ने निगार के माध्यम से राजनेताओं के मल्यों पर करारा व्यंग्य किया है। निगार एक गाँव में जाती है। वहाँ सारा गाँव जल जाता है। लोग बहुत परेशान हैं। जब निगार लिखने बैठती है. तो वह सोचती है कि— “यहाँ तो जो देश चलाने वाले हैं. वे ही नंगे-भखे हैं. उन्हीं का पेट नहीं भर पाता है। वे कहाँ से दूसरे के लिए सोचें? कितने भ्रष्ट हैं. ये रखवाले। काश! ये ऐसे न होते. ..सारी बातों. सारे वार्तालाप. सारे लेखों का सारांश. काश में सिमटकर रह जाता है. निगार की आँखें क्रोध से जल उठीं। थोड़ी देर में दोनों आँखों के किनारे उबल बलबलों से भर गये थे।”⁹¹

‘वर्दी’ कहानी में लेखिका ने बताया है कि सामाजिक क्षेत्र में ही नहीं व्यक्ति वैयक्तिक धरातल पर भी भ्रष्टाचार के लिए विवश हो जाता है। ‘वर्दी’ कहानी में किस प्रकार रिश्तखोरी गहराई तक अपनी नींव डाली हुई है। इसका अंकन है— “उसके इलाके में जिन अड्डों पर जआ चलता था, उन अड्डों के दादा ने सी कोतवाल से अपनी गोटी, बैठा ली थी और उसके हाथ कछ भी नहीं लगा दकानवालों और ठेलेवालों ने जरूर उसका लिहाज किया पर कल मिलाकर मामला फीका ही रहा था। अगले दो दिन बाजार बन्द रहता था, यही सब सोचकर रमाशंकर का मड उखड़ा हुआ था।”⁹²

‘गँगी गवाही’ में नासिरा जी ने दरोगा के माध्यम से भ्रष्ट पुलिस प्रशासन पर प्रकाश डाला है। कहानी में रहीम दरोगा के पास आता है, तो वह उसे टालता क्योंकि वह घस ले चका है। इसलिए रहीम को डांटते हुए कहता है कि— “देख रहिमवा, नाटक मत कर। बात कानन की है। कानन सबत मांगता है, किसी व किसी के साथ खड़े या कहीं जाते देख अपराध नहीं साबित हो सकता है, दरोगा ने कछ झँझलाकर कहा।”⁹³

‘तक्षशिला’ कहानी में सम्पादक महोदय के माध्यम से समाज में भ्रष्टाचारा उल्लेख किया गया है। कहानी में सम्पादक महोदय और निगर वार्तालाप होता है। निगर बहुत भावुक हो जाती है, तो सम्पादक महोदय निगर जी को समझाता है कि हमारे देश में कितने लोग भ्रष्ट हैं। सम्पादक महोदय कहते हैं कि— “आपकी ईमानदार भावकता अपनी जगह आदर का स्थान रखती है, परं याद रखिए कि समाज में 99 प्रतिशत लोग भ्रष्ट हैं। और एक प्रतिशत लोगों को उनसे लड़ना है, और इसमें भी लोग निराशा के शिकार हो जाएँ तो फिर

बनेगा?’⁹⁴

‘गँगी गवाही’ कहानी में एक दिन हबीब हज्जाम का लडका गायब हो जाता है। उसकी कोई खबर नहीं मिलती है। वह एम.एल.ए. साहब से बात करता है। इसका कोई फायदा नहीं होता है। फेरी वाले ने जब पछा कि बेटा का कछ पता चला तब हबीब हज्जाम कहता है कि— “कहाँ भय्या...आज दो दिन हो गए। कल एम. एल.ए. साहब के घर गए रहे। उनके कहने से एक पतरकार ने अखवार मा खब फोटो के साथ छाप दी है। पर कौनो फायदा न भवा।”⁹⁵

‘बारहवीं रात’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने भ्रष्ट में पलिस प्रशासन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।

‘बारहवीं रात’ कहानी में सरेन्द्र की शादी सीता नाम की लडकी से हो जाती है। एक दिन वह फाँसी लगा लेती है। सरेन्द्र को पलिस पकडकर ले जाती है। उसे छडाने के लिए सरेन्द्र के माता-पिता से बात होती है। तो सरेन्द्र की माता कहती है कि “अरे. आज हमारे गाँव में पडसा होता तो इस कसाई का मँह...अरे. अब तक अपने बेटा को छडाने ले आए होते। बेटी ने देते से बरई कर दी हमारी हालियत...नरक में डले तो है. मँह पर पट्टी कस ले।”⁹⁶

‘साँप-सीढी’ कहानी में जब राजन स्टेशन मास्टर का टैस्ट देकर आता है. वह खेत बेचकर पैसा मांगता है. कि वहां दो लाख घस देना है. ताऊ कछ नहीं कहते हैं लेकिन राजन की माता कहती हैं कि— “सत्यानास हो जाए नौकरी देने वालों का। मोरे लाल सेगठरिया भर रुपडया..अरे. हमने तो पढाई में ही अपना खन-पसीना सखा डाला। और रही सही कसर परी कर दी सलाखों ने। ससराल से राजन को टीके-माथे में भी कानी कौडी नसीब नहीं होने दी।”⁹⁷

‘गोमा हँसती है’ कहानी में लेखिका ने गोमा के माध्यम से घस देने की बात का वर्णन किया है। गोमा हँसती है’ कहानी में किडडा का विवाह हो जाता है। उसके कई दिनों के बाद किडडा बीमार पड़ जाता है। उसे एक वैद्य के पास दिखाते हैं। वह गलत दवा दे देता है। जिससे किडडा की सेहत और खराब हो जाती है। गं किडडा से कहती है कि— “ककरेठिया के बैद की अच्छी तरह धनाई कर आए है दाऊजी। रपोटा-रपोटी भी हो रही बताते हैं। उन्होंने कह दिया- परवाह नहीं। चार बीघा खेत बेच डालेंगे। दरोगा को घस ही तो भरनी है। लड लेंगे मकदमा-कचहेरी।”⁹⁸

इसी कहानी में नासिरा जी ने तीनों आदमी के माध्यम से दरोगा को घस देने का वर्णन किया है। हबीव हज्जाम का लडका गायब हो जाता है। उसके मिलने के बाद जब पता चलता है. गाँव के तीन लडकों ने उसे मार डाला है. तो लडकों के पिता दरोगा से मिलते हैं. और उसे घस देकर कहते हैं कि— “यह रखें. कहते दोनों गंदे कपड़ों में लिपटा पैकेट वहां रखकर सरपट लौट गए।”⁹⁹

‘बिछड़े हए’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने शतानन्द के माध्यम से भ्रष्ट शासन व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है। स्वामी शतानन्द गाँव के एक मंदिर में आते हैं। मंदिर में साध होते हैं। वह पहचान लेते हैं। लेकिन शतानन्द कई बार ऐसा हुआ है कि उनकी परसादी चोरी हो जाती है। वह जगे और. देखा कि— “टटोलकर महसस किया. पडिया सलामत है। सांस में सांस आई। ऐसा कई बार हो गया है। कि कोई मरती दिल्ली से ‘परसादी’ का जगाड करके लाया है. और बीच में ही पलिस-सिपाही या रेत बाब ने हत्था मार दिया। बेचारा मरती...सतगरु का कोडा खाडा।”¹⁰⁰

‘वर्दी’ कहानी में ममता कालिया ने पलिस प्रशासन द्वारा घस लेने की प्रवृत्ति को उजागर किया है। उमाशंकर नाम का एक पलिस रहता है। वह दकानदारों से

पैसा वसलता है। एक दिन वह बहुत परेशान रहता है क्योंकि जआ के अड्डों पर कोतवाल ने पैसे की बात कर ली थी। वह परेशान था। उसके हाथ कछ नहीं लगा। लेकिन तब भी दकान और ठेलेवाले से पैसा ले लेता है। “दकान वालों और ठेले वालों ने जरूर उसका लिहाज किया पर कल मिलाकर मामला फीका ही रहा था। अगले दो दिन बाजार एक दम बन्द रहना था। यही सब सोचकर रमाशंकर का मड उखल हआ था।”¹⁰¹

इसी कहानी में ममता कालिया ने आशा के माध्यम से समाज में पलिस का शोषण करने के तरीके पर यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। कहानी में पलिस के द्वारा जो दकानदारों का शोषण किया जाता है, उसी का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है। आशा सोचती है कि— “उस दिन की सैर आशा को अभी तक याद थी। उन दोनों ने एक जगह बैठकर चाट खाई थी। और कल्फी। कहीं भी रमाशंकर को पैसे देने की जरूरत नहीं पड़ी थी।”¹⁰²

‘नौ-तपा’ कहानी में पलिस वाले के माध्यम से शासन व्यवस्था पर करा व्यंग्य है, कि शासन व्यवस्था कितना भ्रष्ट है। कहानी में जब लच्छ यह कहता है, कि यह घर मेरा है। तब बब्बन कंजडे के आदमी आते हैं, और लच्छ को बहुत मारते हैं, लेकिन इस पर वहां की पलिस भी कछ नहीं कहती है क्योंकि ये लोग भी मिले हुए हैं। उसे मार कर भगा दिया सभी तमाशा देखते रहे। मन ही मन सोचते रहे कि— “सारा मोहल्ला खामोश तमाशाई बना रहा। उन्हें लठबाजों का संदेशा समझ में आ गया था। मन ही मन गाली देते हुए खिडकियाँ-दरवाजे बंद होने लगे। ल के थपेड़े मैदान की मिट्टी के संग सफेद मकान के बंद दरवाजे से टकरा रहे थे। जिस प पलिस वाले ने यह कहकर कि देख लेंगे मकान मालिक को एक तड़ती अभी-अभी

लगवाई थी. बब्बन एंड संस भसे वाले ।”¹⁰³

‘तक्षशिला’ कहानी में नासिरा शर्मा जी ने परानी व्यवस्था और नयी व्यवस्था के मल्य टटने का वर्णन किया है।

‘तक्षशिला’ कहानी में निगार एक पत्रकार है। उनके साथी भी पत्रकारिता पर उसके साथ काम करते हैं। सभी लोगों का अपना-अपना क्षेत्र होता तो वे लोग अपना ख्याल जाहिर करते हैं कि—“किसी भी औरत की इज्जत लटना कोई नई बात नहीं है। पहले यह सामाजिक अव्यवस्था की मजबूरी थी कि घर और गाँव की हर मजदूर और उसका निजी धन थी। आज जब जागृति आ रही है. परानी व्यवस्था टट गई है. तो स्वयं नई व्यवस्था के कुछ सत्ताधारी मजाक करते हैं कि ‘जाने यह हो-हल्ला क्यों मचता है’. नस्लों में सधार हो रहा है।’ ऐसे विचारात्मक ढाँचे में न्याय पाना उतना ही मुश्किल है. जितना पानी से तेल निकालना ।”¹⁰⁴

इसी कहानी में नासिरा जी ने निगार के माध्यम से टटते मल्यों के व्यवस्था को बदलने का विचार प्रस्तुत किया है। कहानी में निगार और संपादक महोदय वार्तालाप होता है कि हम बजदिली के अतिरिक्त कर भी क्या सकते हैं। ऐसे मत कहिए हम लोग चाहे तो व्यवस्था बदल दे निगार कहती है कि—“ऐसे मत बोलिए कमल जी. हम कुछ भी नहीं कर रहे हैं. कुछ भी। मेरा बस चले तो मैं एक ही झटके में सारी व्यवस्था बदल दूँ ।”¹⁰⁵

महिला कहानीकारों ने सरकार की योजनाओं के निर्णय पर प्रकाश डालते हुए भ्रष्ट सरकारी अधिकारियों द्वारा भ्रष्ट व्यवस्था से पीड़ित लोगों के जीवन मल्यों पर प्रकाश डाला गया है। इस व्यवस्था में परिवर्तन की माँग की है।

राजनीति व्यवस्था के अंतर्गत नेता. चुनाव और सरकार एवं भ्रष्ट प्रशास

व्यवस्था पर महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। राजनीतिक मूल्यों के कारण मानव के जीवन मूल्यों में परिवर्तन एवं विकास की अहम भूमिका है इस बात का एहसास दिलाया गया है।

संदर्भ :

1. मैत्रेयी पष्पा. 'साँप-सीढ़ी'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई०. पृष्ठ-93
2. मेहरुन्निसा परवेज. 'पापा का घर'. अम्मा. प्रकाशन. ज्ञान गंगा. प्रथम संस्करण-1997 ई०. पृष्ठ-73
3. मैत्रेयी पष्पा. 'ताला खला है पापा'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई०. पृष्ठ-83
4. सनंत कौर. समकालीन हिंदी कहानी. स्त्री-पुरुष संबंध. अभिव्यंजना प्रकाशन. दिल्ली. प्रथम संस्करण-1991. पृष्ठ-33
5. नासिरा शर्मा. 'चिमगादड़ें'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997 ई०. पृष्ठ-152
6. नासिरा शर्मा. 'चिमगादड़ें'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997 ई०. पृष्ठ-148
7. नासिरा शर्मा. 'चिमगादड़ें'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997 ई०. पृष्ठ-150
8. नासिरा शर्मा. 'ततडया'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997 ई०. पृष्ठ-65
9. नासिरा शर्मा. 'सतधरवा'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997 ई०. पृष्ठ-108
10. मैत्रेयी पष्पा. 'बारहवीं रात'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई०. पृष्ठ-159
11. नासिरा शर्मा. 'उसका बेटा'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण.

दिसम्बर-1997 ई0. पष्ठ-117

12. ममता कालिया. 'वर्दी'. जाँच अभी जारी है. लोकभारती. पेपरबैक्स. प्रथम संस्करण-1997 ई0. पष्ठ-122
13. नासिरा शर्मा. 'चिमगादड़ें'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997 ई0. पष्ठ-144
14. वही. पष्ठ-144
15. वही. पष्ठ-146
16. वही. पष्ठ-154
17. वही. पष्ठ-159
18. मैत्रेयी पष्पा. 'राय प्रवीण'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई0. पष्ठ-38
19. मदला गर्ग. 'वह मैं ही थी'. 'शहर के नाम'. भारतीय ज्ञानपीठ. प्रथम संस्करण-1990 ई0. पष्ठ-70
20. केशव देव
21. नासिरा शर्मा. 'चिमगादड़ें'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997 ई0. पष्ठ-157
22. कृष्णा अग्निहोत्री. रमकलिया. 'जिंदा आदमी'. ज्ञान भारती. रूपनगर. दिल्ली. प्र. संस्करण-1986 ई0. पष्ठ-8
23. मदला गर्ग. 'तीन किलो की छोरी'. शहर के नाम. भारतीय ज्ञानपीठ. प्रथम संस्करण-1990. पष्ठ-19
24. ममता कालिया. 'पहली'. जाँच अभी जारी है. लोकभारती. पेपरबैक्स. प्रथम संस्करण-1997 ई0. पष्ठ-104

25. नासिरा शर्मा. 'इमाम साहब'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर प्रकाशन.
संस्करण-दिसंबर 1997. पष्ठ-55
26. मैत्रेयी पष्पा. 'राय प्रवीण'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई0.
पष्ठ-48
27. नासिरा शर्मा. 'इमाम साहब'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर प्रकाशन.
संस्करण-दिसंबर 1997. पष्ठ-53
28. नासिरा शर्मा. 'तक्षशिला'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-दिसंबर
1997. पष्ठ-125
29. मैत्रेयी पष्पा. 'बिछड़े हए...'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई0.
पष्ठ-61
30. नासिरा शर्मा. 'इमाम साहब'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर प्रकाशन.
संस्करण-दिसंबर 1997. पष्ठ-61
31. वही. पष्ठ-50
32. वही. पष्ठ-54
33. नासिरा शर्मा. 'चाँद-तारों की शतरंज'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण.
दिसम्बर-1997 ई0. पष्ठ-38
34. मेहरुन्निसा परवेज. 'घरे क बिरवा'. अम्मा. ज्ञानगंगा. प्रथम संस्करण-1997 ई0. पष्ठ-58
35. नासिरा शर्मा. 'चिमगादड़ें'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997
ई0. पष्ठ-145
36. वही. पष्ठ-147
37. नासिरा शर्मा. 'नौ-तपा'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997
ई0. पष्ठ-163

38. वही. पष्ठ-164
39. नासिरा शर्मा. 'आया बसंत सखी'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997 ई0. पष्ठ-197
40. नासिरा शर्मा. 'आया बसंत सखी'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997 ई0. पष्ठ-196
41. नासिरा शर्मा. 'विरासत'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997 ई0. पष्ठ-17
42. मैत्रेयी पष्पा. 'राय प्रवीण'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-2010. पष्ठ-47
43. चन्द्रकांता. 'पत्थरों के राग'. ओ सोनकिसरी. राजकमल प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1991. पष्ठ-14
44. नासिरा शर्मा. 'सतघरवा'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-दिसंबर 1997. पष्ठ-112
45. मैत्रेयी पष्पा. 'शतरंज के खिलाडी'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई0. पष्ठ-18
46. मैत्रेयी पष्पा. 'ताला खला है पापा'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई0. पष्ठ-85
47. नासिरा शर्मा. 'आया बसंत सखी'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997 ई0. पष्ठ-201
48. वही. पष्ठ-200-201
49. वही. पष्ठ-200
50. वही. पष्ठ-199

51. नासिरा शर्मा. 'गँगी गवाही'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997 ई0. पष्ठ-90
52. नासिरा शर्मा. 'इमाम साहब'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997 ई0. पष्ठ-58
53. वही. पष्ठ-57
54. वही. पष्ठ-55
55. मैत्रेयी पष्पा. 'उम्रदारी'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई0. पष्ठ-113
56. मैत्रेयी पष्पा. 'रास'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई0. पष्ठ-138
57. नासिरा शर्मा. 'तक्षशिला'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997 ई0. पष्ठ-140-141
58. नमिता सिंह. 'जंगल गाथा'. जंगल गाथा. वाणी प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1994 ई0. पष्ठ-23
59. नमिता सिंह. 'बन्तो'. जंगल गाथा. वाणी प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1994 ई0. पष्ठ-41
60. नासिरा शर्मा. 'तक्षशिला'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997 ई0. पष्ठ-126
61. मैत्रेयी पष्पा. 'साँप-सीढ़ी'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई0. पष्ठ-96
62. कृष्णा अग्निहोत्री. 'जिंदा आदमी'. जिंदा आदमी. प्रकाशन ज्ञान भारती. रूपनगर. दिल्ली. प्रथम संस्करण-1986 ई0. पष्ठ-77
63. नासिरा शर्मा. 'सबीना के चालीस चोर'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्र

- संस्करण. दिसम्बर-1997 ई०. पष्ठ-180
64. वही. पष्ठ-185
65. मैत्रेयी पष्पा. 'शतरंज के खिलाडी'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई०. पष्ठ-20
66. मैत्रेयी पष्पा. 'साँप-सीढ़ी'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई०. पष्ठ-104
67. मैत्रेयी पष्पा. 'प्रेम भाई एंड पार्टी'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई०. पष्ठ-74
68. मैत्रेयी पष्पा. 'गोमा हँसती है'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई०. पष्ठ-195-196
69. नासिरा शर्मा. 'गँगी गवाही'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997 ई०. पष्ठ-80
70. मैत्रेयी पष्पा. 'राय प्रवीण'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई०. पष्ठ-195-39
71. मैत्रेयी पष्पा. 'प्रेम भाई एंड पार्टी'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई०. पष्ठ-66
72. नासिरा शर्मा. 'सबीना के चालीस चोर'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997 ई०. पष्ठ-177
73. नमिता सिंह. 'नील गाय की आँखें'. नील गाय की आँखें. वाणी प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1997. पष्ठ-143
74. कष्णा अग्निहोत्री. 'रमकलिया'. जिंदा आदमी. प्रकाशन ज्ञान भारती. रूपनगर. दिल्ली. प्रथम संस्करण-1986 ई०. पष्ठ-20

75. मैत्रेयी पष्पा. 'शतरंज के खिलाडी'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई0. पष्ठ-19
76. मैत्रेयी पष्पा. 'शतरंज के खिलाडी'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई0. पष्ठ-18
77. कष्णा अग्निहोत्री. 'जिंदा आदमी'. जिंदा आदमी. ज्ञान भारती. रूपनगर. दिल्ली. प्रथम संस्करण-1986 ई0. पष्ठ-83
78. मैत्रेयी पष्पा. 'शतरंज के खिलाडी'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई0. पष्ठ-19
79. मैत्रेयी पष्पा. 'साँप-सीढी'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई0. पष्ठ-105
80. मैत्रेयी पष्पा. 'शतरंज के खिलाडी'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई0. पष्ठ-30
81. मैत्रेयी पष्पा. 'शतरंज के खिलाडी'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई0. पष्ठ-24
82. मदला गर्ग. 'शहर के नाम'. शहर के नाम. भारतीय ज्ञानपीठ. प्रथम संस्करण-1990 ई0. पष्ठ-109
83. वही. पष्ठ-109-110
84. नमिता सिंह. 'नील गाय की आँखें'. नील गाय की आँखें. वाणी प्रकाशन. द्वितीय संस्करण. 1997. पष्ठ-140
85. मैत्रेयी पष्पा. 'राय प्रवीण'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई0. पष्ठ-49
86. कष्णा अग्निहोत्री. 'जिंदा आदमी'. सेनानी. ज्ञान भारती. रूपनगर. दिल्ली. प्रथम संस्करण-1986

- ई0. पष्ठ-72
87. मैत्रेयी पष्पा. 'गोमा हँसती है'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998
ई0. पष्ठ-168
88. ममता कालिया. 'जाँच अभी जारी है'. जाँच अभी जारी है. लोकभारती. पेपरबैक्स. प्रथम संस्करण-1997 ई0. पष्ठ-34
89. मैत्रेयी पष्पा. 'शतरंज के खिलाडी'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998
ई0. पष्ठ-21
90. नासिरा शर्मा. 'चाँद-तारों की शतरंज'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997 ई0. पष्ठ-43
91. नासिरा शर्मा. 'तक्षशिला'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997
ई0. पष्ठ-125
92. ममता कालिया. 'वर्दी'. जाँच अभी जारी है. लोकभारती. पेपरबैक्स. प्रथम संस्करण-1997
ई0. पष्ठ-124
93. नासिरा शर्मा. 'गँगी गवाही'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997
ई0. पष्ठ-93
94. नासिरा शर्मा. 'तक्षशिला'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997
ई0. पष्ठ-126
95. नासिरा शर्मा. 'गँगी गवाही'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997
ई0. पष्ठ-78
96. मैत्रेयी पष्पा. 'बारहवीं रात'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई0.
पष्ठ-154
97. मैत्रेयी पष्पा. 'साँप-सीढ़ी'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई0.

पष्ठ-101

98. मैत्रेयी पष्पा. 'गोमा हँसती है'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998

ई0. पष्ठ-185

99. नासिरा शर्मा. 'गँगी गवाही'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997

ई0. पष्ठ-92

100. मैत्रेयी पष्पा. 'बिछडे हए...'. गोमा हँसती है. किताबघर प्रकाशन. प्रथम संस्करण-1998 ई0.

पष्ठ-58

101. ममता कालिया. 'वर्दी'. जाँच अभी जारी है. लोकभारती. पेपरबैक्स. प्रथम संस्करण-1997

ई0. पष्ठ-124

102. वही. पष्ठ-121

103. नासिरा शर्मा. 'नौ-तपा'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997

ई0. पष्ठ-173-174

104. नासिरा शर्मा. 'तक्षशिला'. सबीना के चालीस चोर. किताबघर. प्रथम संस्करण. दिसम्बर-1997

ई0. पष्ठ-124

105. वही. पष्ठ-126

अध्याय पंचम

5. हिन्दी-महिला कहानीकारों की कहानियों में अभिव्यक्त सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन मूल्य

5.1 सांस्कृतिक जीवन मूल्य

भारत की विशेषता है कि विभिन्न धर्म, जाति के लोग रहने पर भी इनका परम्परा, संस्कार, रीति-रिवाज, त्यौहार, भाषा अलग-अलग होने पर भी भारत संस्कृति अन्य देशों से अलग एवं श्रेष्ठ दिखाती है। महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में सांस्कृतिक जीवन-मूल्य को बताते हुए परम्परा, संस्कार, रीति-रिवाज संबंधी मूल्य, अंधविश्वास के कारण जीवन-मूल्य में परिवर्तन, गीत, नृत्य और त्यौहार, साम्प्रदायिक एकता के मूल्य को अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया है।

5.1.1 परम्परा, संस्कार और रीति रिवाज

परम्परा, संस्कार और रीति-रिवाज मानव को एक धर्म, समुदाय से जोड़े रहने एवं नियंत्रण में रहने के लिए बनाये गये हैं, यह औपचारिक विधि है जिससे कोई भी कार्य एक नियंत्रण एवं व्यवस्था में किया जाता है। यह पूर्ण रूप से परिवर्तन नहीं हो सकता है क्योंकि एक धर्म एवं समुदाय के व्यक्तियों उनके विचारों एवं विश्वास से जोड़े हैं। आधुनिक समाज में बदलते परिवेश के कारण इसमें परिवर्तन दिखायी देते हैं।

परंपरा

‘इरादा’ कहानी में ममता कालिया ने समाज में परंपरागत विवाह के बंधनों की ससुराल में जो दशा होती है, उसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

शांति मायके आ जाती है तो माँ से बातें करती है. फिर जब ससराल जाने के लिए तैयार होती है तो माँ को पता चल जाता है कि दामाद की चिट्ठी आयी है। शांति से उसकी माँ ससराल जाने के लिए कहती है कि—“यह तो उसका बडप्पन है कि तझे हर साल भेज देता है. नहीं तो मालम है न. तेरी बडकी मौसी की दशा क्या थी! एक बार शादी होकर गई तो कभी पीहर की दहलीज पर पाँव नहीं रख सकी जाने कौन बात से उसके ससराल वाले नाराज थे. बस कभी भेजा ही नहीं। तेरी ना-आखिर तक उसके लिए कल्पती रही. पर वह उनके मरने पर ही आई! त शाम ही की गाडी से चली जा।”¹

‘गोमा हँसती है’ कहानी में जैमन्ती अपने ससराल से चली आती है। उसमें और उसकी माता में वार्तालाप होती है. माता कहती है कि तम्हें नहीं आना चाहिए था। घर की इज्जत घर में ही रह जाती तो वह अपनी अम्मा से कहती है कि- “त निसाखातिर रह ‘अम्मा मैं तेरे ऊपर बोझ नहीं बनूँगी। नाऊ की बेटी हूँ’ टहल-चाकरी करके पेट पर लंगी।” इतना कहते-कहते उसे अहसास हुआ. जैसे वह उन्नीस बरस भी न होकर अचानक अड़तीस की हो गई है। विपदा-मसीबत को क्या कहे जैमन्ती. .. कच्ची उमर का दखल जिंदगी से छिन-भर में उठ गया।”²

ततडया कहानी में नासिरा जी ने सन्नो महाराजिन के माध्यम से सांस्कृतिक परम्परा की बात कही है। एक दिन जब सन्नो महाराजिन बारिन के घर आती है। बारिन की बह सन्नो पानी लेकर आती है. तब सन्नो महाराजिन उसकी हा देखकर कहती है कि “बह बीमार है क्या? नई सहागिन और यह वहरूप? न पैर में न कमर में ऊपर से मैली-गँजली धोती...थ...थ मेरे मन में तो बड़ा बरा विचार आया। जा बह कपडे बदल कर आ...। तम डाँटती-डपटती नहीं हो क्या? मैं तो इस अधेड

उम्र में खिचड़ी बाल मे संग एक दिन बिंदी-काजल न लगाऊँ तो फिर देखो कलह.
.. सास ताना मारेगी कि हमारे लडके का सोहाग रखने में कौन-सा हाथ घिसता है।”

नौ-तपा कहानी में छोटी लडकी के माध्यम से नासिरा जी ने पराने पीढ़ियों की निशानी की बात कही है। लच्छ कलर्डगर बर्तनो में कलर्ड का काम करता है। एक दिन वह कलर्ड करने आता है। एक लडकी बर्तन लेकर आती है वह बर्तन कलः करने लायक नहीं रहती है तो वह मना करता है. तो लडकी कहती है कि. “चा रुपया दे रहा था। माँ को रोना आ गया. बोली-मेरी दादी की निशानी चार रुपये में बेचने से अच्छा है. घर में पडी रहे।” माँ की नकल उतारती हर्ड लडकी ऊँची आवाज में बोली।”⁴

‘लौट आओ बाब जी’ कहानी में लेखिका ने शाल के पिता के माध्यम से रुढि एवं आडम्बरो की बात कही है। नायिका जब हॉस्टल में पढती है तो उसके पित अक्सर उससे मिलने आया करते हैं। उनको चाय पीने का बहत शौक था। एक दिन वह चाय पीते मजदरो को देखकर बोलते है कि- “शाल. देख ये लोग कितने सखी हैं! जहाँ पैसा दिया. खा लिया. पी लिया और चल देते हैं. हम लोगो की तरह घेरल मर्यादा निभाने की परम्परा नहीं निभाते। हम लोग तो बस आडंबरो को ही ढोने में सारा जीवन गँवा देते हैं। नियम से बँधे रहे। नियम विषय क्या होता है? उससे घटन नहीं होती?”⁵

‘पापा का घर’ कहानी में दीपा अपनी माँ के संस्कारों की बात करती है कि “मम्मी प्रदीप के बाहर पढने. बाहर जाने. हॉस्टल में रहने के सख्त खिलाफ थीं। जब भी बात उठती. विरोध करतीं. नहीं बडे होकर तो उसे दर जाना ही होगा. तब रोक नहीं पाऊँगी. अभी से क्यों अलग करूँ? घर में संस्कार भी तो कोई चीज होते हैं।

बचपन के संस्कार मनष्य के साथ जीवनभर रहते हैं हमेशा लाठी बनकर रा दिखाते हैं. विचलित नहीं होने देते।”⁶

‘ततडया’ कहानी में बारिन के मोहल्ले में लडका पैदा होता है बारिन को और उसके बह शन्नो को बलाने आते हैं. लेकिन बारिन मना कर देती है. लेकिन बारिन के कान में सोहर की आवाज आती तो वह अपने को रोक नहीं पाती है र चडिहारिन के पास जाती है—“सोबा चडिहारिन का जगर-मगर घर उसे अन्दर हिला गया। खाना-पीना. गीत-बधार्ड. कैसा उत्सव मना रहे थे. सब सज-धज कर और वह भी ढोलक संभाल कर बैठ गई थी। मोहल्ले की बात थी। तरंगों में बह गयी. वहाँ जाकर भल गयी कि उसके मन में कोई कंठा. कोई आक्रोश फन काठ कर बैठा है।”⁷

‘प्रेम भाई एण्ड पार्टी’ कहानी में नरेन्द्र की बेटी की शादी की बात उस ससराल वालों से होती है वह तिलक में नहीं आते है तो उनको शक होता है. कि कहीं वह झूठ तो नहीं बोल रहे हैं फिर वह लोग उनको समझाते हुए कहते हैं कि—“रही तिलक की बात. सो बेटी के घर का अन्न-जल ग्रहण करना उनके उसलों के विपरीत पडता है। नियम धरम वाले सदाचारी आदमी हैं। अब तम्हीं देख लो कि इतना बडा हौदा और संस्कार-मर्यादा के ऐसे पालक!”⁸

‘सबीना के चालीस चोर’ कहानी में आपस में सभी बातें कर रहे हैं। जावेद साहब अपनी बात करते हैं। उसके बाद चन्द्रशेखर साहब अपनी बात रखते हैं। उसी जोग में मिश्रा जी संस्कृत के संबंध में कहते हैं कि—“भाई जिनको अपनी पहचान का नशा है तो रहे वह वैदिक काल में और पहने बिना सिला कपडा। मखौं से पछा. मानव-प्रगति के पहिए को तम संकीर्ण. संकचित काल में बाँधना चाहते हो? तम ना समझ लोग साँझी सभ्यता एवं संस्कृति की मर्यादा पर प्रश्न उठाते हो।”⁹

‘गँगी गवाही’ कहानी में हबीब हज्जाम लडके को ढढने जाता है लेकिन लडके का कछ पता नहीं चलता है तब वह घर आकर बैठ जाता है। इसके बाद उसक बडकी मौसी ने कटोरे में लडड आगे बढाते हए और चाय छानते हए कहर्त कि—“आज पतंग वाले के लडके की मसलमानी रही न...बडी धम-धाम. शहनाः बाजा-गाजा. खाना-पीना लडड देखो पाव-पाव भर के हैं।”¹⁰

इसी कहानी में हबीब हज्जाम का लडका गायब हो जाता है। कछ दिनों के बाद गँगी लडकी के माध्यम से पता चल जाता है. रहीम की बीवी यह बताने के लिए जाती है। रहीम उस वक्त खतना करने गया होता है। खतने की तैयारी रहीम करता है। वह रोने लगा तो उसके चचा ने कहा— “वाह मियाँ. बहादर कहीं रोते है. ऊपर देखिए चिडिया फर् से उडी।” लडके का ध्यान चचा की बात पर ऊपर की तरफ गया. उधर रहीम ने काम तमाम कर दिया। लडका दर्द से बिखला. खन की धा गिरी और हर तरफ से मबारक-बात सलामत की आवाज के साथ लडड बँटने शुरू हो गए।”¹¹

‘गँगी गवाही’ एक दिन सब लोग घर पर बैठे रहते हैं. तो रहीम को खोजने कोई आता है गौहर गस्साल अंदर से बोलता है कि—“रहीम तो गवा है कल्लन मियाँ के घर लडका के मंडन या...बहरहाल चिंता की बात नाही. तम बढो आगे।”¹²

‘बिछडे हए’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने सग्रीव के माध्यम से संस्कार का वर्णन किया गया है। ‘बिछडे हए’ सग्रीव गाँव में आता है। उसी समय मगना लडकी की शादी रहती है। लोग मगना की शादी की बातें करते हैं। तो सग्रीव विमोहित होकर मगना को देखता है—“सग्रीव विमोहित से मगना को ऐसे देखने लगे. जैसे प्रसव के बाद माँ देखती है. बच्चे को पहली बार। तो चंदा बेटी के ब्याह में मंगल-गीत गा रही

थी।”¹³

रीति-रिवाज

‘घरे का बिरवा’ कहानी में भोपाल गैस त्रासदी का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया गया है। रास्ते से जाती हैं। वहाँ उसकी माँ की चीख सनायी देती है। वह वहाँ आने-जाने लगती है। एक दिन बात करते हुए जब वह उसकी माँ से कहती है, तो वह मैडम जी से कहती है कि—“मैडमजी, जब उसने मझसे एक रिश्ता-सा जोड़ लिया था, इसका बाप बैंड बजाता था। शादी में और मौत में वह बैंड बजाता था। देखो, वह रखा है। जब से मरा है, यहाँ बैंड पड़ा है। वह खद तो सबकी मौत पर बँजाता था, पर उसकी मौत पर किसी ने बैंड नहीं बजाया।”¹⁵

परंपरा, संस्कार और रीति-रिवाज संबंधित जीवन मूल्यों का भारतीय समाज में एक अहम स्थान है। इन मूल्यों में परिवर्तन साधारणतः संभव नहीं है। आधुनिकता के कारण परंपरा, संस्कार एवं रीति-रिवाज संबंधित जीवन मूल्यों परिवर्तन दिखायी दे रहे हैं। इन परिवर्तन के कारण भारतीय समाज में एक विशाल परिवर्तन संभव है। महिला कहानीकारों की कहानियों में परंपरा, संस्कार, रीति-रिवाज संबंधित जीवन मूल्यों का चित्रण सराहनीय है।

5.1.2 अंधविश्वास

भारत में अंधविश्वास एक रोग है जो अधिकतर लोगों में पाया जाता है। ये रोग इतना प्रचलित हो गया है कि शिक्षित व्यक्ति भी इस रोग से पीड़ित हैं। मनष्य अपने भाग्य को अपने सारे झंझटों को छोड़कर मुक्त होना चाहता है। समाज विवेक शून्यता एवं न समझ के कारण अंधविश्वास तगड़ा होता जा रहा है। किसी प्रकार के आधार के बिना और प्रचलन के आधार पर अंधविश्वास एक मज

विश्वास के रूप में मानव द्वारा अपनाया जा रहा है। ताकि मानव दःख से बचकर सखी जीवन जी सके।

‘उसका बेटा’ कहानी में नासिरा जी ने मँगफली वाले के माध्यम से समाज में फैला अंधविश्वास का चित्रण किया है। कहानी में एक मँगफली वाला रहता है। वह मँगफली बेचता है। वहाँ से एक आदमी गजरता है। तो उसकी बिटिया को मँगफली पकड़ा देता है। वह रोजाना यही काम करता है तो उसके पिता को अच्छा नहीं लगता है। लडकी के पिता मना करते हैं तो वह कहता है कि—“आप हमारे माई-बाप हैं.. . साहब. बरा न मानें... बिटिया के हाथों बोहनी करता हँ...जब से बिटिया रानी डधर से गजरी है सारा ढेर शाम तक बिक जाता है। इसलिए मना न करें साहब!”¹⁶

‘जंगल गाथा’ कहानी में एक विचित्र सी घटना होती है। ऐसा कहा जाता है कि बधिश्वर देवता जंगल में रहते हैं। कुछ दिनों से लडके गाँव से गायब हो जाते हैं। गाँव का एक आदमी गनिया कहता है कि—“कछ दिनों से रात में सेहा पंक्षी शै... शै...शै...शै चीडाता हआ उड रहा था। टीले के चारों ओर। परिकम्मा कर रहा था। घोर अपशकन। कछ तो अनर्थ होना ही था।”¹⁷

‘बन्तो’ कहानी में सतबीरा की माँ के द्वारा समाज में व्याप्त अंधविश्वास को दर्शाया गया है। बलवीरा की शादी बन्तो से हो जाती है। उसके कुछ दिनों के बाद बलवीरा की मृत्यु हो जाती है। उसी दिन सतबीरा की बीवी आती है। तो बलवीरा की माँ कहती है कि— छोटे सतबीरा की लगाई को गालियाँ देते हुए उसका गला बैठ गया। न जाने कैसा पैर लेकर आई थी। सत्यानासी। सतबीरा मँह छिपाये फिर रहा था और उसकी लगाई कठिया में बैठी सबक रही थी।”¹⁸

‘उमस’ कहानी में रानी काम करते-करते थक जाती है। उसके बाद वह काम

धीरे-धीरे करती है तो सास उसके हाथ से सब्जी की टोकनी छीनते हुए कहती है—“तझे ये भी नहीं पता कि मरे-मरे हाथ चलाने से घर का दलिदर कभी नहीं भागता। जल्दी कर. फटाफट खाना बना डाल. मझे सत्संग में जल्दी जाना है।”¹⁹

‘सेमिनार’ कहानी में सेमिनार खत्म हो जाता है। रात को सभी लोग सोते हैं। माहौल बिल्कल सनसान रहता है। उसी बीच एक चमगादड़ कमरे में आ जाता है—“दरवाजे के खलने के साथ-साथ एक चमगादड़ कमरे में घस आया था। उसके पंखे जैसे परो की छाया बड़ी मनहस लगी। पहले वह कमरे की छत पर फड़फड़ाता रहा. फिर वह एक छोटे यान की तरह नीचे उतरने लगा।”²⁰

‘विरासत’ कहानी रेल की नई पटरी का उदघाटन समारोह होता है। न प्लेटफॉर्म खब सजा रहता है। आज पहली गाड़ी से मुख्यमंत्री उतरने वाले होते हैं। गाँव में खशी की लहर फैली होती है। अखबार में खबर छपी होती है। पल्ला मियां भी तैयार होकर लावारिस कब्रिस्तान की तरफ जाते हैं। उनको भी न्योता था। यह उत्सव जैसे पल्ला मियां की दिन-चर्या में शामिल हो गया हो। एक दिन अनहोनी होती है। पल्लाइन कहती है कि— “सबह से कौव्वा कांय-कांय कर रहा था। कई दिनों से तवे पर से रोटी फिसल रही थी। चल्हा हँस रहा था। चप्पल पर चप्पल सवार हो रही थी। पल्लाइन भी सोच-सोचकर थक जाती कि यह सारे इशारे घर में मेहमानों के आने के हैं।”²¹

‘चाँद तारों की शतरंज’ में नासिरा जी ने मन्नी के माध्यम से अंधविश्वास का मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है। मन्नी और उसकी माँ सो रही थी। अचानक मन्नी टिटहरी की आवाज से चौंक कर जाग जाती है। मन्नी डर जाती है. और सोचती है कि कहीं मेरी चाँद रूपी पतंग को चिड़िया छेद न कर दे और वह घबराकर कहती

है— “उसने घबराकर कान में उँगली डाल ली और आँखें भींच ली और दआ माँगने लगी कि उसकी चाँद रूपी पतंग साबत बच जाए. उसके कट कर गिरने से पहले यह चीखती टिटहरी अल्लाह करे मर जाए और किसी अंधे कए में जा गिरे।”²²

‘ततडया’ कहानी में बारिन की बह गर्भवती होती है तो बारिन बहत ख होती है। वह पहले की सभी बातें भल जाती है और अपनी सास की बात याद करके कहती है कि—“उसे याद आया जब वह गर्भवती थी तो यद्दवीर की दादी वं ऊँच-नीच समझाती थी। सरज-ग्रहण वाले दिन उसे पालती मार कर तब तक बैठने न दिया जब तक ग्रहण हट न गया। कैसा लाड-दलार करती थी। मगर वह क्या कर रही है। सिवाय उस दिन के जब पता चला था। कि शन्नो के पैर भारी हैं. उसके परिवार के वक्ष पर नई कोंपल का फटाव हुआ है. वह खशी में भर लड्ड बाँट आई थी। यही कर्तव्य बचा है। एक गर्भवती के पति?”²³

नासिरा जी की ‘सतघरवा’ कहानी में छत्ता निकालने अब्दल आता है। छत्ता निकालने का दाम तय किया जाता है अब्दल कहता है कि कल ही मैंने छत्ता निकाला था तो मझे एक हजार रुपया मिला था। “खैर उस हवेली के मालिक को संदेह हो गया था कि सतघरवा छत्ता मनहस होता है। घर उजाडता है। हमने भी मँहमा कीमत माँगी और मिली थी यह पैसे वाले लोग बड़े अंधविश्वासी होते हैं।”²⁴

‘रास’ कहानी में एक दिन जब जैमन्ती का गौना हो जाता है। वहाँ उस व साथ ससर द्वारा दष्कर्म का प्रयास किया जाता है. वह अपने पीहर चली जाती है। वह सोचती है कि—“जैमन्ती माथे पर हथेली धरे धरती पर बैठी थी। अम्मा असगन विचार कर टोका नहीं। किसान जिजमानों के घर अम्मा ही तो उनकी बेटियों को बताती है— “लाली. पीढा. खाट पर बैठो। सासरे से आई बेटि धरती पर नहीं

बैठती। दोस होता है।”²⁵

‘गोमा हँसती है’ किडडा की शादी गोमा से हो जाती है। वह घर का सार काम करती रहती है। अपने ससर की सेवा करती है। एक दिन जब किडडा खाना खाने बैठता है तो वह सोचता है कि—“किडडा हाथ में रोटी का गस्सा (कौर) पकड़े रह गया। यह वही गोमा है, जो कल तक अपने दध के दाँत उखाड़कर मसे के छेद में डालती फिरती थी। कैसी चतराई की बातें करने लगी है। कलबतिया चाची की बात सोलह आना साँची है, गिरिस्ती का वजन आदमी को सालों में, तो औरत को महीनों में बढ़ी कर देता है।”²⁶

‘गोमा हँसती है’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने किडडा के माध्यम से अंधविश्वास का वर्णन किया है। किडडा की शादी गोमा से हो जाती है। बहुत दिनों के बाद गोमा को बच्चा पैदा होने वाला होता है, एक दिन किडडा कहता है कि—“कलबति चाची कहती है- गोला का बीज और मिसरी की डली खाया कर गोमा! शर्तिया बेटा होगा।”²⁷

‘चाँद तारों की शतरंज’ कहानी में शरफ अपने दोनो बेटों के साथ प बनाता है। पतंग में उसका चाचा सलीम छेद कर देता है। लेकिन किसी को पता नहीं चलता है। शरफ की औरत अपनी लडकी को मारने लगती है, कि तम्हीं ने पतंग में छेद किया है। लडकी मना करती है। शरफ की औरत कहती है— “तीली लेके तम ठाँव-ठाँव फिरौ और छेद करै कोई भत-चडैल अडहै?”²⁸

‘बारहवीं रात’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने सरेन्द्र की माता के माध्यम से समाज में व्याप्त अंधविश्वास यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। सरेन्द्र की पत्नी आत्महत्या कर लेती है। सरेन्द्र के माता-पिता कोठरी में बातें करते रहते हैं कि सरेन्द्र को छड़ाने के

लिए दसरी शादी कराते हैं। 80 हजार रुपया मिलेगा उसी से सरेन्द्र को छडा लें सरेन्द्र की माता कहती है कि—“असगन! चमगादड़ें असगन की निसानी। तम तं कछ सोचते ही नहीं...याद है. आज तेरहीं होती सीता की. बारहवीं रात...। हम कहते हैं. जब तक सतक नहीं छटते. चडैल ऐसे ही सताएगी मोरे लाल को। देख ठिकाना तोड ही दिया न मोरे सरेन्द्र का कलच्छिनी!”²⁹

‘ततडया’ कहानी में नासिरा शर्मा ने दशहरा कमेटी वालों के माध्यम से नजर लगने का वर्णन किया है। दशहरा का मेला होने वाला रहता है। गाँव के लोग बारिन से उसकी बह को भाग लेने के लिए आमंत्रित करते हुए आते हैं। वह मना कर देती है. तो दशहरा कमेटी वाले कहते हैं कि—“तझे बह की यदि नजर लगने का डर है. तो उसे हम रावण वाटिका में बिरहणी के रूप में बिठा देंगे. बिल्कल शादी केवल फलों की माला के संग।”³⁰

अंधविश्वास के कारण मानव के जीवन में कई प्रकार की बाधाएँ उत्पन्न होती हैं। मानव को अपने चिंतन के अनुसार किसी भी प्रकार का निर्णय लेने में अंधविश्वास बाधा उत्पन्न करता है। शिक्षित व्यक्ति अंधविश्वास का शिकार आज भी होता है। आधुनिक जीवन मूल्यों में अंधविश्वास को लेकर परिवर्तन हो रहे हैं।^१ कहानीकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से अंधविश्वास के विरुद्ध आवाज बलंद की है।

5.1.3 गीत. कथा. मेले एवं त्यौहार

गीत. नृत्य. मेले. त्यौहार भारतीय संस्कृति के प्रतीक हैं। इनके माध्यम सांस्कृतिक जीवन मूल्य हमें दिखाई देते हैं। किसी भी समुदाय के लोगों की संस्कृति को प्रकट करने में ये सहयोगी होते हैं। इनके माध्यम से सभ्यता का विकास होता है।

ये विशेष अवसर पर पेश किये जाते हैं।

गीत

‘रास’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने लडकी का गौना होने पर गीत प्रस्तुत किया है। जैमन्ती की शादी के बाद पहली बार गौना होता है। वहां की औरतें भीड़ लगाकर देखने के लिए आती हैं। “गौने की पहली रात...आँगन में औरतें जड़ आई। ढ घघट में सकचाई हई बैठी थी। ढोलक पर थाप पड़ते ही अजब गति हो जाती है। जैमन्ती की। बस. एक के बाद दूसरा. दूसरे के बाद तीसरा और तीसरे के बाद चौथा गीत चटाचट गाना आरम्भ किया तो सास दौड़ी-दौड़ी आई। सिर पर हाथ रख कर बोली- बस-बस. नजर लग जाएगी. अब और नहीं।”³¹

इसी कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने नाई जाति की नारियों का शादी-विवाह में काम करना. गीत गाने का वर्णन अंकित है। लाला के घर शादी होने वाली रहती है। उस दिन मनसझा महाराज की लीला नहीं होती है। क्योंकि उसी दिन लाला की लडकी की शादी रहती है. “आज लीला नहीं हई। लाला के घर तेल के मंगल गीत थे परी-खिकरी बेलनी थी। जाड़े की रात साई-संझा से घिरने लगती है। जैमन्ती दिग् डबने से पहर भर पहले भाग-भागकर बलावे देने पर लगी थी।”³²

‘प्रेम भाई एंड पार्टी’ कहानी में ब्याह बारात में गीत का वर्णन किया गया है। मन्नी की शादी कराने जाते हैं। बात होने लगती है. लडके की माता कहती है. तम लोग प्रेम भाई की अर्किस्टा कर लेना। चंदन कहता है. कि नेता लोगों के साम नाच-गाना होगा। लडके के पिता चंदन को समझाते हुए कहते हैं कि—‘ ब्याह-बरातों में सौक-मौज हैं ये तो। अब बाई-पतरियों के जमाने तो गए. जहाँ देखो सनेमा वाली नचकी देख लो। नई फैशन जो ठहरी। और फिर तम्हारे ही द्वार-दरवाजे

की शोभा बंधेगी।”³³

इसी कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने तारा के माध्यम से शादी में गीत का वर्णन किया है। नरेन्द्र की लड़की की शादी के दिन शिवदान सिंह आते हैं। और शादी में शामिल होते हैं। तारा स्त्रियों के साथ कहती है कि—“तारा ने मंगल गीत गाने के लिए स्त्रियों को हठ पर्वक वर-कन्या के पास रोक लिया। यद्यपि उनका ध्यान और कनजियां सौदान की पत्नी के कटे बाल, चमकीले जेवर तथा भडकीली साड़ी पर ही अटकी थी।”³⁴

कथा

‘राय प्रवीण’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने गाइड के माध्यम से पौराणिक कथा का वर्णन किया है। कहानी में एक गाइड रहता है, जो पर्यटकों को घमाने का करता है, तो वह कोई कथा सनाता है, गाइड कहता है कि—“कंचना ने एक संदर कन्या को जन्म दिया। नाम रखा सावित्री। सावित्री हमारे पराणों में ऐसी सती का नाम है, तो पति के प्राणों के लिए मौत के देवता यमराज से लड़ी थी, पतिव्रता स्त्री। पतिव्रता हमारे समाज में बड़ा सम्मान पाती है। देवी की तरह माना जाता है उसे। कंचना वेश्या थी, उसे जीवन-भर पतिव्रता होने के सामाजिक सम्मान की ललक बनी रही, बेटी का नाम इसीलिए रखा- सावित्री।”³⁵

मेला

‘ततडया’ कहानी में दशहरे के मेले के आयोजन वर्णन प्रस्तुत है—“दशहरे के आगमन से मौसम बदलने लगा था। अंदर-बाहर उत्सव जैसा लगता। शन्नो ने हल्दी लगे हाथ के छापे के संग दीवार पर गेरू के कई आकृतियाँ बना तलसी के आने के चारों तरफ कँगरा उभार दिया था, घर की दीवारों पर राम-कृष्ण के फोटो :

कलेंडर लगाए थे। यद्धवीर पन्नी की रंग-बिरंगी झालरें ले आया था. जो दरवाजे पर पड़ी हवा से थरथराती रहती थीं। आज चँकि चौकी इस मोहल्ले से उठने वाली थी. सो नाली की सफाई में मेहतर कल से जटे थे।”³⁶

‘रामलीला’ कहानी में नमिता सिंह ने अतल के माध्यम से सांस्कृतिक कार्यक्रम का वर्णन किया गया है। अतल जब सीता का किरदार निभाता है. तो उसे रामलीला खत्म होने पर इनाम मिलता है। वह सोचता है. कि—“कितनी मशिकल से पांडे जी ने उसे वी.आई.पी. पास दिये थे। उनके घर से कोई तैयार नहीं हुआ होगा। आने के लिए। फिर दीपा आती तो कैसे? खैर चलो। आखिरी दिन ही सही। राम-रावण बध के बाद भरत मिलाप। थोड़ा बहत बीच में सांस्कृतिक कार्यक्रम और फिर पारितोषक वितरण। असल चीज तो यही थी. देखने के लिए।”³⁷

“ततडया’ कहानी में नासिर शर्मा ने सत्तो के द्वारा दशहरे के मेले का वर्णन किया है। सत्तों यद्धवीर की माँ से कहती है कि—“तय हुआ रहा कि दशहरे बात करोगी पजा-संगीत. मगर अब तो दीवाली आय रही है। का बात हई. सब कशल-मंगल है न।”³⁸

त्यौहार

‘आया बसंत सखी’ कहानी में मैत्रेयी पष्पा ने त्यौहार का सर्ज चित्रण प्रस्तुत किया है। “आज नौरोज नए साल की शरुआत पर गली-मोहल्ले रंग से भरे ठेलों से भर उठे थे। मिठाई की दकानों पर लोगों की भीड़ थी। इक्कीस मार्च का यह दिन शियों के लिए धर्म से अलग एक त्यौहार होता है। इस दिन सारे फलों. मिठाई. गलाब जल पर नजर नयाज होती है। इसलिए हर मौसम का फल. मिठाई से बं खिलौने के रूप में जगह-जगह मिल रहे थे। खरबजा. तरबजा की फाँकों. अ

अमरूद. सेब. अंगूर. ककड़ी बड़ी कलाकारी से तैयार हुए थे। लडके-लडकियाँ रंग से खेलने की तैयारी में थे। रंगों से बाल्टियाँ. पत्तीले आँगन में भरे रखे थे। रंग चमचमाते कपड़े पहने सजी-धजी औरतें नई चडियों से भरे हाथ मटकाती ठिठोलियाँ कर रही थीं। पतली-पतली गलियों में भी जैसे इंद्रधनुष उतर आया था। बड़े अहाते में जवान लडकियाँ डमली के पेड़ तले गाने गा रही थीं।³⁹

“आया...आया रे बसंत सखी रे

उठाओ...उठाओ गडियाँ को निदिया से।”

‘चिमगादड़े’ कहानी में नासिरा जी ने मीलाद का वर्णन किया है। स्कूल में मोहम्मद साहब के जन्म दिन पर मीलाद का आयोजन किया जाता है मिस गोवा कहती हैं कि—“प्रिंसिपल मिस गोवा ने जब मोहम्मद साहब के जन्मदिन पर स्कूल में बहुत बड़े पैमाने पर मीलाद किया और बड़ी-बड़ी परडियों में लाल-पीली बँदियाँ बाँटीं तो सबके मन गदगद हो उठे। सबको वह एक तागे में पिरी रही थी।”⁴⁰

गीत. कथा. मेले. त्यौहार भारतीय जीवन मूल्य के प्रमुख स्तंभ हैं। आधुनिकता के कारण इन मूल्यों में परिवर्तन तेजी से हो रहा है। कहानीकार नासिरा शर्मा. मैत्रेयी पण्णा. नमिता सिंह ने अपनी कहानियों में सांस्कृतिक जीवन मूल्यों पर प्रकाश डाला है।

परंपरा. संस्कार. रीति-रिवाज. अंधविश्वास. गीत. कथा. मेले. त्यौहार आदि सांस्कृतिक जीवन मूल्य का विस्तार से चित्रण महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। इस के साथ-साथ इन मूल्यों में परिवर्तन एवं विघटन को बताते हुए उसके कारणों पर भी अपनी कहानियों में प्रकाश डाला है।

5.2 धार्मिक जीवन मल्य

“धार्मिक मल्यों के अंतर्गत अव्यक्त सत्ता में विश्वास. भगवत-भक्ति. कीर्तन. गणगान. प्रार्थना आदि को लिया जा सकता है।”⁴¹ वस्तुतः परीक्ष अव्यक्त शक्ति में विश्वास धार्मिक मल्यो का आधार है। इस विश्वास के आधार पर नाम-स्म सत्संगति. गरु की महन्ता. तीर्थाटन-तीर्थस्थान. यज्ञ-अनष्टान आदि निर्गण-सग उपासनापरक साधनों के द्वारा परमात्मा शक्ति के निर्गण अथवा सगण रूप उपासना करना धार्मिक जीवन मल्य है।

भिन्न धर्म के लोगों में रहने के कारण भारत में सगण एवं निर्गण भक्त मिलते हैं। बहदेवतावाद भारत में प्रचलित है। एक ही धर्म के लोगों द्वारा कई देवताओं की पूजा की जाती है। लोग ईश्वर पर अटूट विश्वास रखते हैं।

5.2.1 ईश्वरवाद

‘राय प्रवीण’ कहानी में सावित्री के माध्यम से मैत्रेयी पष्पा ने ईश्वर के प्रति जीवन मल्य का चित्रण किया है। वीरेन्द्र और सावित्री पति-पत्नी हैं। बेतवा नदी में बाढ़ आ जाती है। सारा गाँव पानी में डूब जाता है. कोई चीज नहीं बचता सावित्री सोचती है कि—“तीन दिन गजर गये पानी नहीं उतरा। मौत ने नंगा नाच मचाया है। कितने बच पाये? छत पर टँगे लोगों को धरती का नहीं. आसमान का आसरा है। इन्द्र भगवान ने अपना भण्डार रिता दिया हो तो अब बस करो? अब हमारे पास क्या है? लत्ता. कपड़ा. बिलिया बासन तक चढ़ा दिए तम्हारी धारा में छीन ले गई बेतवा. जिसकी सदा हमने पूजा की। नदी लील रही है. लोगों को।”⁴²

नासिरा जी ने ‘ततडया’ कहानी में यद्वीर के माध्यम से किस प्रकार आदमी कष्ट में ईश्वर को याद करता है. इस पर प्रकाश डाला है। गाँव में मेला लगता है।

वहां सन्नो मेला देखने जाती है। वहां एक आदमी उसे उठा ले जाता है। यद्धवीर की माँ बहुत परेशान होती है। वही परेशानी यद्धवीर को भी होती है। वह हर सोचता रहता है कि— “हर पल यद्धवीर संताप से गजर रहा था। मन की शान्ति के लिए हनमान चालीसा या गायत्री मंत्र का जाप करना, मगर अपने को बिलव अकेला पाता।”⁴³

‘ततडया’ कहानी में नासिर शर्मा ने शन्नो के माध्यम से देवी-देवताओं व वर्णन किया है। दशहरे के मेले का आयोजन होता है तब सीता शन्नो बनती है। वह सोचती है कि—“शन्नो सब कुछ भलकर देवताओं के मुख ताक रही थी। तीनकमान से सजे सीता के अगल-बगल खड़े राम और लक्ष्मण को देखकर जैसे वह बौरा-सँ गड़। सर पर पड़ा रेशमी पल्ल सरककर कब कंधों पर आन गिरा उस पता न चला, बस वह अपने को सीता की जगह खड़ा महसूस कर रही थी।”⁴⁴

भारत में बहुदेवतावाद प्रचलित है हर धर्म का व्यक्ति अपने धर्म के स्वर पर विश्वास रखता है और अपने सखी जीवन की प्रार्थना करता है। धार्मिक जीवन मूल्य संबंधित ईश्वरवाद पर महिला कहानीकारों का चित्रण सराहनीय है।

5.2.2 धार्मिक विश्वास

‘सांप-सीढ़ी’ कहानी में राजन के माध्यम से धार्मिक विश्वास का चि लेखिका ने किया है। राजन स्टेशन मास्टर का टैस्ट देकर आता है तो अम्मा से बातें करता है। अम्मा समझाती है कि त नौकरी की क्या बात करता रहता है। राज अपनी मां से कहता है कि—“जब पता नहीं है तो बोला मत करो। खेती-खेती! साला जआ का खेल। लागत लगाकर समिरते रहो देवताओं को कि कोई कदरती विपता न आ गिरे। ओले, सखा, इल्ली, पाला साले सौ झंझट। अम्मा नौकरी वाला आद

भरपेट खाता है और टाँग फैलाकर सोता है।”⁴⁵

‘नौ-तपा’ कहानी में कश्ती राम के माध्यम से पिछले जन्म की बात का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया गया है। लच्छ और कश्ती राम में वार्तालाप चलता है। लच्छ कश्ती राम से पछता है कि कब तक वह लौटेंगे तो कश्ती राम कहता है कि—“भगवान करे हमरी तरफ से कभी न लौटे...जब से आए हैं मोहल्ला में तफान मचाए हैं. गण्डा-बदमाश की आवा-जावा लगी रहत है... सलमान बेचरवा कैसा सरीफ मनई रहा। पता नहीं पिछले जन्म माँ बोईस रहा अंत ऐसा भवा...ओके लडका का पता ही न चला वि जमीन खाए गई या आसमान...राम...राम”⁴⁶

‘विरासत’ कहानी में किशोरी लाल की बढिया विधवा के द्वारा ध विश्वास को दर्शाया गया है। कहानी में मोहरम का चाँद हो गया था। नगाडा बज उठा था। बल्लन और हिम्मत को दम मारने की फर्सत नहीं थी. छोटे-बड़े ताजिया. चादर. दपटटा. चाँदी के पंखे. हंसती. बेडी और चढावा संभालते हुए जलजना पीछे-पीछे चल रहे थे। हिंद औरते सज-धजकर चढाने के लिए खडी थीं। कछ नमौती मनाने आई थीं। सिंदर. आलते. बिंदी. से ऊपर से नीचे तक जगमग करती मौला से दिल की मराद माँग रही थी। कछ चादरें लिये बल्लन और हिम्मत को पकार रही थीं। विरासत कहानी में किशोरी लाल की बढिया विधवा कहती है— “बल्लन बेटे! हसैन के घोडे पर यह मन्नत बाँध दे. बह की गोद हरी हो।”⁴⁷

‘गोमा हँसती है’ में किडडा की शादी के बाद कलबतिया चाची उसके पिता से कहती है तो वह मना करते हैं कि इससे कौन शादी करेगा कलबतिया चाची उसके पिता से कहती है कि—“भाई रे भाई। फिर वो ही बात! अरे यह कहो कि छोरा का भाग उलटा हो गया। माता-भाई की मेहर कि चेहरा-मोहरा तो बिगडा ही. एक आँख

और ले गई मडया परमेसरी ।”⁴⁸

‘अपने-अपने लोग’ कहानी में मेहरुन्सिा परवेज ने समन के माध्यम धार्मिक विश्वास की बात कही गयी है नायिका समन अपनी मम्मी के बारे : सोचती है कि—“अम्मी जमेरात को कचहरी वाले बाबा की दरगाह पर अपनी गहस्थी की समस्या की अर्जी लगाने जातीं तो बाई को जाने कहां से खबर लग जाती और वह स्टल पर चढ़कर अम्मी से कहतीं—कचहरी वाले बाबा के दरबार तम जा रही हो. हमसे तो कहीं नहीं. लो यह सवा चार आने. अगरवत्ती लगाकर बाबा से कह आना. इस बरस सब बच्चे पास हो जाएँ ।”⁴⁹

‘नौ-तपा’ में एक दिन जब बब्बन कजडे ने सलमान कलईगर के और उसकी पत्नी को जान से मरवा देता है। तब उसका लडका लच्छ कलई का काम शुरू करता है। कश्ती राम कहता है कि—“बब्बन साले के घर-माँ बर्तन...? अरे बचवा. त नाही जानत कि यह सब कछ सलमान कलईगर का रहा...ओका घर छीन लीस हरामी पाल फल तो रहा है...कतल के मकदमा में बडा लौंडा हवालात मा बंद है। ओहि के मारे गए हैं। अजमेर दआ माँगे ।”⁵⁰

इसी कहानी में नासिरा शर्मा सलमान कलईगर की बीवी के माध्यम से मन्नत का चित्रण किया है। सलमान कलईग की औरत और मसीह में वार्तालाप चलता है। समीह कहता है कि माँ सभी बर्तनों को छिपा कर रखो नहीं तो ये लोग बर्तन को चरा लेंगे। उसकी माँ कहती है कि—“त है न पहरेदार...भला किसी की मजाल है जो तेरी माँ के बर्तनों को हाथ लगा सके? माँ-बेटे की बलाएं लेती। कितनी मन्नत-मरादों के बाद शादी के पंद्रह साल बाद समीह पैदा हुआ था ।”⁵¹

‘तीन किलो की छोरी’ कहानी में मदला गर्ग ने लल्ली बेन के माध्यम

सांस्कृतिक मूल्य मन्त का चित्रण प्रस्तुत किया है।

‘तीन किलो की छोरी’ कहानी में लल्ली बेन को बहुत मन्त मानने के बात लडकी पैदा होती है। वह कहती है कि—“मेरी किस्मत ही खराब है। बरत-उपवास किये. कितनी मन्त-मनौती माँगी. सब बेकार. भगवान ने एक सनी।”⁵²

‘नौ-तपा’ कहानी में लच्छ को पता चलता है कि उसके माँ के सारे बर्तन उन लोगों ने बेच दिया तो वह पागल हो जाता है। क्योंकि वह उन्हीं बर्तनों को देखने के लिए आता है। रंगरेजिन कहती है. कि सन लच्छ बेटा तो वह कहता है. मर गय लच्छ। तब अंगरेजिन कहती है कि—“आसमान आग बरसा रहा है...नौ-तपा लगा है. ऊपर से भरी जवानी में यँ धप-धप घमना. लडका बौराएगा नहीं क्या? सना कल उधर भी गया था। हिंदआनी जाद सर चढ कर बोलते हैं। मेरा अल्लाह करना।”⁵³

‘कांटों का झरमट’ कहानी में बंजाभी को मारने का प्रयत्न करता है “स्याह घरती पर बैठा सोमरों चौकन्ना हुआ। मेरा अपमान कर रहा है। और उस पैशाची के कारण धोटल जाता है. उसने अपना तीरकमान निराला और बंजाभी की गर्दन पर निशाना साधा। माधवी ने देखा. पीछे आकर धक्का दे दिया। तीर बा छीलता हुआ गजरा।”⁵⁵

‘सतघरवा’ कहानी में नासिरा शर्मा ने पर्वजन्म का चित्रण किसान के माध्यम से किया है। कहानी में बहुत समय पहले जब वह छत्ता निकाल रहा था तो उसने आग जलाई तो उसका लौ एक किसान परिवार के घर में जा गिरी जिससे किसान का बहुत बड़ा नकशान हुआ तब से वह आग नहीं जलाता है— “किसी को पता नहीं

चला कि उसी की जलाई आग से किसान का घर जला है। किसान भी और भाग्य को कोसती रही. किसान पर्वजन्म के लिए पाप को कोसता रहा. मगर उसकी आँखों ने सब कछ देखा था।”⁵⁶

‘घरे का विरवा’ कहानी में लेखिका ने मेडम के माध्यम से भोपाल गैस त्रासदी में आहत लोगों के अधिकार की बात कही है। इसमें एक मैडम किसनवा को सरकारी मआवजा देने के लिए प्रयास करती है. और उनको मआवजा मिल जात किसनवा कहता है कि आप की दया है तो मैडम किसनवा से कहती है कि—“दया नहीं. किसनवा. वह तो तम्हारा अधिकार है. देर से सही. पर मिला तो। खदा के घर देर है. अंधेर नहीं न।”⁵⁷

‘चाँद तारों की शतरंज’ कहानी में शरफ के घर जब पतंग का कारोबार चलने लगता है. तब एक दिन ईर्ष्या वस उसका भाई सलीम चपके से पतंग में छेद कर देता है. तो उसी को जेहन में रखते हए हसीना कहती है—“जिसने हमारी पतंग मा छेद किए है. ओका जिगर छलनी हो। आँत कट-कट के गिरेब. लकवा मार जाए।”⁵⁸

‘राय प्रवीण’ कहानी में जब गाँव में बाढ आ जाती है. तो लोग परेशान हो जाते हैं. तो सावित्री सोचती है कि—घर में रखे अनाज को बचाने के लिए तमा उद्यम किए. सावित्री दो पोटली ही चढा पाई छत पर। आग और पानी का प्रकोप किसी को जिंदा छोडता है? नदी दीवारों को रौदने लगी। दहाई बेतवा मडया र तबाही...। अपने पाप-पण्य याद करने लगा आदमी।”⁵⁹

“धार्मिकता की अति ने देश का विनाश किया. इस अनमान से भी भागा नहीं जा सकता। और यह धार्मिकता भी गलत किस्म की धार्मिकता थी. जिसका उद्देश्य परम सत्ता की खोज नहीं. प्रत्यत. यह विचार था कि किसका छआ हआ पानी पीना

चाहिए। और किसका नहीं. किसका छआ हआ खाना चाहिए और किसका नहीं किसके स्पर्श से अशुद्ध होने पर आदमी स्थान से पवित्र हो जाता है. और किसके स्पर्श से हड्डी तक अपवित्र हो जाती हैं।”⁶⁰

धार्मिक विश्वास भारत में अधिक देखने को मिलता है। धार्मिक होने कारण लोगों में यह विश्वास है कि असंभव कार्य भी संभव हो सकता है। इसलिए मानव भगवान से असंभव कार्य को परा करने की आशा रखता है। जिसको ह धार्मिक अंधविश्वास के अर्थ में भी समझ सकते हैं। धार्मिक विश्वास पर महित कहानीकारों का चित्रण बहुत अच्छा है।

5.2.3 नमाज. पजा एवं उपवास

धार्मिक लोग अपने भगवान को प्रसन्न करने के लिए उनकी भक्ति में नमाज. पजा. उपवास. रोजा. रखते हैं। इससे उनका धार्मिक विश्वास बढ़ जाता है। वह यह सोचते हैं कि भगवान उनसे प्रसन्न होंगे। वे अपनी मन की इच्छाएं भगवान से प्रकट करते हैं। परे होने पर भगवान की लीला मानते हैं।

नमाज

‘सतघरवा’ कहानी में अब्दल नमाज पढ़ता है। छत्ता निकालने अब्दल आता है। साहब की माता से अब्दल बहुत घल-मिल जाता है। इसीलिए वह दादी माँ से मिलने के लिए आता है. उसी वक्त नमाज का वक्त हो जाता है। वह दादी जान से कहता है कि—“दादीजान सरज ओट में जा रहा है. अगर आप कहें तो मैं नमाज पढ़ लँ। फिर आप से बात करूँगा। कहता हआ अब्दल कछ दर पर बाल्टी और झोला रख एक बड़ी-सी सती तौलिया बिछा उस पर नमाज पढ़ने लगा। नमाज पढ़ चका तो माताजी के पैरों के पास पालती मार कर बैठ गया।”⁶¹

पजा

‘राय प्रवीण’ कहानी में गोविन्द नाम का एक गाइड विदेशी पर्यटकों को घमाने का काम करता है। तरह-तरह की बातें बनाता है। “देशी पर्यटकों को वह तीर्थयात्री से ज्यादा कछ नहीं मानता। वे ऐतिहासिक धरोहर को बेजायका चीज समझ धार्मिक स्थानों की शरण में जाना पसंद करते हैं। उनके चलते गाइड को उससे मेहनताना देने की अपेक्षा महंत और पजारियों के चरणों में दक्षिणा चढ़ाना ज्यादा फायदे का सौदा है— परलोक सधारने का ठेका।...”⁶²

‘बिछड़े हए’ कहानी में सग्रीव गाँव में आता है उसी समय मंगना उस लड़की की शादी रहती है। लोग मंगना की शादी की बातें कर रहे थे। र विमोहित होकर मंगना को देखता है—ग्राम बधएँ उसी को पजन कराने ले गई थीं। पजन के बाद तो घर से निकलती नहीं?”⁶³

‘ततडया’ कहानी में लेखिका ने बारिन के माध्यम से पजा का वर्णन किया है। शन्नो बारिन की बह को कोई आदमी मेले से उठा ले जाता है तो लेखिका के शब्दों में—“सारे दिन बारिन बहकी-बहकी रही। तवे पर रोटी डालती तो उल्टना जाती। दध उबलकर गिरने लगता तो उसे उतारने की सध न रहती। बस आँख के सामने रात की घटना डबती-उतराती रही। राम-राम राधे श्याम का जाप करने पर भी उसकी बदहवासी में कोई फर्क नहीं पडा।”⁶⁴

शन्नो बारिन की बह घर पर आ जाती है तो बारिन अपने लड़के को उसके पास भेजकर बहुत खश होती है। और वहां कहती है कि—“यद्वीर के जाने के बाद बारिन ने तलसी के आले के सामने माथा नवाया और मन ही मन बोली. व आपकी जो मन की ततडया के डंक तोड़ने में सफल भई।”⁶⁵

इसी कहानी में बारिन सबह-सबह जगती तो लोगों के बारे में उसके मन में बरे ख्याल आते रहते हैं। वह सोचती है कि—“सबह अँधेरे मँह उठकर नहाती-धोती और आले में लगे तलसी के पौधे में पानी डाल जब अपने हाथ जोड़ती तो अपने को धिक्कारती कि कैसा पाप चढ़ा रही है. अपने माथे सब के बारे में गंदे विचार रख! फिर मन की शब्दि के लिए वह माथा टेकती कि आगे से वह ऐसी बातें सोचेगी।”⁶⁶

इसी कहानी में नासिरा शर्मा ने शन्नो के माध्यम से तलसी की पजा का वर्णन किया है। शन्नो को कोर्ड लेकर भाग जाता है. तो एक दिन यद्धवीर अपनी साइकिल पर ले आता है। लेखिका के शब्दों में—“दधिया अँधेरा अभी फटा न था कि यद्धवीर की साइकिल पर पीछे बैठी शन्नो लौट आई। दोनों को एक साथ घर लोटा दे बारिन की जान मे जान आई। तलसी के आगे सर नवाकर वह रसोई में जा बैठी के लिए गड और पानी से भरी लटिया ले आई। इस बीच शन्नो सामाने वाली छोटे कोठरिया में शरण ले चकी थी।”⁶⁷

उपवास

‘ताला खला है पापा’ कहानी में जगदीश चौबे बिन्दो के कमरे में जाते हैं वहां पत्र मिलता है। जो बिन्दो अपनी डायरी में लिखी रहती है। उसे जगदीश चौबे पढ़ने लगते हैं। “बखार नहीं टटा। स्कल जाने का सिलसिला टट गया। अरविन्द जो काफी नोटस उतारने के लिए दे जाता. उसी को छाती से चिपकाए लेटी रहती। वह अपनी कॉपी माँगता. मैं देना नहीं चाहती। असल में वह भी कॉपी लेने आता नहीं था। उसने मेरे अच्छे होने के लिए उपवास रखा। देवता पर नारियल चढ़ाने को बोला वह बहत उदास रहता है।”⁶⁸

नमाज. पजा. उपवास द्वारा मानव अपने भगवान के प्रति अपनी भक्ति प्रकट करता है। इससे भगवान के प्रति उसकी श्रद्धा प्रकट होती है। महिला कहानीकारों की कहानियों में धार्मिक मूल्य संबंधित नमाज. पजा. उपवास का चित्रण उत्तम है।

5.2.4 फकीर. साध. संत. सन्यासी एवं ज्योतिषी

भारतीय लोग धार्मिक होने के कारण धार्मिक लोगों फकीर. साध. ज्योतिषियों पर अधिक विश्वास रखते हैं। ये लोग धार्मिक होने के कारण लोगों को गमराह करते हैं। अपने स्वार्थ के लिए लोगों को मानसिक एवं आर्थिक रूप से वहकाते हैं और उनका फायदा उठाते हैं

“हमारे यहाँ प्रान्त-प्रान्त में हुए साध. सन्त. महात्मा. वीर पुरुष. वि सर्वसंगपरित्याग कर अवनितल पर सर्वत्र विचरने वाले हजारों परिव्राजक संन्यासियों की अदभुत परम्परा. हमारे यहाँ का सखी. समृद्ध और नीतियुक्त जीवन आदि सब बातों की ओर उन्होंने सविधापूर्वक दर्शक किया। पाश्चात्यों की आलोचना-प्रणाली में जो आया उतना ही धर्म का अंश उन्होंने उठाया और उसका मनमाना किया।”⁶⁹

‘गँगी गवाही’ कहानी में जो पात्र है. वह जात के फकीर हैं। जब कोई भू आदमी मरता है. तो उसकी सभी चीजें इनको दिया जाता है। मर्दे की जितनी भू चीज है यह सब उन लोगों को दे दिया जाता है। एक दिन बडकी मौसी कहती है कि— “पहले मर्दे के कपड़ा पहने से डर लगत रहा कि आते-जाते कहीं रूह से भेंट मलाकात हो गई और वह पछ बैठी कि कहो गौहर की बीबी. हमार कपडवा पहनकर कहाँ जात हो. तो का जबाव बन पड़ी?”⁷⁰

‘साँप-सीढ़ी’ कहानी में राजन जब पढ़-लिख कर गाँव आता है तो वह तारु

से अपनी नौकरी के लिए कहता है कि ताऊ खेत बेच दो। ताऊ बहुत नाराज होते हैं। वह कहता है कि— “आज जैसा कुछ भी नहीं...इसीलिए तो बाईस-चौबीस वर्ष पराने वक्त को अशिक्षित और असभ्यों का जमाना मानता है। कह तो रहा था। भले पंचवर्षीय योजना के जरिए विकास आगे था। पर तम्हारे जैसे परानी लीक को : छोड़ने वाले लोग बैलगाड़ी की रफतार से चलते रहे। अंधविश्वासी इतने कि धरती आसमान को देवता-मानकर पजें। अस्पताल के डॉक्टरों के हाथ में इंजेक्शन थम देखकर डर के मारे नीम-हकीमों के शरण चले जाये। पीर फकीरों से गंडे-तावी माँगे।”⁷¹

‘ततडया’ कहानी में नासिरा शर्मा ने शन्नो के पति यद्वीर के द्वारा तावीज का वर्णन किया गया है। शन्नो को कोई लेकर भाग जाता है, तो उसका पति यद्वीर सोचता है कि—“शन्नो भाग गई, आखिर क्यों? कुछ दिन पहले ही तो पता चला था कि... माँ खशी से भरकर कोई परानी तावीज संदक से निकाल लाई थी। उसव शन्नो के बाज पर बाँधते हुए उसने दशहरे बाद उत्सव मनाने का कार्यक्रम बनाया था। फिर एकाएक यह भकंप?”⁷²

‘विरासत’ कहानी में जाड़ा धीरे-धीरे बढ़ने लगा था। बारिश होने से सात बजे शाम से ही रात अंधेरी और बर्फीली हो उठती थी। ठंडे पानी से वज करने से पल्ला मिन्या के चाचा को नमोनियां हो जाता, और चट-पट मौत ने बिस्तर बाँध दिया। बेटों के इंतजार में सारे दिन मय्यत रखी रही। मगर जब एकाएक लाश खराब होने लगी तो बल्लन को कब्र तैयार करने की खबर भेजी गयी। शन्नो बल्लन शाह से कहती है- अम्मा कहलाइन हैं कि कल बडे मौलवी आए रहे हैं सो मिटटी फँक देंगे।”⁷³

‘सतघरवा’ कहानी में साहब ऑफिस जा रहे होते हैं, तब मधमक्खियाँ काट

लेती हैं। मधमक्खियों का छत्ता निकालने के लिए माली को बलाया जाता है। तो वह एक अब्दल नाम के आदमी को बलाकर ले आता है। अब्दल और चाचा में बात होती है अब्दल कहता है कि— “नहीं चाचा! अब्दल को देख मक्खियाँ खद उड़ जाती हैं। अरे बाज पर बँधी तावीज देख रहे हो. बड़े मौलवी की दी हर्ड है।”⁷⁴

‘बिछड़े हुए’ कहानी में लेखिका ने चंदा के माध्यम से अपने पति को पहचानने से इन्कार करती हर्ड दिखायी दिया है. गाँव में सग्रीव शतानन्द बनकर आते हैं तो उनकी पत्नी चंदा को बलाया जाता है. तो चंदा अपनी बेटी से कहती है. कि—“मगर बोरे को सँभालते हर्ड चंदा बेटी के पास जा पहुँची। टटती हर्ड आवाज में बोली. मगना बेटी. त यहां... घर में तो कितना काम फैला है! इस गाँव में आदमी तो बावरे ठहरे. जो भी साध आता है. उसे ही तेरा पिता...”⁷⁵

इसी कहानी में जब शतानन्द गाँव में आते हैं उसके बाद उनकी पत्नी चंदा को बलाया जाता है। वह बहुत घबराये हुए रहते हैं वह मन में सोचते हैं कि “संयम नियंत्रण. अंकश. निग्रह पर परी शक्ति से लगे हैं शतानन्द. लेकिन सीने में हिलोरे उठ रही हैं। आवेश का अतिरेक दाढी. मछों में छिपा गए-बडी चतराई से। होंठ को दाँत से कचलते हुए. काले की तरल घँटते हुए सोचते रहे. नहीं मानेगी तो कह देंगे- हम जोगी-जती हैं माता। मत्य-भवन में हमारा कोई सगा-संबंधी नहीं। सन्यासी का नाता-पानी का बगला मोह में न फाँसे।”⁷⁶

सग्रीव गाँव में आता है. तो लोग उसे देखने के लिए आते हैं। कोई आदमी कहता है कि चंदा अभी तक नहीं आयी तो सग्रीव बड़े आतर मन से ध्यान करते हैं. और फिर सोचते हैं कि—“फिर मर्खता! जिस स्त्री का तेरे जीवन में कोई स्थान नहीं. जिससे कोई लगाव नहीं. उससे डर कैसा? उसके लिए पछतावा क्यों? सांघम. त्यागी.

संत त साध-जन्म की भ्रष्ट मत कर।”⁷⁷

‘कांटों के झरमट’ कहानी में एक दिन टोनिया का लडका बीमार पड गया था। लेकिन टोनियां उसके झाड-फंक में लगा रहता है। “दिन-भर बैठा वह पढकर झाड-फंक करता रहा और टायफायड में जलते बच्चे ने आंखे उलट दीं। वह स्वयं भागता हुआ डॉक्टर को डढने निकला।”⁷⁸

फकीर. साध. संत. सन्यासी. ज्योतिषी और ताबीज. मंत्र-तंत्र. झाड-प जाद-टोना. ज्योतिष से संबंधित मानव का विश्वास और इन विश्वास के कारण मानव समुदाय की हानि और लाभ का चित्रण महिला कहानीकारों ने प्रस्तुत किया है। इससे संबंधित जीवन मूल्यों में परिवर्तन की जरूरत पर भी विचार प्रकट किये गये हैं।

5.2.5 साम्प्रदायिक भावना

भारत में कई धर्म के लोग रहते हैं। जिसमें हिन्दू और मुसलमान अधिक हैं। मुस्लिम शासकों के भारत में आक्रमण के बाद भारत में मुसलमान लोग बस गये हैं। इनके धर्म अलग होने पर भी संस्कार एक जैसे लगते हैं। मुसलमानों को लेकर अन्य धर्म वालों के साम्प्रदायिक भावना भारत में दिखायी देता है। महिला कहानीकार नासिरा शर्मा अपनी कहानियों में हिन्दू-मुस्लिम की साम्प्रदायिक भावनाओं के मूल्य को प्रस्तुत किया है।

‘आया बसंत सखी’ कहानी में मोहर्रम का महीना आता है. तब उसमें नौ रोज होता है। महल्ले को सजाया जाता है. तब करैशी कहता है कि-ये मुसलमान कहाँ से हैं.... इनके रीति-रिवाज हिंदुओं वाले हैं होली की तरह नौ रोज मनाते हैं और दशहरा की तरह मोहर्रम। वहाँ कीर्तन-भजन होता है। यहाँ नौहा-सौजखानी. वहाँ मंदिर में मूर्तियाँ सजती हैं। यहाँ इमामबाडों में जरी-तजिया अलम पटका सजता है। खदा जाने

क्या-क्या ठोंग हैं इनके.... ।”⁷⁹

‘आया बसंत सखी’ कहानी में शहर में साम्प्रदायिक दंगा शुरू होता है। सभी लोग आपस में बातें करते हैं। भडभजे कहता है कि-“सत्ता और प्रसाद की बात तम जानो. मगर ये बातें भलेमानस की नहीं हैं। शिया-सन्नी का भेद-भाव का क्या अर्थ है? जब हम-तम यहाँ सख-चैन से रूखी-सखी खाकर जीते हैं तो फिर धर्म-१ आपस में लड़े...उचित नहीं हैं।”⁸⁰

‘आया बसंत सखी’ कहानी में लेखिका ने सल्ताना के माध्यम से साम्प्रदायिक दंगा करने वालों पर व्यंग्य किया है। साम्प्रदायिक दंगे समाप्त हो जाता है। दो बहनें आपास में बात करती हैं कि-“ये लोग बसंत नहीं आने देंगे. फल कभी नहीं खिलने देंगे. जख्मों को नहीं भरने देंगे. इन्हें मैं बहत दिनों से जानती हूँ. बन्नो. बहत दिनों से। फिर यह फसाद मझे नया जख्म दे गया। तेरा आखिरी भाई भी इस फसाद की नजर हो गया।” सल्ताना की सिसकियाँ टटकर बरसीं।”⁸¹

इसी कहानी में लेखिका ने साम्प्रदायिक दंगों में हताहत होने वाले लोगों का बड़ा मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। कहानी में शिया-सन्नी फसाद हो जाता है “सन्नी-शिया फसाद हुए अभी दो दिन ही गजरे थे. मगर मरने वालों और तबाह होने वाली चीजों की संख्या अनगिनत थी। दो गरीब वर्ग एक-दसरे के खून के प्यासे हो गए थे। क्यों? किसलिए? पता नहीं कौन-सी कयामत सर पर से गजर गई. इसका भी होश किसी को नहीं था। इमदाद के नाम पर एक ओर बाजार गर्म था. और यहाँ भी उस बेकस का हाथ खाली था।”⁸²

‘आया बसंत सखी’ कहानी में साम्प्रदायिक दंगे का वर्णन करैशी के माध्यम से किया गया है। कहानी में करैशी कमर पर हाथ रख कर कहता है. कि—अभी हँस

रहे हैं...मोहरम में सीना कटेंगे. रोएंगे...हसैन की शहादत पर मर्सिया पढ़ेंगे और...इस बार इनको फनकारी का मजा चखाना चाहिए ताकि हमेशा के लिए भूल जा कटार्ड-सिलार्ड। ऐसी कटार्ड होगी इनकी कि बेवाए सीना कटती रह जाएँगी।”⁸³

‘सबीना के चालीस चोर’ कहानी में सकीना के द्वारा मजहब पर विचार प्रस्तुत है। शहर में दंगा होता है. तो सकीना इससे बहुत आहत होती है। तो माता-पिता आपस में बातें करते हैं। उसकी माँ कहती है कि—“कल से बार-बार एक ही बात कहे जा रही है कि मैं नेहा भाभी का सामना कैसे करूँगी कई बार समझाया कि रमेश की मौत में तम्हारी क्या खता है? यह चोर-उचक्के किसी खास मजहब और कौम से नहीं होते हैं. इनकी तो जात ही अलग है।”⁸⁴

इसी कहानी में नासिरा जी ने शाहरुख के माध्यम से भाईचारे का वर्णन किया है। कहानी में एक दिन सब सबीना अपनी नानी के बात कर रही है. कि नानी ये कौन से चोर हैं और नानी के गोद से उतर कर माँ के पास खड़ी होती है. तो उसके नाना कहते हैं कि—“ये ईमान के चोर हैं. जो दिलों में सेंध करके मोहब्बत चराते हैं. ताकि कोई प्यार और भाईचारे की बात न करे। और न ही सकन से रह सके।’ सबीना के नाना ने कहा और उठकर दूसरे कमरे में चले गये।”⁸⁵

‘नील गाय की आँखें’ कहानी में नमिता सिंह ने साम्प्रदायिक दंगों का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। कहानी में नेहा राजनीति में सक्रिय थी. अच्छी प्रभावशाली वक्ता। प्रीतीश की जिंदगी में वरदान साबित हुई. “राजनीतिक पटल पर उठा-पटक का दौर जोरों पर था। हाल में हुए साम्प्रदायिक दंगों की चपेट में आया परा प्रदेश निरंतर सलग रहा था। ज्यो-ज्यों चुनाव नजदीक आ रहे थे. यह आग और तेज हो रही थी।”⁸⁶

‘आया बसंत सखी’ कहानी में करैसी के माध्यम से धार्मिक साम्प्रदायिक विचार का वर्णन किया गया है। मोहर्रम का महीना आता है। उसमें नौ रोज होता है। महल्ले को सजाया जाता है. तब करैली कहता है कि- “ये मसलमान कहाँ से हैं...इन रीति-रिवाज हिंदओं वाले हैं होली की तरह नौ रोज मनाते हैं और दशहरे की तरह मोहर्रम। वहाँ कीर्तन-भजन होता है। यहाँ नौहा-सौजखानी. वहाँ मंदिर में मर्ति सजती हैं। यहाँ इमामबाडों में जरी-ताजिया अलम पटका सजता है। खदा २ क्या-क्या ढोंग है इनके...”⁸⁷

महिला कहानीकारों ने विवेचित कहानियों में धार्मिक मल्यों में सांप्रदायिक भावना में एकता एवं प्रेम की आवश्यकता पर वाणी प्रदान की है। सांप्रदायिक झगडों के कारण धार्मिक. भेदभाव. जीवन मल्यों में परिवर्तन एवं मानवता के नाश कैसे करते इस पर प्रकाश डाला गया है।

धार्मिक जीवन के अंतर्गत महिला कहानीकारों ने भारतीय लोगों के संबंधित मल्यों पर बहुत ही अच्छी तरह से प्रकाश डाला है। इसके साथ-साथ मल्यों का चित्रण भी प्रस्तुत किया है। सांप्रदायिक भावना के अंतर्गत धार्मिक व्यक्तियों के झगडे एक धर्म के व्यक्ति दूसरे धर्म के व्यक्ति के प्रति विचार प्रकट किये हैं। विभिन्न धर्मों के लोगों के बीच एकता के लिए आवाज दी है।

संदर्भ

1. ममता कालिया. 'डरादा'. 'जाँच अभी जारी है'. लोक भारती पेपर बैक्स. प्रथम संस्करण. 1997 ई.. पष्ठ-152
2. मैत्रेयी पष्पा. 'रास'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1998 ई. पष्ठ-146
3. नासिरा शर्मा. 'ततडया'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1997 ई.. पष्ठ-71-72
4. नासिरा शर्मा. 'नौ-तपा'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1997 ई.. पष्ठ-162
5. मेहरुन्निसा परवेज. 'लौट जाओ बाब जी'. अम्मा. ज्ञान गंगा. प्रथम संस्करण. 1997 ई०. पष्ठ-36
6. मेहरुन्निसा परवेज. 'पापा का घर'. अम्मा. ज्ञान गंगा. प्रथम संस्करण. 1997 ई०. पष्ठ-80
7. नासिरा शर्मा. 'ततडया'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1997 ई.. पष्ठ-75
8. मैत्रेयी पष्पा. 'प्रेम भाई एण्ड पार्टी'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1998 ई.. पष्ठ-69
9. नासिरा शर्मा. 'सबीना के चालीस चोर'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1997 ई.. पष्ठ-186
10. नासिरा शर्मा. 'गँगी गवाही'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-79
11. वही. पष्ठ-89
12. वही. पष्ठ-81

13. मैत्रेयी पष्पा. 'बिछडे हए...'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1998 ई.. पष्ठ-62
14. वही. पष्ठ-62
15. मेहरुन्निसा परवेज. 'घरे का बिरवा' 'अम्मा. ज्ञान गंगा. प्रथम संस्करण. 1997 ई0. पष्ठ-58
16. नासिरा शर्मा. 'उसका बेटा'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्र संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-114
17. नमिता सिंह. 'जंगल गाथा'. जंगल गाथा. वाणी प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1994 ई. पष्ठ-10
18. नमिता सिंह. 'बन्तो'. जंगल गाथा. वाणी प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1994 ई. पष्ठ-49
19. ममता कालिया. 'उमस'. 'जाँच अभी जारी है'. लोक भारती पेपर बैक्स. प्रथम संस्करण. 1997 ई.. पष्ठ-21
20. ममता कालिया. 'सेमिनार'. 'जाँच अभी जारी है'. लोक भारती पेपर बैक्स. प्रथम संस्करण. 1997 ई.. पष्ठ-17
21. नासिरा शर्मा. 'वसियत'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-26
22. नासिरा शर्मा. 'चाँद-तारों की शतरंज'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-31
23. नासिरा शर्मा. 'ततडया'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-76
24. नासिरा शर्मा. 'सतघरवा'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-102
25. मैत्रेयी पष्पा. 'रास'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1998 ई. पष्ठ-146
26. मैत्रेयी पष्पा. 'गोमा हँसती है'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1998

ई.. पष्ठ-180

27. मैत्रेयी पष्पा. 'गोमा हँसती है'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1998

ई.. पष्ठ-186

28. नासिरा शर्मा. 'चाँद-तारों की शतरंज'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-48

29. मैत्रेयी पष्पा. 'बारहवीं रात'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1998 ई.. पष्ठ-165

30. नासिरा शर्मा. 'ततडया'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-67

31. मैत्रेयी पष्पा. 'रास'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1998 ई. पष्ठ-144

32. वही. पष्ठ-141

33. मैत्रेयी पष्पा. 'प्रेम भाई एण्ड पार्टी'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1998 ई.. पष्ठ-68

34. वही. पष्ठ-74

35. मैत्रेयी पष्पा. 'राय प्रवीण'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 2010 ई. . पष्ठ-37

36. नासिरा शर्मा. 'ततडया'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-63

37. नमिता सिंह. 'राम लीला'. 'नील गाय की आँखें'. वाणी प्रकाशन. नयी दिल्ली. द्वितीय संस्करण. 1997 ई. पष्ठ-71

38. नासिरा शर्मा. 'ततडया'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-73

39. नासिरा शर्मा. 'आया बसंत सखी'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-204-205
40. नासिरा शर्मा. 'चिमगादड़ें'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-152
41. डॉ. धर्मपाल मैनी. 'भारतीय जीवन मल्य'. श्री बाबा साहेब आपटे. स्मारक समिति. चंडीगढ़. संस्करण-1998. पष्ठ-186
42. मैत्रेयी पष्पा. 'राय प्रवीण'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1998 ई. . पष्ठ-47
43. नासिरा शर्मा. 'ततडया'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-70
44. वही. पष्ठ-64
45. मैत्रेयी पष्पा. 'साँप-सीढी'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1998 ई. . पष्ठ-100-101
46. नासिरा शर्मा. 'नौ-तपा'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-165
47. नासिरा शर्मा. 'विरासत'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-17
48. मैत्रेयी पष्पा. 'गोमा हँसती है'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1998 ई.. पष्ठ-172
49. मेहरुन्निसा परवेज. 'अपने-अपने लोग' 'अम्मा. ज्ञान गंगा. प्रथम संस्करण. 1997 ई०. पष्ठ-141-142
50. नासिरा शर्मा. 'नौ-तपा'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-165

51. नासिरा शर्मा. 'नौ-तपा'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-164
52. मदला गर्ग. 'तीन किलो की छोरी'. शहर के नाम. भारतीय ज्ञानपीठ. प्रथम संस्करण. 1990 ई.. पष्ठ-22
53. नासिरा शर्मा. 'नौ-तपा'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-172
55. कृष्णा अग्निहोत्री. 'काँटो का झरमट'. जिंदा आदमी. ज्ञानगंगा प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1986. पष्ठ-4
56. नासिरा शर्मा. 'सतघरवा'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-103
57. मेहरुन्निसा परवेज. 'घरे का बिरवा'. अम्मा. ज्ञान गंगा. प्रथम संस्करण. 1997 : पष्ठ-60
58. नासिरा शर्मा. 'चाँद-तारों की शतरंज'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-49
59. मैत्रेयी पष्पा. 'राय प्रवीण'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 2010 ई. . पष्ठ-46
60. रामधारी सिंह दिनकर. संस्कृति के चार अध्याय. लोक भारती प्रकाशन. संस्करण-2013. पष्ठ-295
61. नासिरा शर्मा. 'सतघरवा'. सबीना के चालीस चोर. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-107
62. मैत्रेयी पष्पा. 'राय प्रवीण'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1998 ई. . पष्ठ-34

63. मैत्रेयी पष्पा. 'बिछड़े हए...'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1998 ई.. पष्ठ-62
68. नासिरा शर्मा. 'ततडया'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-73
69. वही. पष्ठ-77
70. वही. पष्ठ-63
71. वही. पष्ठ-64
72. मैत्रेयी पष्पा. 'ताला खला है पापा'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1998 ई.. पष्ठ-83
73. प्र. ग. सहसबद्धे. जीवन-मल्य. भाग-3. सरचि प्रकाशन. नई दिल्ली. पष्ठ-132
74. नासिरा शर्मा. 'गँगी गवाही'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्र. संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-81
64. मैत्रेयी पष्पा. 'बिछड़े हए...'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1998 ई.. पष्ठ-64
65. वही. पष्ठ-63
66. वही. पष्ठ-62
67. कष्णा अग्निहोत्री. 'काँटो का झरमट'. जिंदा आदमी. ज्ञानभारती. रूप नगर. दिल्ली. प्रथम संस्करण. 1986. पष्ठ-5
75. मैत्रेयी पष्पा. 'साँप-सीढी'. गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. 1998 ई. . पष्ठ-95
76. नासिरा शर्मा. 'ततडया'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-67

77. नासिरा शर्मा. 'विरासत'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-19
78. नासिरा शर्मा. 'सतघरवा'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-101
79. नासिरा शर्मा. 'आया बसंत सखी'. 'सबीना के चालीस चोर' किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-205
80. वही. पष्ठ-206
81. वही. पष्ठ-208
82. वही. पष्ठ-207
83. वही. पष्ठ-205
84. वही. पष्ठ-191
85. नासिरा शर्मा. 'सबीना के चालीस चोर'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-176
86. नमिता सिंह. 'नील गाय की आँखें'. नील गाय की आँखें. वाणी प्रकाशन. नयी दिल्ली. द्वितीय संस्करण-1997 ई.. पष्ठ-152
87. नासिरा शर्मा— 'आया बसंत सखी'. 'सबीना के चालीस चोर'. किताब घर प्रकाशन. प्रथम संस्करण. दिसम्बर 1997 ई.. पष्ठ-198

शोध सामग्री के स्रोत

कहानी संग्रह : आधार ग्रंथ

1. अग्निहोत्री कण्ठा : जिंदा आदमी. ज्ञान भारती रूप नगर. दिल्ली
संस्करण-1997
2. कालिया ममता : जाँच अभी जारी है. लोक भारती. पेपर बैक्स
संस्करण-2010
3. गर्ग मदला : शहर के नाम. भारतीय ज्ञान पीठ.
संस्करण-1990
4. चन्द्रकान्ता : ओ सोनकिसरी. राजकमल प्रकाशन. नयी दिल्ली.
प्रथम संस्करण-1991
5. परवेज मेहरुन्निसा : अम्मा. ज्ञान गंगा. प्रथम संस्करण-1997
6. पष्पा मैत्रेयी : गोमा हँसती है. किताब घर प्रकाशन. नयी दिल्ली.
संस्करण-2010
7. शर्मा नासिरा : सबीना के चालीस चोर. किताब घर प्रकाशन
नयी दिल्ली. संस्करण- दिसम्बर-1997
8. शर्मा नासिरा : खदा की वापसी. भारतीय ज्ञान पीठ. नई दिल्ली.
तृतीय संस्करण. 2001
9. सिंह नमिता : जंगलगाथा. वाणी प्रकाशन. संस्करण द्वितीय
1994
10. सिंह नमिता : नील गाय की आँखें. वाणी प्रकाशन. नई दिल्ली.
द्वितीय संस्करण. 1997

सहायक ग्रंथ

1. डॉ. अब्दल उस्मान खान : स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी-कविता में राजनीति
चेतना. विशाल पब्लिकेशन पटना. प्रथम
संस्करण-2007
2. डॉ. अमरनाथ : हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली.
राजकमल प्रकाशन. संस्करण-2012
3. अवस्थी मोहन : हिन्दी साहित्य का विवेचन परक इतिहास.
वाणी प्रकाशन. संस्करण प्रथम-2008
4. आहजा. आहजा राम : समाजशास्त्र विवेचन एवं परिप्रेक्ष्य
आहजा मकेश प्रकाशन-रावत पब्लि
संस्करण-2008
5. उप्रेती. डॉ. कन्दन लाल : साहित्य समीक्षा. नए संदर्भ. स
प्रकाशन. संस्करण प्रथम. 1999
6. उप्रेती. मधर : हिन्दी की पहली कहानी. भारत प्रकाशन
मन्दिर (रजि.) अलीगढ़. संस्करण-1984
7. कमलेश्वर : नयी कहानी की भूमिका. अक्षर प्रकाशन
संस्करण-1966
8. कुमार कृष्ण : कहानी के नये प्रतिमान. वाणी प्रकाशन.
संस्करण-2012
9. गर्ग. डॉ. मैरुलाल : स्वतंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में सामाजिक
परिवर्तन. संस्करण-1979

10. गप्ता. डॉ. उर्मिला : स्वतंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएं. अन
प्रकाशन. महरौली. नई
संस्करण-1978
11. गप्ता. सं. महला एन के : राजीवन शर्मा. जय प्रकाश. श्रीवास्तव
रवि. वर्ग विचारधारा स्वं समाज. रावत
पब्लिकेशन. जयपर. प्रथम-1994
12. गप्ता. डॉ. लाल चंद : नई कहानी पर अस्तित्ववाद का प्रभाव.
नई दिल्ली
13. गोयल. डॉ. अनिल : हिन्दी कहानी में नारी की सामाजि
भूमिका. आर्याना. पब्लिशिंग हाऊस नई
दिल्ली. प्रथम संस्करण-1985
14. चौधरी. सरेन्द्र : हिन्दी कहानी प्रक्रिया और पाठ. राध
कृष्ण पहला संस्करण-2010
15. चौधरी. सरेन्द्र : हिन्दी कहानी रचना और परिस्थि
भाग-2. अंतिका प्रकाशन. पहला. पेप
बैंक संस्करण-2009
16. चौहान. डॉ. देव किशन : समसामयिक नाटकों में वर्ग चे
स्वराज प्रकाशन. संस्करण-1997
17. सं. प्रो. एम. एस. जयमोहन : कहानी कल और आज. लोक भार
प्रकाशन. संस्करण-2005
18. जाफरी. डॉ. जमीला आली : हिन्दी कविता. इस्लामी संस्कृति

- परिप्रेक्ष्य में. संस्करण-1997
19. झारी. विजय देव : हिन्दी कहानी में मुस्लिम जीवन ॐ
संस्कृति नालंदा प्रकाशन. नई दिल्ली
संस्करण-1988
20. तिवारी. डॉ. रामचन्द्र : हिन्दी का गद्य-साहित्य. विश्वविद्यालय
प्रकाशन. वाराणसी. संस्करण-2012
21. त्रिपाठी विश्वनाथ : हिन्दी आलोचना. राजकमल प्रकाश
संस्करण-2013
22. दिनकर. रामधारी सिंह : संस्कृति के चार अध्याय. लोक भारत
प्रकाशन. संस्करण-2013
23. दबलिश. डॉ. अरुणा : साठोत्तर हिन्दी तथा बाँगला काव्य
मल्ल-बोध. लोकवाणी संस्थान. दिल्ली
प्रथम. संस्करण-2010
24. दबे. श्यामा चरण : परम्परा इतिहास बोध और संस्क
राधाकण्ठ प्रकाशन
25. देशमुख. डॉ. आर एम. : आठवे दशक की हिन्दी कहानि
जीवन-मल्ल. विद्या प्रकाशन. संस्कर
प्रथम 1994
26. द्विवेदी. हजारी प्रसाद : हिन्दी साहित्य उदभव और विक
राजकमल प्रकाशन. संस्करण-2013
27. द्विवेदी. हजारी प्रसाद : हिन्दी-साहित्य का आदिकाल. व

- प्रकाशन. संस्करण-2012
28. द्विवेदी. हजारी प्रसाद : हिन्दी-साहित्य की भूमिका. राजकम
प्रकाशन संस्करण-2014
29. डॉ. नागेन्द्र. डॉ. हरदयाल : हिन्दी-साहित्य का इतिहास. मयर पेप
बैक्स. संस्करण-2012
30. नवल. नन्दकिशोर : हिन्दी आलोचना का विकास. राजकमल
प्रकाशन. संस्करण-2015
31. नलवडे डॉ. मनोहर : मेहरुन्निसा परवेज का कथा-साहित्य
चन्द्रलोक प्रकाशन. प्रथम संस्करण-2008
32. नेमा. प्रो. जी. पी. : राजनीतिक समाजशास्त्र. यनिवरि
पब्लिकेशन. नई दिल्ली. संस्करण-2007
33. पाटिल. डॉ. व्यंकट किशन राव : मैत्रेयी पप्पा के साहित्य का समाजशास्त्रीय
अध्ययन. अमन प्रकाशन.
संस्करण-2011
34. सिंह डॉ. बच्चन : आधुनिक हिन्दी आलोचना के बीच शब्द.
वाणी प्रकाशन. संस्करण-2012
35. सिंह. डॉ. बच्चन : आधुनिक हिन्दी-साहित्य का इतिहास
लोकभारती प्रकाशन. संस्करण-2013
36. भारद्वाज डॉ. कृष्ण कान्त : आधुनिक हिन्दी कथा
जीवन-मल्ल. अनंग प्रकाशन-दिल्ली
संस्करण-2009

37. भारद्वाज. राहल : नवे दशक की हिन्दी कह
मल्य-विघटन. प्रकाशन.
पुस्तकालय. मथुरा. प्रथम संस्करण-1999
38. महाजन. डॉ. संजीव : भारतीय समाज. अर्जन पब्लिशिंग हाऊस
संस्करण प्रथम संस्करण-2004
39. महाजन डॉ. संजीव : सामाजिक मनोविज्ञान. अर्जन पब्लिशिंग
हाऊस. संस्करण प्रथम-2004
40. मिश्र. राम दरश : हिन्दी कहानी अतरंग पहचान. व
प्रकाशन. संस्करण-2014
41. मिश्र शिव कुमार : हिन्दी साहित्य संक्षिप्त इतिवन्त. वा
प्रकाशन. प्रथम संस्करण-2009
42. मुखर्जी डॉ. राधा कमल : भारतीय समाज. विन्यात. शीर्षक हमारी
आश्रम व्यवस्था
43. डॉ. मोहम्मद अहमद : अरबी से उर्दू- मौलाना महम्मद फारुख
खान. पवित्र करआन के भावार्थ
अनवाद. उर्दू से हिंदी. प्रकाशन. म
संदेश संगम. 2011
44. मेघ. रमेश कंतल : सौंदर्य-मल्य और मल्यांकन. नेश
पब्लिशिंग हाऊस. प्रथम संस्करण-2008
45. डॉ. मोहम्मद फरीदरी : राही मासम रजा के उपन्यास
समाजशास्त्रीय अध्ययन. प्रक

- ऋषभचरण जैन. एवम
संस्करण-1984
46. यादव. राजेन्द्र : एक दनिया समानातर. अक्षर प्रकाशन
संस्करण-1968
47. यादव. राजेन्द्र : कहानी. अनभव और अभिव्यक्ति. वाणी
प्रकाशन. संस्करण-तृतीय. 2009
48. यादव. राजेन्द्र : कहानी. स्वरूप और संवेदना. व
प्रकाशन. संस्करण-2013
49. योहान्नन डॉ. सी. एम. : कहानी साहित्य का तलनात्मक अध्ययन.
वाणी प्रकाशन. प्रथम संस्करण-2007
50. राय गोपाल : हिन्दी कहानी का इतिहास. राजकम
प्रकाशन. संस्करण-2014. 1.2.3
51. राय. सम्पादक-विभक्ति नारायण : कथा-साहित्य के सौ बरस. शिल्पाय
तृतीय संस्करण-2015
52. राय. डॉ. सबेदार : स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी का विकास
अनभव प्रकाशन. कानपुर. संस्करण-1981
53. डॉ. टी. जे. रेखा रानी : उत्तरशती के हिन्दी उपन्यासों में मुस्लिम
जन-जीवन. मिलिन्द. प्रकाशन हैदराबाद.
प्रथम संस्करण-2010
54. लाहिडी. रंत्तां : मल्यः संस्कृति साहित्य और स
प्रकाशन. नेशनल पब्लिशिंग हाउस. प्रथम

संस्करण-1987

55. वीरेन्द्र मोहन : भक्ति काव्य और मानव-मल्य. प्रकाशन संस्थान. नई दिल्ली. प्रथम संस्करण-1986
56. शर्मा जानकी प्रसाद शर्मा : कहानी का वर्तमान राजसूर्य प्रकाश दिल्ली-संस्करण-2000
57. शर्मा. डॉ. नीरज : अन्तिम दशक की हिन्दी कर्हा संवेदना और शिल्प. वाणी प्रकाश संस्करण-2011
58. शर्मा. डॉ. मोहिनी : हिन्दी उपन्यास और जीवन-साहित्यागार. जयपर. संस्करण-1986 ई.
59. शर्मा. डॉ. रमेश चन्द्र : हिन्दी कहानी का सफर. भारत प्रकाशन. मन्दिर. (रजि.) अलीगढ. संस्करण-प्रथम. 1982
60. शर्मा. राजनाथ शर्मा : हिन्दी साहित्य की प्रवर्तियाँ एक नवीन दष्टि. भारत प्रकाशन मन्दिर. संस्करण प्रथम-1976
61. शर्मा. डॉ. वासदेव : साठोत्तर हिन्दी कहानी. मल्यों की तलाश. शारदा प्रकाशन. नई दिल्ली. 1 संस्करण. 1999
62. शाह. डॉ. साधना : हिंदी कहानी संरचना और संवेदना. वाणी प्रकाशन. संस्करण-द्वितीय-2008

63. शक्ल. आचार्य रामचन्द्र : रस मीमांसा. नागरी प्रचारिणी स
वाराणसी. संस्करण-संवत्. 2048
64. शक्ल. आचार्य रामचन्द्र : हिंदी साहित्य का इतिहास. लोक भारती
प्रकाशन. संस्करण-2012
65. शेलम. डॉ. भारती : महिला रचनाकारों की कहानियां
जीवन-मल्य. विद्या
संस्करण-प्रथम. 2008
66. शैलजा : समकालीन हिन्दी कहानी :
जीवन-संदर्भ. वाणी प्रकाशन. 1
संस्करण-2014
67. शाम. डॉ. सानप : ममता कालिया के कथा-साहित्य
नारी-चेतना. विकास प्रकाशन. कानपुर
प्रथम संस्करण. 2010
68. प्र. ग. सहस्रबुद्धे : जीवन-मल्य. भाग 1. 2. 3. प्रका
सरुचि. संस्करण-चतुर्थ अक्टूबर-2014
69. सिंह. नामवर : कहानी नयी कहानी लोक भारती प्रकाशन.
संस्करण-2014
70. सिंघल. डॉ. बैजनाथ : नई कविता: मल्य मिमांसा. ९
प्रकाशन. नई दिल्ली
71. सिद्धीकी. डॉ. माहे तिलत : समकालीन हिन्दी एवं उर्दू व
लेखिकाओं का तलनात्मक अध्ययन. सपर

- प्रकाशन. प्रथम संस्करण-2011
72. सप्रिया. पी. : कष्णा सोबती की कहानी कला. जवाहर
पस्तकालय. संस्करण-2008
73. सेठी. डॉ. हरीश कुमार : जीवन-मल्य विमर्श. संजय प्रकाशन. नई
दिल्ली. प्रथम संस्करण-2008
74. स्नातक. विजयेन्द्र : हिन्दी-साहित्य का इतिहास. सार्
अकाडेमी. संस्करण-2012
75. डॉ. हरदयाल : हिन्दी कहानी परम्परा और प्रगति. वाणी
प्रकाशन. संस्करण-2012
76. सारस्वत डॉ. ओमप्रकाश : बदलते मल्य और आधुनिक हिंदी नाटक.
मंथन पब्लिकेशन्स. संस्करण-1984

अंग्रेजी की सहायक ग्रंथ

1. Maciver RM. and Page charlesh, society an introductory analysis,
macmillon, macmillon and co. ITD. London, 1962
2. Murdock, Georal P. Social structure, Macmillon. company New Yourk,
1949.
3. Urban. A anything that furthiror conserves life Fundamentals of Ethies.
Edition-1956
4. Urban. Fundamentals of Ethics. Edition-1956

पत्र. पत्रिकाएं

1. आजकल. फरहत परवीन. चन्द्रकान्ता. आजकल प्रकाशन. संस्करण. मार्च-2014

2. आलोचना. सं. नामवर सिंह. अक्टूबर-दिसम्बर. राजकमल प्रकाशन
3. कल्पना. डॉ. शिवदान सिंह. नवलेखन स्थिति और समस्याएं. विशे
अगस्त-दिसम्बर-1969
4. नंद कुमार सोमानी. नवभारत टाइम्स (बहस) मंगलवार 16 जनवरी. 2007
5. हंस. राजेन्द्र यादव. अक्टूबर-1994. अक्षर प्रकाशन.
6. हंस. राजेन्द्र यादव. अंड. रविन्द्र घडिया. नैतिकता. और राज्य. अगस्त-2005

शब्दकोश. साहित्यकोश. Dictionary.

1. सम्पादक- आचार्य रामचन्द्र वर्मा. बहत प्रामाणिक. हिन्दी कोश/ लोकभारती
प्रकाशन. इलाहाबाद-2. संस्करण-2012
2. कालिका प्रसाद— बहत हिन्दी कोश. ज्ञान मण्डल लिमिटेड वाराणसी. संस्करण.
जन-2012
3. स. मा. गर्ग— सम्पादक. भारतीय समाज विज्ञान कोश/सम्पादक: स. मा. गर्ग.
खण्ड-2
4. सम्पादक-रामचन्द्र वर्मा. संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर. नागरी प्रचारिणी सभ
वाराणसी. संवत् 2061 वि.. 2004
5. वामन शिवराम आप्टे— संस्कृत. हिन्दी शब्द कोश. अशोक प्रकाशन
सडक. दिल्ली-6. संस्करण-2013
6. रावत हरिकृष्ण- समाज शास्त्र. विश्वकोश. रावत पब्लिकेशन जयपर
दिल्ली
7. डॉ. फा. कामिल बल्के. एस. जे— हिन्दी-अँगरेजी कोश. काथलिक प्रेस. राँची.
संस्करण-2009

8. सम्पादका डॉ. धीरेन्द्र वर्मा. हिन्दी साहित्य कोश भाग-1. पारिभाषिक शब्दावली.
ज्ञान मण्डल. लिमिटेड. संस्करण. जलाई-2013 ई.

Dictionary of thought life English Ravindranath Tagore

1. J. F. brow Psychologes and social order
2. Kim ball young. Ahend book of social Psychology
3. M. Sherif and C. W. sherif Amout tine of social Psychology